श्री वीतरागाय नमः

पूजन – पाठ

(जिनवाणी संग्रह)

सम्पादक व संग्रहकर्ता
नीरज जैन

प्रकाशक
गजेन्द्र पब्लीकेशन
2578 गली पीपल वाली धर्मपुरा
दिल्ली-110006

वीर निर्वाण सं० 2515

1वां संस्करण
5500

ता० 15-10-1989

मुल्य : 19.00
उन्नीस रुपये

संकलन कर्ता वक्तव्य

गृहस्थ श्रावक व्रती नियमित रुप से जैन मंदिरों मे जिनेन्द्र देव की पूजन पाठ करते है । श्रावकों को क्रमानुसार पूजन पाठ करने के लिए अनेक पुस्तकों को देखना पड़ता है । इस कमी को ध्यान मे रखकर प्रस्तुत पुस्तक में आवश्यक और उपयोगी जिनेन्द्र देव पूजन पाठ स्त्रोतो को क्रमबद्ध रीति से संकलित किया गया है ।

जिन विद्वानों की सूचनाओं का इसमें संग्रह किया गया है उनका मैं हृदय से आभारी हूं ।

प्रस्तुत पुस्तक आप सभी श्रावकों को पढ़ने के लिए उपलब्ध हो सकी है इसका श्रेय पं. पदमचन्द जी वीर सेवा मंदिर को एवं श्रीमान् पवन कुमार जी जैन न्यू रोहतक रोड वालों को है । इनका मैं हृदय से आभारी हूँ ।

यह पुस्तक श्रावकों को भगवद् भक्ति मे अधिक उपयोगी सिद्ध होगी ऐसा मुझे विश्वास है । इस पुस्तक में कमियों के लिए क्षमा प्रार्थी होते हुए पाठकों से निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव हमें भेजें जिससे कि अगली आवृत्ति में सुधार किया जा सके ।

धन्यवाद,

भवदीय,
नीरज जैन
दिगम्बर

प्रस्तावना

प्रत्येक गृहस्थ के लिए दैनिक छह आवश्यक कार्य बताये गये हैं ।

देवपूजा गुरूपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः

दानं चेति गृह स्थानां षट्कर्माणि दिने दिने

इनमें देवपूजा या जिनेन्द्र भक्ति श्रावक धर्म का प्रमुख अंग है । इसकी प्रमुखता का कारण यह है कि –

एकापि समर्थेयम् जिनभक्ति दुर्गतिम् निवारयितुम्

पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः

जिनेन्द्र भक्ति संसार में अभेद्य शक्ति मानी गई है । जो दुर्गति के निवारण में समर्थ है । पुण्य बंध कराने वाली और मुक्ति का प्राप्त कराने वाली है । दूसरे शब्दों में यह बात यों कही जा सकती है कि जैन धर्म प्रत्येक आत्मा की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करके व्यक्ति–स्वातंत्र्य के आधार पर उसके बन्धन से मुक्त होने के मार्ग का निर्देश करता है । तदनुसार मुनिधर्म या गृहस्थ धर्म का पालन कर श्रावक भी परम्परा से मोक्ष प्राप्ति कर सकता है । मुनिधर्म–पूर्ण स्वावलम्बन की दीक्षा का नाम है । मुनि और गृहस्थ श्रावक अपनी अपनी सीमानुसार भक्ति मार्ग में प्रवृत्त रहते हैं । निर्विकल्प समाधि में स्थित होने से पूर्व अवस्था तक सभी के लिए भक्ति मार्ग ग्रहणीय है ।

देव शास्त्र गुरु पूजते निरमल बनते भाव

पूजा से प्रभु निज मिले चूक न जाना दाव

इस "पूजन पाठ" पुस्तक में जिनवाणी संग्रह से पूजन, स्तोत्र आदि जनोपयोगी सामग्री के संकलन का प्रयास किया गया है ।

(चक्रेश कुमार जैन)
बिजली वाले

प्रमुख विक्रेता

दिल्ली

1. श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर,
   चांदनी चौक, दिल्ली-6
2. जैन साहित्य सदन
   श्री दि० जैन लाल मन्दिर
   चांदनी चौक

राजस्थान

1. श्री वीर पुस्तक मन्दिर,
   श्री महावीर जी, (सवाई माधोपुर) राजस्थान-322-220
2. श्री पवन कुमार जैन, (पुस्तक विक्रेता) कृष्णाबाई आश्रम,
   श्री महावीर जी, (सवाई माधोपुर) राजस्थान-322-220
3. श्री दिगम्बर जैन वीर पुस्तकालय,
   श्री महावीर जी (सवाई माधोपुर) राज०-322-220
4. ला० दुलीचन्द जैन, (पुस्तक विक्रेता)
   श्री दिग० जैन मन्दिर देहरा, तिजारा (अलवर) राजस्थान

पूजन-पाठ

जिनवाणी संग्रह

दर्शन-विधि

प्रात काल उठकर शुद्ध जल से स्नान कर सादे शद्ध साफ वस्त्र पहिन, चावल-लौंग-बादाम आदि सामग्री लेकर नगे पाँव दर्शन के लिए मन्दिर मे जावे और वहाँ हाथ-पाँव धोकर समवसरण मे प्रवेश करते समय, जय-जय नि सहि तीन बार उच्चारण करे।

दर्शन करते समय नजर भगवान् की प्रतिमा की ओर रखे। उस समय जो पाठ पढे उसी मे निमग्न हो जाना चाहिए। भावना करे कि जैसी वीतरागता और शांति आप मे है वैसी ही मेरी आत्मा मे भी उत्पन्न हो जाय।

परिक्रमा देते समय यदि कोई स्त्री-पुरूष धोक दे रहा हो तो उसके आगे मे न निकले, पीछे की ओर से निकले या जब तक वह खड़ा न हो जाय तब तक खडे रहे। दर्शन करते समय इस तरह खडा होना या परिक्रमा देना चाहिए जिससे दूसरे व्यक्तियो को दर्शन-पूजन मे विघ्न न पडे। फिर भगवान् के सामने खडे होकर नीचे लिखा पाठ पढे—
ॐ नम सिद्धेभ्य ॐ नम सिद्धेभ्य , ॐ नम सिद्धेभ्य , ॐ जय जय जय नमोअस्तु, नमोअस्तु, नमोअस्तु।

णमोकार मंत्र

णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोएसव्वसाहूण।।

(नोट— इस णमोकार मत्र को ९ या ३ बार पढे।)

मगल-पाठ

चत्तारि मगल—अरिहता मगल सिद्वा मगल, साहू मगल केवलिपण्णत्तो धम्मो मगल। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहता लोगुत्तमा, सिद्वा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरण पव्वज्जामि-अरिहते सरण पव्वज्जामि, सिद्वे सरण पव्वज्जामि साहू सरण पव्वज्जामि केवलि-पण्णत्त धम्म सरण पव्वज्जामि।

वर्तमान २४ तीर्थकरो के नाम

१ श्री आदिनाथजी २ अजितनाथजी ३ सम्भवनाथजी ४ अभिनन्दननाथजी ५ सुमतिनाथजी ६ पद्मप्रभजी ७ सुपार्श्वनाथजी ८ चन्द्रप्रभजी ९ पुष्पदन्तजी १० शीतलनाथजी ११ श्रेयासनाथजी १२ वासुपूज्यजी १३ विमलनाथजी १४ अनन्तनाथजी १५ धर्मनाथजी १६ शातिनाथजी १७ कुन्थनाथजी १८ अरहनाथजी १९ मल्लिनाथजी २० मुनिसुव्रतनाथजी २१ नमिनाथजी २२ नेमिनाथजी २३ पार्श्वनाथजी २४ महावीर स्वामीजी।

अर्घ्य चढ़ाने का छन्द

उदक-चदन-तदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकै ।
धवल-मगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमह यजे।।

ॐ ह्री श्री जिनेन्द्र भगवान के गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक का श्लोक

निर्मल निर्मलीकरण पावन पापनाशनम्।
जिनचरणोदक वन्दे, चाष्टकर्म-विनाशकम्।।

अथवा

तुम पद पकज धूलि को, जो लावे निज अग।
ते नीरोग शरीर लहि, छिन मे होय अनग।।

नित्य-नियम पूजा

नोट—पूजा करनेवालों को चाहिए कि मन्दिर आने से पहले सामग्री साथ लावें (जल, चन्दन, चावल (अक्षत), पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल)। स्नान कर शुद्ध धुले वस्त्र पहिनना चाहिए। सामग्री के आठ द्रव्यों में से चावल साफ किये हुए होने चाहिए। जल-चन्दन-छने हुए पवित्र जल को दो कलशों मे भरकर, एक कलश जल का और दूसरे में घिसी हुई केशर मिला देना चाहिए। शेष सामग्री को पवित्र छने जल से धोकर एक थाल मे क्रमशः रखना चाहिए। केशर घिसते समय करीब आधे चावल और आधी खोपरे की गिरी को केशर में रग लेना चाहिए। रंगे चावल पुष्प एवं रगी गिरी दीपक के स्थान पर चढ़ाना चाहिए। अर्घ्य ऊपर लिखे आठों द्रव्यों के मिलने पर बनता है। इसके पश्चात् पूजा के पात्र (बरतन) दो थाल, चम्मच, रकेबी, ठोणा, कलश लेकर मन्दिर में जाना चाहिए। विधिपूर्वक दर्शन, अभिषेक करे। पश्चात् भगवान के सामने खड़े होकर ९ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर पूजन प्रारम्भ करना चाहिए। नित्य-पूजा मे देव-शास्त्र-गुरु, बीस तीर्थंकर पूजनकर, अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ्य चढाकर सिद्धपूजा, समुच्चय चौबीस और वेदी मे विराजमान भगवान की पूजा करे। अनन्तर दशलक्षण, सोलहकारण आदि के अर्घ्य चढ़ाकर अन्त मे महावीर पूजन करे। शान्ति-पाठ पढ़ते हुए पुष्प क्षेपण करना चाहिए। कोई भजन पढकर पूजन का विर्सजन करना चाहिए। विर्सजन मे ९ पुष्प लेकर दोनो हाथों से ठोना मे छोडना चाहिए। इसी प्रकार स्थापना करते समय भी तीन पुष्प तीन बार मे ठोने मे चढ़ाना चाहिए। पुष्प (रगीन चावल) साबुत हो। पूजन करते समय ध्यान उसी मे लगा हो, पाट मधुर ध्वनि से पढ़ा जाय। यदि समय कम हो तो पूजन म देव-गुरू-शास्त्र का पूजन कर, बीस तीर्थंकरो का भी अर्घ्य चढ़ा, 'सिद्ध-पूजा' व 'समुच्चय चौबीसी' का भी अर्घ्य चढाकर 'महावीर-पूजा' के साथ समाप्त किया जा सकता है। इस प्रकार पूजाएँ सख्या मे भले ही कम हो पर भावपूर्वक होना चाहिए। यह ध्यान रहे कि आपके कारण दूसरो की पूजा मे बाधा न हो।

पूजन प्रारम्भ करने के समय नौ बार णमोकार मन्त्र पढकर विनय-पाठ बोलकर पूजा प्रारम्भ करना चाहिए।

(केवल णमोकार मन्त्र पढकर भी पूजा प्रारम्भ कर सकते हैं)

श्री मंगलष्टक स्तोत्र

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा–
भास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनाम्भोधीन्दव स्थायिन ।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठका साधा ,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरव कुर्वन्तु ते मगलम्।।१।।

अर्थ– शोभायुक्त और नमस्कार करते हुए देवेन्द्रो और असुरेन्द्रो के मकुटो के चमकदार रत्नो की कान्ति मे जिन के श्री चरणो के नखरूपी चन्द्रमा की ज्योति स्फुरायमान हो रही है। और जो प्रवचन रूप सागर की वृद्धि करने के लिए स्थायी चन्द्रमा है एव योगिजन जिनकी स्तुति करते रहते है ऐसे अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पाचो परमेष्ठी तुम्हारे पापो को क्षालित करे और तुम्हे सुखी करे ।।१।।

नाभेयादिजिना प्रशस्त-वदना ख्यातासचतुर्विंशति,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लागलधरा सप्तोत्तरा विंशति ,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषा. कुर्वन्तु ते मगलम् ।।२।।

अर्थ–तीनो लोको मे विख्यात और बाह्य तथा आभ्यन्तर लक्ष्मी-सम्पन्न ऋषभनाथ भगवान आदि चौबीस तीर्थंकर, श्रीभरतेश्वर आदि बारह चक्रवर्ती नव नारायण नव प्रतिनारायण और नव बलभद्र ये ६३ शलाका-महापुरुष तुम्हारे पापो का क्षय करे और तुम्हे सुखी करे ।।२।।

ये सर्वौषधि-ऋद्धय सुतपसा वृद्धिगता पंच ये,
ये चाष्टाग-महानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारिण ,
पचज्ञानधरास्त्रयोअपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धिश्वरा.,

सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मगंलम् ।।३।।

अर्थ—सभी औषधि ऋद्धिधारी, उत्तम तप ऋद्धिधारी, अवधृत क्षेत्र से भी दूरवर्ती विषय के आस्वादन दर्शन स्पर्शन घ्राण और श्रवण की समर्थता की ऋद्धि के धारी, अष्टाग महानिमित्त विज्ञता की ऋद्धि के धारी, आठ प्रकार की चारण ऋद्धि के धारी, पाच प्रकार के ज्ञान की ऋद्धि धारी, तीन प्रकार के बलो की ऋद्धि के धारी और बुद्धि-ऋद्धीश्वर, ये सातो जगत्पूज्य गणनायक तुम्हारे पापो को क्षालित करे और तुम्हे सुखी बनावे। बुद्धि क्रिया, विक्रया, तप बल, औषध, रस और क्षेत्र के भेद से ऋद्धियो के आठ भेद हैं ।।३।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु ।
इक्ष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ।। ४ ।।

अर्थ—ज्योतिषी, व्यतर, भवनवासी और वैमानिको के आवासो के मेरुओ, कुलाचलो, जम्बूवृक्षो और शाल्मलिवृक्षो, वक्षारो, विजयार्धो पर्वत इक्ष्वाकार पर्वतो, कुण्डल पर्वत, नन्दीश्वर द्वीप, और मानुषोत्तर पर्वत (तथा रुचिकवर पर्वत) के सभी अकृत्रिम जिन-चैत्यालय तुम्हारे पापो का क्षय करे और तुम्हे सुखी बनावे ।।४।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतः,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।५।।

अर्थ—भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि कैलाश पर्वत पर है। महावीर स्वामी की पावापुर मे है। वासुपूज्य स्वामी की चम्पापुरी मे है। नेमिनाथ स्वामी की ऊर्जयन्त पर्वत के शिखर पर और शेष बीस तीर्थंकरो की निवार्णभूमि श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर है, जिनका अतिशय और वैभव विख्यात है। ऐसी ये सभी निवार्णभूमियाँ तुम्हे निष्पाप बनादे और तुम्हे सुखी करे ।।५।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।

य कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।६।।

अर्थ—तीर्थकरो के गर्भ-कल्याणक, जन्माभिषेक-कल्याणक, दीक्षा-कल्याणक, केवलज्ञान-कल्याणक और कैवल्यपुर-प्रवेश (निर्वाण) कल्याणक के देवो द्वारा सम्भावित महोत्सव तुम्हे सर्वदा मागलिक रहे ।।६।।

जायन्ते जिनचक्रवर्ति-बलभृद्-भोगीन्द्र-कृष्णादयो,
धर्मादेव दिगगनांगविलसच्छश्वद्यशश्चन्दना.।
तद्धीना नरकादियोनिषु नरा दु.ख सहन्ते ध्रुवम्,
स स्वर्गात् सुख-रामणीयकपद कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।७।।

अर्थ—दिशाओ रूपी ललनाओ के अगो पर लगे हुए चन्दन की सुगन्धि के समान शाश्वत यश वाले जिनेन्द्रदेव, चक्रवर्ती, बलभद्र, भोगीन्द्र और कृष्ण आदि जिस धर्म से उत्पन्न होते हैं और जिस धर्म के बिना मनुष्य नरक आदि योनियो मे अनन्त काल तक दु ख सहते रहत है, स्वर्ग आदि सुखो से युक्त रमणीय पद को प्रदान करने वाला वही धर्म तुम सबका कल्याण करे।।७।।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपु ।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनस किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोअपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम् ।।८।।

अर्थ—धर्म के प्रभाव से सर्प माला बन जाता है, तलवार फूलो के समान कोमल बन जाती है, विष अमृत बन जाता है, शत्रु प्रेम करने वाला मित्र बन जाता है और देवता प्रसन्न मन से धर्मात्मा के वश मे हो जात है। अधिक क्या कहे धर्म से ही आकाश से रत्नो की वर्षा होन लगती है वही धर्म तुम सबका कल्याण करे ।।८।।

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विताः,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि ।।९।।

अर्थ—सौभाग्यसम्पत्ति को प्रदान करने वाले इस श्री जिनेन्द्र मगलाष्टक को जो सुधी तीर्थंकरो के पचकल्याणक के महोत्सवो के अवसर पर तथा प्रभातकाल मे भावपूर्वक सुनते और पढ़ते हैं, वे सज्जन धर्म, अर्थ और काम से समन्वित लक्ष्मी के आश्रय बनते हैं और कालान्तर मे अविनश्वर मुक्तिलक्ष्मी को भी प्राप्त करते हैं ।।९।।

मंगलाष्टक-स्तोत्र (भाषा)

संघसहित श्रीकुंदकुंद गुरु, वंदनहेत गये गिरनार।
वाद पर्‌यो तहं सशयमतिसों, साक्षी वदी अंबिकाकार।।
'सत्य पथ निरग्रंथ दिगंबर,' कही सुरी तहँ प्रगट पुकार।
सो गुरू देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मगल करतार।।१।।

स्वामी समंतभद्र मुनिवरसों, शिवकोटी हठ किyो अपार।
वदन करो शभुपिंडीको, तब गुरु रच्यो स्वयंभू सार।।
वदन करत पिंडिका फाटी, प्रगट भये जिनचद्र उदार।
सो गुरु देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार।।२।।

श्रीअकलंकेव मुनिवरसों, वाद रच्यौ जहँ बौद्ध विचार।
तारादेवी घट मे थापी, पटके ओट करत उच्चार।।
जीत्यो स्याद्‌वादबल मुनिवर, बौद्धबोध तारा-मद टार।
सो गुरु देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार।।३।।

श्रीमत विद्यानंदि जबै, श्रीदेवागमथुति सुनी सुधार।
अर्थहेत पहुंच्यो जिनमंदिर, मिल्यो अर्थ तहँ सुखदातार।।
तब व्रत परम दिगम्बर को धर, परमत को कीनों परिहार।
सो गुरु देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार।।४।।

श्रीमत मानतुंग मुनिवर पर, भूप कोप जब कियौ गंवार।
बंद कियो तालों में तबही, भक्तामर गुरु रच्यौ उदार।।
चक्रेश्वरी प्रगट तब हो कै, बंधन काट कियो जयकार।
सो गुरु देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार।।५।।

श्रीमत वादिराज मुनिवरसौ, कह्यो कुष्टि भूपति जिहँ बार।
श्रावक सेठ कहयो तिह अवसर, मेरे गुरु कंचन तनधार।।
तबही एकीभाव रच्यो गुरु, तन सुवरणदुति भयौ अपार।
सो गुरु देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार।। ६।।

श्रीमत कुमुदचन्द्र मुनिवरसो, वाद परयो जह सभा मझार।
तब ही श्रीकल्यानधाम थुति, श्री गुरु रचना रची अपार।।
तब प्रतिमा श्रीपार्श्वनाथकी, प्रगट भई त्रिभुवन जयकार।
सो गुरु देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार।। ७।।

श्रीमत अभयचन्द्र गुरूसो जब, दिल्लीपति इमि कही पुकार।
कै तुम मोहि दिखावहु अतिशय, कै पकरौ मेरो मत सार।।
तब गुरु प्रगट अलौकिक, अतिशय, तुरन हरयो ताको मदभार।
सो गुरु देव वसौ उर मेरे, विघनहरण मंगल करतार।। ८।।

दोहा—विघन हरण मंगल करण, वांछित फलदातार।
'वृन्दावन' अष्टक रच्यो, करौ कंठ सुखकार।।

दर्शन पाठ

तुम निरखत मुझको मिली, मेरी सम्पति आज।
कहा चक्रवर्ति-संपदा कहा स्वर्ग-साम्राज।। १।।

तुम वन्दत जिनदेवजी, नित नव मंगल होय।
विघ्न कोटि ततछिन टरै, लहहि सुजस सब लोय ।। २ ।।

तुम जाने बिन नाथजी, एक स्वास के माँहि।
जन्म-मरण अठदस किये, साता पाई नाँहि।। ३।।

आप बिना पूजत लहे दुःख नरक के बीच।
भूख प्यास पशुगति सही करयो निरादर नीच।। ४।।

नाम उचारत सुख लहै, दर्शनसो अघ जाय।
पूजत पावै देव पद, ऐसे हैं जिनराय।।५।।

वदत हूँ जिनराज मैं, धर उर समताभाव।
तन-धन-जन-जगजालतै धर विरागता भाव।।६।।

सुनो अरज हे नाथ जी, त्रिभुवन के आधार।
दुष्ट कर्म का नाश-कर, वेगि करो उद्धार।।७।।

जाचत हूँ मै आपसो, मेरे जियके माँहि।
राग द्वेष की कल्पना क्यो हू उपजै नाँहि।।८।।

अति अद्‌भुत प्रभुता लखी, वीतरागता माँहि।
विमुख होंहि ते दुख लहै, सन्मुख सुखी लखहिं।।९।।

कलमल कोटिक नहिं रहै, निरखत ही जिनदेव।
ज्यो रवि उगत जगत् मे, हरै तिमिर स्वयमेव।।१०।।

परमाणू पुद्गल तणी, परमातम सजोग।
भई पूज्य सब लोक मे, हरै जन्म का रोग।। ११।।

कोटि जन्म मे कर्म जो, बाँधे हुते अनन्त।
ते तुम छबी विलोकते, छिन मे हो हैं अन्त।। १२।।

आन नृपति किरपा करै, तब कछु दे धन धान।
तुम प्रभु अपने भक्त को, करल्यो आप समान।। १३।।

यत्र मत्र मणि औषधी, विषहर राखत प्रान।
त्यो जिनछबि सब भ्रम हरै, करैं सर्व परधान।। १४।।

त्रिभुवनपति हो ताहि तै, छत्र विराजैं तीन।
सुरपति-नाग-नरेशपद, रहे चरन आधीन।। १५।।

भविनिरखत भव आपने, तुव भामण्डल बीच।
भ्रम मेटैं समता गहै, नाहिं सहै गति नीच।। १६।।

दोइ ओर ढोरत अमर, चौंसठ चमर सफेद ।
निरखत भविजन का हरैं, भव अनेक का खेद ।। १७ ।।

तरुअशोकतुव हरतहै, भवि-जीवनका शोक ।
आकुलता कुल मेटि कें, करैं निराकुल लोक ।। १८ ।।

अन्तर बाहिर परिगहन, त्यागा सकल समाज ।
सिंहासन पर रहत हैं, अन्तरीक्ष जिनराज ।। १९ ।।

जीत भई रिपु मोहतै, यश सूचत है तास ।
देव दुन्दुभिन के सदा, बाजे बजैं अकाश ।। २० ।।

बिन अक्षर इच्छा रहित, रुचिर दिव्यध्वनि होय ।
सुर नर पशु समझैं सबै, संशय रहै न कोय ।। २१ ।।

बरसत सुरतरु के कुसुम गुंजत अलि चहुँ ओर ।
फैलत सुजस सुवासना, हरषत भवि सब ठौर ।। २२ ।।

समुद्र बाघ अरु रोग अहि, अर्गल बंध संग्राम ।
विघन विषम सबही टरैं, सुमरत ही जिननाम ।। २३ ।।

शिरीपाल, चंडाल पुनि, अंजन, भीलकुमार ।
हाथी हरि अरि सब तरे, आज हमारी बार ।। २४ ।।

'बुधजन' यह विनती करै, हाथ जोड़ शिर नाय ।
जबलौं शिव नहिं होय तुव-भक्ति हृदय अधिकाय ।। २५ ।।

देवदर्शन-स्तोत्र

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ।। १ ।।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ।। २ ।।

वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मराग-सम-प्रभम् ।
जन्म-जन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ।। ३ ।।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनम् ।
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम् ।। ४ ।।

दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मा मृत-वर्षणम् ।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः ।। ५ ।।

जीवादि-तत्त्वं प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवाय ।
प्रशांत-रूपाय दिगम्बराय,
देवाधिदेवाय नमो जिनाय ।। ६ ।।

चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ।। ७ ।।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।। ८ ।।

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ।। ९ ।।

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे ।। १० ।।

जिनधर्म-विनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासित ।। ११ ।।

जन्म-जन्मकृतं पापं, जन्म-कोटिमुपार्जितम् ।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात् ।। १२ ।।

अद्याभवत्सफलता नयन-द्वयस्य,
देव त्वदीय-चरणांबुज-वीक्षणेन ।
अद्यत्रिलोक-तिलकं प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणम् ।। १३ ।।

पंच-मंगल पाठ

पणविवि पंच परमगुरु, गुरुजिनशासनो ।
सकल-सिद्धि-दातार सु विघन-विनाशनो ।।
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो ।
मंगल कर चउ-संघहि पाप-पणासनो ।।

पापहिं पणासन गुणहिं गरुवा, दोष अष्दादश—रहिउ ।
धरि ध्यान कर्म विनाश केवलज्ञान अविचल जिन लहिउ ।।
प्रभु पचकल्याणक विराजित, सकल सुर नर ध्यावही ।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर, जगत मगल गावही ।। १ ।।

1. गर्भकल्याणक

जाके गर्भकल्याणक धनपति आइयो ।
अवधिज्ञान-परवान सु इंद्र पठाइयो ।।
रचि नव बारह जोजन, नयरि सुहावनी ।
कनक-रयण-मणि-मंडित, मन्दिर अति बनी ।।

अति बनी पौरि पगारि परिखा, सुवन उपवन सोहये ।
नरनारि सुन्दर चतुर भेख सु, देख जनमन मोहये ।।
तह जनकगृह छहमास प्रथमहिं, रतन-धारा बरसियो ।
पुनि रुचिकवासिनि जननि-सेवा करहिं सबविधि हरसियो ।। २ ।।

सुरकुंजर-सम कुंजर, धवल धुरंधरो ।
केहरि-केशर-शोभित, नख-शिख सुन्दरो ।।
कमला-कलश-न्हवन, दुइ दाम सुहावनी ।
रवि-ससि-मंडल मधुर, मीन जुग पावनी ।।

पावनि कनक-घट-जुगम पूरण, कमल-कलित सरोवरो ।
कल्लोल-माला-कुलित-सागर सिंहपीठ मनोहरो ।।

रमणीक अमरविमान फणिपति-भवन भुवि छवि छाजई ।
रुचि रतनरासि दिपत, दहन सु तेजपुज विराजई ।। ३ ।।

ये सखि सोरह सुपने सूती सयनही ।
देखे माय मनोहर, पश्चिम रयनही ।।
उठि प्रभात पिय पूछियो, अवधि प्रकाशियो ।
त्रिभुवनपति सुत होसी, फल तिहँ भासियो ।।

भासियो फल तिहि चिंत दम्पति परम आनन्दित भये ।
छहमास परि नवमास पुनि तह, रयन दिन सुखसो गये ।।
गर्भावतार महत महिमा, सुनत सब सुख पावही ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मगल गावही ।। ४ ।।

२. जन्मकल्याणक

मति-श्रुत-अवधि-विराजित,जिन जब जनमियो ।
तिहुलोक भयो छोभित, सुरगन भरमियो ।।
कल्पवासि घर घट अनाहद वज्जियो ।
जोतिष-घर हरिनाद, सहज गल गज्जियो ।।

गज्जियो सहजहि सख भावन, भुवन सबद सहावने ।
विनर-निलय पटु पटहि बज्जिय, कहत महिमा क्यो बने ।।
कंपित सुरासन अवधिबल जिन-जनम निहचै जानियो ।
धनराज तब गजराज मायामयी निरमय आनियो ।। ५ ।।

जोजन लाख गयंद, वदन सौ निरमये ।
वदन वदन वसुदंत, दत सर सठये ।।
सर-सर सौ-पनवीस, कमलिनी छाजहीं ।
कमलिनि कमलिनि कमल पचीस विराजहीं ।।

राजही कमलिनि कमलअठोतर सौ मनोहर दल बने ।
दल दलहि अपछर नटहि नवरस, हाव भाव सुहावने ।।
मणि कनक-किंकणि वर विचित्र सु अमर-मण्डप सोहये ।
घन घट चँवर धुजा पताका, देखि त्रिभुवन मोहये ।। ६ ।।

तिहि करि हरि चढ़ि आयउ सुर-परिवारियो ।

पुरहि प्रदच्छन दे त्रय, जिन जयकारियो ।।
गुप्त जाय जिन-जिननिहि, सुखनिद्रा रची ।
मायामाई सिसु राखि तौ, जिन आन्यो सची ।।

आन्यो सची जिनरूप निरखत, नयन तृपति न हूजिये ।
तब परम हरषित हृदय हरिने सहस लोचन पूजिये ।।
पनि करि प्रणाम जु प्रथम इन्द्र, उछंग धरि प्रभु लीनऊ ।
ईशान इन्द्र सुचंद्र छबि सिर, छत्र प्रभुके दीनऊ ।। ७ ।।

सनतकुमार महेन्द्र, चमर दुइ ढारहीं ।
शेष शक्र जयकार, शबद उच्चारहीं ।।
उच्छव-सहित चतुरविधि सुर हरषित भये ।
जोजन सहस निन्यानवै, गगन उलंघि गये ।।

लँघि गये सुरगिरि जहा पाडुक, वन विचित्र विराजही ।
पाडुक-शिला तहँ अर्द्धचन्द्र समान, मणि छवि छाजही ।।
जोजन पचास विशाल दुगणायाम, वसु ऊँची गनी ।
वर अष्ट-मगल-कनक कलशनि सिहपीठ सुहावनी ।। ८ ।।

रचि मणिमडप शोभित, मध्य सिहासनो ।
थाप्यो पूरब मुख तहँ प्रभु कमलासनो ।।
बाजहिं ताल मृदंग, वेणु वीणा घने ।
दुदुभि प्रमुख मधुर धुनि, अवर जु बाजने ।।

बाजने बाजहि सची सब मिल, धवल मगल गावही ।
पुनि करहि नृत्य सुरागना, सब देव कौतुक धावही ।।
भरि छीरसागर जल जु हाथहि हाथ सुरगिरि ल्यावही ।
सौधर्म अरु ईशान इन्द्र सु कलश ले प्रभु न्हावही ।। ९ ।।

वदन उदर अवगाह, कलशगत जानिये ।
एक चार वसु जोजन, मान-प्रमानिये ।।
सहस-अठोतर कलसा, प्रभु के सिर ढरे ।
पुनि सिगार प्रमुख, आचार सबै करे ।।

करि प्रगट प्रभु महिमा महोच्छव, आनि पुनि मातहिं दयो ।
धनपतिहि सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहिं गयो ।।
जन्माभिषेक महत महिमा, सुनत सब सुख पावही ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मगल गावही ।। १० ।।

३. तपकल्याणक

श्रम-जल-रहित शरीर, सदा सब मल-रहिउ ।
छीर वरन वर रुधिर, प्रथम आकृति लहिउ ।।
प्रथम सार संहनन, सरूप विराजहीं ।
सहज सुगंध सुलच्छन मंडित छाजहीं ।।

छाजहिं अतुल बल परम प्रिय हित, मधुर वचन सुहावने ।
दस सहज अतिशय सुभग मूरति, बाललील कहावने ।।
आबाल काल त्रिलोकपति मन-रुचिर उचित जु नित नये ।
अमरोपनीत पुनीत अनुपम सकल भोग विभोगये ।। ११ ।।

भव-तन-भोग-विरत्त, कदाचित चितए ।
धन-यौवन पिय पुत्त, कलित्त अनित्तए ।।
कोउ न सरन मरन दिन, दुख चहुँगति भर्यो ।
सुखदुख एकहि भोगत, जियविधि-वसि पर्यो ।।

पर्यो विधि-वस आन चेतन, आन जड जु कलेवरो ।
तन असुचि परतैं होय आस्रव, परिहरे तैं सवरो ।।
निरजरा तपबल होय समकित, बिन सदा त्रिभुवन भ्रम्यो ।
दुर्लभ विवेक बिना न कबहू, परम धरम विषैं रम्यो ।। १२ ।।

ये प्रभु बारह पावन, भावन भाइया ।
लौकांतिक वर देव, नियोगी आइया ।।
कुसुमांजलि दे चरन, कमल सिर नाइया ।
स्वयंबुद्ध प्रभु थुतिकर, तिन समुझाइया ।।

समुझाय प्रभु को गये निजपुर, पुनि महोच्छव हरि कियो ।
रुचि रुचिर चित्र विचित्र सिविका कर सुनन्दन वन लियो ।।

तहँ पचमुट्ठी लोच कीनो, प्रथम सिद्धनि नुति करी ।
मंडिय महाव्रत पच दुद्धर सकल परिगह परिहरी ।। १३ ।।

मणि-मय-भाजन केश परिट्ठिय सुरपती ।
छीर-समुद-जल खिप करि, गयो अमरावती ।।
तप-संयम-बल प्रभुको, मनपर जय भयो ।
मौन सहित तप करत, काल कछु तहँ गयो ।।

गयो कछु तहँ काल तपबल, रिद्धि वसुविधि सिद्धिया ।
जसु धम ध्यान-बलेन खयगय, सप्त प्रकृति प्रसिद्धिया ।।
खिपि मातवें गुण जतन बिन तहँ, तीन प्रकृति जु बुधि बढिउ ।
करि करण तीन प्रथम सुकल-बल, खिपक-सेनी प्रभु चढिउ ।। १४ ।।

प्रकति छतीस नवें, गुण-थान विनासिया ।
दसवे सूक्षम लोभ, प्रकृति तहँ नासिया ।।
सुकल ध्यानपद दूजो, पुनि प्रभु पूरियौ ।
बारहवें-गुण सोरह, प्रकृति जु चूरियौ ।।

चूरियौ त्रेसठ प्रकृति इह विधि, घातिया-करमनि तणी ।
तप कियो ध्यान-पर्यन्त बारह-विधि त्रिलोक-सिरोमणी ।।
नि कमण-कल्याणक सु महिमा, सुनत सब सुख पावही ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर, जगत मगल गावही ।। १५ ।।

४. ज्ञानकल्याणक

तेरहवे गुणथान सयोगि जिनेसुरो ।
अनंत -चतुष्टय-मंडिय, भयो परमेसुरो ।।
समवसरन तब धनपति बहु-विधि निरमयो ।
आगम-जुगति प्रमान, गगन-तल परि ठयो ।।

परि ठयो चित्र विचित्र मणिमय, सभा-मण्डप सोहये ।
तिहि मध्य बारह बने कोठे, कनक सुरनर मोहये ।।
मुनिकलप-वासिनि अरजिका, पुन ज्योति-भौमि-व्यन्तर-तिया
पुनि भवन-व्यतर नभग सुर नर पसुनि कोठे बैठिया ।। १६ ।।

मध्यप्रदेश तीन मणिपीठ तहां बने ।
गंधकुटी सिंहासन कमल सुहावने ।।
तीन छत्र सिर सोहत त्रिभुवन मोहए ।
अन्तरीच्छ कमलासन प्रभुतन सोहए ।।

सोहये चौसठ चमर ढुरत, अशोक-तरु-तल छाजए ।
पुनि दिव्यधुनि प्रति-सबद-जुत तहँ, देव दुंदुभि बाजए ।।
सुर-पहुपवृष्टि सुप्रभा-मण्डल, कोटि रवि छवि छाजए ।
इमि अष्ट अनुपम प्रातिहारज, वर विभूति विराजये ।। १७ ।।

दुइसै जोजनमान सुभिच्छ चहूँ दिसी
गगन-गमन अरु प्राणी-वध नहिं अह-निसी ।।
निरुपसर्ग निराहार, सदा जगदीश ए ।
आनन चार चहूँदिसि सोभित दीसए ।।

दीसय असेस विसेस विद्या, विभव वर ईसुरपना ।
छाया-विवर्जित सुद्ध फटिक समान तन प्रभु का बना ।।
नहि नयन-पलक-पतन कदाचित् केश नख सम छाजही ।
ये घातिया छय-जनित अतिशय, दस विचित्र विराजही ।। १८ ।।

सकल अरथमय मागधि-भाषा जानिए ।
सकल जीवगत मैत्री-भाव बखानिए ।।
सकल रितुज फलफूल, वनस्पति मन हरै ।
दरपन-सम मनि अवनि, पवन-गति अनुसरै ।।

अनुसरै, परमानद सबको, नारि नर जे सेवता ।
जोजन प्रमान धरा सुमार्जहिं, जहाँ मारुत देवता ।।
पुन करहि मेघकुमार गंधोदक सुवृष्टि सुहावनी ।
पद कमल तर सुर खिपहि कमल सु
धरणि ससि -सोभा बनी ।। १९ ।।

अमल-गगन-तल अरु दिसि, तहँ अनुहारहीं ।
चतुर-निकाय देवगण, जय जयकारहीं ।।

धर्मचक्र चलै आगैं, रवि जहँ लाजहीं ।
पुनि भृंगार-प्रमुख, वसु मंगल राजहीं ।।

राजहीं चौदह चारु अतिशय, देव रचित सुहावने ।
जिनराज केवलज्ञान महिमा, अवर कहत कहा बने ।।
तब इन्द्र आय कियो महोच्छव, सभा सोभा अति बनी ।
धर्मोपदेश दियो तहा, उच्चरिय वानी जिनतनी ।। २० ।।

छुधा तृषा अरू राग, रोष असुहावने ।
जनम जरा अरू मरण, त्रिदोष भयावने ।।
रोग सोग भय विस्मय,अरू निद्रा घनी ।
खेद स्वेद मद मोह, अरति चिंता गनी ।।

गनिये अठारह दोष तिनकरि रहित देव निरंजनो ।
नव परम केवललब्धि मंडिय सिव-रमनि-मनरंजना ।।
श्रीज्ञानकल्याणक सुमहिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं ।। २१ ।।

५. निर्वाण-कल्याणक

केवलदृष्टि चराचर, देख्यो जारिसो ।
भव्यनि प्रति उपदेश्यो, जिनवर तारिसो ।।
भव-भय-भीत भविकजन, सरणै आइया ।
रत्नत्रय-लच्छन सिवपथ लगाइया ।।

लगाइया पथ जु भव्य पुनि प्रभु तृतिय सुकल जु पूरियो ।
तजि तेरवा गुणथान जोग अजोगपथ पग धारियो ।।
पुनि चौदहे चौथे सुकल बल बहत्तर तेरह हनी ।
इमि घाति वसुविध कर्म पहुँच्यो, समय में पंचम गती ।। २२ ।।

लोकसिखर तनुवात, वलयमहँ संठियो ।
धर्मद्रव्य बिन गमन न, जिहि आगैं कियो ।।

मयन-रहित मूषोदर, अंबर जारिसो ।
किम्पि हीन निज तनुत, भयो प्रभु तारिसो ।।

तारिसो पर्जय नित्य अविचल, अर्थपर्जय छनछयी ।
निश्चयनयेन अनतगुण, विवहार नय वसु-गुणमयी ।।
वस्तुस्वभाव विभावविरहित, सुद्ध परिणति परिणयो ।
चिद्रूप परमानद मदिर, सिद्ध परमातम भयो ।। २३ ।।

तनु-परमाणू दामिनि-वत, सब खिर गए ।
रहे शेष नखकेश-रूप, जे परिणए ।।
तब हरिप्रमुख चतुरविधि, सुरगण शुभ
मायामयि नखकेश-रहित, जिनतनु रच्यो ।।

गंच अगरचदन प्रमुख परिमल, द्रव्य जिन जयकारियो ।
पदपतित अगनिकुमार मकुटानल, सुविध सस्कारियो ।।
निर्वाण कल्याणक सु महिमा, सुनत सब सुख पावही ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर, जगत मगल गावही ।। २४ ।।

मै मतिहीन भगतिवस, भावन भाइया ।
मंगल गीतप्रबंध, सु जिनगुण गाइया ।।
जो नर सुनहि बखानहिं सुर धरि गावहीं ।
मनवांछित फल सो नर, निहचै पावहीं ।।

पावही आठो सिद्धि नवनिध, मन प्रतीत जो लावही ।
भ्रम भाव छूटै सकल मनके निज स्वरूप लखावही ।।
पुनि हरहि पातक टरहि विघन सु होहि मगल नित नये ।
भणि 'रूपचन्द' त्रिलोकपति, जिनदेव चउ-सघहि जये ।। २५ ।।

जलाभिषेक वा प्रक्षाल-पाठ

(प्रक्षाल करते समय पढना चाहिये)

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान।।

ढाल मगल की, छद अडिल्ल और गीता

श्रीजिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू ।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू ।।
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी ।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी ।।

अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है ।
किमि धरै हम उर कोष में सो अकथ-गुण-मणि-राश है ।।
पै निजप्रयोजन सिद्धि की तुम नाम मे ही शक्ति है ।
यह चित्त में सरधान यातै, नाम मे ही भक्ति है ।। १ ।।

ज्ञानावरणी दर्शन, आवरणी भने ।
कर्म मोहनी अतराय चारों हने ।।
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान मे ।
इंद्रादिकके मुकुट नये सुरथान में ।।

तब इन्द्र जान्यो अवधितै, उठि सुरन-युत बंदत भयो ।
तुम पुन्यको प्रेर्यो हरी ह्वै मुदित धनपतिसौं चयो ।।
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपदको करौ ।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ ।। २ ।।

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपती ।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती ।।
वीतराग छबि देखि शब्द जय जय चयौ ।
दे प्रदच्छिना बार बार वंदत भयौ ।।

अति भक्ति-भीने नम्र-चित ह्वै समवसरण रच्यौ सही ।
ताकी अनूपम शुभ गतीको, कहन समरथ कोउ नहीं ।।
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं ।
नग-जड़ित गधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं ।। ३ ।।

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै ।
तापर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै ।।
तीनछत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी ।
महा भक्तियुत ढोरत हैं तहां अमरजी ।।

प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया ।
यह वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया ।।
मुनि आदि द्वादश सभाके भविजीव मस्तक नायकें ।
बहुभांति बारंबार पूजें, नमैं गुणगण गायकैं ।। ४ ।।

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही ।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं ।।
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसे ।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे ।।

श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योति-स्वरूपजी ।
शरणागतनिकी अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी ।।
ऐसे प्रभू की शांतिमुद्रा को न्हवन जलतैं करैं ।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति
तैं हम भानु ढिग दीपक धरैं ।। ५ ।।

तुम तौ सहज पवित्र यही निश्चय भयो ।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो ।।
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो ।
महा मलिन तनमें वसु-विधि-वश दुख सह्यो ।।

बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई ।
तिस अशुचिता-हर एक तुम ही,
भरहु बांछा चित ठई ।।
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोष-रागादिक हरौ ।
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करौ ।। ६ ।।

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये ।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये ।।
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही ।
नय-प्रमानतैं जानि महा साता लही ।।

पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त मे ऐसे धरूं ।
साक्षात श्रीअरहंतका मानों न्हवन परसन करूं ।।
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तै ।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतै
ह्वै शर्म सब विधि तासतै ।। ७ ।।

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतै ।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं ।।
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं ।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतै ।।

पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरण-धनी ।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी; पूर्णभक्ति नहीं बनी ।।
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिव-घरकी धरी ।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी ।। ८ ।।

विघन-सघन-वन-दाहनदलनप्रबलप्रचडहो।
मोह-महातम-दलन प्रबल मारतण्ड हो ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो ।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करो ।।

आनन्द-कारण दुख-निवारण, परम-मगल-मय सही ।
मोसो पतित नहि और तुमसो, पतित-त्तार सुन्यौ नहीं ।।
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही ।
तुम भक्ति-नौका जे चढ़े, ते भये भवदधि-पार ही ।। ९ ।।

दोहा तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार ।

तारतम्य इस भक्तिको, हमै उतारो पार ।। १० ।।

इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ

स्तुति

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरन आयो सरन जी ।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरन जी ।। १ ।।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी ।
या बुद्धिसेती निज न जाण्यो, भ्रम गिण्यो हितकार जी ।। २ ।।

भव विकट वन में करम बैरी, ज्ञानधन मेरो हर्‌यो ।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो ।। ३ ।।

धन घडी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो ।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु जी को लख लयो ।। ४ ।।

छबि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं ।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छबि को हरैं ।। ५ ।।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो ।
मो उर हर्ष ऐसो भयो, मनु रंक चिन्तामणि लयो ।। ६ ।।

मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊँ तुव चरण जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन-तरण जी ।। ७ ।।

जाचू नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी ।
'बुध' जाचहूँ तुव भक्ति भव भव, दीजिये शिवनाथ जी ।। ८ ।।

नित्यनियम पूजा

(पूजा प्रारम्भ करने के समय नौ बार णमोकार मन्त्र पढकर नीचे लिखा विनयपाठ बोल कर पूजा प्रारम्भ करनी चाहिये)

विनयपाठ दोहावली

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्मजु आठ ।। १ ।।

अनंत चतुष्टयके धनी, तुमही हो सिरताज ।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज ।। २ ।।

तिहुँ जगकी पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुख के करतार ।। ३ ।।

हरता अघ अंधियारके, करता धर्मप्रकाश ।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास ।। ४ ।।

धर्मामृत उर जलधिसों ज्ञानभानु तुम रूप ।
तुमरे चरण-सरोजको, नावत तिहु जग भूप ।। ५ ।।

मैं बंदौ जिनदेवको, कर अति निर्मल भाव ।
कर्मबंधके छेदने, और न कछू उपाव ।। ६ ।।

भविजनकों भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार ।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुणभंडार ।। ७ ।।

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल ।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिवगैल ।। ८ ।।

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय ।। ९ ।।

चक्री खगधर इंद्रपद,मिलैं आपतैं आप ।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।। १० ।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन ।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ।। ११ ।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव ।। १२ ।।

थकी नाव भवदधिविषैं, तुम प्रभु पार करेव ।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ।। १३ ।।

रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ।। १४ ।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ।। १५ ।।

तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ।। १६ ।।

अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भवसिंधु में खेओ लगाओ पार ।। १७ ।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान् ।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजै आप समान ।। १८ ।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार ।
हाहा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ।। १९ ।।

जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार ।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ।। २० ।।

बंदो पाचौं परमगुरु, सुरगुरु बंदत जास ।
विघनहरन मंगकरन, पूरन परम प्रकाश ।। २१ ।।

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ।। २२ ।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।। १ ।।

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)चत्तारि मंगलं–अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं साहू मंगलं, केवलिपण्णेत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरण पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्म सरणं पव्वज्जामि ।।

ॐ नमोअर्हते स्वाहा, पुष्पाजलि क्षिपामि

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। १ ।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्था गतोअपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ।। २ ।।

अपराजित-मंत्रोअयं सर्व-विघ्न-विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।। ३ ।।

एसो पंच-णमोयारो सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ।। ४ ।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मावाचक परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वत प्रणमाम्यहं ।। ५ ।।

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नयाम्यहं ।। ६ ।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषता याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।। १ ।।

(पुष्पाजलि क्षिपामि)

पंच कल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।

धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ।। १ ।।

ॐ ह्री श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपचकल्याणकेभ्योअर्घ्यं नि०

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।। २ ।।

ॐ ह्री श्री अर्हत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योअर्घ्य नि०

यदि अवकाश हो तो यहाँ पर सहस्रनाम पढकर दश अर्घ देना चाहिए। नही तो नीचे लिखा श्लोक पढकर एक अर्घ चढाना चाहिए।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकै. ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ।। ३ ।।

ॐ ह्री श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योअर्घ्य नि०

स्वस्ति-मगल

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवद्य जगत्त्रयेशं ।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम् ।।

श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतुर ।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाअभ्यधायि ।। १ ।।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय ।। २ ।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ।। ३ ।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूप,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकाम. ।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरूषस्य करोमि यज्ञं ।। ४ ।।

अर्हत्पुराण-पुरूषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्य समग्रमहमेकमना जुहोमि ।। ५ ।।

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाजलि क्षिपामि।

श्री वृषभो न	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीअजित ।
श्रीसभव	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीअभिनंदन.।
श्रीसुमति	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीपद्मप्रभ·।
श्रीसुपार्श्व	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीचन्द्रप्रभु:।
श्रीपुष्पदंत	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीशीतल ।
श्रीश्रेयान्	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीवासुपूज्य.।
श्रीविमल	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीअनत ।
श्रीधर्म	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीशान्ति ।
श्रीकुंथु	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीअरहनाथ ।
श्रीमल्लि	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीमुनिसुव्रत·।
श्रीनमि	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीनेमिनाथ:।
श्रीपार्श्व	स्वस्ति,	स्वस्ति	श्रीवर्द्धमान ।

(पुष्पाजलि क्षिपामि)

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमगलविधानम्।

नित्याप्रकंपाद्भुत-केवलौघा. स्फुरन्मन· पर्यय-शुद्धबोधा· ।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधा: स्वस्ति कियासु: परमर्षयोन: ।। १ ।।

(यहा मे प्रतेयक श्लोक के अत मे पुष्पाजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-कियासुः परमर्षयो नः ।। २ ।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादा, स्वादन-घ्राण-विलोकनानि। ।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहतः, स्वस्ति कियासुः परमर्षयो नः ।। ३ ।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणा समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोअष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति कियासु परमर्षयो नः ।। ४ ।।

जंघावनि-श्रेणि-फलांबु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः ।
नभोअंगण-स्वैर-विहारिणश्च-स्वस्ति कियासुः परमर्षयोः नः ।। ५ ।।

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि ।
मनो-वपर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति कियासु परमर्षयो न ।। ६ ।।

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ता. ।
तथाअप्रतीघातगुणप्रधाना. स्वस्ति कियासु परमर्षयो न ।। ७ ।।

दीपतं च तप्तं च तथा महोग्र घोरं तपो घोरपराकमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोर-गुणश्चरन्त -स्वस्ति कियासुः परमर्षयो न ।। ८ ।।

आमर्ष-सर्वोषधयस्तथाशीर्विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशा स्वस्ति कियासुः परमर्षयो नः ।। ९ ।।

क्षीरं स्रवंतोअत्र घृतं स्रवंतो मधु स्रवंतोअप्यमृतं स्रवंत
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति कियासुः परमर्षयो नः ।। १० ।।

इति परमर्षिस्वस्तिमगल-विधान।

अथ देव-शास्त्र-गुरू पूजा

अडिल्ल छन्द

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धांत जू,
गुरू निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पन्थ जू,

तीन रतन जग मांहि सो ये भाव ध्याइये,
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये।।
दोहा पूजों पद अरहंत के पूजों गुरूपद सार,
पूजोंदेवीसरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार।१।

ॐ ह्री देव-शास्त्र-गुरू-समूह ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् आह्वानन/ॐ ह्री देवशास्त्रगुरूसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ स्थापन/ॐ ह्री देवशास्त्रसमूह ! अत्र सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण

गीता छन्द

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर, बन्दनीक सुपद-प्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छबि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीरसमुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरू-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मलछीन।
जासों पूजौ परमपद, देव शास्त्र गुरू तीन।१।

ॐ ह्री देव-शास्त्र-गुरूभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जल निर्व०।।

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।।
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन सरस चदन घिसि सचूं।
अरहत श्रुत-सिद्धांत गुरू निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

चदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासो पूजौ परमपद, देवशास्त्र गुरू तीन।२।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरूभ्य ससार-ताप-विनाशनाय चदन निर्व०।।२।।

यह भवसमुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धात गुरू निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरू तीन।।३।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।।३।।

जे विनयवंत सुभव्य-उर अबुजप्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमाहिं प्रधान है।।
लहि कुद कमलादिम पहुप, भव भव कुवेदनसो बचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

विविध भांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन।।४।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगरुभ्य कामबाण-विध्वसनाय पुष्प निर्व०।।४।।

अति सबल मद-कदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशन को सु गरुड़ समान है।।
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूं।
अरहंत श्रुत-सिद्धात गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

नानाविधि संयुक्तरस, व्यजन सरस नवीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।५।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगरुभ्य क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्य निर्व०।।५।।

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाश जोति प्रभावली।।
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन के सुभाजन में खचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।६।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहाधकारविनाशनाय दीप निर्व०।।६।।

जो कर्म-ईधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगन्धता करि, सकल परिमलता हंसै।।
इह भाँति धूप चढाय नित भव ज्वलनमाहिं नहिं पचूं।
अरहत श्रुतसिद्धात गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

अग्निमाहि परिमल दहन, चदनादि गुणलीन।
जासो पूजौ परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।७।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मविध्वसनाय धूप निर्व०।।७।।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं।।
सो फल चढावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

जे प्रधान फल फलविषै, पंचकरण-रस लीन।
जासो पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।८।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा

जल परम उज्जवल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरू।
बर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरू।।
इहि भाँति अर्घ चढाय नित भावि करत शिवपंकति मचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धात गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं।।

दोहा

वसुविधि अर्घ सयोजके, अति उछाह मन कीन।
जासो पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।९।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योअनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार।।

पद्धरी छन्द

कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण है अनत धीर, कहवन के छ्यालिस गुण गंभीर।।२।।

शुभ समवसरण शोभा अपार, शत इंद्र नमत कर सीस धार।
देवाधिदेव अरहंत देव, बंदौं मन-वच-तन करि सु सेव।।३।।

जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररूप, निर-अक्षरमय महिमा अनूप।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत।।४।।

सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।।५।।

गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रतनत्रय-निधि अगाध।
ससारदेह वैराग्य धार, निरवांछि तपैं शिवपद निहार।।६।।

गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरु-नाम जपों मन-वचन-काय।।७।।

सगेठा

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
द्यानत सरधावान, अजर अमरपद भोगवै।।८।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनके परसाद तैं सुखी रहैं सब जीव।
यातैं तन मन वचन तैं सेवो भव्य सदीव।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत्।

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठो जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है।
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ताविषै छाजै।
सातशत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै।।१।।

ॐ ह्री पाच भरत, पाच ऐरावत, दस क्षेत्र के विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

श्री देव-शास्त्र-गुरु-पूजा

(श्री युगल जी कृत)

केवल-रवि-किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर,
जिस श्री जिनवाणी में होता, तत्वों का सुन्दरतम दर्शन।
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण,
उन देव परम आगम गुरु को, शत-शत वंदन शत-शत वंदन।।

ॐ ह्री श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन
ॐ ह्री श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ ठ ठ स्थापन।
ॐ ह्री श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम, लावण्यमयी कंचन काया,
यह सब कुछ जग की क्रीड़ा है, मैं अब तक जान नहीं पाया।।
मैं भूल स्वयं के वैभव को, पर ममता में अटकाया हूँ,
अब निर्मल सम्यक् नीर लिये, मिथ्या मल धोने आया हूँ।।१।।

ॐ ह्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मिथ्यात्व-मल-विनाशनाय जल निर्व०।

जड़ चेतन की सब परणति प्रभु! अपने-अपने में होती है,
अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ति है।।
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया है,
संतप्त हृदय प्रभु चन्दन सम, शीतलता पाने आया है ।। २ ।।

ॐ ह्री श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो क्रोध-कषाय-मल विनाशनाय चदन निर्व०

उज्ज्वल हूँ कुन्द धवल हूँ प्रभु! पर से न लगा हूँ किंचित भी,
फिरभी अनुकूल लगें उनपर, करता अभिमान निरन्तर ही।।
जड पर झुक-झुक जाता चेतन, नश्वर वैभव को अपनाया,
निज शाश्वत अक्षत-निधि पाने, अब दास चरण-रज में आया।।३।।

ॐ ह्री श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मान कषाय मल विनाशनाय अक्षत नि०

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं,
निज अन्तर का प्रभु भेद कहूं, उसमें ऋजुता का लेश नहीं।।
चिंतन कुछ, फिर सम्भाषण कुछ, क्रिया कुछ की कुछ होती है,
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ जो, अन्तर का कालुष धोती है।।४।।

ॐ ह्री श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो मायाकषायमलविनाशनाय पुष्प नि०।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु! भूख न मेरी शांत हुई,
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही।।
युग युग से इच्छा सागर में, प्रभु! गोते खाता आया हूं,
पंचेन्द्रिय मन के षट्रस तज, अनुपम रस पीने आया हूं।।५।।

ॐ ह्री श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो लोभकषायमलविनाशनाय नैवेद्य नि०

जग के जड़ दीपक को अब तक समझा था मैंने उजियारा,
झंझा के एक झकोरे मे जो बनता घोर तिमिर कारा।
अतएव प्रभो! यह नश्वर दीप, समर्पण करने आया हूं
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर दीप जलाने आया हूं।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो अज्ञान तिमिर विनाशनाय दीप नि०।

जड कर्म घुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी,
मैं राग-द्वेष किया करता, जब परिणति होती जड़ केरी।
यों भाव करम या भाव मरण, युग युग से कराता आया हूं,
निज अनुपम गंध अनल मे प्रभु, पर गंध जलाने आया हूं।। ७।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विभाव-परिणति-विनाशनाय धूप नि०।

जग मे जिसको निज कहता मैं, वह छोड मुझे चल देना है,
मैं आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है।
मैं शान्त निराकुल चेतन हू, है मुक्ति रमा सहचर मेरी,
यह मोह तडक कर टूट पडे प्रभु! सार्थक फल पूजा तेरी।। ८।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षपदप्राप्ताय फल नि०।

क्षणभर निज रस को पी चेतन, मिथ्या मल को धो देता है,
काषायिक भाव विनष्ट किये निज आनन्द अमृत पीता है।
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल रवि जगमग करता है,
दर्शन बल पूर्ण प्रकट होता, यह ही अर्हत अवस्था है।
यह अर्घ समर्पण करके प्रभु! निज गुण का अर्घ बनाऊगा,
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हत अवस्था पाऊगा।। ९।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ नि०।

'स्तवन'

भव वन मे जी भर घूम चुका, कण कण को जी भर भर देखा।
मृग-सम मृग तृष्णा के पीछे मझको न मिली सुख की रेखा।। १।।

झूठे जग के सपने सारे, झूठी मन की सब आशाये।
तन-जीवन-यौवन-अस्थिर है, क्षण भगुर पल मे मुरझायें।। २।।

सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या।
अशरण मृत काया मे हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या।। ३।।

ससार महा दुख सागर के, प्रभु दुखमय सुख आभासो मे।
मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कचन-कामिनि-प्रासादो मे।। ४।।

मैं एकाकी एकत्व लिए, एकत्व लिए सब ही आते।
तन धन को साथी समझा था, पर वे भी छोड चले जाते।। ५।।

मेरे न हुए ये मै इनसे, अति भिन्न अखण्ड निराला हू।
निज मे पर से अन्यत्व लिए, निज सम रस पीने वाला हूँ।। ६।।

जिसके श्रृगारो मे मेरा, यह महगा जीवन घुल जाता।
अत्यन्त अशुचि जड काया से, इस चेतन का कैसा नाता।। ७।।

दिन रात शुभाशुभ भावो से, मेरा व्यापार चला करता।
मानस वाणी और काया से, आश्रव का द्वार खुला रहता।। ८।।

शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्थल।
शीतल समकित किरणे फूटे, सवर से जागे अन्तर्बल।। ९।।

फिर तप की शोधक वन्हि जगे, कर्मो की कडिया टूट पडे।
सर्वांग निजात्म प्रदेशो से, अमृत के निर्झर फूट पडे।। १०।।

हम छोड चले यह लोक तभी, लोकान्त विराजे क्षण मे जा।
निज लोक हमारा वासा हो, फिर भव बन्धन से हमको क्या।। ११।।

जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नयतम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता-द्रष्टा रह जाऊ, मद-मत्सर मोह-विनश जावे।। १२।।

चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग मे न हमारा कोई था, हम भी न रहे जग के साथी।। १३।।

चरणो मे आया हू प्रभवर, शीतलता मुझ को मिल जावे।
मुरझाई ज्ञान लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जावे।।१४।।

सोचा करता हू भोगो से, बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानो पावक मे घी डाला।।१५।।

तेरे चरणो की पूजा से, इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु वर सच्चे सुख की भी परिभाषा।।१६।।

तुम तो अविकारी हो प्रभु वर जग मे रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणो मे, जग के माणिक मोती सारे।।१७।।

स्याद्वाद मयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते है।
उस पावन नौका पर लाखो, प्राणी भव-वारिधि तिरते है।।१८।।

हे गुरुवर! शाश्वत सुख-दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करने वाला है।।१९।।

जब जग विषयो मे रच पच कर, गाफिल निद्रा मे सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कटक, पथ मे विष-कटक बोता हो।।२०।।

हो अर्ध निशा का सन्नाटा, बन मे बनचारी चरते हो।
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्वो का चितन करते हो।।२१।।

करते तप शैल नदी तट पर, तरु तल वर्षा की झडियो मे।
समता रस पान किया करते, सुख दुख दोनो की घडियो मे।।२२।।

अन्तर ज्वाला हरती वाणी, मानो झडती हो फुलझडिया।
भव बन्धन तड तड टूट पडे, खिल जावे अन्तर की कलिया।।२३।।

तुम सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दी जग की निधिया।
दिन रात लुटाया करते हो, सम-शम की अविनश्वर मणिया।।२४।।

हे निर्मल देव! तुम्हे प्रणाम, हे ज्ञान दीप आगम! प्रणाम।
हे शान्ति त्याग के मूर्तिमान, शिव-पथ-पथी गुरुवर! प्रणाम।।

ॐ ह्री श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देव शास्त्र गुरु, विदेहक्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकर तथा श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी

की

समुच्चय-पूजा

दोहा— देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित्त हुलसाय।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकर समूह! श्री अनतानन सिद्ध परमेष्ठी समूह ! अत्रावतरावतर सवौषट्। अत्र तिष्ठ ठ ठ स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो, भव भव वषट् सन्निधि करणम्।

अष्टक

अनादिकाल से जग में स्वामिन्, जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय, निधिको नहिं पहिचाना।।
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू के गुण गाऊं।।

ॐ ह्री देवशास्त्र-गुरुभ्य श्रीविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्य श्रीअनन्तानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो, जन्मजरा-मृत्यु-विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

भव आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूंठी ममता है।।
चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याउं।
विद्यमान ।।चन्दन।।२।।

अक्षय पदके बिन फिरा जगत की लख चौरासी योनी में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं।।

अक्षय निधि निज की पाने अब देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान ।। अक्षत ।। ३ ।।

पुष्प सुगन्धी के आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से बिंध करके, चहुं गति दु:ख उपजाया है।।
स्थिरता निज मे पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान।। पुष्प ।। ४ ।।

षट रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शात हुई।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई।।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान।। नैवेद्य ।। ५ ।।

जड दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीप से, मिटा मोह का अंधियारा।।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान।। दीप ।। ६ ।।

ये धूप अनल मे खेने से, कर्मो को नहीं जलायेगी।
निज मे निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी।।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान।। धूप ।। ७ ।।

पिस्ता बदाम श्रीफल लवग, चरणन तुम ढिग मै ले आया।
आतमरस भीने निज गुण फल मम मन अब उनमे ललचाया।।
अब मोक्ष महा फल पाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान।। फल ।। ८ ।।

अष्टम वसुधा पाने को, कर मे ये आठो द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज मे निज गुण प्रगट किये।।
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं।
विद्यमान।। अर्घ्य ।। ९ ।।

जयमाला

नसे घतिया कर्म अर्हंत देवा, करें सुरअसुर नरमुनि नित्य सेवा।
दरश ज्ञान सुख बल अनन्तके स्वामी, छियालीस गुण युक्त महाईश नामी।

तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महा मोह विध्वंसिनी मोक्षदानी।
अनेकान्त मय द्वादशांगी बखानी, नमो लोक माता श्री जैन वाणी।।

विरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी, निजानन्द मंडित मुकति पथ प्रचारी।।

विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजे, बिरहमान बंदूं सभी पाप भाजे।
नमूं सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी।।

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धरले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भव सागर जिय तर लेरे।

पूर्णार्घ्या

भूत भविष्यत वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊं।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊं।।

ॐ ह्री त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमा-कृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घ्य। नि०।

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूं कायोत्सर्ग अघ नाशन हेत।
कृत्रिमा-कृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन बिम्ब अनेक।।
चतुर निकाय के देव जजें ले अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूं मैं कर समाधि पाऊं शिव खेत।।

ॐ ह्री कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसर्बाधजिनबिम्बेभ्योअर्घ्य नि०।

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यो के अनुसार।
देव वन्दना करूं भाव से सकल कर्म की नाशन हार।।
पंच महागुरु सुमरन करके, कायोत्सर्ग करू सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना जाऊंगा अब मैं भव पार।।
(पुष्पाजलि क्षिपेत् नौ बार णमोकार मत्र जपे)

श्री बीस-तीर्थंकर-पूजा (भाषा)

दीप अढाई मेरु पन, अब तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करूँ, मन-वच-तन धरि शीश।।

ॐ ह्री विद्यमान विशति-तीर्थकरा । अत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्री विद्यमान-विशति-तीर्थकरा । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ
ॐ ह्री विद्यमानविशति-तीर्थकरा । अत्र मम मन्निहितो भव भव वषट्।

।। अथाष्टक ।।

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र वंद्य, पद निर्मल धारी,
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी।।
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।१।।

ॐ ह्री विद्यमान-विशति-तीर्थकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जल
(इस पूजा मे बीस पुज करना हो तो प्रत्येक द्रव्य चढाते समय इस प्रकार मत्र बोलना चाहिए)
ॐ ह्री सीमधर, युगमधर, बाहु, सुबाहु, सजात, स्वयप्रभ, ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सूरप्रभ, विशालकीर्ति, वज्रधर, चन्द्रानन, चद्रबाहु, भुजंगम, ईश्वर, नेमिप्रभ, वीरसेन, महाभद्र, देवयशो, अजितवीर्येति विशति विद्यमानतीर्थकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्व०।।१।।

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये,
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये।
बावन चंदनसों जजू, (हो) भ्रमन-तपन निरवार,। सीमंधर० २।।

ॐ ह्री विद्यमानविशति तीर्थकरेभ्यो भवतापविनाशनाय चदन नि०।

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी,
तातैं तारे बड़ी भक्ति-नौका जग नामी।

तन्दुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।३।।

ॐ ह्री विद्यमानविंशति तीर्थकडरेभ्योअक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

भविक-सरोज-विकास, निंद्य-तम-हर रविसे हो,
जति श्रावक आचार, कथन को, तुम हौ बड़े हो।
फूलसुवास अनेकसों (हो) पूजा मदन प्रहार।।सीमंधर०।।४।।

ॐ ह्री विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविध्वसनाय पुष्प नि०।

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो,
क्षुधा महादव-ज्वाल, तासको मेघ लहे हो।
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजों भूख विडार, सीमंधर०।।५।।

ॐ ह्री विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।

उद्यम होन न देत, सर्व जग मांहिं भर्‌यो है,
मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्‌यो है।
पूजों दीप प्रकाशसों (हो) ज्ञान ज्योति करतार, ।।सीमंधर०।।६।।

ॐ ह्री विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीप नि०।

कर्म आठ सब काठ, भार विस्तार निहारा,
ध्यान अगनि कर प्रकट सरब कीनो निरवारा।
धूप अनूपम खेवतें (हो), दु:खजलैं निरधार।।सीमंधर०।।७।।

ॐ ह्री विद्यमान विंशति तीर्थकरेभ्योअष्टकर्म विध्वसनाय धूप नि०।

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभ अहंकार भरे हैं,
सब को छिन में जीत जैन के मेरु खरे हैं।
फल अति उत्तमसोंजजों (हो) वांछित फलदातार।।सीमंधर०।।८।।

ॐ ह्री विद्यमान विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।

जल फल आठों दरब, अरघ कर प्रीति धरी है,

गणधर इन्द्रनहू तैं थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।।
सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।९।।

ॐ ह्री विद्यमान-विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०।

जयमाला

सोरठा—ज्ञान सुधाकर चंद, भविक खेतहित मेघ हो।
भ्रम-तम-भान अमंद तीर्थंकर बीसों नमौं।।

चौपाई।

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे, करमसुबाहु बाहुबल दारे।।१।।

जात सुजात सुकेवलज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं।
ऋषभानन ऋषिभानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं।।२।।

सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं।
वज्रधार भवगिरि वज्जर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं।।३।।

भद्रबाहु भद्रनि के करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता।
ईश्वर सब के ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं।।४।।

वीरसेन वीरं जग जाने, महाभद्र महाभद्र बखाने।
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजितवीरज बलधारी।।५।

धनुष पाँचसै काय विराजै, आयु कोडि पूरब सब छाजै।
समवसरण शोभित जिनराजा, भव-जल-तारनतरन जिहाजा।।६।।

सम्यकरत्नत्रय निधिदानी, लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी।
शतइन्द्रनि कर वंदित सोहैं, सुन नर पशु सबके मन मोहैं।।७।।

दोहा—तुमको पूजैं, बंदना करैं, धन्य नर सोय।
द्यानत सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुलपुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूपफलार्घकैः।
धवल मंगल-गानरवाकुले जिनगृहे जिनराजमहं यजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजात-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनन्तवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-चन्द्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-यशोधर-अजितवीर्येति विंशतिविद्यमान-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ

कृत्याकृत्रिम-चारु-चैत्य-निलयान् नित्यं त्रिलोकी-गतान्,
वंदे भावन-व्यंतर-द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्।
सद्गंधाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकै सद्दीपधूपै फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये।।१।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालय-सबंधि-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व

वर्षेषु-वर्षांतर-पर्वतेषु नदीश्वरे यानि च मंदरेषु।
यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानां।।२।।

अवनि-तल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वन-भवन-गतानां दिव्य वैमानिकानां।
इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवर-निलयानां भावतोअहं स्मरामि।।३।।

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा-क्षेत्रत्रये ये भवाः,
चन्द्राभोज-शिखण्डि-कण्ठ-कनक-प्रावृड्घना भाजिनाः।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षण-धरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धनाः,
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः।।४।।

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजत-गिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुण्डले मानुषांके।

इष्वाकारेजमाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके
ज्योतिर्लोकेअभिवन्दे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि।।५।।

द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविन्द्रनील-प्रभौ,
द्वौ बन्धूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ।
शेषा षोडश जन्म-मृत्यु-रहिता. सतप्त-हेम-प्रभाः,
ते सज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धि प्रयच्छन्तु नः ।।६ ।।

ॐ ह्री त्रिलोक-सबंधि कृत्याकृत्रिम-चैत्यालयेभ्योअर्घ्य निर्व०
(इच्छामि भक्ति बोलते समय पुष्पाजलि क्षेपण करना।)

इच्छामि भंते! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं,।
अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि।
जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि, तीसु विलोयेसु।
भवणवासिय वाणविंतर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति।

चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण।
दिव्वेण धूवेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण।
दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति।
अहमवि इह संतो तथ्य संताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि।
वंदामि णमस्सामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो।
सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं।
अथ पौर्वाह्निक-माध्यान्हिक- आपराह्निक- देववंदनायां।
पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थ भावपूजा-वंदना-स्तव-समेतं।
श्रीपंचमहागुरु-भक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।
तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

(यहा पर नौ बार णमोकार मत्र जपना चाहिये)

अथ सिद्ध पूजा (द्रव्याष्टक)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्म -स्वरावेष्टितं,
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुज-दलं तत्संधि-तत्वान्वितं।
अंतः पत्र-तटेष्वनाहत-युतं ह्रींकार-संवेष्टितं,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभ-कण्ठी-रवः।।१।।

ॐ **ह्रीं श्री** सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर **संवौषट्।**

ॐ **ह्री** सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।

ॐ **ह्री** श्रीसिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सिन्निहितो **भव भव** वषट।

निरस्त-कर्म-सम्बन्ध सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देअहं परमात्मानममूर्त्तमनुपद्रवम्।।१।।

(सिद्धयन्त्र की स्थापना)

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्म-गम्यं,
हान्यादि भावरहितं भव-वीत-कायम्।
रेवापगा-वर-सरो-यमुनोद्भवानां,
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्ध- चक्रम्।।१।।

ॐ **ह्री** सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल।।१।।

आनन्द-कन्द-जनकं घन-कर्म-मुक्तं,
सम्यक्त्व-शर्म-गरिमं जननार्तिवीतम्।
सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चन्दनानां,
गन्धैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्ध-चक्रम्।।२।।

ॐ **ह्रीं** सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने ससारतापविनाशनाय चन्दन नि०।।

सर्वावगाहन-गुणं सुसमाधि-निष्ठं,
सिद्धं स्वरूप-निपुणं कमलं विशालम्।

सौगन्ध्य-शालि-वनशालि-वराक्षतानां,
पुंजैर्यजे- शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ।। ३ ।।

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।।३।।

नित्यं स्वदेह-परिमाणमनादिसंज्ञ,
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्।
मन्दार-कुन्द-कमलादि-वनस्पतीनां,
पुष्पैर्यजे शुभतमै- र्वरसिद्धचक्रम् ।। ४ ।।

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्प नि०।।४।।

ऊर्द्ध-स्वभाव-गमनं सुमनो-व्यपेत,
ब्रह्मादि-बीज-सहितं गगनावभासम्।
क्षीरान्न-साज्य-वटकै रसपूर्णगर्भै-
नित्य, यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम् ।। ५ ।।

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।।५।।

आतक-शोक-भयरोग-मद प्रशान्त,
निर्द्वन्द्व-भाव-धरणं महिमा-निवेशम्।
कर्पूर-वर्ति-बहुभि कनकावदातै,
दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ।। ६ ।।

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०।।६।।

पश्यन्समस्त-भुवनं युगपन्नितान्त,
त्रैकाल्य-वस्तु-विषये निविड-प्रदीपम्।
सद्द्रव्यगन्ध-घनसार-विमिश्रितानां,
धूपैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्धचक्रम् ।। ७ ।।

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।।७।।

सिद्धसुरादिपति-यक्ष-नरेन्द्रचक्रै,
र्ध्येयं शिवं सकल-भव्य-जनैः सुवन्द्यम्।

नारिंग-पूग-कदली-फलनारिकेलैः,
सोअहं यजे वरफलैर्वरसिद्ध चक्रम्।।८।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।।८।।

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः संगं वरं चन्दन,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुक्तं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम्।।९।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं नि०।।९।।

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्म रूपं,
सूक्ष्म-स्वभाव-परम यदनन्तवीर्यम्।
कर्मौघ-कक्ष-दहनं सुख-शस्यबीजं,
वन्दे सदा निरुपमं वर-सिद्धचक्रम्।।१०।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपनिये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं नि०।।१०।।

त्रैलोक्येश्वर-वन्दनीय-चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं,
या नाराध्य निरुद्ध-चण्ड-मनसः सन्तोअपि तीर्थंकर
सत्सम्यक्त्व-विबोध-वीर्य्य विशदाअव्याबाधताद्यैर्गुणै,
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान्।।११।।

(पुष्पाअजलि क्षिपेत्)

जयमाला

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधाम विबोध-निधान विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।।१।।

विदूरित-संसृति-भाव निरंग, समामृत-पूरित देव विसंग।
अबंध कषाय-विहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह।।२।।

निवारित-दुष्कृतकर्म-विपाश, सदामल-केवल-केलि-निवास।
भवोदधि-पारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।३।।

अनंत-सुखामृत-सागर-धीर, कलंक-रजो-मल-भूरि समीर।
विखण्डित-कामविराम-विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह।।४।।

विकार विवर्जित तर्जितशोक, विबोध-सुनेत्र-विलोकित-लोक।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।५।।

रजोमल-खेद-विमुक्त विगात्र, निरतर नित्य सुखामृत-पात्र।
सुदर्शन राजित नाथ विमोह, प्रसीद सिसुद्धसमूह।।६।।

नरामर-वंदित निर्मल-भाव, अनत-मुनीश्वर पूज्य विहाव।
सदोदय विश्व महेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।७।।

विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकर सार वितंद्र।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।८।।

जरा-मरणोज्झित-वीत-विहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार।।
अचिन्त्य-चरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।९।।

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह।।१०।।

घत्ता

असम-समयसारं चारु-चैतन्य चिन्हं,
पर-परणति-मुक्तं पद्मनंदीन्द्र-वन्द्यम्।
निखिल-गुण-निकेत सिद्धचक्रं विशुद्ध,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम्।।१।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अडिल्ल छंद

अविनाशी अविकार परम-रस-धाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्धबुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो,
जगत-शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो।।१।।

ध्यान अग्निकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजन देव स्वरूपी ह्वै रहे।
ज्ञायक के आकार ममत्व निवारकैं,
सो परमातम सिद्ध नमूँ सिर नायकैं।।२।।

अविचल ज्ञान प्रकाशते, गुण अनन्त की खान।
ध्यान धरैं सो पाइए, परम सिद्ध भगवान।।३।।

अविनाशी आनन्द मय, गुण पूरण भगवान।
शक्ति हिये परमात्मा, सकल पदारथ ज्ञान।।४।।

इत्याशीर्वाद

सिद्धपूजा

भावाष्टक तथा भाषा द्रव्याष्टक

निज-मनोमणि-भाजन-भारया, समरसैक-सुधारस-धारया।
सकल-बोध-कलारमणीयक, सहज-सिद्धमह परिपूजये।।

मोहि तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभू।
जलसे पूंजू तोय, मेरो रोग निवारियो।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिने (सम्यक्त्व- ज्ञान- दर्शन वीर्यत्व- सूक्ष्मत्व- अवगाहनत्व- अगुरुलघुत्व- अव्याबाधत्व अष्टगुण-महिताय) जन्म- जरा- मृत्यु- विनाशनाय जल निर्वपामीनि स्वाहा।

सहज-कर्म-कलक-विनाशनै-रमल-भाव-सुवासित-चन्दनै ।
अनुपमान-गुणावलिनायक सहज-सिद्ध-मह परिपूजये।।

हम भव आतप माहिं, तुम न्यारे संसार से।
कीज्यो शीतल छांह, चन्दन से पूजा करूं।। चन्दन।।

सहज- भाव- सुनिर्मल- तदुलै, सकल- दोष- विशाल- विशोधनै ।
अनुपरोध- सुबोध- निधानक, सहज- सिद्धमह परिपूजये।।

हम अवगुण समुदाय, तुम अक्षयगुण के भरे।
पूजूं अक्षत ल्याय, दोष नाश गुण कीजियो।। अक्षत।।

समय- सार- सुपुष्प- सुमालया, सहज- कर्म- करेण **विशोधया।**
परम- योग- बलेन वशी- कृत, सहज- सिद्धमह **परिपूजये।।**

काम अग्नि है मोहि, निश्चय शीलस्वभाव तुम।
फूल चढ़ाऊं तोय, मेरो रोग निवारियो।। पुष्पं।।

अकृत- बोध- सुदिव्य- नैवेद्यकैर्विहित- जात- जरा- मरणांतकै।
निरवधि- प्रचुरात्म- गुणालय, सहज- सिद्धमह परिपूजये।।

मोहि क्षुधा दुख देत, ध्यान खड्ग करि तुम हती।
मेरी बाधा चूर, नेवज से पूजा करूं।। नैवेद्य।।

सहज- रत्नरुचि- प्रतिदीपकै रुचि- विभूतितम प्रविनाशनै।
निरवधि- स्वविकाश- प्रकाशनै, सहजसिद्धमह परिपूजये।।

मोह तिमिर हम पास, तुम पै चेतन ज्योति है।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तम निरवारियो।। दीप।।

निज- गुणाक्षय-रूप-सुधूपनै, स्वगुण-घाति-मलप्रविनाशनै।
विशद बोध-सुदीर्घ-सुखात्मक, सहज-सिद्धमह परिपूजये।।

अष्टकर्म वन जाल, मुक्ति माहिं स्वामि सुख करो।
खेऊं धूप रसाल, अष्ट कर्म निरवारियो।। धूप।।

परम-भाव-फलावलि-सम्पदा, सहज-भाव-कुभाव-विशोधया।
निज-गुणास्फुरणात्म निरंजन, सहज-सिद्धमह परिपूजये।।

अन्तराय दुख टाल, तुम अनन्त थिरता लही।
पूजूं फल दरशाय, विघ्न टाल शिवफल करो।। फल।।

नेत्रोन्मीलि-विकास-भावनिवहैरत्यन्त-बोधाय वै,
वार्गन्धाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकै सद्दीपधूपै फलै।
यश्चिन्तामणि-शुद्ध-भाव-परम-ज्ञानात्मकैरर्चयेत्,
सिद्ध स्वादुमगाध-बोध-मचल सचर्चयामो वय।।९।।

हममें आठों दोष, जजहुं अर्घ ले सिद्धजी।
दीजो वसु गुण मोय, कर जोड़े सेवक खड़ा।। अर्घं।।

सिद्ध-पूजा (भाषा)

अडिल्ल छद

अष्टकरमकरि नष्ट अष्ट गुण पायकैं,
अष्टम वसुधा माहिं विराजे जायकैं।
ऐसे सिद्ध अनंत महंत मनायकैं,
संवौषट् आह्वान करूं हरषायकैं।। १।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ! ठ ठ।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्!

छद त्रिभगी

हिमवनगत गगा आदि अभंगा, तीर्थ उतंगा सरवंगा।
आनिय सुरसंगा सलिल सुरगा, करि मन चंगा भरि भृंगा।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी अभिरामी।
शिवपुरविश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।।

ॐ ह्री श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्ध-चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जल निर्वपामीति स्वाहा।।

हरिचदन लायो कपूर मिलायो, बहु महकायो मन भायो।
जलसंग घसायो रंगसुहायो, चरन चढ़ायो हरषायो।। त्रिभु०।। २।।

ॐ ह्री श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने चदन निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

तंदुल उजियारे शशि-दुतिटारे, कोमल प्यारे अनियारे।
तुषखंड निकारे जलसु पखारे, पुंज तुम्हारे ढिग धारे।। त्रिभु०।। ३।।

ॐ ह्री श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

सुरतरुकी बारी, प्रीतिविहारी, किरिया प्यारी गुलजारी।
भरि कंचनथारी माल सँवारी, तुमपदधारी अतिसारी।।

त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी, अंतरयामी अभिरामी।
शिवपुर विश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

पकवान निवाजे, स्वाद विराजे, अमृत लाजे क्षुत भाजे।
बहु मोदक छाजे, घेवर खाजे, पूजन काजे करि ताजे।।त्रिभु०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

आपापर भासै ज्ञान प्रकाशै, चित्त विकासै तम नासै।
ऐसे विध खासे दीप उजासे धरि तुम पासे उल्लासे।।त्रिभु०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने फल निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

चुबक अलिमाला गंधविशाला, चंदनकाला गरुवाला।
तस चूर्ण रसाला करि ततकाला, अगनी ज्वाला में डाला।।त्रिभु०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने धूप निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

श्रीफल अतिभारा, पिस्ता प्यारा, दाख छुहारा सहकारा।
रितु रितु का न्यारा सत्फलसारा, अपरंपारा लै धारा।।त्रिभु०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने फल निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

जल फल वसुवृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा।
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बंदा।।त्रिभु०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहत-पराक्रमाय सर्व-कर्म-विनुर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

जयमाला

ध्यान दहन विधि-दारु दहि, पायो पद निरवान।
पंचभाव-जुत थिर थये, नमौं सिद्ध भगवान।।१।।

त्रोटकछद

सुख सम्यकदर्शन ज्ञान लहा, अगुरु-लघु सूक्षम-वीर्य महा।
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। १।।

असुरेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जजैं, भुवनेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजैं।
जर जामन-मर्ण मिटायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ३।।

अमलं अचलं अकलं अकुलं अछलं असलं अरलं अतुलं।
अरलं सरलं शिवनायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ४।।

अजरं अमरं अधरं सुधरं, अडरं अहरं अमरं अधरं।
अपरं असरं सब लायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ५।।

वृषवृंद अमंद न निंद लहै, निरदद अफंद सुछंद रहैं।
नित आनंदवृंद विधायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ६।।

भगवंत सुसत अनंत गुणी, जयवंत महंत नमंत मुनी।
जगजंतु तणे अघ-घायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ७।।

अकलंक अटंक शुभकर हो, निरडक निशंक शिवकर हो।
अभयंकर शंकर क्षायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ८।।

अतरंग अरंग असंग सदा, भवभंग अभंग उतंग सदा।
सरवंग अनंग नसायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ९।।

ब्रहमड जु मडलमडन हो, तिहुं दंड प्रचंड विहंडन हो।
चिदपिंड अखंड अकायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। १०।।

निरभोग सुभोग वियोग हरे, निरजोग अरोग अशोग धरे।
भ्रमभंजन तीक्षण सायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। ११।।

जय लक्ष अलक्ष सुलक्षक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षक हो।
पण अक्ष प्रतक्ष खपायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। १२।।

अप्रमाद अनाद सुस्वाद-रता, उनमाद विवाद विषाद-हता।
समता रमता अकषायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। १३।।

निरभेद अखेद अछेद सही, निरवेद अवेदन वेद नहीं।
सब लोक अलोक के ज्ञायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। १४।।

अमलीन अदीन अरीन हने, निजलीन अधीन अछीन बने।
जमको घनघात बचायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो।। १५।।

न अहार निहार विहार कबै, अविकार अपार उदार सबै।
जग-जीवन के मन-भायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। १६।।

असमंध अधद अरंध भये, निरबंध अखद अगंध ठये।
अमन अतन निरवायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो।। १७।।

निरवर्ण अकर्ण उधर्ण बली, दुख हर्ण अशर्ण सुशर्ण भली।
बलि मोह की फौज भगायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो।। १८।।

अविरूद्ध अक्रुद्ध अजुद्ध प्रभू, अति-शुद्ध प्रबुद्ध समृद्ध विभू।
परमातम पूरन पायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो।। १९।।

विररूप चिद्रूप स्वरूप द्युती, जसकूप अनूपम भूप भुती।
कृतकृत्य जगत्त्रय नायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो।। २०।।

सब इष्ट अभीष्ट विशिष्ट हितू, उतकिष्ट वरिष्ट गरिष्ट मितू।
शिव तिष्टत सर्व सहायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।। २१।।

जय श्रीधर श्रीकर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीभर श्रीझर हो।
जय रिद्धि सुसिद्धि-बढ़ायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो।। २२।।

दोहा—सिद्धि सुगुण को कहि सकै, ज्यों विलस्त नभमान।
'हीराचंद' तातैं जजै, करहु सकल कल्यान।। २३।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धिचक्राधिपतये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

सिद्ध जजैं तिनको नहिं आवै आपदा,
पुत्र पौत्र धन धान्य लहै सुख संपदा।।

इंद्र चंद्र धरणेद्र नरेंद्र जु होयकैं
जावैं मुक्ति मझार करम सब खोयकैं।। २४।।

(इत्याशीर्वादाय पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांतिकुंथु अरह मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।।

ॐ ह्री वृषभादि-वीगन्त-चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर
ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरात-चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ ठ!
ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरात-चतुर्विंशति-जिन समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्!

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा।।
चौबीसौं श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही।। १।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जल नि ।।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी।। चौ० २।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातेभ्यो भव-ताप-विनाशनाय चन्दन नि०।।

तंदुल सित सोम समान,. सुन्दर अनियारे।
मुकताफल की उनमान, पुंज धरौं प्यारे।। चौ० ३।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।।

बरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरौं गुणमंड, काम-कलंक हरे।। चौ० ४।।

ॐ ह्री वृषभादि-वीरातेभ्यो कामबाणविध्वसनाय पुष्प नि०।।

मन मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने।। चौ० ५।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि०

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे।। चौ० ६।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीप नि०।।

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
मिस धूप करम जरिजांहि, तुमपद सेवत हों।। चौ० ७।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।।

शुचि-पक्व-सरस-फल सार,सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो।। चौ० ८।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फल नि०।।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसौं श्रीजिनचंद, आनन्दकंद सही।
पदजजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।। ९।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरातचतुर्विशति तीर्थकरेभ्यो अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ नि०।।

जयमाला

श्रीमत तीरर्थनाथ पद, माथ नाय हितहेत।
गाऊ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत।। १।।

छन्द घत्तानन्द

जय भवतम भंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा।
शिव मग परकाशक, अरिगण नाशक चौबीसों जिनराज वरा।। २।।

छन्द पद्धरी

जयरिषभदेव ऋषिगन नमंत। जयअजित जीतवसुअरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर। जय अभिनंदन आनंदपूर।। ३।।

जय सुमति सुमतिदायक दयाल। जयपद्म पद्मद्युति तनरसाल।
जय जय सुपास भवपास नाश। जय चंद चंदतनद्युति प्रकाश।। ४।।

जय पुष्पदंत द्युतिदंत सेत। जय शीतल शीतल गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज। जय वासवपूजित वासुपुज्ज।। ५।।

जय विमल विमलपद देनहार। जय जय अनंत गुनगन अपार।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत। जय शांति शांति पुष्टीकरेत।। ६।।

जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय। जय अरहजिन वसुअरि छ्य करेय।
जय मल्लिमल्ल हतमोहमल्ल। जय मुनिसुव्रत व्रतशल्लदल्ल।। ७।।

जय नमि नित वासवनुत सपेम। जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथ नाथ। जय वर्द्धमान शिवनगर साथ।। ८।।

छन्द घत्तानन्द

चौबीस जिनंदा आनंदकंदा, पापनिकंदा सुखकारी।
तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा, वासव-वंदा हितधारी।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-चतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसौं जिनराजवर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै।।

इत्याशीर्वाद

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पुजूँ भाव सों।।१।।

अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।२।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुं भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।३।।

त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूँ।।४।।

कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।५।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जपि होय पति शिवगेह के।।६।।

दोहा—जल गंधाक्षत पुष्प चरु दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूं बहु विधि भक्ति बढ़ाय।।७।।

ॐ ह्री महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय-महार्घ

प्रभूजी अष्ट द्रव्यजु ल्यायो भावसों,
प्रभूजी था का हरष हरष गुण गाऊं महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे।।
प्रभू जी थांकी तो पूजा भवि जन नित करै,
जाका अशुभ कर्म कट जाय महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे।।१।।

प्रभू जी थांकी तो पूजा भवि जीव जो करे,
सो तो सुरग मुकतिपद पावे महाराज। २।।

प्रभूजी इन्द्र धरणेंद्रजी सब मिलि गाय,
प्रभू का गुणां को पार न पाइया।

प्रभूजी थे छो जी अनन्ता जी गुणवान,
थाने तो सुमरया सकट परिहरै।
प्रभूजी थे छो जी साहब तीनों लोक का
जिनराय मैं छू जी निपट अज्ञानी महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। ३।।

प्रभूजी थाका तो रूपजी निरखन कारणे,
सुरपति रचिया छै नयन हजार महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। ४।।

प्रभूजी नरक निगोद मे भव भव मैं रुल्यो,
जिनराय सहिया छै दुःख अपार महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। ५।।

प्रभूजी अब तो शरणोजी थारो मैं लियो,
किस विधि कर पार लगावो महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। ६।।

प्रभूजी म्हारो तो मनडो थामेजी घुल रह्यो,
ज्यों चकरी विच रेशम की डोरी महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। ७।।

प्रभूजी तीन लोक में है जिन-बिम्ब,
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्या महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। ८।।

प्रभूजी जल चदन अक्षत पुष्प नैवेद,
दीप धूप फल अर्घ चढ़ाऊ महाराज,
जिन चैत्यालय महाराज, सब चैत्यालय जिनराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। ९।।

प्रभूजी अष्ट दरब जु ल्याओ बनाय,
पूजा रचाऊ श्रीभगवान की महाराज।।
यो मन हरख्यो प्रभू थाकी पूजा जी रे कारणे।। १०।।

ॐ ह्री भावपूजा भाववदना त्रिकालपूजा त्रिकालवदना करे करावै भावना भावै श्री अरहतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पचपरमेष्ठिभ्यो नम । प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नम । दर्शनविशुद्धआदि-षोडशकारणेभ्यो नम । उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिक धर्मेभ्यो नम । सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्—चारित्रेभ्यो नम । जलके विषैं थलके विषैं आकाशके विषैं गुफाके विषैं पहाडके विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नम । विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थकरेभ्यो नम । पाच भरत पाच ऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नम । नदीश्वर द्वीपसम्बन्धि बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नम । पचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन-चैत्यालयेभ्यो नम । सम्मेदशिखर कैलाश चपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नम । जैनबद्री मूडबद्री देवगढ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही तारगा चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पदमपुरी तिजारा आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नम । श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नम ।

ॐ ह्री श्रीमत भगवन्त कृपावन्त श्रीवृषभादि-महावीर पर्यन्त चतुर्विशति तीर्थकर-परमदेव आद्याना आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे मासे शुभे पक्षे शुभे वासरे मुनि आर्यिकाना श्रावकश्राविकाना क्षुल्लकक्षुल्लिकाना सकलकर्मक्षयार्थ (जलधारा) अनर्घपदप्राप्तये महार्घ सम्पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

भावपूजावदनास्तवसमेत श्रीपचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्। (यहा पर कायोत्सर्ग पूवक नौ बार णमोकारमत्र जपना चाहिये।)

शान्ति-पाठ

(जुगल किशोर)

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपती चक्री करें।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथाविधि पूजा करें।।
धन क्रिया ज्ञान रहित न जानें रीति पूजन नाथ जी।
हम भक्ति वश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी।।१।।

दुखहरण मंगल करण आशा भरन जिन पूजा सही।
यों चित्त में सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही।।
तुम सारिखे दातार पाए काज लघु जाचूं कहा।
मुझ आप सम कर लेहु स्वामी यही इक वांछा महा।।२।।

संसार भीषण विपिन में वसुकर्म मिल आतापियो।
तिस दाह आकुल चित्त है शांति थल कहुं ना लियो।।
तुम मिले शांतिस्वरूप शांतिकरण समरथ जगपती।
वसु कर्म मेरे शांत करदो शांतिमय पंचम गती।।३।।

जबलौं नहीं शिव लहूँ तबलौं देहु यह धन पावना।
सतसंग शुद्धाचरण श्रुत-अभ्यास आतम भावना।।
तुम बिन अनंतानंत काल गयौ रुलत जगजाल में।
अब शरण आयो नाथ दुहु कर जोड़ नावत भाल मैं।।४।।

दोहा—करप्रमाण के मान तैं गगन नपै किहि भंत।
त्यौं तुम गुण वर्णन करत कवि पावै नहिं अंत।।
(यहाँ नौ बार णमोकार मत्र जपना चाहिए।)

शान्ति-पाठ

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी। शील-गुणव्रत-संयमधारी।।
लखन एक सौ आठ विराजैं। निरखत नयन कमलदल लाजैं।।
पंचम चक्रवर्तिपद धारी। सोलम तीर्थंकार सुखकारी।
इंद्र नरेंद्र पूज्य जिन गायक। नमो शांतिहित शांति विधायक।।
दिव्य विपट पहुपनकी वरषा। दुंदुभि आसन वाणी सरसा।।
छत्र चमर भामंडल भारी। ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।
शांति जिनेश शांति सुखदाई। जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।।
परम शांति दीजै हम सबको। पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको।।

वसततिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,

इद्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शातिनाथ वरवश जगत्प्रदीप,।
मेरे लिये करहि शाति सदा अनूप।।

इन्द्रवज्रा

सपूजकोंको प्रतिपालकोंको यतीनको औ यतिनायकोंको।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले कीजै सुखी हे जिन शातिको दे।।

स्रग्धरा छन्द

होवै सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै तिलभर न रहै व्याधियोका अदेशा।।
होवै चोरी न जारी सुसमय बरतै हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारै जिनवर-वृषको जो सदा सौख्यकारी।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश करि पायो केवलराज।
शाति करो सब जगतमे वृषभादिक जिनराज।।

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रोका हो पठन सुखदा लाभ सत्सगतीका।
सद्वृत्तोका सुजस कहके दोष ढाकूँ सभीका।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

आर्य्या

तव पद मेरे हियमे मम हिय तेरे पुनीत चरणो में।
तब लौं लीन रहौ प्रभु जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रासे दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सब करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुखसे।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर। पाऊँ तब चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी।।

विसर्जन पाठ

(जुगल किशोर)

सम्पूर्ण विधि कर वीनऊं इस परम पूजन ठाठ में।
अज्ञानवश शास्त्रोक्त विधि तें चूक कीनों पाठ में।।
सो होहु पूर्ण समस्त विधि-वत तुम चरण की शरणतैं।
बंदौं तुम्हें कर जोरिकें उद्धार जामन मरणतैं।।१।।

आह्वानन स्थापन तथा सन्निधिकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन यथाविधि जानूं नहीं गुणखान जी।।
जो दोष लागौ सो नशौ सब तुम चरण की शरणतैं।
बंदौं तुम्हें कर जोरि कर उद्धार जामन मरणतैं।।२।।

तुम रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भाव में।
विधि यथाक्रम निजशक्ति सम पूजन कियो अतिचाव में।।
करहूं विसर्जन भाव ही मे तुम चरण की शरणतें।
बंदौं तुम्हें कर जोरि कर उद्धार जामन मरणतें।।३।।

दोहा—तीन भुवन तिहू काल में, तुमसा देव न और।
सुख कारण सङ्कट हरण, नमो 'जुगल' कर जोर।।

इत्याशीर्वाद ।

विसर्जन

बिन जाने वा जानके रही टूट जो कोय।
तुम प्रसादतैं परम गुरु सो सब पूरन होय।।१।।

पूजनविधि जानूँ नहीं नहि जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूं नहीं क्षमा करहु भगवान।।२।।

मन्त्रहीन धनहीन हूँ क्रियाहीन जिनदेव।
क्षम करहु राखहु मुझे देहु चरणकी सेव।।३।।

आये जो जो देवगण पूजे भक्तिप्रमान।
ते अब जावहु कृपाकर अपने अपने थान।।

श्री आदिनाथ जिनपूजा

नाभिराय मरुदेविके नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वारथसिद्धतैं आप पधारे, मध्यम लोक मांहिं जिनराज।।
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिलकरके, अपने कर पूजें प्रभु पांय।।

.ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट।
ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढाऊँ प्रभुजी के पाय।।
श्रीआदिनाथ के चरणकमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मै पूजो प्रभु पाय।।१।।

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०

मलियागिरि चदन दाह निकदन, कचन भारी में भर ल्याय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, भवआताप तुरत मिटजाय।श्री०।

ओ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय ससारतापविनाशनाय चदन नि०

शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, अक्षय पदको तुरत उपाय।श्री०।

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत नि०

कमल केतकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मँगाय।
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, कामबाण तुरत नसिजाय।श्री०।

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्प नि०

नेवज लीना तुरत रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, जिन गुण गावत मन हरषाय।।

श्री आदिनाथके चरण कमलपर, बलिबलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०

जगमग जगमग होत दशौंदिस, ज्योति रही मंदिर में छाय।
श्रीजीके सम्मुख करत आरती मोह तिमिर नासे दुखदाय।श्री०।

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०

अगर कपूर सुगंध मनोहर चंदन कूट सुगंध मिलाय।
श्रीज़ीके सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरें चहुँगति मिटिजाय।श्री०।

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति०

श्रीफल और बदाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय।
महामोक्षफल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पाय।श्री०।

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति०

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।श्री०।।

ॐ ह्री श्रीआदिनार्थजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति०

पंचकल्याणक

दोहा

सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय।
दोज असित आषाढ़ की, जजूँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्री श्रीआषाढ-कृष्ण-द्वितीयाया गर्भ-कल्याणक-प्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी नौमी दिना, जन्म्यां श्री भगवान।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजों धरि ध्यान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्या जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घं।

तृणवत् ऋधि सब छांडिके तप धारयो वन जाय।
नौमी चैत्र असेत की जजूँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णनवम्या तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घं।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों यह थान।।

ॐ ह्री फाल्गुणकृष्ण-एकादश्या ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिजिनाय अर्घं।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान्
भवि जीवों को बोधिके, पहुँचे शिवपुर थान।।

ॐ ह्री माघकृष्णचतुर्दश्या मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घं।

जयमाला

आदीश्वर महाराज, मैं विनती तुम से करूँ,
चारों गति के मांहि, मैं दुख पायो सो सुनो।
अष्ट कर्म मैं एकलो यह दुष्ट महादुख देत हो,
कबहूं इतर निगोद में मोकूं पटकत करत अचेत हो।।
म्हारी दीनतनी सुन वीनती।।१।।

प्रभु कबहूंक पटक्यो नरक में, जठे जीव महादुख पाय हो।
निष्ठुर निरदई नारकी, जठे करत परस्पर घात हो।। म्हारी०।।२।।

प्रभु नरकतणा दुख अब कहूं जठे करत परस्पर घात हो।
कोइयक बांध्यो खंभस्यों पापी दे मुद्गर की मार हो।।
कोई इक काटें करोंतसों, पापी अंगतणी दोय फाड़ हो।। म्हारी।।३।।

प्रभु इहविधि दुख भुगत्या घणां, फिर गति पाई तिरियंच हो।
हिरण बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हो।
पकड़ कसाई जाल में, पापी काट काट तन खाय हो।। म्हारी।।४।।

प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, जापै लादियो भार अपार हो।

नहीं चाल्यो जब गिर पर्यो, पापी दे सोटनकी मार हो।। म्हारी०।।५।।

प्रभु कोइयक पुण्य संयोग सूं, मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो।
देवांगना संग रम रह्यो जठे भोगनि को परकास हो।। म्हारी०।।६।।

प्रभु संग अप्सरा रम रह्यो, कर कर अति अनुराग हो।
कबहुँक नंदन वनविषैं, प्रभु कबहुँक वनगृह माहिं हो।। म्हारी०।।७।।

प्रभु यहि विधि काल गमायके, फिर माला गई मुरझाय हो।
देख थिति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो।
सोच करत तन खिर पडयो फिर उपज्यो गरभ में जाय हो।। म्हारी०।।८।।

प्रभु गर्भतणा दुख अब कहूं, जठे सकुडाई की ठौर हो।
हलन चलन नहिं कर सक्यो जठे सघन कीच घनघोर हो।। म्हारी०।।९।।

माता खावे चरपरो फिर लागे तन सताप हो।
प्रभु जो जननी तातो भखे, फेर उपजै तन संताप हो।। म्हारी०।।१०।।

औधे मुख झूलो रह्यो फेर निकसन कौन उपाय हो।
कठिन कठिन कर नीसरो, जैसे निसरै जन्त्री में तार हो।। म्हारी०।।११।।

प्रभु निकसतही धरत्या पड्यो फिर लागी भूख अपार हो।
रोय-रोय बिलख्यो घनो, दुख वेदनको नहिं पार हो।। म्हारी०।।१२।।

प्रभु दुख मेटन समरथ घनी, यातैं लागूं तिहारे पांय हो।
सेवक अर्ज करै प्रभु, मोकूं भवोदधि पार उतार हो।
म्हारी दीनतनी सुन बिनती।।१३।।

दोहा

श्रीजीकी महिमा अगम है, कोई न पावै पार।
मैं मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करे विस्तार।।

ॐ ह्री श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

बिनती ऋषभ जिनेशकी, जो पढसी मन ल्याय।
सुरगों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय।।

श्री अजितनाथ पूजा

छंद

त्याग वैजयन्त सार सारधर्मके अधार,
जन्मधार धीर नग्र सुष्टु कौशलापुरी।।
अष्टदुष्टकार मातु वैजयाकुमार,
आयु लक्षपूर्व दक्ष है बहत्तरै पुरी।।
ते जिनेश श्री महेश शत्रुके निंकदनेश,
अत्र हेरिये सुदृष्टि भक्तपै कृपा पुरी।।
आय तिष्ठ इष्टदेव मैं करों पदाब्जसेव,
परमशर्मदाय पाय आय शर्म आपुरी।।१।।

ॐ ह्री श्रीअजितनाथ जिन अवतर! अवतर! सवोषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छन्द त्रिभगी अनुप्रासक।

गंगाहृदपानी निर्मल आनी, सौरभसानी सीतानी।
तसु धारत धारा तृषानिवारा, शांतागारा सुखदानी।।
श्रीअजित जिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं।।१।।

ॐ ह्री श्रीअजितजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जल नि० स्वाहा।।

शुचि चंदन बावन ताप मिटावन, सौरभ पावन घसि ल्यायो।
तुव भवतपभंजन हो शिवरंजन, पूजनरंजन मैं आयो।श्री० ।।२।।

ॐ ह्री श्रीअजितजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दन नि० स्वाहा।।

सितखंडविवर्जित निशिपति तर्जित, पुंज विधर्ज्जित तंदुलको।
भवभावनिखर्जित शिवपदसर्जित, आनंदभर्जित दंदलको। श्री०।।३।।

ॐ ह्री श्रीअजितजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।

मनमथमदमथन धीरजग्रंथन, ग्रंथनिग्रंथन ग्रंथपति।
तुअपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती। श्री० ।।४।।

ॐ ह्री श्रीअजितजिनेन्द्राय कामवाणबिध्वसनाय पुष्प नि० स्वाहा।।

आकुलकुलवारन थिरताकारण, छुधाविदारन चरु लायो।
षटरसकर भीने अन्न नवीने, पूजन कीने सुखपायो। श्री० ।।५।।

ॐ ह्री श्रीअजिनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० स्वाहा।।

दीपकमनिमाला जोत्तउजाला, भरि कनथाला हाथलिया।
तुम भ्रमतमहारी शिवसुखकारी केवलधारी पूज किया। श्री०।।६।।

ॐ ह्री श्रीअजितजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि० स्वाहा।।

अगरादिक चूरन परिमलपूरन खेवत क्रूरन कर्म जरैं।
दशहूंदिश धावत हर्ष बढ़ावत अलि गुणगावत नृत्य करैं। श्री०।।७।।

ॐ ह्री श्रीअजितजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि० स्वाहा।।

बादाम नरंगी श्रीफल चंगी आदि अभंगीसौं अरचौं।
सब विघनविनाशै सुखप्रकाशै आतम भासै भौविरचौं। श्री०।।८।।

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये नि० स्वाहा।।

जलफल सब सज्जे बाजत बज्जे, गुनगनरज्जे मनमज्जे।
तुअपद जुगमज्जे सज्जन जज्जे ते भवभज्जे निजकज्जे। श्री०।।९।।

ॐ ह्री श्रीअतिजजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० स्वाहा।।

पंचकल्याणक

छन्द द्रुतमध्यक १६ मात्रा

जेठ असेत अमावशि सोहै। गर्भदिना नँद सो मनमोहै।।
इंद फनिंद जजे मनलाई। हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई।।१।।

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णामावस्याया गर्भमगलप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

माघसुदी दशमी दिन जाये। त्रिभुवनमें अति हरष बढ़ाये।।
इन्दफनिंद जजैं तित आई। हम इत सेवत हैं हुलशाई।।२।।

ॐ ह्री माघशुक्लदशमीदिने जन्ममगलमंडिताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ नि० स्वाहा।।

माघसुदी दशमी तप धारा। भव तन भोग अनित्य विचारा।।
इन्द फनिंद जजैं तित आई। हम इत सेवत हैं सिरनाई।।३।।

ॐ ह्री माघशुक्लदशमीदिने दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ नि० स्वाहा।।

पौषसुदी तिथि चौथ सुहायो। त्रिभुवनभान सु केवल जायो।।
इन्द फनिंद जजै तित आई। हम पद पूजत प्रीति लगाई।।४।।

ॐ ह्री पौषशुक्लचतुर्थीदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ नि० स्वाहा।।

पंचमि चैतसुदी निरवाना। निजगुनराज लियो भगवाना।।
इन्द फनिंद जजैं तित आई। हम पद पूजन हैं गुनगाई।।५।।

ॐ ह्री चैतशुक्लपचमीदिने निर्वाणमगलप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ नि० स्वाहा।।

जयमाला

दोहा—अष्ट दुष्टको, नष्ट करि इष्टमिष्ट निज पाय।
शिष्ट धर्म भाख्यो हमें, पुष्ट करो जिनराय।।१।।

छन्द पद्धरी १६ मात्रा।

जय अजित देव तुअ गुन अपार। पै कहूँ कछुक लघु बुद्धि धार।।
दश जनमतअतिशय बल अनन्त। शुभलच्छन मधुरवचन भनंत।।२।।
संहनन प्रथम मलरहित देह। तनसौरभ शोणित स्वेत जेह।।
वपु स्वेदबिना महरूप धार। समचतुर धरें संठान चार।।३।।

दश केवल गमनअकाशदेव। सुरभिच्छ रहै योजन सतेव।।
उपसर्गरहित जिनतन सु होय। सब जीव रहित बाधा सु जोय।।४।।

मुख चारि सरबविद्याअधीश कवलाअहार वर्जित गरीश।।
छायाबिनु नख कच बढै नाहिं। उन्मेष टमक नहिं भ्रकुटि माहिं।।५।।

सुरकृत दशचार करों बखान। सब जीवमित्रता भावजान।।
कंटकबिन दर्पणवत सुभूम। सब धान वृच्छ फल रहै भूम।।६।।

षटरितुके फूल फले निहार। दिशि निर्मल जिय आनन्दधार।।
जहं शीतल मंद सुगन्ध वाय। पदपंकजतल पंकज रचाय।।७।।

मलरहित गगन सुरजय उचार। वरषा गन्धोदक होत सार।।
वर धर्मचक्र आगें चलाय। वसुमंगलजुत यह सुर रचाय।।८।।

सिंहासन छत्र चमर सुहात। भामंडल छवि वरनी न जात।।
तरु उच्च अशोक रु सुमनवृष्टि धुनिदिव्य और दुन्दुभी मिष्ट।।९।।

दृग ज्ञान शर्म वीरज अनन्त। गुण छियालीस इम तुम लहन्त।।
इन आदि अनन्ते सुगुनधार। वरनत गनपति नहिं लहत पार।।१०।।

तब समवसरनमँह इन्द्र आय। पद पूजत बसुविधि दरब लाय।।
अति भगति महित नाटक रचाय। ताथेइ थेइ थेइ धुनि रही छाय।।

पग नूपुर झननन झनननाय। तननननन तननन तान गाय।।
घनननन नन घण्टाघनाय। छम छम छम छम घुंघरूबजाय।।१२।।

दृम दृम दृम दृम दृम मुरज ध्यान। संसाग्रदि सरंगीसुर भरत तान।।
झट झट झट अटपटनटत नाट। इत्यादि रच्योअद्‌भुत सुठाद।।१३।।

पुनि वन्दि इन्द थुति नुति करन्त। तुम हो जगमें जयवन्त सन्त।।
फिर तुम बिहार करि धर्मवृष्टि। सब जोग निरोध्यो परम इष्ट।।

सम्मेदथकी लिय मुकति थान। जय सिद्धशिरोमन गुनानिधान।।
वृन्दावन बन्दत बारबार। भवसागरतें मोहि तार तार।।१५।।

छन्द घत्तानन्द

जय अजित कृपाला गुनमणिमाला, संजमशाला बोधपती।
वर सुजसउजाला हीरहिमाला, ते अधिकाला स्वच्छ अती।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि० स्वाहा।।

छन्द मदावलिप्तकपोल

जो जन अजित जिनेश जजैं हैं, मनवचकाई।
ताकों होय अनन्द ज्ञान सम्पत्ति सुखदाई।।
पुत्र मित्र धन्यधान्य सुजस त्रिभुवनमहँ छावै।
सकल शत्रु छय जाय अनुक्रमसों शिव पावै।।१७।।

इत्याशीर्वाद

श्रीसंभवनाथ पूजा

छन्द मदावलिप्तकपोल

जय संभव जिनचन्द सदा हरिगनचकोरनुत,
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारिसुत।
तजि ग्रीवक लिय जन्मनगर सावत्री आई,
सो भवभंजनहेत भगत पर होहु सहाई।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरातर। सवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ।
ॐ ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सिन्नहितो भव भव। वषट्।

अष्टक

(छन्द चौबोला तथा अनेक रागोमे गाया जाता है)

मुनिमनसम उज्जल जल लेकर, कनक कटोरी में धारा।
जनमजरामृतु नाशकरन कों, तुम पदतर ढारों धारा।।
संभवजिन के चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै।
निजनिधि ज्ञानदरशसुखवीरज, निराबाध भविजन पावै।।१।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि० स्वाहा।।

तपतदाह कों कन्दन चंदन मलयागिरि को घसि लायो।
जगवंदन भौफंदनखंदन समरथ लखि शरनै आयौ ।।सं०।।२।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाम चन्दन नि० स्वाहा।।

देवजीर सुखदास कमलवासित, सित सुन्दर अनियारे।
पुंज धरों इन चरनन आगे, लहों अखयपदकों प्यारे।।सं०।।३।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।

कमल केतकी बेल चमेली, चंपा जूही सुमन वरा।
तासों पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वंसकरा।।सं०।।४।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्प नि० स्वाहा।।

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना।
तासों पदश्रीपतिको पूजत, क्षुधारोग ततकाल हना।।सं०।।५।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय क्षुधादिरोगविनाशनाय नेवेद्य नि० स्वाहा।।

घटपटपरकाशक भ्रमतमनाशक, तुमढिग ऐसो दीप धरों।
केवलजोत उदोत होहु मोहि, यही सदा अरदास करों।।सं०।।६।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशाय दीप नि० स्वाहा।।

अगर तगर कृष्नागर श्रीखंडादिक चूर हुतासनमें।
खेवत हों तुम चरनजलज ढिग, कर्म छार जरि ह्वै छनमें।।सं०।।७।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि० स्वाहा।।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाख रमैं।
लै फल प्राशुक पूजों तुमपद देहु अखयपद नाथ हमैं।।सं०।।८।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि० स्वाहा।।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया।
तुमको अरपों भाव भगतिधर, जै जै जै शिवरमनिपिया।।सं०।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीसभवजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ नि० स्वाहा।

पंच-कल्याण

छन्द हसी मात्रा १५

मातागर्भविषै जिन आय। फागुनसित आठैं सुखदाय।।
सेयो सुरतिय छप्पन वृन्द। नानाविधि मैं जजौं जिनन्द।।१।।

ॐ ह्री फाल्गुणशुक्लाष्टम्या गर्भमगलप्राप्तये श्रीसभवजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

कार्तिक सित पूनम तिथि जान। तीनज्ञानजुत जनम प्रमाण।
धरि गिरिराज जजे सुरराज। तिन्हें जजो मैं निजहितकाज।।२।।

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लपूर्णिमाया जन्ममगलप्राप्तये श्रीसभवजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

मगसिर सित पून्यों तप धार। सकल संग तजि जिन अनगार।।
ध्यानादिक बल जीते कर्म। चर्चों चरन देहु शिवकर्म।।३।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षपूर्णिमाया दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीसभवजिनेन्द्राय अर्घ्य नि० स्वाहा।।

कातिक कलि तिथि चौथ महान। घाति घात लिय केवलज्ञान।।
समवसरनमहँ तिष्ठे देव। तुरिय चिन्ह चर्चों वसुभेव।।४।।

ॐ ह्री कार्तिककृष्णचतुर्थी-दिने ज्ञानसाम्राज्यमगलप्राप्तये श्रीसभवजि-नेन्द्राय अर्घं०

चैतशुक्ल तिथि षष्ठी चोख। गिरसम्मेदतैं लीनों मोख।
चार शतक धनु अवगाहना। जजों तासपद थुतिकर घना।।५।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लषष्ठीदिने निर्वाणकल्याणकप्राप्तये श्रीसभवजिनेन्द्राय अर्घं नि० स्वाहा।।

जयमाला

दोहा—श्रीसंभव के गुन अगम, कहि न सकत सुरराज।।
मैं वशभक्ति सुधीठ ह्वै, विनवों निजहित काज।। १ ।।

छन्द मोतियदाम।

जिनेश महेश गुणेश गरिष्ट। सुरसुरासेवित इष्ट वरिष्ठ।।
धरे वृषचक्र करे अघ चूर। अतत्वछपातममर्द्दनसूर।।२।।

सुतत्वप्रकाशन शासन शुद्ध। विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध।।
दयाततरुर्पनमेघ महान। कुनयगिरिगजन बज्र समान।।३।।

सुगर्भरु जन्ममहोत्सवमाहि। जगज्जन आनन्दकन्द लहाहि।।
सुपूरब साठहि लच्छ जु आय। कुमार चतुर्थम अश रमाय।।४।।

चवालिस लाख सुपूरब एव। निकटक राज कियो जिनदेव।।
तजे कुछ कारन पाय सु राज। धरे व्रत सजम आतमकाज।।५।।

सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान। धरे बनमें निज आतम ध्यान।।
किया चवघातिय कर्म विनाश। लयो तब केवलज्ञान प्रकाश।।६।।

भई समवसृत ठट अपार। खिरै धुनि झेलहि श्रीगनधार।।
भने पटद्रव्यतने विसतार। चहूँ अनुयोग अनेक प्रकार।।७।।

कहैं पुनि त्रेपन भावविशेष। उभै विधि हैं उपशम्य जु भेष।।
सुसम्यकचारित भेदस्वरूप। भये इमि छायक नौ सुअनूप।।८।।

दृगौ बुधि सम्यक चारितदान। सुलाभ रु भोगुपभोगप्रमाण।।
सुवीरज सजुत ए नव जान। अठार छयोपशम इम मान।।९।।

मति श्रुत औधि उभै विधि जान। मन परजै चखु और प्रमाण।।
अचक्खु तथाविधि दान रु लाभ। सुभोगुपभोग रु वीरजसाभ।।१०।।

व्रताव्रत सजम और सुधार। धरे गुन सम्यक चारित भार।।
भए वसु एक समापत येह। इकीश उदीक सुनो अब जेह।।११।।

चहूँ गति चारि कषाय तिवेद। छलेश्यय और अज्ञानविभेद।।
असजमभाव लखो इसमाहि। असिद्धित और अतत्त कहाहि।।१२।।

भये इकवीस सुनो अब और। सुभेद्वत्रिय परिनामिक ठौर।।
सुजीवित भव्यत और अभव्व। तरेपन एम भने जिन सव्व।।१३।।

तिन्हों मँह केतक त्यागनजोग। कितेक गहेतैं मिटैं भवरोग।।
कह्यो इन आदि लह्यो फिर मोख। अनन्तगुनातममंडित चोख।।१४।।

जजों तुम पाय जपौं गुनसार। प्रभु हमको भवसागर तार।।
गही शरनागत दीनदयाल। बिलम्ब करो मति हे गुनमाल।।१५।।

घत्ता—जै जै भव भंजन जनमनरंजन, दयाधुरंधर कुमतिहरा।।
वृन्दावनवंदत मन आनन्दित, दीजै आतमज्ञान वरा।।१६।।

ॐ ह्री श्रीसभवजिनेन्द्राय महार्घं नि० स्वाहा।।

छन्द अडिल्ल

जो बांचै यह पाठ सरस संभवतनों।
सो पावैं धनधान्य सरस सम्पति घनों।।
सकलपाप छै जाय सुजस जगमें बढ़ैं।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढ़ैं।।१७।।

इत्याशीर्वाद

श्री अभिनन्दनजिन पूजा

छन्द—अभिनन्दन आनन्दकंद, सिद्धारथनन्दन।
संवरपिता दिनन्द चन्द, जिहिं आवत बन्दन।।
नगर अयोध्या जनम इन्द, नागिंद जु ध्यावैं।
तिन्हें जजनके हेतु थापि, हम मंगल गावैं।।१।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छन्द गीता, हरिगीता तथा रूपमाला

पदमद्रहगत गंगचंग, अभंग धार सुधार है।
कनकमणिगनजड़ित झारी, द्वार धार निकार है।।

कलुषतापनिकंद श्रीअभिनन्द, अनुपम चन्द है।
पदवंद वृन्द जजे प्रभू, भवदंदफंद निकंद है।।१।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०।।

शीतचन्दन कदलिनन्दन, सुजलसंग घसायकैं।
हो सुगंध दशोंदिशामें, भ्रमैं मधुकर आयकैं।। क०।। २।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दन नि०।।

हीरहिमशशिफेन मुक्ता, सरिस तंदुल सेत हैं।
तासको ढिग पुंज धारों, अक्षयपदके हेत हैं।। क०।। ३।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।।

समरसुभटनिघटन कारन, सुमन सुमनसमान हैं।
सुरभितैं जापै करैं झंकार, मधुकर आन हैं।। क०।। ४।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्प नि०।।

सरस ताजे नव्य गव्य मनोज्ञ, चितहर लेयजी।
छुधाछेदन छिमाछितिपतिके, चरन चरयेयजी।। क०।। ५।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नेवेद्य नि०।।

अततलतममर्दन किरनवर, बोधभानुविकास है।
तुम चरनढिग दीपक धरों,
मोहि होहु स्वपर प्रकाश है।। क० ।।६।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०।।

भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगिनि जराय है।
सब करमकाष्ठ सुकाष्ठमैं मिस, धूमधूम उड़ाय है।। क०।। ७।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।।

आम निंबु सदा फलादिक, पक्व पावन आनजी।
मोक्षफलके हेत पूजों, जोरिकै जुगपान जी।। क०।। ८।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।।

अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर सुजस गाय रसाल ही।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही।। कं० ।। ९।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०।।

पंचकल्याणक

छन्द हरिद

शुकलछट्ट वैशाखविषै तजि, आये श्री जिनदेव।
सिद्धारथमाताके उरमें, करै सची शुचि सेव।
रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेक प्रकार।
ऐसे गुननिधिको मैं पूजौं, ध्यावों बारम्बार।।१।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्लषष्ठीदिने गर्भमगलप्राप्ताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।

माघशुकलतिथि द्वादशिके दिन, तीनलोक हितकार।
अभिनन्दन आनन्दकंद तुम, लीन्हों जगअवतार।।
एक महूरत नरकमांहि हू, पायों सब जिय चैन।
कनकवरन कपि चिह्नधरनपद, जजों तुमैं दिनरैन।।२।।

ॐ ह्री माघशुक्लद्वादश्या जन्ममगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ नि०।।

साढ़े छत्तिसलाख सुपूरब, राजभोग वर भोग।
कछु कारन लखि माघशुक्ल, द्वादशिको धारयो जोग।।
षष्टम नियम समापत करि लिय, इंद्रदत्तघर छीर।
जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर।।३।।

ॐ ह्री माघशुक्लद्वादश्या दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।

पौष शुकल चौदशिको घाते, घातिकरम दुखदाय।
उपजायो वरबोध जास को, केवल नाम कहाय।।

समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीव सुखकन्द।
मोकों भवसागरतैं तारो, जय जय जय अभिनन्द।।४।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्या केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।

जोगनिरोध अघातिघाति लहि, गिरसमेदतैं मोख।
माससकल सुखरास कहे, बैशाखशुक्ल छठ चोख।।
चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगत भाव उमगाय।
हम पूजत इत अरघ लेय जिमि, विघनसघन मिट जाय।।५।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।

जयमाला

दोहा—तुंगसु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम।
कनकवरन अवलौकिकैं, पुनि पुनि करूं प्रणाम।।१।।

छन्द लक्ष्मीधरा।

सच्चिदानन्द सद्ज्ञान सद्दर्शनी। सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी।।
सर्वआनन्दकंदा महादेवता। जास पादाब्ज सेवैं सर्बै देवता।।
गर्भ औ जन्मनिःकर्मल्यानमें। सत्वको शर्म पूरे सबै थानमें।।
वंशइक्ष्वाकुमें आप ऐसे भये। ज्यों निशाशर्दमें इन्दु स्वेच्छै ठये।।३।।

।। लक्ष्मीवती छन्द ।।

होतवैरागलौकांतसुरबोधियो। फेरशिविकासुचढ़िगहननिजसोधियो।।
घाति चौघातिया ज्ञान केवल भयो। समवसरनादि धनदेव तब निरमयो।।

एक है इन्द्रनीली शिला रत्नकी। गोल साड़ेदशै जोजनं जत्नकी।।
चारबिश पैड़िका बीस हज्जार है। रत्नके चूरका कोट निरधार है।।

कोट चहुंओर चहुंद्वार तोरन खँचे। तास आगे चहू मानथंभा रचे।।
मान् मानी तजैं जास ढिग जायकैं। नम्रता धार सेवैं तुम्हैं आयकैं।।

।। छन्द लक्ष्मीधरा ।।

बिम्ब सिहासनोंपै जहा सोहहीं। इन्द्रनागेन्द्र केते मनै मोहहीं।
वापिका वारिसों जत्र सोहै भरीं। जासमें न्हात ही पाप जावै टरी ।। ७ ।।

तास आगें भरी खातिका वारसो। हस सूआदि पखी रमैं प्यारसों ।।
पुष्पकी वाटिका बागवृक्षें जहा। फूल और श्रीफलें सर्वही हैं तहा ।। ८ ।।

कोट सौवर्णका तास आगें खडा। चारदर्वाज चौओर रत्नों जडा ।।
चार उद्यान चारों दिशामे गना। है धुजापंक्ति और नाटयशाला बना ।। ९ ।।

तासु आगें त्रितीकोट रूपमयी। तूप नौ जास चारों दिशामे ठयी ।।
धाम सिद्धान्तधारीनके हैं जहा। औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठै तहा ।। १० ।।

तास आगें रची गन्धकूटी महा। तीन है कट्टिनी सार शोभा लहा ।।
एकपैं तो निधैं ही धरी ख्यात हैं, भव्यप्रानी तहा लौं सबैं जात हैं ।। ११ ।।

दूसरी पीठपै चक्रधारी गमै। तीसरे प्रातिहार्यें लशै भागमें ।।
तासपैं बेदिका चार थभानकी। है बनी सर्वकल्यानके खानकी ।। १२ ।।

तासुपै हैं सुसिघासन भासन। जासुपै पद्म प्राफुल्ल है आसन ।।
तासुपै अन्तरीक्ष विराजे सही। तीनछत्रे फिरे शीसरत्ने यही ।। १३ ।।

वृक्ष शोकापहरी अशोक लसै, दुन्दुभी नाद औ पुष्प खते खसै ।।
देहकी ज्योतिसे मण्डलाकार है। सात सौ भव्य तामे लखै सार है ।। १४ ।।

दिव्यवानी खिरै सर्वशका हरै। श्रीगनाधीश झेलैं सुशक्ती धरै ।।
धर्मचक्री तुही कर्मचक्री हने। सर्वशक्री नमे मौद धारे घने ।। १५ ।।

भव्यकौ बोधि सम्मेदतैं शिव गये। तत्र इन्द्रादि पूजे सुभक्तीमये ।।
हे कृपासिधु मोपै कृपा धारिये। घोरससारसो शीघ्र मो तारिये ।। १६ ।।

जय जय अभिनन्दा आनदकदा भवसमुद्रवर पोत इवा ।।
भ्रमतमशतखडा, भानुप्रचडा, तारि तारि जगरैनदिवा ।। १७ ।।

ॐ ह्री श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि० स्वाहा।।

छन्द कवित्त।

श्री अभिनन्दन पापनिकन्दन तिनपद जो भवि जजै सुधार।
ताके पुन्य भानु वर उग्गे दुरिततिमिर फाटै दुखकार।।
पुत्रमित्र धनधान्य कमल यह विकसै सुखद जगतहित प्यार।
कछुक कालमें सो शिव पावै, पढ़ै सुनै जिन जजै निहार।। १८।।

इत्याशीर्वाद।

श्री सुमतिनाथ-पूजा।

संजमरतनविभूषन भूषित, दूषन वर्जित श्रीजिनचन्द।
सुमतिरमारंजन भवभंजन, संजयंत तजि मेरुनरिंद।।
मातुमंगला सकलमंगला, नगर विनीता जये अमंद।
सो प्रभुदयासुधारसगर्भित आय तिष्ठ इत हरि दुखदंद।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ! ठ ठ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव! वषट्।

अष्टक

पंचम उदधितनों सम उज्वल, जल लीनो वरगंध मिलाय।
कनककटोरीमांहि धारिकरि, धारदेहु सुचि मनवचकाय।।
हरिहरवंदित पापनिकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवनके राय।
तुमपदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०।।

मलयागर घनसार घसौं वर केशर अर करपूर मिलाय।
भवतपहरन चरन पर वारो, जनमजरामृतताप पलाय।।हरि०।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि०।।

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।।

कमलकेतुकी बेल चमेली, करना अरु गुलाब मँहकाय।
सौ लै समरशूलछयकारन, जजों चरन अति प्रीति लगाय।।हरि०।।४।।

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्प नि०।।

नव्य गव्य पकवान बनाऊँ, सुरस देखि दृगमन ललचाय।
सौ लै छुधारोग छयकारण, धरौं चरणढिग मनहरषाय।।हरि०।।५।।

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।।

रतन जड़ित अथवा घृतपूरित, वा कपूरमय जोति जगाय।
दीप धरौं तुम चरनन आगैं जातें केवलज्ञान लहाय।।हरि०।।६।।

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०।।

अगर तगर कृष्णागरु चंदन, चूरि अगिनिमें देत जराय।
अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम धूम यह तासु उड़ाय।।हरि०।।७।।

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।।

श्रीफल मातुलिंग वर दाड़िम, आम निंबु फल प्राशुक लाय।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, पूजत हों तुमरे जुग पाय।।हरि०।।८।।

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु दीप धूप फल सकल मिलाय।
नाचि राचि शिरनाय समरचों, जय जय जिनराय।।हरि०।।९।।

ॐ ह्री श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ नि० स्वाहा ।।

पंचकल्याणक

संजयंत तजि गरभ पधारे। सावनसेत दुतिय सुखकारे।।
रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया। जजों चरन जय २ जिनराया।।१।।

ॐ ह्री श्रावणशुक्लद्वितीयादिने गर्भमगलप्राप्ताय श्रीसुमितनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।१।।

चैत सुकलग्यारस कहँ जानों। जनमे सुमति सहित त्रयज्ञानों।।
मानों धरयो धरम अवतारा। जजों चरनजुग अष्टप्रकारा।।२।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लैकादश्या जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।२।।

चैतसुकलग्यारस तिथि भाखा। ता दिन तपधरि निजरस चाखा।।
पारन पद्मसद्म पय कीनों। जजत चरन हम समता भीनों।।३।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लैकादश्या तपमगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।३।।

सुकल चैतएकादशि हाने। घाति सकल जे जुगपति जाने।।
समवसरनमँह कहि वृषसारं। जजहु अनंतचतुष्टयधारं।।४।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लैकादश्या ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।४।।

चैत सुकल ग्यारस निरवानं। गिरिसमेदतैं त्रिभुवन मानं।।
गुन अनन्त निज निरमलधारी। जजों देव सुधिलेहु हमारी।।५।।

ॐ ह्री चैतशुक्लैकादश्या मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।।५।।

जयमाला

सुमति तीनसौ छत्तिसौ, सुमति भेद दरसाय।
सुमति देहु विनती करों, सुमति विलम्ब कराय।।१।।

दयाबेलि तहँ सुगुननिधि, भविकमोद गम चन्द।
सुमतिसतीपति सुमतिकों, ध्यावों धरि आनन्द।।२।।

पंचपरावरतन हरन, पंचसुमति सित वैन।
पंचलब्धिदातारके, गुन गाऊँ दिनरैन।।३।।

छन्द भुजगप्रयात।

पिता मेघराजा सबै सिद्ध काजा। जपैं नाम जाको सबै दुःखभाजा।।
महासूर इक्ष्वाकुवंशी विराजै। गुणग्राम जाकौ सबै ठौर छाजै।।४।।

बहुरितालकों सोंपि संगीत कीनों। नमें हाथ जोरैं भलीभक्ति भीनों।।
विताई दशौ लाख ही पूर्व बालै। प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै।। ६।।

कछु हेतुतैं भावना बार भाये। तहाँ ब्रह्मलौकान्तके देव आये।।
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो। धरे पालकीमें सु उद्यान ल्यायो।। ७।।

नमः सिद्ध कहि केशलोंचे सबै ही। धर्यो ध्यान शुद्ध जु घातीहने ही।।
लह्यो केवलं औ समोसर्न साजं। गणाधीश जु एकसौ सोलराजं।। ८।।

खिरै शब्द तामैं छहों द्रव्यधारे। गुनौ पर्जउत्पादव्यय ध्रौव्य सारे।।
तथा कर्म आठों तनी थित्ति गाजं। मिले जासुके नाशतें मोच्छराजं।। ९।।

धरैं मोहिनी सत्तरं कोडकोड़ी। सरित्पत्तिप्रमाणं थितिं दीर्घ जोरी।।
अवर्ज्ञानदृग्वेदिनी अन्तरायं। धरैं तीस कोड़ाकुड़ि सिन्धुकायं।। १०।।

तथा नाम गोतं कुड़ाकोड़ि वीसं। समुद्रप्रमाण धरें सत्तईसं।।
सु तेंतीसअब्धिं धरें आयु अब्धिं। कहें सर्व कर्मों तनी वृद्धलब्धिं।। ११।।

जघन्यप्रकारे धरें भेद ये ही। मुहूर्तं बसू नामगोतं गने ही।।
तथाज्ञानदृग्मोह प्रत्यूह आयं। सुअन्तर्मुहूर्त धरें थित्तिगायं।। १२।।

तथा वेदिनी बारहें ही मुहुर्त्त। धरैं थित्ति ऐसे भन्यो न्यायजुत्तं।।
इन्हैं आदि तत्वार्थ भाख्यो अशेसा। लह्यो फेरि निर्वाण मांहीं प्रवेसा।। १३।।

अनन्तं महन्तं सुरंतं सुतंतं। अमन्दं अफन्दं अनन्तं अभन्तं।।
अलक्ष विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं। अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं।। १४।।

अवर्ण सुवर्णं अमर्णं अकर्णं। अभर्णं अतर्ण अशर्णं सुशर्णं।।
अनेक सदेक चिदेकं विवेकं। अखण्डं सुमण्डं प्रचण्डं सदेकं।। १५।।

सुपर्मं सुधर्मं सुशर्मं अकर्मं। अनन्तं गुनाराम जयवन्त धर्मं।।
नमैं दास बृन्दावनं शर्न आई। सबै दुःखतैं मोहि लीजै छुड़ाई।। १६।।

तुम सुगुन अनन्ता ध्यावत सन्ता, भ्रमजमभंजन मार्तंडा।।
सतमजकरचंडा भवि कजमंडा, कुमतिकुवल भन गन हंडा।। १७।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

छन्द रोकड—

सुमतिचरन जो जजैं, भविक जन मनवचकाई।
तासु सकलदुखदंद फंद ततछिन छय जाई।।
पुत्रमित्र धनधान्य, शर्म अनुपम सो पावै।।
वृन्दावन निर्वाण, लहै जो निहचै ध्यावै।। १८।।

इत्याशीर्वाद पुष्पाजलि क्षिपेत्

श्री पद्मप्रभ—जिनपूजा

छद रोकड (मदावलिप्तकपोल)।

पदम-राग-मनि-वरन-धरन, तनतुंग अढ़ाई।
शतक दंड अघखंड, सकल सुर सेवत आई।।
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नंदन।
पदमचरन धरि राग सुथापों इत करि वंदन।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट्।

अष्टक

चाल होली की—ताल जत्त।

पूजों भावसों, श्रीपदमनाथ पद सार, पूजों भावसों ।टेक।
गंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय।
मनवचतन त्रयधार देत ही, जनम-जरा-मृत जाय।
पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार, पूजों भावसों।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्व०।

मलयागर कपूर चंदन घसि, केशररंग मिलाय।
भवतपहरन चरन पर वारों, मिथ्याताप मिटाय।।
पूजों भावसों, श्रीपदमनाथ पद सार, पूजों भावसों।।२।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदन निर्व०।

तंदुल उज्ज्वल गंधअनीजुत, कनक थार भर लाय।
पुंज धरों तुव चरनन आगैं, मोहि अखयपद दाय।।पू०।।१।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।

पारिजात मंदार कलपतरु-जनित, सुमन शुचि लाय।
समरशूल निरमूल-करनकों, तुम पद पद्म चढ़ाय।।पू०।।४।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनायपुष्प निर्व०

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचि लाय।
क्षुधारोग के नाशन कारन, जजों हरष उर लाय।।पू०।।५।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्व०।

दीपक ज्योति जगाय ललित वर, धूम रहित अभिराम।
तिमिरमोह नाशन के कारन, जजों चरन गुनधाम।।पू०।।६।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीप निर्व०।

कृष्णागर मलयागिर चंदन, चूर सुगन्ध बनाय।
अगिनि माहिं जारों तुम आगें, अष्टकरम जरि जाय।।पू०।।७।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्व०।

सुरस-वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार।
तासों पूजों जुगम चरन यह, विघन करम निरवार।।पू०।।८।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्व०।

जल फल आदिमिलाय गाय गुन, भगतभाव उमगाय।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय।।पू०।।९।।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०।

पंचकल्याण।

छद द्रुतविलंबित तथा मुन्दरी

असित माघ सु छट्टबखानिये। गरभमंगल तादिन मानिये।
उरधग्रीवकसों चयराजजी। जजत इन्द्र जजैं हम आजजी।।१।।

ॐ ह्री माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भा मगल प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभाजिनेन्द्राय अघ निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

शुक्लकार्तिकतेरसकों जये। त्रिजगजीव सुआनंदको लये।
नगर स्वर्गसमान कुसंबिका। जजतु हैं हरिसंजुत अंबिका।।२।।

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लत्रयोदश्या जन्ममगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीनि स्वाहा।।२।।

सुकल तेरस कार्तिक भावनी। तप धर्यो वन षष्टम पावनी।
करत आतमध्यान धुरंधरो। जजत हैं हम पाप सबै हरो।।३।।

ॐ ह्री कार्तिक शुक्लत्रयोदश्या नि क्रमण कल्याणक प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

सुकल-पूनमचैत सुहावनी। परम केवल सो दिन पावनी।
सुरसुरेश नरेश जजैं तहाँ हमजजैं पदपंकज को यहां।।४।।

ॐ ह्री चैत्र शुक्ल पूर्णिमाया केवलज्ञान प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

असित फागुनचौथ सुजानियो। सकलकर्म महारिपुहानियो।
गिरिसमेद थकी शिवकोगये। हम जजैं पद ध्यानविषै लये।।५।।

ॐ ह्री फाल्गुन कृष्णचतुर्थीदिने मोक्षमगलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अघ निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

जयमाला।

छन्द घत्तानद।

जय पद्मजिनेशा शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा।
जय भवतप भंजन मुनिमनकंजन, रंजनको दिव साधेसा।।१।।

छद रूपचौपाइ।

जय-जय जिनभविजनहितकारी। जयजय जिन भवसागरतारी।
जयजय समवसरनघनधारी। जय जय वीतरागहितकारी।।२।।

जय तुम साततत्वविधिभाख्यौ। जयजय नवपदार्थ लखिआख्यौ।
जय षटद्रव्य पचजुतकाया। जय सब भेदसहितदरशाया।।३।।

जय गुनथान जीव पर मानो। जय पहिले अनतजिय जानो।
जय दूजे सासादन माहीं। तेरहकोडि जीवथित आँहीं।।४।।

जय तीजे मिश्रितगुणथाने। जीव सु बावन कोडि प्रमाने।
जय चौथे अविरतिगुनजीवा। चारअधिक शतकोडिसदीवा।।५।।

जय जय देशवरतमें शेवा। कोडि सातसौ हैं थिति वेशा।
जय प्रमत्त षटशून्य दोय वसु। पाच तीननव पाँच जीवलसु।।६।।

जय जय अपरमत्तगुन कोर। लच्छ छानवै सहस बहोर।
निन्यानवे एकशत तीना। ऐसे मुनि तित रहहि प्रवीना।।७।।

जय जय अष्टम मे दइ धारा। आठशतक सत्तानों सारा।
उपशममे दइसो निन्यानों। छपकमाहि तसु दूने जानौं।।८।।

जय इतने इतने हितकारी। नवे दशे जुगश्रेणी धारी।
जय ग्यारे उपशममगगामी। दइसै निन्यानो अधमामी।।९।।

जयजय छीनमोहगुनथानो। मुनि शतपाचअधिकअट्ठानो।
जय जय तेरह मेअरहता। जुग नभपन वसु नववसुतता।।१०।।

एते राजतु हैं चतुरानन। हम बंदे पद थुतिकरि आनन।
हैं अजोग गुनमे जे देवा। पनसोठानों करो सु सेवा ।।११।।।।

तितअइउऋलृलघुभासत। करिथितिफिरशिव आनँद चाखत।
एउतकृष्टसकलगुणधारी। तथा जघन मध्यम जेप्रानी।।१२।।

तीनों लोकसदन के वासी। निज गुनपरज भेदमय राशी।
तथा और द्रव्यन के जेते। गुन परजाय भेद हैं तेते।।१३।।

[illegible] अनंता। सो तुम जानत जुगपत संता।
सोई दिव्यवचनके द्वारे। दै उपदेश भविक उद्धारे।।१४।।

फेरि अचल थल वासा कीनों। गुन अनंत निजआनँद भीनों।
चरमदेहतें किंचित ऊनो। नरआकृति तितहैं नित गूनो।।१५।।

जय जय सिद्धदेव हितकारी। बार बार यह अरज हमारी।
मोकों दुखसागर से काढ़ो। वृन्दावन जाँचतु है ठाढ़ो।।१६।।

छंद घत्ता

जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परम सुमति पद्माधारी।
जय जनहितकारी दयाविचारी, जय जय जिनवर अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद रोकड।

जजत पद्म पद पद्म सद्म ताके सुपद्म अत।
होत वृद्धि सुतमित्र सकल आनंदकंद शत।।
लहत स्वर्गपदराज, तहाँतें चय इत आई।
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई।।८।।

इत्याशीर्वाद।

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा)स्थित

श्री पद्मप्रभ–पूजा

दोहा

श्रीधर नन्दन पद्म प्रभ, वीतराग जिन नाथ।
विघ्न हरण मंगल करन, नमों जोरि जुग हाथ।।
जन्म महोत्सव के लिए, मिल कर सब सुर राज।
आये कोशाम्बी नगर, पद पूजा के काज।।
पद्मपुरी में पद्मप्रभ, प्रकटे प्रतिमा रूप।
परम दिगम्बर शान्तिमय, छबि साकार अनूप।।

हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजा के काज।
आह्वानन करते सुखद, कृपा करो महाराज।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ! ठ ठ स्थापनम्।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(अष्टक)

क्षीरोदधि उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
कंचन झारी में लेय, दीनों धार धरा।।
बाड़ा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही।
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही।

ॐ ह्री श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०।

चन्दन केशर कर्पूर, मिश्रित गन्ध धरो।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो।। बाड़ा०।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दन नि०।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, थाली पूर्ण भरो।
अक्षय पद पावन हेतु, हे प्रभु पाप हरो।। बाड़ा०।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत नि०।

ले कमल केतकी बेल, पुष्प धरूं आगे।
प्रभु सुनिये हमरी टेर, काम कला भागे।। बाड़ा०।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय काम-बाण-विध्वंशनाय पुष्प नि०

नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल सजा।
मम क्षुधा रोग नश जाय, गाऊं वाद्य बजा।। बाड़ा०।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्य नि०।

हो जगमग-जगमग ज्योति, सुन्दर अनियारी।
ले दीपक श्री जिनचन्द्र, मोह नशे भारी।। बाड़ा०।।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीप नि०।

ले अगर कपूर सुगन्ध, चन्दन गन्ध महा।
खेवत हों प्रभु ढिग आज, आठों कर्म दहा।।बाड़ा०।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।

श्रीफल बादाम सुलेय, केला आदि हरे।
फल पाऊं शिवपद नाथ, अरपूं मोद भरे।।बाड़ा०।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय-मोक्षफल प्राप्तये फल नि०।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला।
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध शिला।।बाड़ा०।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ नि०।

अर्घ चरणों का

चरण कमल श्री पद्म के, बन्दौं मन वच काय।
अर्घ्य चढ़ाऊं भाव से, कर्म नष्ट हो जाय।।बाड़ा०।।
ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०।

भूमि के अन्दर विराजमान समय का अर्घ

पृथ्वी मे श्री पद्मप्रभ की, पद्मासन आकार।
परम दिगम्बर शान्तिमय प्रतिमा भव्य अपार।।
सोम्य शान्त अति कान्तिमय, निर्विकार साकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले पूजूं विविध प्रकार।।
ॐ ह्री भूमिस्थित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०।

पंच कल्याणक

श्री पद्मप्रभ जिनराज जी मोहे राखो हो शरना।

दोहा—माघ कृष्ण छठ में प्रभो, आये गर्भ मंझार।
मात सुसीमा का जनम, किया सफल करतार।।श्रीपद्म०।।

ॐ ह्री माघ कृष्णा ६ गर्भ मगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यम्०।

कार्तिक सुदी तेरह तिथी, प्रभू लियो अवतार।
देवों ने पूजा करी, हुआ मंगलाचार।। श्रीपद्म०।।

ॐ ह्री कार्तिक शुक्ला १३ जन्ममगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं०।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, तृणवत् बन्धन तोड़।
तप धारो भगवान ने मोह कर्म को मोड़।। श्रीपद्म०।।

ॐ ह्री कार्तिक शुक्ला १३ तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मपभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा उपज्यो केवलज्ञान।
भव सागर से पार हो, दियो भव्य जन ज्ञान।। श्रीपद्म०।।

ॐ ह्री चैत्र शुक्ला १५ केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पद्मपभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

फागुन बदी सुचौथ को, मोक्ष गये भगवान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं धर ध्यान।। श्रीपद्म०।।
ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णा ४ मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्य।

जयमाला

दोहा—चौतीसों अतिशय सहित, बाड़ा के भगवान।
जयमाला श्रीपद्म की, गाऊं सुखद महान।।

(पद्धरि छन्द)

जय पद्मनाथ परमात्मदेव। जिनकी करते सुर चरन सेव।।
जय पद्म पद्म प्रभु तन रसाल। जय जय करते मुनि मन विशाल।।
कौशाम्बी में तुम जन्म लीन। बाड़ा में बहु अतिशय करीन।।
इक जाट पुत्र ने जमीं खोद। पाया तुमको होकर समोद।।
सुनकर हर्षित हो भविक वृन्द। पूजा आकर की दुख निकन्द।।

श्रीपाल सेठ अंजन सुचोर। तारे तुमने उनको विभोर।।
अरु नकुल सर्प सीता समेत। तारे तुमने निज भक्त हेत।।
हे संकट मोचन भक्तपाल। हमको भी तारो गुण विशाल।।
विनती करता हूं बार-बार। होवे मेरा दुख क्षार-क्षार।।
मीना गूजर सब जाट जैन। आकर पूजैं कर तृप्त नैन।।
मन वच तनसेपूजे जो कोय। पावें वे नर शिव सुख जुसोय।।
ऐसी महिमा तेरी दयाल। अब हम पर भी होओ कृपाल।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं०।

मेढ़ी में श्री पद्म की पूजा रची विशाल।
हुआ रोग तब नष्ट सब, बिनचे छोटेलाल।।
पूजा विधि जानूं नहीं, नहिं जानूं आह्वानन।
भूल चूक सब माफ कर, दया करो भगवान।।

इत्याशीर्वाद

सुपार्श्वनाथजिनपूजा।

जय जय जिनिंद गनिंद इन्द, नरिंद गुन चिंतन करै।
तन हरीहर मनसम हरत मन, लखत उर आनन्द भरै।।
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ठ शिष्ठ पृथी प्रिया।
तिन नन्दके पद वन्द बृन्द, अमंद थापत जुतक्रिया।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

उज्ज्वल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकरलाय।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।
तुम पद पूजों मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलयागरचंदन घसि सार, लीनो भवतप भंजनहार।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।१।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन नि० स्वाहा।।

देवजीर सुखदास अखंड। उज्जल जलछालित सितमंड।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।३।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।।

प्रासुक सुमन सुगंधित सार। गुंजत अलि मकरध्वजहार।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।४।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्प नि० स्वाहा।।

छुधाहरण नेवज वर लाय। हरों वेदनी तुम्हें चढ़ाय।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।५।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० स्वाहा।।

ज्वलित दीप भरकरि नवनीत। तुमढिग धारतु हों जगमीत।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।१।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि० स्वाहा।।

दशविधि गन्ध हुताशनमाहिं। खेवत क्रूर करम जरि जाहिं।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।१।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि० स्वाहा।।

श्रीफल केला आदि अनूप। लै तुम अग्र धरों शिवभूप।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।८।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि० स्वाहा।।

आठों दरबसाजि गुनगाय। नाचत राचत भगति बढ़ाय।।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो।।तुम०।।९।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि० स्वाहा।।

पंचकल्याणक

छन्द द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी (वर्ण १२)

सुकलभादवछट्ठ सुजानिये। गरभमंगल तादिन मानिये।
करत सेव सची रचि मातकी। अरघ लेय जजों वसुभातिकी।। १।।

ॐ ह्री भाद्रपदशुक्लषष्ठिदिने गर्भमगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०।

सुकलजेठदुवादशि जन्मये। सकल जीव सु आनन्द तन्मये।
त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी। हम जजैं पद मंगलसाजजी।। २।।

ॐ ह्री ज्येष्ठशुक्लद्वादश्या जन्ममंगलमडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०।

जनमके तिथि श्रीधरने धरी। तप समस्त प्रमादनकों हरी।
नृपमहेन्द्र दियो पय भावसों। हम जजैं इत श्रीपद चावसों।। ३।।

ॐ ह्री ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्या नि क्रमणकल्याणप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ नि०।

भ्रमरफागुनछट्ठ सुहावनों। परमकेवलज्ञान लहावनों।
समवसर्नविषै वृष भाखिओ। हम जजैं पद आनन्द चाखियो।। ४।।

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णषष्ठिदिने ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०।

असितफागुणसातय पावनों। सकलकर्म कियो छय भावनो।
गिरिसमेदथकी शिव जातु हैं। जजत ही सब विघ्न विलातुहैं।। ५।।

ॐ ह्री फागुणकृष्णसप्तमीदिने मोक्षमगलप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०।

जयमाला

दोहा—तुंग अंग धनु दोयसौ, शोभा सागरचन्द।
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपास सुखकंद।। १।।

जयति जिनराज शिवराजहितहेतहो।
परमवैराग आनन्दभरि देतहो।।
गर्भके पूर्व षटमास धनदेवने।
नगर निरमाणि बाराणसी सेबने।। २।।

गगनसौं रतनकी धार बहु बरष हीं।
कोड़ि त्रैअर्द्ध त्रैवार सबहरषहीं।।
तातके सदन गुनवदन रचना रची।
मातुकी सर्वविधि करत सेवा सची।। ३।।

भयो जब जनम तब इन्द्रआसन चल्यो।
होयचक्रिततुरित अवधितैंलखिभल्यो।
सप्त पग जायशिर नाय वन्दन करी।
चलन उमग्यो तबैं मानि धनि धनि धरी।। ४।।

सात विधि सैन गज वृषभ रथ बाज लै।
गन्धरव निरतकारी सबै साज लै।।
गलितमदगण्ड ऐरावती साजियो।
लच्छजोजन सु तन वदन सत राजियो।। ५।।

वदन वसुदन्त प्रतिदन्त सरवर भरे।
तासुमधि शतकपनबीस कमलिनि खरे।।
कमलिनी मध्य पनवीस फूले कमल।
कमलप्रति कमलमँह एकसौ आठदल।। ६।।

सर्वदल कोड़शतवीस फरमान जू।
तासुपर अपछरा नचहिं जुतमान जू।।
तततता तततता विततता ताथई।
धृगतता धृगतता धृगततामें लई।। ७।।

धरत पग सनन नन सनन नन गगन में।
नूपुरें झनन नन झनन नन पगनमें।।
नचन इत्यादि कई भाँतिसों मगन में।
केई तित ब्रजत बाजे मधुर पगनमें।। ८।।

केई दृम दृम सुदृमदृम ,मृदंगनि धुनै।
केइ झल्लरि झनन झंझनन झंझनै।।
केई संसागृदि सारंगि संसाग्रदि सुर।
केई बीनापटह बंसि बाजै मधुर।। ९।।

केइ तननन तननन तानैं पुरै।
शुद्ध उच्चारि सुर केइ पाठैं फुरै।।
केइ फुकि फुकि फिरैं चक्रसी भामनी।
धृगगतां धुगतगत परम शोभा बनी।। १०।।

केइछिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु।
धरत वैक्रियक परभावसों तन सुभगु।।
केइ करताल करतालतलमें धुनै।
तत वितत घन सुषिरि जात बाजै मुनै।। ११।।

इन्हें आदिक सकल साज संग धारिकैं।
आय पुर तीन फेरी करी प्यारकैं।।
सचिय तब जाय परसूतथल मोदमें।
मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें।। १२।।

आनगिरवान नाथहिं दियो हाथमें।
छत्र अर चमर बर हरि करत माथमें।।
चढ़े गजराज जिनराज गुन जापियो।
जाय गिरिराजपांडुकशिला थापियो।। १३।।

लेय पंचम उदधिउदक कर कर सुरनि।
सुरव कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि।।

सहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबैं।
अघघ घघ घघघघघ भभभ भभ भौ तबैं।। १४।।

धधध धध धधध धध धुनिमधुरहोतहै।
भव्यजनहसके हरस उद्योत है।।
भयो इमि न्हौन तब सकल गुन रंगमें।
पोछि श्रंगार कीनों सची अंगमें।। १५।।

आनिपितसदनशिशु सौंपिहरि थलगयो।
बालवय तरुन लहि राजसुख भोगयो।।
भोग तज जोग गहि चार अरिको हने।
धारि केवल परम धरम दुइविधि भने।। १६।।

नाशि अरि शेष, शिवथानवासी भये।
ज्ञानदृग शर्मवीर्ज अनन्ते लये।।
दीनजनकी करुण बानि सुन लीजिये।
धरमके नन्दको पार अब कीजिए।। १७।।

घत्ता—जय करुनाधारी, शिवहितकारी तारनतरनजिहाजा हो।
सेवत नित बंदै मनआनंदै, भवभयमेटनकाजा हो।। १०।।

ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ नि० स्वाहा।।

दोहा — श्रीसुपार्श्व पदजुगल जो, जजै पढ़ै यह पाठ।
अनुमोदै सौ चतुर नर, पावें आनन्द ठाठ।। १।।

इत्याशीर्वाद पुष्पाजलि क्षपेत्।

श्रीचन्द्रप्रभजिन पूजा

छप्पय—अनौष्ठ्य यमकालकार तथा शब्दालकार शानरस।

चारुचरन आचरन, चरन चितहरन चिहनचर।
चंद-चंद-तनचरित, चंदथल चहत चतुर नर।।
चतुक चंड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर।
चचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनरधर।।

चर अचर हितू तारन तरन, सुनत चहकि चिर नंद शुचि।
जिनचंद चरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्चिरुचि।।१।।

दोहा—धनुष डेढ़सौ तुंग तन, महासेन नृपनंद।
मातु लछमना उर जये, थापों चंद जिनंद।।२।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

चाल—द्यानतराय कृत नदीश्वराष्टक की अष्टपदी तथा होली की ताल मे, तथा गरवा आदि अनेक चालो मे।

गंगाहृद निरमल नीर, हाटक भृंग भरा।
तुम चरन जजों वरवीर, मेटो जनम जरा।।
श्री चदनाथदुति चंद, चरनन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद, आतमजोति जगै।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०।

श्रीखंड कपूर सुचग, केशर रंग भरी।
घसि प्रासुक जल के संग, भवआताप हरी।। श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दन नि०।।२।।

तंदुल सित सोमसमान, सो ले अनियारे।
दिय पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे।।श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।।३।।

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै।
तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावै।।श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्प नि०।।४।।

नेवज नाना परकार, इंद्रिय बलकारी।
सो ले पद पूजों सार, आकुलता-हारी।।श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि०।।५।।

तम भंजन दीप संवार, तुम ढिग धारतु हों।
मम तिमिर मोह निरवार, यह गुण धारतु हों।। श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहाधकारविनाशनाय दीप नि०।।६।।

दसगंध हुतासन माहिं, हे प्रभु खेवतु हों।
मम करम दुष्ट जरि जाहि, यातैं सेवतु हों।। श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।।७।।

अति उत्तम फल सु मंगाय, तुम गुण गावतु हों।
पूजों तनमन हरषाय, विघन नशावत हों।। श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल।।८।।

साजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।। श्री०।।

ॐ ह्री श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०।।९।।

पंच कल्याणक छंद तोटक

कलि पंचम चैत सुहात अली। गरभागम मंगल मोद भारी।।
हरि हर्षित पूजत मातु पिता। हम ध्यावत पावत शर्मसिता।। १।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णापचम्या गर्भमगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ।

कलि पौष एकादशि जन्म लयो। तब लोकविषै सुखथोक भयो।।
सुरईश जजैं गिरशीश तबै। हम पूजत हैं नुत शीश अबै।। २।।

ॐ ह्री पौषकृष्णैकादश्या जन्ममगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा। कलि पौष ग्यारित पर्ववरा।।
निजध्यान विषैं लवलीन भये। धनि सौ दिन पूजत विघ्न गये।। ३।।

ॐ ह्री पौषकृष्णाकादश्या नि क्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं।

वर केवल भानु उद्योत कियो। तिहुँलोकतणों भ्रम मेट दियो।।
कलि फाल्गुण सप्तमि इंद्र जजैं। हम पूजहिं सर्व कलंक भजैं।। ४।।

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णसप्तम्या केवलज्ञानमडितताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं।

सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये। गुणवंत अनंत अबाध भये।।
हरि आय जजे तित मोद धरे। हम पूजत ही सब पाप हरे।। ५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णसप्तम्या मोक्षमगलमडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं।

।।जयमाला।।

दोहा—हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधर से नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार।। १।।

पै तुम भगति हिये मम, प्रेरे अति उमगाय।
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय।। २।।

छन्द पद्धरी (१६ मात्रा)

जय चंद्र जिनेंद्र दयानिधान। भवकाननहानन दव प्रमान।
जय गरभ जनम मंगल दिनंद। भवि-जीव विकाशन शर्म कन्द।। ३।।

दशलक्ष पूर्व की आयु पाय। मनवाँछित सुख भोगे जिनाय।
लखि कारण ह्वै जगतैं उदास। चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुख निवास।। ४।।

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग। हरि शिविका सजि धरियोअभोग।
तापै तुम चढ़ि जिनचंदराय। ताछिन की शोभा को कहाय।। ५।।

जिन अंग सेत सितचमर ढार। सित छत्र शीस गल गुलक हार।
सित रतन जड़ित भूषण विचित्र। सित चन्द्र चरण चरचैं पवित्र।। ६।।

सित तनद्युति नाकाधीश आप। सित शिविका कांधे धरि सुचाप।
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व। सित चितमें चिंतत जात पर्व।। ७।।

सित चंद्र नगरतैं निकसि नाथ। सित वन में पहुंचे सकल साथ।
सितशिला शिरोमणि स्वच्छ छाँह। सित तपतित धारयो तुम जिनाह।। ८।।

सित पयको पारण परम सार। सित चंद्रदत्त दीनों उदार।
सित कर में सो पय धार देत। मानो बांधत भवसिंधु सेत।।९।।

मानो सुपुण्य धारा प्रतच्छ। तित अचरजपन सुर किय ततच्छ।
फिर जाय गहन सित तप करंत। सित केवल ज्योति जग्योअनन्त।।१०।।

लहि समवसरन रचना महान। जाके देखत सब पाप हान।
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग। सब शोक तनो चूरै प्रसंग।।११।।

सुर सुमन वृष्टि नभतें सुहात। मनु मन्मथ तजि हथियार जात।
बानी जिनमुखसों खिरत सार। मनु तत्व प्रकाशन मुकुर धार।।१२।।

जहँ चौंसठ चमर अमर ढुरंत। मनु सुजस मेघ झरि लगिय तंत।
सिंहासन है जहँ कमलजुक्त। मनु शिवसरव[illegible] कमल-शुक्त।।१३।।

दुंदुभि जित बाजत मधुर सार। [illegible] [illegible]अपार।
शिर छत्र फिरैं त्रय श्वेत वर्ण। [illegible] [illegible]र्ण।।१४।।

तन प्रभातनों मंडल सुहात। [illegible] [illegible]मात।
मनु दर्पण द्युति यह जगमगाय। [illegible] [illegible] सु आय।।१५।।

इत्यादि विभूति अनेक जान। [illegible] दीसत [illegible]भा महान।
ताको वरणत नहिं लहत पार। ता अंतरंग को कहै सार।।१६।।

अनअंत गुणनिजुत करि विहार। धरमोपदेश दे भव्य तार।
फिर जोग निरोधि अघातिहान। सम्मेदथकी लिय मुकतिथान।।१७।।

'वृन्दावन' वंदत शीश नाय। तुम जानत हो मम उर जु भाय।
तातैं का कहों सु बार बार। मनवांछित कारज सार सार।।१८।।

।।घत्तानन्द छन्द।।

जय चंदजिनंदा, आनंदकंदा, भवभयभंजन राजे हैं।।
रागादिक द्वंदा, हरि सब फंदा, मुकति मांहि थिति साजे हैं।।१९।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द चौबोला।

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं।
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तिसार सुख ताहि सजैं।।२०।।

जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं।।२१।।

इत्यार्शीवाद । पुष्पाजलि क्षिपेत्

श्री चन्द्रप्रभ जिन-पूजा (देहरा)

।।स्थापना।।

शुभ पुण्य उदय से ही प्रभुवर, दर्शन तेरा कर पाते हैं।
केवल दर्शन से ही प्रभु, सारे पाप मेरे कट जाते हैं।।

देहरे के चन्द्रप्रभु स्वामी, आह्वानन करने आया हूं।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो तेरे चरणों में आया हूं।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ, तिक्ष्ठ ठ ठ स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव बव वषट् सन्निधिकरण।

अथाष्टक

भोगों में फँसकर हे प्रभुवर, जीवन को वृथा गँवाया है।
इस जन्म-मरण से मुझे नहीं, छुटकारा मिलने पाया है।।
मन में कुछ भाव उठे मेरे, जल झारी में भर लाया हूँ।
मन के मिथ्या मल धोने को, चरणों में तेरे आया हूं।।

ॐ ह्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०।

निज अन्तर शीतल करने को, चन्दन घिसकर ले आया हूं।
मन शान्त हुआ न इससे भी, तेरे चरणों में आया हूँ।।
क्रोधादि कषायों के कारण, संतप्त हृदय प्रभु मेरा है।
शीतलता मुझको मिल जाये, हे नाथ सहारा तेरा है।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय ससारताप विनाशनाय चन्दन नि०।

पूजा में ध्यान लगाने को, अक्षत धोकर ले आया हूं।
चरणों में पुंज चढ़ाकरके, अक्षयपद पाने आया हूँ।।
निर्मल आत्मा होवे मेरी, सार्थक पूजा तब तेरी है।
निज शाश्वत अक्षयपद पाऊँ, ऐसी प्रभु विनती मेरी है।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् नि०।

पर गंध मिटाने को प्रभुवर, वह पुष्प सुगधी लाया हूँ।
तेरे चरणों में अर्पित कर, तुमसा ही होने आया ।।
श्री चन्द्रप्रभु यह अरज मेरी भवसागर पार लगा देना।
यह काम अग्नि का रोग बढ़ा छुटकारा नाथ दिला देना।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामवाणध्विसनाय पुष्प नि०।

दुख देती है तृष्णा मुझको, कैसे छुटकारा पाऊँ मैं।
हे नाथ बता दो आज मुझे, चरणों में शीश झुकाऊँ मैं ।।
यह क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य बनाकर लाया हूं।
हे नाथ मिटादो क्षुधा मेरी, भव भव में फिरता आया हूं।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

यह दीपक की ज्योति प्यारी, अँधियारा दूर भगाती है।
पर यह भी नश्वर है प्रभुवर, झंझा इसको धमकाती है।।
हे चन्द्रप्रभु दे दो ऐसा दीपक अज्ञान मिटा डाले।
मोहान्धकार हो नष्ट मेरा यह, ज्योति नई मन है बाले।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहाधकारविनाशनाय दीप नि०।

शुभ धूप दशांग बना करके, पावक में खेऊँ हे प्रभुवर।
क्षय कर्मो का प्रभु हो जावे, जग का झंझट सारा नश्वर।।
हे चन्द्रप्रभु अन्तर्यामी, कैसे छुटकारा अब पाऊँ।
हे नाथ बता दो मार्ग मुझे, चरणों पर बलिहारी जाऊँ।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।

पिस्ता बादाम लवंगादिक, भर थाली प्रभु मैं लाया हूँ।
चरणों में नाथ चढ़ा करके, अमृत रस पीने आया हूँ।।
करुणा के सागर दया करो मुक्ति का मार्ग अब पाऊँ।
देदो वरदान प्रभु ऐसा शिवपुर को हे प्रभुवर जाऊँ।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू, दीपक घृत से भर लाया हूं।
दस गंध धूप फल मिला अर्घ ले, स्वामी अति हरषाया हूं।।
हे नाथ अनर्घ पद पाने को, तेरे चरणों में आया हूँ।
भव भव के बंध कटें प्रभुवर, यह अरज सुनाने आया हूँ।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ नि०।

।। पंचकल्याणक ।।

जब गर्भ में प्रभुजी आये थे, इन्द्रों ने नगर सजाया था।
छः मास प्रथम ही आकर के, रत्नों का मेह बरसाया था।।
तिथि चैत्र वदी पंचम प्यारी, जब गर्भ में प्रभुजी आये थे।
लक्ष्मणा माता को पहले ही, सोलह सपने दिखलाये थे।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णपचमीदिवसे गर्भमगलमंडिताय अर्घ नि०।

शुभ बेला में प्रभु जन्म हुआ, वदि पौष एकादशि थी प्यारी।
श्री महासेन नृप के घर में हुई, जय जयकार बड़ी भारी।।
पांडुकशिल पर अभिषेक कियौ, सब देव मिले थे चतुरनिकाय।
श्री जिनचन्द्र जयो जग मांहीं, विघ्नहरण और मंगलदाय।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय पौषकृष्णा-एकादश्या जन्ममगलमंडिताय अर्घ नि०।

जग के झंझट से मन ऊबा तप की ली श्रीजिनने ठहराय।
पौष बदी ग्यारस को इन्द्र ने, तप कल्याण कियो हरषाय।।
सर्वर्तुक वन में जाय विराजे केशलोंच जिन कियो हरषाय।
देहरे के श्री चन्द्रप्रभु को अर्घ चढ़ाऊँ नित्य बनाय।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पौषकृष्णा-एकादश्या तपोमंगलमंडिताय अर्घं नि०।

फाल्गुनवदी सप्तमी के दिन चार घातिया घात महान।
समवसरण रचना हरि कीनी, ता दिन पायो केवल ज्ञान।।
साढ़े आठ योजन परमित था, समवसरण श्रीजिन भगवान।
ऐसे श्री जिन चन्द्र प्रभु को, अर्घचढ़ाय करु नित ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुन कृष्ण सप्तम्या केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं नि०।

शुक्ला फाल्गुन सप्तमिके दिन, ललितकूट शुभ उत्तम थान।
श्रीजिन चन्द्रप्रभु जगनामी, पायो आतम शिव कल्याण।।
वसु कर्म जिनचन्द्र ने जीते, पहुँचे स्वामी मोक्ष मंझार।
निर्वाण महोत्सव कियो इन्द्र ने देव करें सब जयजयकार।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुनशुक्ला सप्तम्या मोक्षमंगलमंडिताय अर्घं नि०।

श्रावण सुदी दसमी को प्रभु जी, प्रकट भये देहरे में आन।
संवत तेरह दो सहस्र ऊपर, शुभ बृहस्पतिवार ता दिन जान।।
जय जयकार हुई देहरे मे, प्रकट हुए जब श्री भगवान।
चरणो मे आ अर्घ चढाऊ प्रभु के दर्शन सुख की खान।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय श्रावणशुक्लादशम्या-देहरा स्थाने प्रकट-रूपाय अर्घं नि०।

जयमाला

हे चन्द्रप्रभु तुम जगतपिता, जगदीश्वर तुम परमात्मा हो।
तुम ही हो नाथ अनाथो के जग को निज आनंद दाता हो।।

इन्द्रियों को जीत लिया तुमने, जितेन्द्रनाथ कहाये हो।
तुम ही हो परम हितैषी प्रभु, गुरु तुम ही नाथ कहाये हो।।

इस नगर तिजारा में स्वामी, देहरा स्थान निराला है।
दुख दुखियो का हरने वाला, श्रीचन्द्र नाम अति प्यारा है।।

जो भाव सहित पूजा करते, मनवांछित फल पा जाते हैं।
दर्शन से रोग नसें सारे गुन गान तेरा सब गाते हैं।।

मैं भी हूँ नाथ शरण आया कर्मों ने मुझको रौंदा है।
यह कर्म बहुत दुख देते हैं प्रभु एक सहारा तेरा है।।

कभी जन्म हुआ कभी मरण हुआ, हे नाथ बहुत दुख पाया है।
कभी नरक गया कभी स्वर्ग गया, भ्रमता भ्रमता ही आया है।।

तिर्यंच गति के दुःख सहे, ये जीवन बहुत अकुलाया है।
पशुगति में मार सही भारी, बोझा रख खूब भगाया है।।

अजन से चोर अधम तारे भव सिन्धु से पार लगाया है।
सोमा की सुन कर टेर प्रभु, नाग को हार बनाया है।।

मुनि समन्तभद्र को हे स्वामी, आ चमत्कार दिखलाया है।
कर चमत्कार को नमस्कार, चरणो में शीश झुकाया है।।

इस पंचमकाल में हे स्वामी क्या अद्भुत महिमा दिखलाई।
दुख दुखियों का हरने वाली देहरे मे प्रतिमा प्रकटाई।।

शुभ पुण्य उदय से हे स्वामी, दर्शन को तरे आया हूँ।
इस मोह जाल से हे स्वामी, छुटकारा पाने आया हूँ।।

श्री चन्द्रप्रभु मोरी अर्ज सुनो, चरणों मे तेरे आया हूँ।
भवसागर पार करो स्वामी यह अर्ज सुनाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—देहरे के श्रीचन्द्र को भाव सहित जो ध्याय।
'मुशी' पावे सम्पदा मनवांछित फल पाय।।

इत्याशीर्वाद

श्रीपुष्पदन्त जिन पूजा।

छन्द—पुष्पदन्त भगवन्त सन्त सु जपन्त तन्त गुन ।
महिमावन्त महन्त कन्त शिवतिय रमन्त मन ।
काकन्दीपुर जन्म पिता सुग्रीव रमासन ।
स्वेतवरन मनहरन तुम्हें थापों त्रिवार नुत ।। १ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः।
ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

चाल होली

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्तजिनराय, मेरी० ।।टेक।।

हिमवनगिरिगत गंगाजलभर, कंचनभृंग भराय ।
करमकलंक निवारनकारन, जजों तुम्हारे पाय ।। मेरी० ।। १ ।।

ॐ ह्री श्रीपष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०।

बावन चन्दन कदलीनदन, कुंकुमसग घसाय ।
चरचों चरन हरनमिथ्यातप, वीतरागगुणगाय ।। मेरी० ।। २ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दन नि०।

शालिअखंडितसौरभिमंडित, शशिसमद्युतिदमकाय ।
ताको पुंज धरों चरननढिग, देहु अखय पदराय ।। मेरी० ।। ३ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

सुमनसुमनसम परिमलमंडित, गुंजतअलिगनआय ।
ब्रह्मपुत्रमदभजनकारन, जजों तुम्हारे पाय ।। मेरी० ।। ४ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्प नि०।

घेवरबावर फेनी गोंजा, मोदन मोदक लाय ।
छुधावेदनिरोगहरनको, भेट धरों गुणगाय ।। मेरी० ।। ५ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाय ।
तिमिरमोहनाशकतुमको लखि, धरोंनिकट उमगाय ।। मेरी० ।। ६ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०।

दशवर गंध धनजयके संग, खेवत हौं गुन गाय ।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरैं सो, धूम धूम सु उड़ाय ।। मेरी० ।। ७ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।

श्रीफलमातुलिंग शुचिचिरभट, दाड़िमआममंगाय ।
तासों तुमपदपद्म जजतहों, विघनसघनमिटजाय ।। मेरी० ।। ८ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।

जलफलसकलमिलायमनोहर, मनवचतनहुलसाय ।
तुमपद पूजों प्रीति लायकै, जय जयत्रिभुवनराय ।। मेरी० ।। ९ ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०।

पंच-कल्याणक

नवमी तिथिकारी फागुन धारी, गरभमांहिं थितिदेवाजी।
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तितमेवाजी।।
रतननकी धारा परमउदारा, परि व्योमत साराजी।
मैं पूजौं ध्यावौं भगतिबढ़ावौं, करो मोहि भवपाराजी।।१।।

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णनवम्या गर्भमगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं०।

मगसिर सितपच्छं तिरवा, स्वच्छं जनमें तीरथनाथाजी ।
तब ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निजमाथाजी ।।
सुरगिरनहवाये, मंगलगाये, पूजे प्रीति लगाईजी ।
मैं पूजों ध्यावौं भगतबढ़ावों, निजनिधिहेतु सहाईजी ।। २ ।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदाया जन्ममगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं०

सित मंगसिरमासातिथिसुखरासा, एकमकेदिन धाराजी ।
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकाराजी ।।
सुरमित्र सुदानी के घरआनी, गो-पय पारन कीना है ।
तिनको मैं बन्दौं पापनिकंदौं, जो समतारस भीना है ।। ३ ।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदाया तपमगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं०।

सितकातिक गाये दोइज धाये, घातिकरम परचंडाजी ।
केवल परकाशे भ्रमतम नाशे, सकल सारसुख मंडाजी ।।

गनराज अठासी आनंदभासी, समवसरण वृषदाता जी ।
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजैं जगताताजी ।। ४ ।।

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लद्वितीयाया ज्ञानमगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं०।

आसिन सित सारा आठैं धारा, गिरिसमेद निरवाना जी ।
गुन अष्टप्रकारा अनुपमधारा, जय जय कृपानिधानाजी ।।
तित इन्द्र सु आयौ, पूज रचायौ, चिन्ह तहां करि दीना है ।
मैं पूजत हों गुन ध्यान महीसौं, तुमरे रसमें भीना है ।। ५ ।।

ॐ ह्री आश्विनशुक्लाष्टम्या मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं०।

जयमाला

दोहा—लच्छन मगर सुश्वेत तन तुंग धनुश शत एक ।
सुरनवंदित मुकतपति, नमों तुम्हें शिर टेक ।। १ ।।

पुहुपरदन गुनवदन है, सागरतोय समान ।।
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान ।। २ ।।

पुष्पदन्त जयवन्त नमस्ते। पुण्यतीर्थकर सन्त नमस्ते ।।
ज्ञानध्यानअमलान नमस्ते। चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते ।। ३ ।।

भवभयभजन देव नमस्ते। मुनिगनकृतपदसेव नमस्ते ।।
मिथ्यानिशिदिनइन्द्र नमस्ते। ज्ञानपयोदधिचन्द्र नमस्ते ।। ४ ।।

भवदुखतरुनिकन्द नमस्ते। रागदोषमदहंद नमस्ते ।।
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते। धर्मसुधारसपूर नमस्ते ।। ५ ।।

केवलब्रह्मप्रकाश नमस्ते। सकलचराचरभास नमस्ते ।।
विघ्नमहाधरविज्जु नमस्ते। जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते ।। ६ ।।

जय मकराकृतपाद नमस्ते। कर्मभर्मपरिहार नमस्ते ।।
जय जय अधम उधार नमस्ते ।। ७ ।।

दयाधुरधर धीर नमस्ते। जय जय गुनगम्भीर नमस्ते ।।
मुक्तिरमनिपतिवीर नमस्ते। हरता भवभयपीर नमस्ते ।। ८ ।।

व्ययउत्पतिथितिधार नमस्ते। निजअधार अविकार नमस्ते ।।
भव्यभवोदधितार नमस्ते। वृन्दावननिस्तार नमस्ते ।। ९ ।।

घत्ता—जय जय जिनदेवं हरिकृतसेवं, परमधरमधन धारी जी ।
मैं पूजों ध्यावौं गुनगन गावों, मेटो विथा हमारी जी ।। १० ।।

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि० स्वाहा।।

छन्द—पुहुपदंतपद सन्त, जजै जो मनवचकाई ।
नाचै गावै भगति करै, शुभपरनति लाई ।।
सो पावै सुख सर्व, इन्द्र अहिमिंद तनों वर ।
अनुक्रमतैं निरवान, लहै निहचै प्रमोदधर ।। ११ ।।

इत्याशीर्वाद

श्री शीतलनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तामातग

शीतलनाथ नमोधरि हाथ, सुमाथ जिन्हों भवगाथ मिटाये ।
अच्युततैं च्युत मात सुनन्द के, नन्द भये पुर भद्दल भाये ।।
वश इक्ष्वाक कियो जिन भूषित, भव्यनको भव पार लगाये ।
ऐसे कृपानिधि के पदपकज, थापतु हों हिय हर्ष बढ़ाये ।। १ ।।

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, सवौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छद वसततिलका

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायो,
भृंगार हेम भरि भक्ति हिये बढायो।
रागादिदोष मलमर्द्दनहेतु येवा,
चर्चों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा।।१।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् नि०।

श्रीखंडसार वर कुंकुम गारि लीनों ।
कंसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों ।। रा० ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् नि०।

मुक्ता-समान सित तंदुल सार राजैं ।
धारंत पुंज कलिकुंज समस्त भाजैं ।। रा० ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् नि०

श्रीकेतकी प्रमुख पुष्प अदोष लायो ।
नौरंग जंगकरि भृंग सुरंग पायो ।। रा० ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् नि०।

नैवेद्य सार चरु चारु संवारि लायो ।
जांबूनद-प्रभृति भाजन शीस नायो ।। रा० ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

स्नेह प्रपूरित सुदीपक जोति राजै ।
स्नेह प्रपूरित हिये जजतेअघ भाजै ।। रा० ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् नि०

कृष्णागुरु प्रमुखगंध हुताश माहीं ।
खेवों तवाग्र वसुकर्म जरंत जाहीं ।। रा० ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् नि०।

निम्बाम्र कर्कटि सुदाड़िम आदि धारा ।
सौवर्ण गंध फल सार सुपक्क प्यारा ।। रा० ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् नि०।

कंश्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे ।
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ।। रा० ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् नि०।

पंचकल्याणक

छद इन्द्रवज्रा गथा उपेन्द्रवज्रा

आठैं वदी चैत सुगर्भ मांही, आये प्रभू मंगलरूप थाहीं ।
सेवै सची मातु अनेक भेवा, चर्चौं सदा शीतलनाथ देवा ।। १ ।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णाष्टम्या गर्भमगलमंडिताय श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जायो, भूलोक में मंगल सार आयो ।
शैलेन्द्र पै इन्द्र फनिन्द्र जज्जै, मैं ध्यान धारौं भवदुःख भज्जै ।। २ ।।

ॐ ह्री श्री माघकृष्णद्वादश्या जन्ममगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जानों, वैराग्य पायो भवभाव हानों ।
ध्यायो चिदानन्द निवार मोहा, चर्चो सदा चर्न निवारि कोहा ।। ३ ।।

ॐ ह्री माघकृष्णद्वादश्या नपोमगलमण्डिताय श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो, ताही दिना केवललब्धि पायो ।
शोभै समोसृत्य बखानि धर्म, चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्म ।। ४ ।।

ॐ ह्री पौषकृष्णाचतुर्दश्या ज्ञानमगलमण्डिताय श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

कुवार की आठैं शुद्ध बुद्धा, भये महामोक्षसरूप शुद्धा ।
सम्मेदतैं शीतलनाथ स्वामी, गुनाकरं तासु पदं नमामी ।। ५ ।।

ॐ ह्री आश्विनशुक्लाष्टम्या मोक्षमगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ।

जयमाला

छद लोलतरग

आप अनंत गुनाकर राजैं, वस्तुविकाशन भानु समाजैं।
मैं यह जानि गही शरना है, मोहमहारिपुको हरना है।।१।।

दोहा

हेम वरन तन तुंग धनु, नव्वै अति अभिराम ।
सुर तरु अंक निहारि पद, पुन पुन करों प्रणाम ।। २ ।।

छंद तोटका

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं, भवदाध दवानल मेघझरं ।
दुख-भूभृत-भंजन वज्रसमं, भवसागर नागर-पोत-पमं ।। ३ ।।

कुह-मान-मया-गद-लोभ हरं, अरि विघ्न गयंद मृगिंद वरं ।
वृष-वारिदवृष्टन सृष्टिहितू, परदृष्टि विनाशन सुष्टु पितू ।। ४ ।।

समवस्रत संजुत राजतु हो, उपमा अभिराम विराजतु हो ।
वरबारहभेद सभाथितको, नित धर्मबखानि कियौ हितको ।। ५ ।।

पहले महि श्रीगजराज रजैं, दुतिये महि कल्पसुरी जु सजैं ।
त्रितिये गणनी गुन भूरि धरैं, चवथे तिय जोतिष जोति भरैं ।। ६ ।।

तिय-विंतरनी पनमे गनिये, छहमे भुवनेसुर ती भनिये ।
भुवनेश दशों थित सत्तम है, वसुमे वसु-विंतर उत्तम हैं ।। ७ ।।

नव में नभजोतिष पंच भरे, दशमें दिविदेव समस्त खरे ।
नरवृन्द इकादशमें निवसै, अरु बारह में पशु सर्व लसैं ।। ८ ।।

तजिवैर, प्रमोद धरै सब ही, समतारस मग्न लसैं तब ही ।
धुनि दिव्य सुनैं तजि मोहमल, वनराज असी धरि ज्ञानबल ।। ९ ।।

सबके हित तत्त्व बखान करैं, करुना-मन-रंजित शर्म भरैं ।
बरने षटद्रव्य तने जितने, वर भेद विराजतु हैं तितने ।। १० ।।

पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना, इक धर्म दुती सुकलं अधुना ।
तित धर्मसुध्यान तणो गुनियो, दशभेद लखे भ्रमको हनियो ।। ११ ।।

पहलो अरि नाश अपाय सही, दुतियो जिनवैन उपाय गही ।
त्रिति जीवविचै निजध्यावन है, चवथो सु अजीव रमावन है ।। १२ ।।

पनमों मु उदै बलटारन है, छहमो अरि-राग-निवारन है ।
भव त्यागन चिंतन सप्तम है, वसुमों जितलोभन आतम है ।। १३ ।।

नवमों जिनकी थुति सीस धरै, दशमो जिनभाषित हेत करै ।
इमि धर्मतणों दश भेद भन्यो, पुनि शुक्लतणो चदुयेम गन्यो ।। १४ ।।

सुपृथक्त्व-वितर्क-विचारसही, सुइकत्व-वितर्क-विचार गही ।
पुनिसूक्ष्मक्रिया-प्रतिपातकही, विपरीत-क्रिया-निरवृत्तलही ।। १५ ।।

इन आदिकसर्वप्रकाशकियो, भविजीवनकोशिवस्वर्गदियो ।
पुनिमोच्छविहारकियोजिनजी, सुखसागरमग्नचिरंगुनजी ।। १६ ।।

अब मैं शरनापकरी तुमरी, सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी ।
भवव्याधिनिवारकरो अबही, मतिढीलकरोसुखदोसबही ।। १७ ।।

छद घत्तानद

शीतलजिन ध्याऊं भगतिबढ़ाऊं, ज्यों रतनत्रयनिधि पाऊं ।
भवदंद नशाऊं शिवथल जाऊं, फेर भौवनमें न आऊं ।। १८ ।।

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घम् नि०।

छद मालनी

दिढ़रथ सुत श्रीमान् पंचकल्याणक धारी,
तिनपद जुगपद्मं, जो जजै भक्तिधारी।
सहसुख धनधान्य, दीर्घ सौभाग्य पावै,
अनुक्रम अरिदाहै, मोक्ष को सो सिधावै।।१९।।

परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

श्री श्रेयांसनाथजिन पूजा।

छन्द रूपमाला तथा गीता।

विमलनृप विमलासुअन, श्रेयांशनाथ जिनन्द।
सिंघपुर जन्मे सकल हरि, पूजि धरि आनन्द।।
भवबंधध्वंशनहेत लखि मैं शरन आयौ येव।
थापौं चरनजुग उरकमलमें, जजनकारन देव।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छन्द गीता तथा हरिगीता। (मात्रा २८)

कलधौतवरन उतंगहिमगिरिपदमद्रहतैं आवई।
सुरसरितप्रासुकउदकसों भरि भृंग धार चढ़ावई।।
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवन्द आनन्दकन्द हैं।
दुखदंदफंदनिकंद पूरनचन्द जोतिअमंद हैं।।१।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०।

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीरसंग घसों सही ।
भवतापभंजनहेत भवदधिसेत चरन जजों सही ।। श्रे० ।। २ ।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन नि०।

सितशालि शशिदुतिशुक्तिसुन्दर मुक्तकी उनहार हैं ।
भरि थार पुञ्ज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं ।। श्रे० ।। ३ ।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

सद सुमन सुमनसमान पावन, मलयतैं मधु झंकरैं ।
पदकमलतर धरतैं तुरित सा मदनको मद खंकरैं ।। श्रे० ।। ४ ।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्प नि०।

यह परममोदकआदि सरस सँवारि सुन्दर चरु लियो ।
तुववेदनीमदहरनलखि, चरचों चरन शुचिकर हियो ।। श्रे० ।। ५ ।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।

संशयविमोहविभरमतमभंजन दिनन्दसमान हो ।
तातैं चरनढिग दीप जोऊँ देहु अविचल ज्ञान हो ।। श्रे० ।। ६ ।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०।

वर अगर तगर कपूर चूर सुगन्ध भूर बनाइया ।
दहि अमरजिह्वविषैं चरनढिग करमभरम जराइया ।। श्रे० ।। ७ ।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०।

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्व मधुर सुहावनें ।
लै भगतिसहित जजौं चरन शिव परमपावन पावनें ।। श्रे० ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।

जलमलयतदुलसुमनचरु अरुदीपधूपफलावली ।
करिअरघचरचौं चरनजुगप्रभुमोहितारउतावली ।। श्रे० ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०।

पंचकल्याणक

पुष्पोत्तर तजि आये, विमलाउर जेठकृष्ण आठैंको ।
सुरनर मंगल गाये, पूजों मैं नासि कर्मकाठैंकों ।। १ ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाअष्टम्या गर्भमगलप्राप्ताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घ

जनमें फागुनकारी, एकादशि तीनग्यानदृगधारी ।
इक्ष्वाकुवशतारी, मैं पूजों घोर विघ्न दुख टारी ।। २ ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्या जन्ममगलमडिताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घ

भवतनभोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तपधारा ।
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजों पाद अष्टपरकारा ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्या नि क्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घ

केवलज्ञान सुजानन, माघबदी पूर्णतित्थको देवा ।
चतुरानन भवभानन, बंदौं ध्यावौ करौ सुपदसेवा ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्याया केवलज्ञानमण्डिताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घ

गिरिसमेदतैं पायो, शिवथलतिथि पूर्णमासि सावनको ।
कुलिशायुध गुनगायो, मैं पूजों आपनिकट आवनको ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमाया मोक्षमगलमण्डिताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घ

जयमाला

छन्द लोलतरग (वर्ण ११)

शोभिततुंग शरीर सुजानों। चापअसी शुभलक्षनमानों ।
कंचनवर्ण अनूपम सोहै, देखत रूप सुरासुर मोहै ।। १ ।।

छन्द पद्धडी (मात्रा १६)

जयजय श्रेयांसजिनगुणगरिष्ठ। तुमपदजुगदायकइष्टमिष्ट ।।
जयशिष्टशिरोमणिजगतपाल। जय भवसरोजगनप्रातकाल ।। २ ।।

जय पंचमहाव्रतगजसवार। लै त्यागभावदलबल सु लार ।।
जय धीरजको दलपति बनाय। सत्ताछितिमहँ रनको मचाय ।। ३ ।।

धरि रतनतीनतिहूँशक्तिहाथ। दशधरमकवचतपटोपमाथ ।।
जय शुकलध्यानकर खड़गधार। ललकारे आठों अरि प्रचार ।। ४ ।।

तामैं सबको पति मोहचण्ड। ताकों ततछिन करि सहस खण्ड ।।
फिर ज्ञानदरसप्रत्यूह हान। निजगुन गढ़ लीनों अचलथान ।। ५ ।।

शुचि ज्ञान दरस सुख वीर्यसार, हुवे समवसरण रचना अपार ।।
तित भाषे तत्व अनेक धार। जाकों सुनि भव्य हिये विचार ।। ६ ।।

निजरूप लह्यो आनन्दकार। भ्रम दूरकरनको अति उदार ।।
पुनि नयप्रमाननिच्छेपसार। दरसायो करि संशयप्रहार ।। ७ ।।

तामैं प्रमान जुगभेद एव। परतच्छ परोछ रजै स्वमेव ।।
तामैं प्रतच्छके भेद दोय। पहिलो है संविवहार सोय ।। ८ ।।

ताके जुगभेद विराजमान। मति श्रुति सोहैं सुन्दर महान ।।
है परमारथ दुतियो प्रतच्छ। हैं भेद जुगम तामाहिं दच्छा ।। ९ ।।

इक एकदेश इक सर्वदेश। इकदेश उभैविधिसहित वेश ।।
वर अवधि सुमनपरजयविचार। है सकलदेश केवल अपार ।। १० ।।

चर अचर लखत जुगपत प्रतच्छ। निरद्वन्दरिहतपरपंचपच्छ ।।
पुनि है परोच्छमहँ पंच भेद। समिरति अरु प्रतिभिज्ञानवेद ।। ११ ।।

पुनि तरक और अनुमानमान। आगमजुतपन अब नय बखान ।।
नैगम संग्रह व्यौहार गूढ़। ऋजुसूत्र शब्द अरु समभिरूढ़ ।। १२ ।।

पुनि एवंभूत सु सप्त एम। नय कहे जिनेसुर गुन जु तेम ।।
पुनि दरवक्षेत्र अर काल भाव। निच्छेपचारविधि इमि जनाव ।। १३ ।।

इनको समस्त भाख्यौ विशेष। जासम्भ्रात भ्रमनहिं रहत लेश ।।
निज ज्ञानहेत ये मूलमन्त्र। तुम भाषे श्री जिनवर सु तन्त्र ।। १४ ।।

इत्यादि तत्त्वउपदेश देय। हनि शेषकरम निरवान लेय ।।
गिरवान जजत वसुदरब ईस। वृन्दावननितप्रति नमत शीश ।। १५ ।।

छन्द—श्रेयांस महेशा सुगुनजिनेशा, वज्र धरेशा ध्यावतु हैं ।।
हम निशदिन बन्दैं पापनिकन्दैं, ज्यौं सहजानंद पावतु हैं ।। १६ ।।

ॐ ह्री श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि०।।

सोरठा—जो पूजैं मनलाय ।श्रेयांसनाथपदपद्मको ।।
पावैं इष्ट अघाय, अनुक्रमसौं शिवतिय वरै ।। १ ।।

इत्याशीर्वाद पुष्पाजलि क्षिपेत्

श्री वासुपूज्य-जिनपूजा

छद रूपकवित्त

श्रीमतवासुपूज्य जिनवरपद, पूजन हेत हिये उमगाय ।
थापों मनवचतन शुचि करकै, जिनकी पाटलदेव्या माय ।।
महिष चिन्ह पद लसै मनोहर, लाल बरन तन समतादाय ।
सो करुनानिधि कृपादृष्टिकरि, तिष्टहु सुपरितिष्ट इहैं आय ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। सवौषट्
ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ
ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अथाष्टक

छद जोगीरासा। आचलीबध "जिनपदपूजो लवलाई।।"

गंगाजल भरि कनककुंभ में, प्रासुक गंध मिलाई ।
करम कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई ।।

वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०।

कृष्णागरु मलयागिरचंदन, केशरसंग घसाई ।
भवआताप विनाशन-कारन, पूजों पद चितलाई ।। वा० ।। २ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदन नि०।

देवजीर सुखदास शुद्धवर, सुवरन थार भराई ।
पुंजधरत तुम चरनन आगै, तुरित अखय पद पाई ।। वा० ।। ३ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

पारिजात संतान कल्पतरु-जनित सुमन बहु लाई ।
मीन केतु मद भंजनकारन, तुम पदपद्म चढ़ाई वा० ।। ४ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वमनाय पुष्प नि०।

नव्यगव्यआदिक-रसपूरित, नेवज तुरत उपाई ।
छुधारोग निवारन कारन, तुम्हें जजो शिरनाई ।। वा० ।। ५ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।

दीपकजोत उद्योत होत वर, दशदिश मे छबि छाई ।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई ।। वा० ।। ६ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीप नि०।

दशविध गंधमनोहर लेकर, वातहोत्र में डाई ।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूप सु धूम उड़ाई ।। वा० ।। ७ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूप नि०।

सुरस सुपक्क सुपावन फल लै, कंचन थार भराई ।
मोक्ष महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरों गुनगाई ।। वा० ।। ८ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।

जलफल दरव मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई ।। वा० ।। ९ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०।।९।।

पंचकल्याणक

छद पाईता (मात्रा १४)

कलि छट्ट असाढ़ सुहायौ। गरभागम मंगल पायौ ।
दशमें दिवितैं इत आये। शतइन्द्र जजे सिर नाये ।। १ ।।

ॐ ह्री आषाढकृष्णषष्ठ्या गर्भमगलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं

कलि चौदस फागुन जानों। जनमें जगदीश महानों ।
हरि मेरु जजे तब जाई। हम पूजत हैं चितलाई ।। २ ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्या जन्ममगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ

तिथि चौदस फागुन श्यामा। धरियो तप श्री अभिरामा ।
नृप सुन्दर के पय पायो। हम पूजत अति सुख थायो ।। ३ ।।

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्या तपोमगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं

वदि भादव दोइज सोहै। लहि केवल आतम जो है ।
अनअंत गुनाकर स्वामी। नित वंदों त्रिभुवन नामी ।। ४ ।।

ॐ ह्री भाद्रपदकृष्णद्वितीयाया केवलज्ञानमण्डिताय श्रीवासुपूर्ज्याजिनेन्द्राय अर्घं

सित भादव चौदस लीनों। निरवान सुथान प्रवीनो ।
पुर चंपाथानक सेती। हम पूजत निज हित हेती ।। ५ ।।

ॐ ह्री भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्या मोक्षमगल-प्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ

जयमाला

दोहा

चंपापुर में पंचवर, कल्याणक तुम पाय ।
सत्तर धनु तन शोभनो, जै जै जै जिनराय ।। १ ।।

छद मोतियदाम (वर्ण १२)

महासुखसागर आगर ज्ञान। अनंत सुखामृतमुक्त महान।
महाबलमंडित खंडितकाम। रमाशिवसंग सदा बिसराम ।। २ ।।

सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद। मुनिंद जजैं नित पादरविंद।
प्रभु तुव अतरभाव विराग। सुबालहितें व्रतशीलसोराग ।। ३ ।।

कियो नहि राज उदाससरूप। सुभावन भावत आतम रूप।
अनित्यशरीर प्रपचसमस्त। चिदातमनित्यसुखाश्रित वस्त ।। ४ ।।

अशर्न नहीं कोउ शर्न सहाय। जहां जिय भोगत कर्मविपाय।
निजातम कै परमेसुर शर्न। नहीं इनके बिन आपद हर्न ।। ५ ।।

जगत्त जथा जलबुदबुद येव। सदा जिय एक लहै फलमेव।
अनेक प्रकार धरी यह देह। भमें भवकानन आन न नेह ।। ६ ।।

अपावन सात कुधात भरीय। चिदातम शुद्ध सुभाव धरीय।
धरै इनसों जब नेह तबेव। सुआवत कर्म तबै वसुमेव ।। ७ ।।

जबै तन-भोग-जगत्त-उदास। धरै तब सवर निर्जरआस।
करै जब कर्मकलंक विनाश। लहै तब मोक्षमहासुखराश ।। ८ ।।

तथा यह लोक निराकृत नित्त। विलोकियते षट द्रव्यविचित्त।
सुआतमजानन बोध विहीन। धरै किन तत्वप्रतीत प्रवीन ।। ९ ।।

जिनागमज्ञानरु सजमभाव। सबै निजज्ञान विना विरसाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्रसुकाल। सुभाव सबै जिहतें शिवहाल ।। १० ।।

लयो सबजोग सुपुन्य वशाय। कहो किमि दीजिय ताहि गँवाय।
विचारत यो लौकान्तिक आय। नमें पदपकज पुष्प चढ़ाय ।।

कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार। प्रबोधि सुयेम कियो जुविहार।
तबै सौधर्मतनो हरि आय। रच्यौ शिविका चढ़ि आए जिनाय ।।

धरे तप पाय सुकेवलबोध। दियो उपदेश सुभव्य संबोध ।
लियो फिर मोक्ष महासुखराश। नमैं नितभक्त सोई सुखआश ।।

घत्तानद।

नित वासत वंदत, पापनिकंदत, वासपूज्य व्रत ब्रह्मपती ।
भवसंकलखंडित, आनंदमडित, जै जै जै जैवंत जती ।। १४ ।।

ॐ ह्री श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

सोरठ छद।

वासुपूजपद सार, जजौ दरबविधि भावसों ।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्तिको जो परम ।। १५ ।।

इत्याशीर्वाद परिपुष्पाजलि क्षिपेत्।

श्रीविमलनाथ जिन-पूजा

छन्द

सहस्रार दिवि त्यागि, नगर कम्पिला जनम लिय ।
कृतधर्मानृपनन्द, मातु जयसैन धर्मप्रिय ।
तीन लोक वरनन्द, विमल जिन विमल विमलकर ।
थापो चरनसरोज, जजनके हेतु-भावधर ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक सोरठा

कचनझारी धारि, पदमद्रहको नीर ले ।
तृषा रोग निरवारि, विमल विमलगुन पूजिये ।। १ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०

मलयागर करपूर देववल्लभा संग घसि ।
हरि मिथ्यातमभूर, विमलविमलगुन जजत् हों ।। २ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन नि०

वासमती सुखदास, स्वेत निशापतिको हँसै ।
पूरै वाँछित आस, विमलविमलगुन जजत ही ।। ३ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

पारिजात मदार, सतानकसुरतरुजनित ।
जजों सुमन भरि थार, विमल विमलगुन मदनहर ।। ४ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नव्यगव्य रसपूर, सुवरण थाल भरायकै ।
क्षुधावेदिनी चूर, जजौ विमलपद विमलगुन ।। ५ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि०

माणिक दीप अखण्ड, गो छाई वर गो दशो ।
हरो मोहतम चंड, विमल विमलमतिके धनी ।। ६ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०

अगरु तगर घनसार, देवदारु कर चूर वर ।
खेवो वसु अरि जार, विमलविमलपदपद्मढिग ।। ७ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०

श्रीफलसेव अनार, मधुर रसीले पावने ।
जजो विमलपद सार, विघ्न हरैं शिवफल करै ।। ८ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०

आठो दरब सवार, मनसुखदायक पावने ।
जजों अरघ भरथार, विमल विमल शिवतिय रमण ।। ९ ।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०

पंचकल्याणक

छन्द द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी (वर्ण १२)

गरभ जेठ बदी दशमी भनों। परम पावन सो दिन शोभनों ।।
करत सेव सची जननी तणी। हम जजैं पदपद्मशिरोमणी ।। १ ।।

ॐ ह्री जेष्ठकृष्णदशम्या गर्भमगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं

शुक्लमाघ तुरी तिथि जनिये। जनममंगल तादिन मानिये ।।
हरि तबै गिरिराज विषैं जजे, हम समर्चत आनन्दको सजे ।। २ ।।

ॐ ह्री माघशुक्ल चतुर्थ्या जन्ममगलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं

तप धरे सितमाघ तुरी भली। निज सुधातम ध्यावत हैं रली ।।
हरि फनेश नरेश जजैं तहां। हम जजैं नित आनन्दसौं इहां ।। ३ ।।

ॐ ह्री माघशुक्लचतुर्थ्यां नि क्रमणकल्याणप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं

विमल माघरसी हनि घातिया। विमलबोध लयौ सब भासिया ।।
विमल अर्घ चढ़ाय जजों अबै। विमल आनन्द देहु हमैं सबै ।। ४ ।।

ॐ ह्री असाढकृष्णषष्ठया मोक्षमगलमप्राप्ताय श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं

भ्रमरसाढ़रसी अति पावनों। विमल सिद्ध भये मन भावनों ।।
गिरसमेद हरी तित पूजिया। हम जजैं इत हर्ष धरैं हिया ।। ५ ।।

ॐ ह्री माघशुक्ल षठया केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ

जयमाला

दोहा—गहन चहत उड़गन गगन, छिति तिथिके छहँ जेम।
तिमि गुन बरनन बरनन, माँहि होय तब केम।।१।।

साठधनुष तन तुंग है, हेमवरन अभिराम।
वर बराह पद अंक लखि, पुनि पुनि करों प्रनाम।।२।।

छन्द तोटक (वर्ण १२)

जय केवलब्रह्म अनन्तगुनी। तुम ध्यावत शेष महेश मुनी।।
परमातम पूरन पाप हनी। चितचिंततदायक इष्ट धनी।। ३।।

भवआतपध्वंसनइन्दुकरं। वर साररसायन शर्मभरं।।
सब जन्जरामृतदाघहरं। शरनागतपालन नाथ वरं।। ४।।

नित सन्त तुमें इन नामनितैं। चितचिन्तत हैं गुनगामनितैं।।
अमलं अचलं अडल अतुलं। अरलं अछलं अथलं अकुलं।। ५।।

अजरं अमर अहरं अडरं। अपरं अभरं अशरं अनर।।
अमलीन अछीन अरीन हने। अमतं अगतं अरतं अघने।। ६।।

अछुधा अतृषा अभयातम हो। अमदा अगदा अवदातम हो।।
अविरुद्ध अक्रुद्ध अमानधुना। अतलं अमलं अनअन्त गुना।। ७।।

अरसं सरसं अकल सकलं। अवचं सवचं अमच सबलं।।
इन आदि अनेकप्रकार सही। तुमको जिन सन्त जपैं नित ही।। ८।।

अब मैं तुमरी शरना पकरी। दुख दूर करो प्रभुजी हमरी।।
हम कष्ट सहे भवकाननमैं। कुनिगोद तथा थल आननमैं।। ९।।

तित जामनमर्न सहे जितने। कहि केम सकैं तुमसों तितने।।
सुमुहूरत अन्तरमांहि धरे। छह त्रै त्रय छः छहकाय खरे।। १०।।

छिति वन्हि वयारिक साधरन। लघु थूल विभेदनिसो भरनं।।
परतेक वनस्पति ग्यार भये छहजार दुवादश भेद लये।। ११।।

सब द्वैत्रय भू षट छ सु भया। इक इन्द्रियकी परजाय लया।।
जुग इन्द्रिय काय असी गहियो। तिव इन्द्रिय साठनिमें रहियो।। १२।।

चतुरिंद्रिय चालिस देह धरा। पनइन्द्रियके चवबीस वरा।।
सब ये तन धार तहाँ सहियो। दुखघोर चितारित जात हियो।। १३।।

अब मो अरदास हिये धरिये। सुखदंद सबै अब ही हरिये।।
मनवांछित कारज सिद्ध करो। सुखसार सबै घर रिद्ध भरो।। १४।।

घत्ता—जय विमलजिनेशा नुतनाकेशा, नागेशा नरईश सदा।।
भवतापअशेषा, हरननिशेशा दाता चिन्तित शर्म सदा।।१५।।

ॐ ह्री श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ नि० स्वाहा।।१।।

दोहा—श्रीमत विमलजिनेशपद, जो पूजै मनलाय।।
पूजें वांछित आश तसु। मैं पूजों गुनगाय।।१६।।

इत्याशीर्वाद

श्री अनन्तनाथ जिनपूजा

छन्द कवित्त

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या जनम लियो सूर्याउर आय
सिंघसेन नृपके नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय।
गुन अनंत भगवंत धरे, भवदंद हरे तुम हे जिनराय,
थापतु हों त्रय बार उचरिकैं, कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय।।१।।

ॐ ह्री श्री अनन्तनार्थजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

छन्द गीता तथा हरिगीता

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनकभृंग भराइया,
मल करम धोवन हेत मन, वचकाय धार ढराइया।
जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनों,
शिवकंतवंत महंत ध्यावों, भ्रंततंत नशावनों।।१।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् नि०।

हरिचन्द कदलीनंद कुंकुम, दंदताप निकंद है।
सब पापरुजसंतापभंजन, आपको लखि चंद है।।ज०।।२।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् नि०।

कलशाल द्युति उजियाल हीर, हिमालगुलकनितैं घनी।
तसु पुंज तुम पदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी।।ज०।।३।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् नि०।

पुष्कर अमरतर जनित वर, अथवा अवर कर लाइया।
तुम चरनपुष्करतर धरत, सरशूल सकल नशाइया।।ज०।।४।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् नि०।

पकवान नैना घ्रानरसना-को प्रमोद सुदाय हैं।
सो ल्याय चरन चढाय रोग, छुधाय नाश कराय हैं।।ज०।।५।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

नममोह भानन जानि आनन्द, आनि सरन गही अबै।
वर दीप धारौं बारि तुमढिग, सुपरज्ञान जु द्यो सबै।।ज०।।६।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् नि०।

यह गंध चूरि दशांग सुन्दर, धूम्रध्वजमें खेय हों।
वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निज सुधातम वेय हों।।ज०।।७।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् नि०।

रसथक्क पक्व सुभक्क चक्क, सुहावनें मृदु पावनें।
फलसार वृन्द अमंद ऐसो, ल्याय पूज रचावनें।।ज०।।८।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् नि०।

शुचि नीर चन्दन शालिशदन, सुमन चरु दीवा धरौं।
अरु धूप जुत मैं अरघ करि, करजोरजुग विनती करौं।।ज०।।९।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् नि०।

पंचकल्याणक

छद सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित

असित कातिक एकम भावनों, गरभको दिन सो गिन पावनों।
कियसची तित चर्चन चावसों, हम जजें इत आनंदभावसों।। १।।

ॐ ह्री कार्तिककृष्णाप्रतिपदया गर्भमगलमंडिताय श्री अनतनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी, सकल मंगल लोकविषैं लशी।
हरि जजे गिरिराज समाजतैं, हम जजैं इत आतम काजतैं।। २।।

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णद्वादश्या जन्ममगलमंडिताय श्रीअनतनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

भवशरीर विनस्वर भाइयो, अमित जेठदुवादशि गाइयो।
सकल इंद्र जजे तित आइकैं, हम जजैं इत मगल गाइकैं।। ३।।

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णद्वादश्या तपोमगलमंडिनाय श्रीअनतनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

असित चैत अमावसको सही, परम केवलज्ञान जग्यो कही।
लही समोसृत धर्म धुरधरो, हम समर्चत विघ्न सबै हरो।। ४।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णामावस्याया ज्ञानमगलमंडिताय श्रीअनतनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

असित चैत तुरी तिथि गाइयौ, अघतघाति हने शिव पाइयौ।
गिरि समेद जजे हरि आयकैं, हम जजैं पद प्रीति लगाइकैं।। ५।।

ॐ ह्री चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमगलमंडिताय श्रीअननतनाथजिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

छन्द दोहा

तुम गुण बरनन येम जिम, खंविहाय करमान।
तथा मेदिनी पदनिकरि, कीनों चहत प्रमान।। १।।

जय अनन्त रवि भव्यमन, जलज वृन्द विहसाय।
सुमति कोकतियथोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय।। २।।

छद नयमालनी, चडी तथा तामरस

जै अनन्त गुनवंत नमस्ते, शुद्ध ध्येय नित सन्त नमस्ते।
लोकालोक विलोक नमस्ते, चिन्मूरत गुनथोक नमस्ते।। ३।।

रत्नत्रयधर धीर नमस्ते, करमशत्रुकरि कीर नमस्ते।
चार अनंत महन्त नमस्ते, जय जय शिवतियकंत नमस्ते।।४।।

पंचाचार विचार नमस्ते, पंच कर्ण मदहार नमस्ते।
पंच परावृत-चूर नमस्ते, पंचमगति सुखपूर नमस्ते।।५।।

पंचलब्धि-धरनेश नमस्ते, पंच-भाव-सिद्धेश नमस्ते।
छहों दरब गुनजान नमस्ते, छहों कालपहिचान नमस्ते।।६।।

छहों काय रच्छेश नमस्ते, छह सम्यक उपदेश नमस्ते।
सप्तविशनवनवन्हि नमस्ते, जय केवलअपरन्हि नमस्ते।।७।।

सप्ततत्व गुनभनन नमस्ते, सप्त शुभ्रगतहनन नमस्ते।
सप्तभंगके ईश नमस्ते, सातों नय कथनीश नमस्ते।।८।।

अष्टकरममलदल्ल नमस्ते, अष्टजोगनिरशल्ल नमस्ते।
अष्टमधराधिराज नमस्ते, अष्टगुननिसिरताज नमस्ते।।९।।

जय नवकेवल प्राप्त-नमस्ते, नव पदार्थथिति आप्त नमस्ते।
दशों धरमधरतार नमस्ते, दशों बंधपरिहार नमस्ते।।१०।।

विघ्न महीधर बिज्जु नमस्ते, जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते।
तनकनकंदुति पूर नमस्ते, इख्वाकज गनसूर नमस्ते।।११।।

धनु पचासतन उच्च नमस्ते, कृपासिंधु गुन शुच्च नमस्ते।
सेही अंक निशंक नमस्ते, चितचकोर मृगअंक नमस्ते।।१२।।

राग-दोषमदटार नमस्ते, निजविचार दुखहार नमस्ते।
सुर-सुरेश-गन-वृन्द नमस्ते, 'वृन्द' करो सुखकंद नमस्ते।।१३।।

छंद घत्तानंद

जय जय जिनदेवं सुरकृतसेवं, नितकृतचित्तहुल्लासधरं।
आपदउद्धारं समतागारं, वीतराग विज्ञानभरं।।१४।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय महार्घम्।

छन्द मदावलिप्तकपोल तथा रोडक

जो जन मनवचकाय लाय, जिन जजै नेह धर,
वा अनुमोदन करै करावै पढ़ै पाठ वर।
ताके नित नव होय, सुमंगल आनन्ददाई,
अनुक्रमतैं निरवान, लहै सामग्री पाई।।१५।।

परिपुष्पाजंलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद

श्री धर्मनाथजिन पूजा।

माधवी तथा किरीट छन्द (८ सगण व गुरु)

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान, सुभानकै आनि अनन्द बढ़ाये।
जगमातसुव्रत्ति के नन्दन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढ़ाये।।
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश है, दासनिको शिवस्वर्ग मँढ़ाये।
तिनके पद पूजनहेत त्रिबार, सुथापतु हों यह फूल चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर। सवोषट्।
ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक

मुनि मनसम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरि झारी।
जनमजरामृत तापहरनको, चरचौं चरन तुम्हारी।।
परमधरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी।
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर नाचौं दै दै तारी।।१।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल नि०

केशर चन्दन कदली नन्दन, दाहनिकन्दन लीनों।
जलसंगघस लसि शसिसमशमकर, भव आताप हरीनों।।पर०।।२।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन नि०

जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो।
पुंज धरत आनन्द भरत भव, दंद हरत हरषायो।।पर०।।३।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सुमनस् सुमनसम सुमणिथालभर, सुमनबृन्द विहंसाई।
सुमन्मथ-मद मंथनके कारन, चरचों चरन चढ़ाई।।पर०।।४।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्प नि०

घेवर बावर अर्द्धचन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै।
सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजै।।पर०।।५।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०

सुन्दर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै।
नेह सहित गाऊँ गुन श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागै।।पर०।।६।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि०

अगर तगर कृष्णागर तवदिव हरिचन्दन करपूरं।
चूर खेय जलजवनमाँहि जिमि, करम जरैं वसु कूरं।।पर०।।७।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि०

आम्र काम्रक अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई।
सो लै तुमढिग धरहुँ कृपानिधि, देहु मोच्छ ठकुराई।।पर०।।८।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि०

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुनगाई।
बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेइ थाई।।पर०।।९।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०

पंचकल्याणक

राग टप्पाकी चाल—'खोयोरे' गवार तैं सारो दिन यो ही खोयो ऐसी।।

पूजों हो अबार, धरमजिनेसुर पूजों। पूजों हों।। टेक।।
आठैं सित बैशाखकी हो। गरभदिवस अविकार।।
जगजन वांछित पूजों। पूजों हो अबार,
धरमजिनेसुर पूजों।।पूजों हो०।।१।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं

शुकल माघ तेरसि लयो हो धरम धरम अवतार।
सुरपति सुरगिर पूजों। पूजों हो अबार।। धरम०।।२।।

ॐ ह्री माघशुक्लत्रयोदश्या जन्ममगलमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ

माघशुकल तेरस लयो हो। दुर्द्धर तप अविकार।
सुरऋषि सुमनन पूजों। पूजों हो अबार।। धरम०।।३।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्या नि क्रमणकल्याणप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं

पौषशुकल पूनम हने अरि। केवल लहि भवितार।
गणसुर नरपति पूज्यो। पूजों हो अबार।। धरम०।।४।।

ॐ ह्री पौषशुक्लपूर्णिमाया केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ

जेठशुकल तिथि चौथकी हो। शिव समेदतैं पाय।
जगतपूजपद पूजों। पूजों हो अबार।। धरम०।।५।।

ॐ ह्री जेष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ

जयमाला

दोहा—घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अंत।।१।।

छन्दपद्धरी – जय धरमनाथजिनगुनमाहन। तुमपदकोमैंनित धरों ध्यान ।।
जय गरभ जनम तप ज्ञानयुक्त। वर मोक्ष सुमंगल शर्म-भुक्त।।२।।

जय चिदानन्द आनन्दकन्द। गुनवृन्द सु ध्यावत मुनि अमन्द।।
तुम जीवनिके बिनु हेतु मित्त। तुम ही हो जगमें जिन पवित्त।।३।।

तुम समवसरणमें तत्वसार। उपदेश दियो है अति उदार।।
ताकों जे भवि निजहेत चित्त। धारैं ते पावैं मोच्छवित्त।।४।।

मैं तुम मुख देखत आज पर्म। पायो निजआतमरूप धर्म।।
मोकों अब भवदधितैं निकार। निरभयपद दीजै परमसार।।५।।

तुम सम मेरो जगमें न कोय। तुमहीतैं सब विधि काज होय।।
तुम दया धुरन्धर धीर वीर। मेटी जगजनकी सकल पीर।।६।।

तुम नीतिनिपुन विनरागरोष। शिवमग दरसावत् हो अदोष।।
तुम्हरे ही नामतने प्रभाव।। जगजीव लहें शिव-दिव-सुराव।।७।।

तातैं मैं तुमरी शरण आय। यह अरज करतु हों शीश नाय।।
भवबाधा मेरी मेट मेट। शिवराधासों करि भेंट भेंट।।८।।

जंजाल जगतको चूर चूर। आनन्द अनूपम पूर पूर।।
मति देर करो सुनि अरज एव। हे दीनदयाल जिनेश देव।।९।।

मोको शरना नहिं और ठौर। यह निहचै जानों सुगुन-मौर।।
वृन्दावन बदत प्रीति लाय। तब विघन मेट हे धरम-राय।।१०।।

घत्ता—जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं, जिनधर्म उपदेशा।
तुम दयाधुरंधर विनतपुरन्दर, कर उरमन्दर परवेशा।।११।।

ॐ ह्री श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ नि० स्वाहा।।११।।

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव।
ताके दुख सब मिटहिं, लहै आनन्दसमाज सब।।
सुर-नर-पति-पद भोग, अनुक्रमतैं शिव जावै।
'वृन्दावन' यह जानि धरम, जिनके गुन ध्यावै।।

इत्याशीर्वाद ।।

श्रीशान्तिनाथजिनपूजा

सर्वारथ सुरिमान त्याग गजपुर में आये,
विश्वसेन भूपाल तासु के नन्द कहाये।
पंचम चक्री भये मदन द्वादस में राजे,
मैं सेवूं तुम चरण तिष्ठये ज्यों दुःख भाजे।।

ॐ ह्री श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ :
ॐ ह्री श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथ अष्टक

पंचम उदधि तनो जल निरमल कंचन कलश भरे हरषाय।
धार देत ही श्रीजिन सन्मुख जन्म जरामृतु दूर भगाय।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिन के चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय।।१।।

ॐ ह्री श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जल

मलियागिर चंदन कदली नंदन कुंकुम जल के संग घसाय।
भव आताप विनाशन कारण चरचूं चरण सबै सुखदाय।।
शांतिनाथ०।।२।।

ॐ ह्री श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय ससार-ताप-विनाशनाय चदन

पुण्यराशि सम उज्ज्वल अक्षत शशि-मरीचि तसु देख लजाय।
पुंज किये तुम चरणन आगे अक्षय पद के हेतु बनाय।।
शांतिनाथ०

ॐ ह्री श्रीशातिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतान्।

सुर पुनीत अथवा अवनी के कुसुम मनोहर लिए मंगाय।
भेंट धरत तुम चरणन के ढिंग ततछिन कामबाण नस जाय।।
शांतिनाथ०

ॐ ह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय काम-बाण-विनाशनाय पुष्प।

भाँति-भाँति के सद्य मनोहर कीने मैं पकवान संवार।
भर थारी तुम सन्मुख लायो क्षुधावेदनी बेग निवार।।
शांतिनाथ०।।५।।

ॐ ह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य।

घृत सनेह करपूर लाय कर दीपक ताके धरे प्रजार।
जग मग जोत होत मंदिर में मोह अंध को देत सुटार।।
शान्तिनाथ०।।६।।

ॐ ह्री श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप।

देवदारु कृष्णागरु चन्दन तगर कपूर सुगन्ध अपार।
खेऊँ अष्ट करम जारन को धूप धनंजय माहि सुडार।।
शांतिनाथ०।।७।।

ॐ ह्री श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप।

नारगी बादाम सुकेला एला दाडिम फल सहकार।
कंचन थाल माहि धर लायो अरचत ही पाऊं शिव नार।।
शांतिनाथ०।।८।।

ॐ ह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल।

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ाये मंगल गाय।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराय।।
शांतिनाथ०।।९।।

ॐ ह्री श्रीशानिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्व०।

पंचकल्याणक

छन्द उपगति

भादव सप्तमि श्यामा, सर्वारथत्याग नागपुर आये।

माता ऐरा नामा, मैं पूजूं ध्याऊं अर्घ शुभ लाये।।

ॐ ह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भाद्रपदकृष्णसप्तम्या गर्भकल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

जन्मे तीरथ नाथं, वर जेठ असित चतुर्दशी सोहै।
हरिगण नावें माथं, मैं पूजूं शांतिचरण युग जोहै।

ॐ ह्री श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ-कृष्ण-चतुर्दश्या जन्म-कल्याणप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

चौदस जेठ अंधयारी, कानन में जाय योग प्रभु लीन्हा।
नवनिधिरत्न सुछांरी, मैं बन्दू आत्मसार जिन चीन्हा।।

ॐ ह्री श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ-कृष्ण-चतुर्दश्या तप-कल्याणप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

पौष दसें उजियारा, अरि घाति ज्ञान भानु जिन पाया।
प्रातिहार्य बसुधारा, मैं सेऊं सुर नर जासु यश गाया।।

ॐ ह्री श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय पौष-शुक्ला-दशम्या ज्ञान-कल्याणप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

सम्मेद शैलभारी, हन कर अघाति मोक्ष जिन पाई।
जेठ चतुर्दशि-कारी, मैं पंजूं सिद्धथान सुखदाई।।

ॐ ह्री श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ-कृष्ण-चतुर्दश्या मोक्ष-कल्याणप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

छप्पय छन्द

भये आप जिनदेव जगत में सुख विस्तारे,
तारे भव्य अनेक तिन्हों के संकट टारे।
टारे आठों कर्म मोक्ष सुख तिनको भारी,
भारी विरद निहार लही मैं शरण तिहारी।।
तिहारे चरणन को नमूं दुःख दारिद संताप हर।

हर सकल कर्म छिन एक में, शांति जिनेश्वर शांति कर।।१।।

दोहा—सारग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस।
हाटक वर्ण शरीर द्युति, नमूं शांति जग ईश।।२।।

छन्द भुजग-प्रयात

प्रभो आपने सर्व के फन्द तोडे, गिनाऊ कछू मै तिनो नाम थोड़े।
पड़ो अंबु के बीच श्रीपाल राई, जपो नाम तेरो भए थे सहाई।।३।।

धरो रायने सेठ को सूलिका पै, जपी आपके नाम की सार जापै।
भये थे सहाई तबै देव आये, करी फूल वर्षा सिंहासन बनाये।।४।।

जबै लाख के धाम वह्नि प्रजारी, भयो पाण्डवों पै महाकष्ट भारी।
जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी विदुर ने वही राह दीनी।।५।।

हरी द्रोपदी धातुकीखड मांही, तुम्हीं थे सहाई भला और नाहीं।
लियो नाम तेरो भलो शीलपालो, बचाई तहाँ ते सबै दुःखटालो।।६।।

जबै जानकी राम ने जो निकारी, धरे गर्भ को भार उद्यान डारी।
रटो नाम तेरो सबे सौख्यदाई, करी दूर पीड़ा सुक्षण ना लगाई।।७।।

व्यसन सात सेवें करें तस्कराई, सुअंजन से तारे घड़ी ना लगाई।
सहे अंजना चंदना दु.ख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते।।८।।

घड़े बीच में सास ने नाग डारो, भलो नाम तेरो जु सोमा संभारो।
गई काढ़ने को भई फूलमाला, भई है विख्यातं सबै दुःख टाला।।९।।

इन्हें आदि देके कहाँ लो बखानें, सुनो विरद भारी तिहूँ लोक जानें।
अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, बड़ी नावतेरी रती बोझ मेरो।।१०।।

गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूँ क्या अबै आपनी मैं पुकारा।
सबै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे, करो देर नाहीं मेरे शांतिपप्यारे।।११।।

घत्ता

श्री शांति तुम्हारी, कीरत भारी, सुर नरनारी गुणमाला।
'बख्तावर' ध्यावे, रतन सु गावे, मम दुख दारिद सब टाला।।१२।।

ॐ ह्री श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

अजी एरा नन्दन छबि लखत ही आप अरणं।
धरै लज्जा भारी करत श्रुति सो लाग चरणं।।
करै सेवा सोई लहत सुख सो सार क्षण में।
घने दीना तारे हम चहत हैं बास तिन में।।

इत्याशीर्वाद ।

श्री कुंथुनाथजिनपूजा

छद माधवी तथा किरोट (वर्ण २५)

अजअक अजैपद राजै निशंक, हरै भवशंक निशंकित दाता।
मदमत्त मतंगके माथें गँथे, मतवाले तिन्हे हनें ज्यों हरिहाता।।
गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हौं, रवि प्रभु के नंदन श्रीमतिमाता।
सह कुंथुसुकुंथनिके प्रतिपालक, थापौं तिन्हें जुत भक्तिविख्याता।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ ।
ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।।

अथाष्टक

चाल लावनी मरहठी की, लाला मनसुखराय जी कृत।

कुंथु सुन अरज दासकेरी। नाथ सुन अरज दासकेरी।
भवसिन्धु पर्यो हों नाथ निकारो बांह पकर मेरी।
प्रभू सुन अरज दासकेरी। नाथ सुन अरज दासकेरी।
जगजाल पर्यों हों वेग निकारो बांह पकर मेरी।टेक।

सुरसरिताकौ उज्ज्वल जल भरि, कनकभृंग भेरी।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरों धार नेरी।कुंथु०।१।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल।

बावन चंदन कदलीनंदन, घंसिकर गुन टेरी।
तपस मोह नाशन के कारन, धरों चरन नेरी। कुंथु०।२।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदन।

मुक्ताफलसम उज्ज्वल अक्षत सहित मलय लेरी।
पुंज धरों तुम चरनन आगैं अखय सुपद देरी। कुंथु। ३।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

कमल केतकी बेला दौना, सुमन सुमनसेरी।
समरशूल निरमूल हेतु प्रभु, भेंट करों तेरी। कुंथु०।४।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्प।

घेवर बावर मोदन मोदक, मृदु उत्तम पेरी।
तासों चरन जजों करुनानिधि, हरो छुधा मेरी। कुंथु०।५।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाश्नाय नैवेद्य।

कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी।
सो लै चरन जजो भ्रम तम रवि, निज सुबोध देरी। कुंथु०।६।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप।

देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी।
अष्ट करम ततकाल जरै ज्यों, धूम धनंजेरी। कुंथु०।७।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप

लौंग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी।
मोक्छ महाफल चाखन कारन, जजों सुकरि ढेरी। कुं०।८।।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी।
फलजुत जजन करों मनसुख धरि, हरो जगत फेरी। कुं०९।

ॐ ह्री श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं।

पंचकल्याणक

छन्द मोतियदाम (वर्ण १२)

सुसावनकी दशमीकलि जान। तज्यो सरवारथसिद्ध विमान।
भयो गरभागममंगल सार। जजैं हम श्रीपद अष्टप्रकार।।१।।

ओ ह्री श्रावणकृष्णदशम्या गर्भमगलप्राप्ताय श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

महाबैसाख सु एकम शुद्ध। भयो तब जन्म तिज्ञान समृद्ध
कियो हरिमंगल मंदिरशीस। जजैं हम अत्र तुम्हें नुत-शीश।।२।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्ल प्रतिपदि जन्ममगल प्राप्ताय श्रीकुथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

तज्यो षटखंड विभौ जिनचंद। विमोहितचित्तचितार सुछंद।
धरे तप एकम शुद्ध विशाख।सुमग्न भये निजआनन्दचाख।।३।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्लप्रतिपदि नि क्रमणमहोत्सव मण्डिताय श्रीकुथनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं।

सुदी तियचैत सु चेतन शक्त।चहूं अरि छैकरि तादिन व्यक्त।
भई समवसृत भाखि सुधर्म। जजो पद ज्यों पद पाइयपर्म।।४।।

ॐ ह्री वैशाख शुक्ल तृतीया केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय अर्घ।

सुदी वैशाखसु एकमनाम। लियौतिहि द्यौस अभै शिवधाम।
जजे हरि हर्षित मंगल गाय। समर्चत हों सुहियावचकाय।।५।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्लप्रतिपदि मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीकुथनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

जयमाला

खट खंडन के शत्रु राजपदमें हने।
धरि दीक्षा खटखंटन पाप तिन्हें दनें।।
त्यागि सुदरशन चक्र धरम चक्री भये।
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ़ गढ़ लये।।१।।

ऐसे कुंथुजिनेश तनें पदपद्म को।
गुनअनंत भंडार महासुख सद्म को।।
पूजों अरघ चढ़ाय पूरणानंद हो।
चिदानद अभिनंद इन्द्रगन वंद हो।।२।।

षद्धरी छद (मात्रा १६)

जय जय जय जय श्रीकुंथुदेव। तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिंबुकेव।
जय बुद्धि विदाँबर विष्णु ईस। जय रमाकांत शिवलोक शीस।।३।।

जय दयाधुरधर सृष्टिपाल, जय जय जगबंधू सुगुनमाल।
सरवारथसिद्ध विमान छार, उपजे गजपुर में गुन अपार।।४।।

सुरराजकियो गिरन्हौन जाय, आनंद-सहितजुत- भगति भाय।
पुनि पितासौंपिकरमुदितअंग, हरितांडव-निरत कियोअभंग।।५।।

पुनि स्वर्ग गयो तुम इत दयाल, वय पाय मनोहर प्रजापाल।
खटखडविभौ भौग्यो समस्त, फिर त्याग जोगधार्यौ निरस्त।।६।।

तब घाति घात केवल उपाय, उपदेश दियो सबहित जिनाय।
जाके जानत भ्रम-तम विलाय, सम्यक्दर्शन निरमल लहाय।।७।।

तुम धन्य देव किरपा-निधान, अज्ञान-छिपा-तमहरन भान।
जय स्वच्छगुनाकर शुक्तशुक्त, जयस्वच्छसुखामृत भुक्तमुक्त।।८।।

जय भौभवभजन कृत्यकृत्य। मैं तुमरो हों निज भृत्य भृत्य।
प्रभु अशरनशरन अधारधार, मम विघ्नमूलगिरि जारजार।।९।।

जय कुनय यामिनी सूर सूर, जय मन वाँछित सुख पूर पूर।
मम करमबंध दिढ चूर चूर, निजसम आनंद दै भूर भूर।।१०।।

अथवा जबलौं शिव लहौं नाहिं, तबलों ये तो नित ही लहाहिं।
भव भव श्रावक-कुलजनमसार, भवभव सतमत सतसंग धार।।११।।

भव भव निजआतम-तत्व ज्ञान, भवभव तपसंजमशील दान।
भवभव अनुभव नितचिदानंद, भवभव तुमआगम हे जिनंद।।१२।।

भवभव समाधिजुत मरनसार, भवभव व्रत चाहों अनागार।
यह मोकों हेकरुणानिधान, सब जोग मिला आगमप्रमान।।१३।।

जबलों शिवसम्पति लहों नाहि, तबलौं मैं इनको नितलहाँहि।
यह अरज हिये अवधारि नाथ, भवसंकट हरि कीजै सनाथ।।१४।।

छद घत्तानन्द (मात्रा ३१)

जयदीनदयाला, वरगुनमाला, विरदविशाला सुख आला।।
मैं पूजों ध्यावौं शीस नमावों, देह अचल पदकी चाला।।१५।।

ॐ ह्री श्रीकुथुनार्थाजिनेन्द्राय पूर्णार्घ नि० स्वाहा।।

छद गेकड माला (२४)

कुथुजिनेसुरपादपदम जो प्रानी ध्यावैं।
अलि समकर अनुराग, सहज सो निजविधि पावैं।।
जो बांचैं सरदहै, करै अनुमोदन पूजा।
वृंदावन तिह पुरुष सदृश, सुखिया नहिं दूजा।।१६।।

इत्याशीर्वाद परिपुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

श्री अरहनाथजिन-पूजा।

छप्पय छद।

तप तुरग असवार धार, तारन विवेक कर।
ध्यान शुकल असि धार, शुद्ध सुविचार सुबखतर।
भावन सेना धरम, दशो सेनापति थापे।
रतन तीन धरि सकति मंत्रि अनुभो निरमापे।
सत्तातल सोह सुभटि धुनि, त्याग केतु शत अग्र धरि।
इहविधि समाज सज राजको अरजिन जीते करम अरि।।१।।

ॐ ह्री श्रीअरहनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीअरहनार्थाजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ ।
ॐ ह्री श्रीअरहनार्थाजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छंद त्रिभंगी

कनमनिमय झारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी नीरभरी।
मुनिमनसम उज्जल, जनमजरादल, सोलै पदतल, धारकरी।।
प्रभु दीनदयालं, अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालं।
हरि मम जजालं, हे जगपाल, अरगुनमाल, वरमालम्।।१।।

ॐ ह्री श्रीअरहनार्थजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

भवतापनशावन, विरद सुपावन, सुनि मनभावन, मोद भयो।
तातै घसिबावन, चदनपावन, तरहिचढावन, उमगिअयो।प्रभु०।

ॐ ह्री श्रीअरहनार्थजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदनं।

तदुल अनियारे, श्वेतसवारे, शशिदुति टारे, थार भरे।
पदअखयसुदाता, जगविख्याता, लखि भवताता पुंजधरे।प्रभु०।

ॐ ह्री श्रीअरहनार्थजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

सुरतरुके शोभित, सुरन मनोभित, सुमनअछोभित लैआयो।
मनमथके छेदन, आप अवेदन, लखि निरवेदन गुनगायौ।प्रभु०।

ॐ ह्री श्रीअरहनार्थजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पं।

नेवज सज भक्षक प्रासुक अक्षक, पक्षकरक्षक स्वच्छ धरी।
तुम करमनिकक्षक, भस्मकलक्षक, दक्षकपक्षक रक्षकरी।प्रभु०।

ॐ ह्री श्रीअरहनार्थजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

तुम भ्रमतमभजन मुनिमनकजन, रजन गजन मोहनिशा।
रविकेवलस्वामी, दीपजगामी, तुमढिग आमी पुन्यदृशा।प्रभु०।

ओ ह्री श्रीअरहनार्थजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।

दशधूप सुरगी गधअभगी बन्हि वरगी माहि हवै।
बसुकर्म जरावै धूम उडावै ताडव भावै नृत्य पवै।प्रभु०।

ॐ ह्री श्रीअरहनार्थजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं।

ऋतुफल अतिपावन, नयनसुहावन, रसनाभावन, कर लीनें।
तुमविघनविदारक, शिवफलकारक, भवदधि तारक, चरचीनें।प्रभु०।

ओ ह्री श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल।

सुचि स्वच्छ पटीरं गंधगहीरं, तंदुलशीरं, पुष्पचरुं।
वर दीपं धूपं, आनंदरूपं, लै फल भूपं, अर्घकरं।प्रभु०।

ॐ ह्री श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ।

पंचकल्याणक

छन्द चौपाई (मात्रा १६)

फागुन सुदी तीज सुखदाई। गरम सुमंगल ता दिन पाई।
मित्रादेवी उदर सु आये। जने इन्द्र हम पूजन आये।।१।।

ॐ ह्री फाल्गुनशुक्ल तृतीयायागर्भमगँलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

मँगसिर शुक्ल चतुर्दीश सोहै। गजपुर जनम भयौ जग मोहै।
सुर गुरु जजे मेरुपर जाई। हम इत पूजें मनवचकाई।।२।।

ॐह्री मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्या जन्ममगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०।।२।।

मंगसिर सित चौदस दिन राजै। तादिन संजम धरे विराजै।
अपराजित घर भोजन पाई। हम पूजें इत चित हरषाई।।३।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दसया नि क्रमशा कल्याणाप्राप्ताय श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०।।३।।

कार्तिक सित द्वादसि अरि चूरे। केवलज्ञान भयो गुन पूरे।
समवसरनथिति धरमबखाने। जजत चरन हम पातक भाने।।४।।

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लद्वादश्या केवल ज्ञानमगलमंडिताय श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।३।।

चैत शुक्ल ग्यारस सब कर्म। नाशि वास कियशिव-थलपर्म।
निहचल गुन अनंत भंडारी। जजों देव सुधि लेहु हमारी।।५।।

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लएकादश्या मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं निव०।।५।।

जयमाला

दोहा छन्द

बाहर भीतर के जिते, जाहर अर दुखदाय।
ता हर कर अरजिन भये, साहर शिवपुर राय।।१।।

राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय।
हेमवरन तन वरष वर, नव्वै सहस सुआय।।२।।

छन्द तोटक (वर्ण १२)

जय श्रीधरश्रीकरश्रीपति जी। जय श्रीवर श्रीभर श्रीमतिजी।।
भवभीम भवोदधि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।३।।

गरभादिक मगल सार धरे। जग जीवनि के दुखदंद हरे।।
कुरुवंशशिखामनि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।४।।

करि राज छखंड विभूतिमई। तप धारत केवलबोध ठई।।
गण तीस जहाँ भ्रमबारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।५।।

भविजीवनिको उपदेश दियौ। शिवहेत सबै जन धारि लियो।।
जगके सब सकट टारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।६।।

कहि बीसप्ररूपनसार तहाँ। निजशर्म सुधारस धार जहाँ।।
गति चार हृषीपन धारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।७।।

खटकाय तिजोग निवेद मथा। पनवीस कषा वसुज्ञान तथा।।
सुर संजमभेद पसारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।८।।

रस दर्शन लेश्यय भव्य जुगं। खट सम्यक् सैनिय भेद युगं।।
जुग हार तथा सु अहारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।९।।

गुनथान चतुर्दस मारगना। उपयोग दुवादश भेद भना।।
इमि बीस विभेद उचारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।१०।।

इन आदिसमस्त वखान कियौ। भवि जीवनने उरधार लियौ।।
कितने शिववादिन धारन हैं। अरनाथ नमो सुखकारन हैं।।११।।

फिर आप अघाति विनाश सबै। शिवधामविषैं थितकीन तबै।
कृतकृत्य प्रभू जगतारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।१२।।

अब दीनदयाल दया धरिये। मम कर्म कलक सबै हरिये।
तुमरे गुनको कछु पार न हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।१३।।

घत्तानन्द छन्द (मात्रा ३१)

जय श्रीअरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं।
अरिकर्म विदारन, शिवसुखकारन, जय जिनवर जनत्रातारं।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ नि० स्वाहा।।

छन्द आर्या (मात्रा ६०)

अरजिन के पदसारं, जो पूजै द्रव्यभावसौं प्रानी।
सो पावै भवपारं, अजरामर मोच्छथान सुखखानी।।१५।।

इत्याशीर्वाद परिपुपाजलि क्षिपेत्।

श्रीमल्लिनाथ जिनपूजा

छन्द रोकड।

अपराजिततें आय नाथ मिथलापुर जाये।
कुंभरायके नन्द, प्रजापति मात बताये।।
कनक वरन तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजैं।
सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट मम ज्यों भ्रमभाजैं।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्!

अष्टक

छन्द जोगीरासा (मात्रा २८)

सुर-सरिता-जल उज्जल लै कर, मनिभृगर भराई।
जनम जरामृत नासनकारन, जजहुं चरन जिनराई।।
राग-दोष-मद-मोहहरनको, तुम ही हो वरवीरा।
यातैं शरन गही जगपतिजी, वेग हरौ भवपीरा।।१।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल।

बावनचंदन कदलीनंदन, कुंकुमसंग घसायो।
लेकर पूजौं चरनकमल प्रभु, भवआताप नसायौ।।राग० २।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदन।

तंदुलशशिसम उज्जयल लीनें, दीनें पुज सुहाई।
नाचत राचत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई।।राग० ३।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

पारिजातमंदार सुमन, संतान जनित महकाई।
मार सुभट मदभजनकारन, जजहु तुम्हें शिरनाई।। राग।।४।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्प।

फेनी गोक्का मोदनमोदक, आदिक सद्य उपाई।
सो लै क्षुधा निवारन कारन जजहुं चरन लवलाई।।राग० ५।।

ओ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य।

तिमिरमोह उरमंदिर मेरे, छाय रह्यो दुखदाई।
तासु नाश कारन को दीपक, अद्भुतजोति जगाई।।राग० ६।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप।

अगर तगर कृष्णागर चंदन चूरि सुगंध बनाई।
अष्टकरम जारन को तुमढिग, खेवत हौं जिनराई।।राग० ७।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई।
मोक्ष महाफलदायक जानिकै, पूजौं मन हरषाई।।राग० ८।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल।

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजों भगति बढ़ाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गहो मैं आई।।राग० ९।।

ॐ ह्री श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ।

पंचकल्याणक

लक्ष्मीधरा छन्द (१२ वर्ण)

चैत की शुद्ध एकैं भली राजई। गर्भकल्यान कल्यानकों साजई।
कुंभराजा प्रजापति माता तने। देवदेवी जजे शीश नाये घने।।

ॐ ह्री चैत्र शुक्लप्रतिपदाया गर्भा-मगल-मण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई। जन्मकल्यान को द्योस सो छाजई।।
इन्द्रनागेंद्र पूजें गिरेंद्र जिन्हें। मैं जजौं ध्यायकें शीश नावों तिन्हें।।

ॐ ह्री मार्गशीर्ष-शुक्लैकादश्या जन्म-मगल-प्राप्ताय श्रीमल्लि-नाथजिनेन्द्राय अर्घ।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी के दिना। राजको त्याग दीक्षाधरी है जिना।।
दान गोछीर को नंदसेनें दयौ। मैं जजों जासुके पंचचर्जे भयो।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या तपो-मगल-मण्डिताय श्रीमल्लि-नाथजिनेन्द्राय अर्घ।

पोष कीश्यामदूजी हने घातिया। केवलज्ञानसाम्राज्य लक्ष्मी लिया।।
धर्मचक्री भये सेव शक्री करैं। मैं जजों चर्न ज्यों कर्मवक्री टरैं।।

ॐ ह्री पौषकृष्णाद्वितीया केवलज्ञान-प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

फाल्गुनी सेत पांचैं अघाती हते। सिद्धआलै बसे जाय सम्मेदतें।
इन्द्रनागेंद्र कीन्ही क्रिया आयकें। मैं जजों सो मही ध्यायकें गायकें।

ॐ ह्री फाल्गुन-शुक्ल-पचम्या मोक्षमगल-प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

जयमाला

तुम नमित सुरेशा, नर-नागेशा, रजतनगेशा, भगतिभरा।
भवभयहरनेशा, सुखभग्नेशा, जै जै जै शिव-रमनिवरा।।१।।

जय शुद्ध चिदानम देव एव। निरदोष सुगुन यह सहज टेव।
जय भ्रमतमभजन मारतड। भविभवदधितारनको तरड।।२।।

जय गरभजनमर्मडितजिनेश। जय छायकसमकिनबुद्धभेस।
चौथे किय सातोंप्रकृति छीन। चौअनतानु मिथ्यात तीन।।३।।

सप्तम किय तीनो आयु नास। फिर नवे अश नवमे विलास।
तिनमाहि प्रकृति छत्तीस चूर। या भाँति कियौ तुम ज्ञानपूर।।४।।

पहिले मह सोलह कहँ प्रजाल। निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल।
हनि थानगृद्धिको सकल कुब्ब। नर तिर्यग्गति गत्यानुपुब्ब।।५।।

इक बे ते चौ इन्द्रीय जात। थावर आतप उद्योत घात।
सूच्छम साधारन एम चूर। पुनि दुतिय अश वसु करौ दूर।।६।।

चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार। तीजे सु नपुसक वेद टार।
चौथे तियवेद विनाशकीन। पाचै हास्यादिक छहो छीन।।७।।

नरवेद छठे छय नियत धीर। सातये सज्वलन क्रोध चीर।
आठवे सज्वलन मानभान। नवमे माया सज्वलन हान।।८।।

इमि घात नवे दशमे पधार। सज्वलन लोभ तित हू विदार।
पुनि द्वादशके द्वयअश माहिं। सोरह चकचूर कियो जिनाहि।।९।।

निद्रा प्रचला इकभाग माहि। दुति अश चतुर्दश नाश जहिं।
ज्ञानावरनी पन दरश चार। अरि अंतराय पांचों प्रहार।।१०।।

इमि छय त्रेशठ केवल उपाय। धरमोपदेश दीन्हों जिनाय।
नवकेवललब्धि विराजमान। जय तेरमगुनतिथि गुनअमान।।११।।

गत चौदहमे द्वै भाग तत्र। क्षय कीन बहत्तर तेरहत्र।
वेदनी असाताको विनाश। औदारि विक्रियाहार नाश।।१२।।

तैजस्य कारमानो मिलाय। तन पंचपंच बंधन विलाय।
सघात पच घाते महत। त्रय आंगोपाग सहित भनंत।।१३।।

सठान सहनन छह छहेव। रसवरन पच वसु फरस भेव।
जुगगध देवगति सहित पुव्व। पुनि अगुरुलघू उस्वासदुव्व।।१४।।

परउपघातक सुविहाय नाम। जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम।।
अपरजथिर अथिरअशुभसुभेव। दुरभागसुसुर दुस्सुरअभेव।।१५।।

अन आदर और अजस्य कित्त। निरमान नीचगोतौ विचित्त।
ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय। तब दूजे मे तेरह नशाय।।१६।।

पहले सातावेदनी जाय। नरआयु मनुषगति को नशाय।
मानुषगत्यानु सु पूरवीय। पंचेंद्रिय जात प्रकृति विधीय।।१७।।

त्रसवादर परजापति सुभाग। आदरजुत उत्तमगोत पाग।
जसकीरती तीरथप्रकृति जुक्त। ए तेरह छयकरि भये मुक्त।।१८।।

जय गुनअनंत अविकार धार। वरनत गनधर नहि लहत पार।।
ताको मैं बदौं बारबार। मेरी आपत उद्धार धार।।१९।।
सम्मेदशैल सुरपति नमत। तब मुकतथान अनुपम लसंत।
वृन्दावन बंदत प्रीतिलाय। मम उरमें तिष्ठहु हे जिनाय।।२०।।

जय जय जिनस्वामी, त्रिभुवननामी, मल्लिविमलकल्यानकरा।।
भवददविदारन आनदकारन, भविकुमोदनिशिईश वरा।।२१।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जजें हैं जो प्रानी दरब अरु भावादि विधिसों,
करै नानाभाँति भगति थुति औ नौति सुधिसौं।
लहै शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको,
तथा मोक्ष जावै जजत जन जो मल्लिजिनको।।

इत्याशीर्वाद । पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सुराजगृहीमहँ आई।
श्रीसुहमित्त पिता जिनके, गुनगावन महापदमा जसु माई।।
बीस धनू तनु श्याम छबी, कछु अक हरी बर वश बताई।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभू कहँ, थापतु हौं इत प्रीत लगाई।।१।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

पंचकल्याणक

गीतका—उज्जल सुजल जिमि जस तिहारौ, कनक झारीमे भरों।
जरमरन जामन हरन कारन, धार तुमपदतर करौं।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल है।।१।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।।

भवतापघायक शान्तिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरो।
गुनगाय शीस नमाय पूजत, विघनताप सबैं हरो।।शिव०।।२।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं।।

तदुल अखण्डित दमक शशिसम, गमक जुत थारी भरो।

पद अक्षयदायक मुकतिनायक, जानि पद पूजा करों।।शिव०।।३।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत।।

बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरों।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु, तुम निकट ढेरी करों।।शि०।।४।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्प नि०।

पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदुगुन विस्तरों।
सो लेय तुम पदतर धरत ही, छुधा डाइनको हरों।।शि०।।५।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य।

दीपक अमोलिक रतन मणिमय, तथा पावनघृत भरों।
सो तिमिरमोहविनाश आतमभास कारण ज्वै धरों।।शि०।।६।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप।

करपूर चन्दन चूरभूर, सुगन्ध पावकमें धरों।
तसु जरत जरत समस्त पातक सार निजसुखको भगे।।शि०।।७।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप।

श्रीफल अनार सु आम आदिक पक्कफल अति विस्तरों।
सो मोक्ष फलके हेत लेकर, तुम चरणआगे धरो।।शि०।।८।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल।

जलगंध आदि मिलाय आठो दरब अरघ सजो बरों।
पूजो चरनरज भगतिजुत, जातें जगत सागर तरो।।शि०।।९।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ नि०।।

पंचकल्याणक

तिथि दोयज सावन श्याम भयो। गरभागम मंगल मोद थयो।
हरिवृन्द सची पितुमातु जजें। हम पूजत ज्यौं अघओघ भजें।।१।।

ॐ ह्री श्रावणकृष्णाद्वितीयाया गर्भमगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ०।।१।।

बैसाख बदी दशमी वरनी। जनमें तिहिं द्योस त्रिलोकधनी।।
सुरमन्दिर ध्याय पुरन्दरने। मुनिसुव्रतनाथ हमैं सरनै।।२।।

ॐ ह्री वैशाखकृष्णादशम्या जन्ममगलप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ०।।२।।

तप दुद्धर श्रीधरने गहियो। वैसाखबदी दशमी कहियो।।
निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं। हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं।।३।।

ॐ ह्री वैशाखकृष्णादशम्या तपमगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ०।।३।।

वरकेवलज्ञान उद्योत किया। नवमी वैसाखबदी सुखिया।।
धनि मोहनिशाभनि मोखमगा। हम पूजि चहैं भवसिन्धु थगा।।४।।

ॐ ह्री वैशाखकृष्णानवमया केवलज्ञानमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ०।।४।।

वदि वारसि फागुन मोच्छ गये। तिहुँ लोक शिरोमणि सिद्ध भये।
सु अनन्त गुनाकर विघ्न हरी। हम पूजत हैं मनमोद भरी।।५।।

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णादश्या मोक्षमगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ०।।५।।

जयमाला

दोहा—मुनिगणनायक मुक्तिपति, सूक्तव्रताकरयुक्त।
भुक्तमुक्त दातार लखि, वन्दों तनमन उक्त।।१।।

जय केवलभान अमान धरं। मुनि स्वच्छसरोज विकासकरं।
भवसंकट भंजन लायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।२।।

घनघातवनं दवदीप्तभनं। भविबोधत्रसातुरमेघघनं।
नित मंगलवृन्द बधायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।३।।

गरभाविक मंगलसार धरे। जगजीवनके दुखदद हरे।
सब तत्वप्रकाशन वायक हैं। मुनिसुव्रतसुव्रत दायक हैं।।४।।

शिवमारगमण्डन तत्व कह्यो। गुनसार जगत्रय शर्म लह्यो
रुज रागरु दोष मिटायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है।।५।।

समवसृतमें सुरनार सही। गुनगावत नावत भाल मही।
अरु नाचत भक्ति बढ़ाय कहैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।६।।

पग नू पुरकी धुनि होत भनं। झननं झननं झननं झननं।
सुरलेत अनेक रमायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।७।।

घननं घननं घन घंट बजैं। तननं तननं तनतान सजैं।
द्रिमद्री मिरदंग बजायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।८।।

छिनमें लघु औ छिन थूल बनें। जुत हावविभाव विलासपने।
मुखतें पुनि यों गुनगायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है।।९।।

धृगता धृगता पगवावत हैं। सननं सननं सुन चावत हैं।
अति आनन्दको पुनि पायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है।।१०।।

अपने भवको फल लेत सही। शुभ भावनितैं सब पाप दही।
तित तैं सुखको सब पायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है।।११।।

इन आदि समाज अनेक तहां। कहि कौन सकै जु विभेद यहां।
धन श्रीजिनचन्द सुधायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।१२।।

पुनि देशविहार कियौ जिनने। वृष अमृतवृष्टि कियो तुमने।
हमको तुमरी शरनायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।१३।।

हम पै करुना करि देव अबै। शिवराज समाज सुदेहु सबैं।
जिमि होहुं सुखाश्रम नायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।१४।।

भविवृन्दतनी विनती जु यही। मुक्त देहु अभयपद राज सही।
हम आनि गही शरनायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं।।१५।।

घत्तानद जयगुनगनधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिदरूपपती।

परमानंददायक, दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवंत जती।।१६।।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

दोहा—श्रीमुनिसुव्रतके चरन, जो पूजैं अभिनन्द।
सो सुरनर सुख भोगिकें, पावै सहजानन्द।।१७।।

इत्याशीर्वाद

श्री नमिनाथ जिन पूजा

रोड़क—श्रीनमिनाथजिनेन्द्र नमों विजयारथनन्दन।
विख्यादेवी मातु सहज सब पापनिकन्दन।।
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनन्दन।
तिन्हें सु थापो यहाँ त्रिधा करिके पदवन्दन।।१।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्रावतरावतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र निष्ठ निष्ठ ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

द्रुतविलम्बित

सुरनदीजल उज्ज्वल पावनं। कनकभृंग भरों मन भावन।।
जजत हौं नमिके गुनगायकें। जुगपदांबुज प्रीति लगायकें।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यविनाशनाय जल निर्वपामीनि०।।

हरिमलय मिलि केशरसों घसों। जगतनाथ भवातपकों नसों।।
जजतु हों नमिके गुनगायकें। जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन नि० स्वाहा।।

गुलकके सम सुन्दर तंदुलं। धरत पुंजसु भुंजत संकुलं।।
जजतु हों नमिके गुणनायके। जुगपदाम्बुज प्रीति लगाबकें।।३।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

कमल केतुकी वेलि सुहावनी। समरसूल समसत नशावनी।।
जजत् हौं नमिके गुणगायकें। जगपदाम्बुज प्रीति लगायकें।।४।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।।

शशि सुधासम मोदक मोदनं। प्रबल दुष्ट छुधामद खोदनं।।
जजन् हौं नमिके गुणगायके। जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें।।५।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० स्वाहा।।

शुचि घृताश्रित दीपक जोइया। असममोह महातम खोइया।।
जजत् हौं नमिके गुणगायकें जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें।।६।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि० स्वाहा।।

अमरजिह्वविषैं दशगन्धको। दहत दाहत कर्म कबंधको।।
जजत् हौं नमिके गुणगायके। जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें।।७।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप नि० स्वाहा।।

फलसुपक्क मनोहर पावनें। सकल विघ्नसमूह नशावनें।।
जजत् हौं नमिके गुणगायकें। जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें।।८।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल नि० स्वाहा।।

जलफलादि मिलाय मनोहरं। अरघ धारत ही भवभय हरं।।
जजत् हौं नमिके गुणगायकैं। जुगपदाम्बुज प्रीति लगायकें।।९।।

ॐ ह्री श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यप्राप्तये अर्घ नि० स्वाहा।।

पंचकल्याणक

गरभागम मंगलचारा। जुग आसिन श्याम उवारा।
हरिहर्षि जजे पितुमाता। हम पूजें त्रिभुवन-त्राता।।१।।

ॐ ह्री आश्विनकृष्णाद्वितीयाया गर्भावतरणमगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं०।।

जनमोत्सव श्याम असाढ़ा। दशमी दिन आनन्द बाढ़ा।।
हरि मन्दर पूजे जाई। हम पूजें मन वच काई।।२।।

ॐ ह्री अषाढकृष्णदशम्या जन्ममगलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०।।

तप दुद्धर श्रीधर धारा। दशमीकलि षाढ़ उवारा।।
निज आतम रस झर लायौ। हम पूजत आनन्द पायौ।।३।।

ॐ ह्री अषाढकृष्णदशम्या तपमगलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०।।

सित मगसिर ग्यारस चूरे। चवघाति भये गुणपूरे।।
समवस्रत केवलधारी। तुमकों नित नौति हमारी।।४।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।।

वैसाख चतुर्दशि श्यामा। हनि शेष वरी शिवबामा।।
सम्मेदथकी भगवन्ता। हम पूजें सुगुन अनन्ता।।५।।

ॐ ह्री वैसाखकृष्णचतुर्दश्या मोक्षमगलप्राप्तये श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०।।

जयमाला

दोहा—आयु सहस दश वर्षकी, हेम वरन तनसार।।
धनुष पंचदश तुंग तनु, महिमा अपरम्पार।।१।।

जय जय जस नमिनाथ कृपाला। अरिकुल-गहनदहन-दवज्वाला।।
जय जय धरम पयोधर धीरा। जय भव भंजन गुनगम्भीरा।।२।।
जय जय परमानन्द गुनधारी। विश्व विलोकन जनहितकारी।।
अशरनशरन उदार जिनेशा। जय जय समवसरन आवेशा।।३।।
जय जय केवल ज्ञान प्रकाशी, जय चतुरानन हनि भवफांसी।।

जय त्रिभुवनहित उद्यमवंता। जय जय जय जय नमि भगवंता।।४।।
जै तुम सप्ततत्व दरशायो। तास सुनत भवि निज रस पायो।।
एक शुद्ध अनुभवनिज भाखे। दोबिधि राग दोष छै आखे।।५।।
दो श्रेणी दो नय दो धर्म। दो प्रमाण आगमगुन शर्म।।
तीनलोक त्रयजोग तिकालं। सल्ल पल्ल त्रय वात बलालं।।६।।
चार बन्ध संज्ञागति ध्यानं। आराधन निछेप चउ दानं।।
पंचलब्धि आचार प्रमादं। बन्धहेतु पैताले सादं।।७।।
गोलक पंचभाव शिव भौनें। छहों दरब सम्यक अनुकौने।।
हानिवृद्धि तप समय समेता। सप्तभंग वानीके नेता।।८।।
संयम समुदघात भय सारा। आठ करम मद सिध गुनधारा।।
नवों लब्धि नवतत्व प्रकाशे। नोकषाय हरि तूप हुलाशे।।९।।
दशों बन्धके मूल नशाये। यो इन आदि सकल दरशाये।।
फेर विहरि जगजन उद्धारे। जय जय ज्ञान दरश अविकारे।।१०।।
जय वीरज जय सूक्छमवन्ता। जय अवगाहन गुण वरनंता।।
जय जय गुरु लघू निरबाधा। इन गुनजुत तुम शिवमुख साधा।।११।।
ताकों कहत थके गनधारी। तौ को समरथ कहै प्रवारी।।
तातैं मैं अब शरनैं आया। भवदुख मेटि देहु शिवकाया।।१२।।
बार बार यह अरज हमारी। हे त्रिपुरारी हे शिवकारी।।
परपरणतिको बेगि मिटावो। सहजानन्दस्वरूप भिटावो।।१३।।
वृन्दावन जाचत शिरनाई। तुम मम उर निवसौ जिनराई।।
जबलों शिव नहिं पावों सारा। तबलों यही मनोरथ म्हारा।।१४।।

जय जय नमिनाथं हो शिवसाथं, औ अनाथके नाथ सबं।
तातें शिर नायौ, भगति बढ़ायौ, चिहन चिन्ह शतपत्र पदं।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि० स्वाहा।।

दोहा—श्रीनमिनाथतने जुगल, चरन जजें जो जीव।
सो सुरनरसुख भोगकर, होवें शिवतिय पीव।।१६।।

इत्याशीर्वाद

श्री नेमिनाथ जिन पूजा

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा

जयति जय जयति जय जयति जय नेमकी,
धर्म अवतार दातार शिव चैनकी।
श्रीशिवानंद भौफन्द निकन्द ध्यावैं,
जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी।
परम कल्याणनके देनहारे तुम्हीं,
देव हो एव तातें करौ ऐनकी।
थापि हों बार त्रय शुद्ध उच्चार कें।
शुद्धताधार भौपारकू लेनकी।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ।
ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

चाल होली, ताल जत्त

दाता मोच्छके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० ।।टेक०।।
निगम नदी कुश प्राशुक लीनौ, कचनभृग भराय।
मनवचतनते धार देत ही, सकल कलक नशाय।।
दाता मोच्छके, श्रीनेमिनाथ जिनराय दाता०।।१।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल।

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन, कुकुम सग घसाय।
विघनतापनाशनके कारन, जजौ तिहारे पाय ।।दाता० २।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदन।

पुण्यराशि तुमजस सम उज्जल, तदुल शुद्ध मगाय।
अखय सौख्य भोगन के कारन, पुज धरो गुनगाय ।।दाता० ३।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

पुण्डरीक तृणद्रुमको आदिक, सुमन सुगंधित लाय।
दर्प्पक मनमथ भंजनकारन, जजहुं चरन लवलाय ।।दाता० ४।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्प।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरत मँगाय।
क्षुधावेदनी नास करनको, जजहुँ चरन उमगाय ।।दाता० ५।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य।

कनक दीप नवनीत पूरकर, उज्जल जोति जगाय।
तिमिरमोहनाशक तुमकों लखि, जजहुँ चरन हुलसाय ।।दा० ६।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महोन्धकारविनाशनाय दीप।

दशविधि गंध मँगाय मनोहर, गुंजत अलिगन आय।
दशों बंध जारन के कारन, खेवो तुमढिग लाय ।।दा० ७।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप।

सुरस वरन रसना मनभावन, पावन फल सु मंगाय।
मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुम पाय ।।दाता० ८।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल।

जलफलआदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्ठम छितिके राज करनको, जजों अंग वसु नाय ।।दा० ९।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ।

पंचकल्याणक

पाइता छंद।

सित कातिक छट्ठा अमंदा। गरभागम आनन्दकन्दा।
शचि सेय सिवापद आई। हम पूजत मनवचकाई।।१।।

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लषष्ठ्या गर्भमगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

सित सावन छट्ठ अमन्दा। जनमें त्रिभुवन के चन्दा।
पितु समुद्र महासुख पायो। हम पूजत विघन नशायो।।२।।

ॐ ह्री श्रावणशुक्लषष्ठ्या जन्ममगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

तजि राजमती व्रत लीनों। सित सावन छट्ठ प्रवीनों।
शिवनारि तबै हरषाई। हम पूजैं पद शिरनाई।।३।।

ॐ ह्री श्रावणशुक्लषष्ठ्या तप ल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनार्थजिनेन्द्राय अर्घं।

सित आश्विन एकम चूरे। चारों घाती अति कूरे।
लहि केवल महिमा सारा। हम पूजैं पद अष्टप्रकारा।।४।।

ॐ ह्री आश्विनशक्लप्रतिपदि केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनार्थजिनेन्द्राय अर्घ।

सित षाढ अष्टमी चूरे। चारों अघातिया कूरे।
शिव उर्ज्जयन्तते पाई। हम पूजैं ध्यान लगाई।।५।।

ॐ ह्री आषाढशुक्लाष्टम्या मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ।

जयमाला

दोहा

श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम।
शख चिन्हपद मे निरखि, पुनि पुनि करों प्रनाम।।१।।

पद्धरी छद (१६ मात्रा लघ्वन्त)

जै जै जै नेमि जिनिद चन्द। पितु समुद देन आनन्दकन्द।।
शिवमात कुमुदमनमोददाय। भविवृन्त चकोर सुखी कराय।।२।।

जयदेव अपूरव मारतंड। तम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड।
शिवतिय-मुख-जलज-विकाशनेश। नहिं रहो सृष्टिमें तम अशेष।।३।।

भविभीत कोक कीनों अशोक। शिवगम दरशायो शर्मथोक।।
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर। तुम आगम निपुन पुनीत धीर।।४।।

तुम केवल जोति विराजमान। जै जै जै जै करुनानिधान।।
तुम समवसरन में तत्वभेद। दरशायो जातें नशत खेद।।५।।

तित तुमकों हरि आनंदधार। पूजत भगतीजुत बहु प्रकार।।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय। जै बल अनंत गुनवंतराय।।६।।

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश। जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष।।
जय कुमतिमतंगनको मृगेंद्र। जय मदनध्वांतकों रविजिनेंद्र।।७।।

जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध। जय रिद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध।।
जय जगजनमनरजन महान। जय भवसागरमहं सुष्टुयान।।८।।

तुव भगति करें ते धन्य जीव। ते पावैं दिव शिवपद सदीव।
तुमरो गुनदेव विविधप्रकार। गावत नित किन्नरकी जु नार।।९।।

वर भगतिमाहि लवलीन होय। नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय।।
तुम करुणामागर सृष्टिपाल। अब मोकों बेगि करो निहाल।।१०।।

मैं दुख अनंत वसुकरमजोग। भोगे सदीव नहिं और रोग।।
तुमको जगमें जान्यों दयाल। हो वीतराग गुनरतनमाल।।११।।

नातें शरना अब गही आय। प्रभु करो वेगि मेरी सहाय।।
यह विघनकरम मम खंडखंड। मनवांछितकारज मडमंड।।१२।।

ससारकष्ट चकचूर चूर। सहजानन्द मम उर पूर पूर।।
निजपर प्रकाशबुधि देई देई। तजिके बिलंब सुधि लेई लेई।।१३।।

हम जांचत हैं यह बार बार। भवसागरतें मो तार तार।।
नहिं सह्यो जात यहजगत दुःख। तातैं विनवों हे सुगुनमुक्ख।।१४।।

घत्तानद।

श्री नेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं।।१५।।

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

मालिनी (१५ वर्ण)।

सुखधनजससिद्धी पुत्रपौत्रादि वृद्धी,
सकल मनसि सिद्धी होतु है ताहि रिद्धी।
जजत हरखधारी नेमि को जो अगारी,
अनुक्रम अरिजारी सो वरे मोच्छनारी।।१६।।

इत्याशीर्वाद । पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

गीता छन्द

वर स्वर्ग प्राणत को विहाय, सुमात वामा सुत भये।
विश्वसेनकेपारसजिनेश्वर, चरनजिनकेसुरनये।।
नव हाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं।
थापूंतुम्हेजिनआयतिष्ठोकरममेरेसबनसैं।।१।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ ।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्

अथाष्टक–छंद नागच।

क्षीरसोम के समान अम्बुसार लाइये।
हेमपात्र धारिकै सु आपको चढ़ाइये।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कहा।।१।।

ओंही पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि०

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये।
आप चरण चर्च मोहताप को हनीजिये ।।पाश्व।।२।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवानापविनाशनाय चदन नि०।

फेन चंद के समान अक्षतान् लाइकैं।
चर्नके समीप सार पुंजको रचाइकैं ।।पार्श्व०।।३।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत नि०।

केवडा गुलाब और केतकी चुनाइकै,
धार चर्नके समीप कामको नसाइकैं ।।पार्श्व०।।४।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वमनाय पुष्प नि०।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने।
आप चर्न चर्चते क्षुधादिरोग को हने ।।पार्श्व०।।५।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।

लाय रत्न दीपको सनेहपूर के भरूं।
वातिका कपूर बारि मोह ध्वातको हरूं ।।पार्श्व०।।६।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहाधकार विनाशनाय दीप नि०।

धूप गंध लेयकै सुअग्निसग जारिये।
तास धूप के सुसग अष्टकर्म बारिये ।।पार्श्व०।।७।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धप नि०।

खारिकादि चिरभटादि रत्न थाल में भरू।
हर्ष धारिकै जजू सुमोक्ष सौख्य को वरू,।।पार्श्व०।।८।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फल नि०।

नीरगध अक्षतान पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तैं जजीजिये ।।पार्श्व०।।९।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ नि०।

पंचकल्याणक।

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।
वैशाख तनी दुतिकारी, हम पूजें विघ्न निवारी।।१।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ नि०।

जनमेत्रिभुवनसुखदाता, एकादशिपौषविख्याता।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रविकोटिक तेज सु लाजै।।२।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ नि०।

कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावन भाई।
अपने कर लौंच सु कीना, हम पूजै चरन जजीना।।३।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ नि०।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवल ज्ञान उपाई।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवन को सुख दीना।।४।।

ॐ ह्रीं चैतकृष्णचतर्थ्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना।।५।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ नि०।

जयमाला

पारसनाथ जिनेंद्रतने वच, पौन भखी जरते सुन पाये।
करयो सरधान लह्यो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये।
नाम प्रताप टरैं संताप सु, भव्यन को शिवशर्म दिखाये।
हे विश्वसेन के नंद भले, गुण गावत हैं तुमरे हर्षाये।।१।।

दोहा—केकी-कंठ समान छबि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहार पग, वंदों पारसनाथ।।

पद्धरी छद

रची नगरी छह मास अगार। बने चहुं गोपुर शोभ अपार।
सु कोट तनी रचना छबि देत। कंगूरन पै लहकैं बहुकेत।।३।।

बनारस की रचना जु अपार। करी बहु भाँति धनेश तैयार।
तहाँ विश्वसेन नरेन्द्र उदार। करै सुख वाम सु दे पटनार।।४।।

तज्यो तुम प्रानत नाम विमान। भये तिनके वर नंदन आन।
तबै सुर इंद्र नियोगनि आय। गिरिंदकरी विधि न्हौन सुजाय।।५।।

पिता-घर सौंपि गये निज धाम। कुवेर करै वसु जाम सुकाम।
बढे जिन दोज मयक समान। रमैं बहु बालक निर्जर आन।।६।।

भए जब अष्टम वर्ष कुमार। धरे अणुव्रत महा सुखकार।
पिता जब आन करी अरदास करो तुम ब्याह वरो मम आस।।७।।

करी तब नाहि रहे जग चद। किये तुम काम कषाय जु मंद।
गढे गज राज कुमारन सग। सुखे देखत गगतनी सुतरग।।८।।

लख्यो इक रंक करै तप घोर। चहूंदिशि अगनि बलै अति जोर।
कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात। करै बहु जीवन की मत घात।।९।।

भयो जब कोप कहै कित जीव। जले तब नाग दिखाय सजीव।
लख्यो यह कारण भावन भाय। नये दिव ब्रह्मऋषीसुर आय।।१०।।

तबहिं सुर चार प्रकार नियोग। धरी शिविका निज कंध मनोग।
कियो वन माहि निवास जिनंद। धरे व्रत चारित आनदकद।।११।।

गहे तहं अष्टम के उपवास। गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महासुखकार। भई पन वृष्टि तहां तिहि बार।।१२।।

गये तब कानन माहिं दयाल। धरयो तुम योग सबहि अघ टाल।
तबै वह धूम सुकेतु अयान। भयो कमठाचर को सुर आन।।१३।।

करै नभ गौन लखे तुम धीर। जु पूरब बैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर। चली बहु तीक्षण पवन झकोर।।१४।।

रह्यो दशहूं दिश में तम छाय। लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सुरुण्डन के बिन मुण्ड दिखाय। पडै जल मूसलधार अथाय।।१५।।

तबै पद्मावति-कंत धनिंद। नये जुग आय जहाँ जिनचंद।
भग्योतबरंक सुदेखन हाल। लह्यो तब केवलज्ञानविशाल।।१६।।

दियो उपदेश महा हितकार। सुभव्यन बोध समेद पधार।
सुवर्णभद्र जहाँ कूट प्रसिद्ध। वरी शिवनारि लही वसुरिद्ध।।१७।।

जजू तुम चरन दोउ कर जोर। प्रभू लखिये अबही मम ओर।
कहै 'बखतावर' रत्नबनाय। जिनेश हमें भव पार लगाय।।१८।।

घत्ता–

जय पारस देव सुरकृत सेव। वदत चर्न सुनागपती।
करुणा के धारी पर उपकारी, शिवसुखकारी कर्महती।।१९।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल–जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नितही।
ताके दुख सब जाय भीति व्यापै नहि कित ही।।
सुख सपंति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे।
अनुक्रमसो शिव लहै, 'रत्न' इमि कहै पुकारे।।२०।।

इत्याशीर्वादः।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

'पुष्पेन्दु'

स्थापना

हे पार्श्वनाथ! हे विश्वसैन सुत, करुणा सागर तीर्थंकर।
हे सिद्धशिला के अधिनायक, हे ज्ञान उजागर तीर्थंकर।।

हमने भावुकता में भरकर, तुमको हे नाथ पुकारा है।
प्रभुवर! गाथा की गंगा से, तुमने कितनों को तारा है।।
हम द्वार तुम्हारे आये हैं, करुणा कर नेक निहारो तो।
मेरे उर के सिंहासन पर, पग धारो नाथ? पधारो तो।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन।।
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।।

मैं लाया निर्मल जल धारा, मेरा अन्तर निर्मल कर दो,
मेरे अन्तर को हे भगवान्, शुचि सरल भावना से भर दो।
मेरे इस आकुल अन्तर को दो शीतल सुखमय शान्ति प्रभो,
अपनी पावन अनुकम्पा से हर लो मेरी भव-भ्रान्ति प्रभो।।१।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक सहिताय जन्म जरा, मृत्यु विनाशनाय जल नि०।

प्रभु पास तुम्हारे आया हू भव का सन्ताप सताया हू,
तव पद चन्दन के हेतु प्रभो मलयागिरि चन्दन लाया हू।
अपने पुनीत चरणाम्बुज की हमको कुछ रेण प्रदान करो,
हे संकटमोचन तीर्थकर मेरे मन के सन्ताप हरो।।२।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक सहिताय ससार ताप विनाशनाय चदन नि०।

प्रभुवर क्षण भंगुर वैभव को तुमने क्षण मे ठुकराया है,
निज तेज तपस्या से तुमने अभिनव अक्षय पद पाया है।
अक्षय हों मेरे भक्ति भाव प्रभु पद की अक्षय प्रीति मिले,
अक्षय प्रतीति रवि किरणों से प्रभु मेरा मानस-कुंज खिले।।३।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक सहिताय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि०।

यद्यपि शतदल की सुषमा से मानर-सर शोभा पाता है,
पर उसके रस में फस मधुकर अपने प्रिय प्राण गंवाता है।
हे नाथ आपके पद-पंकज भव सागर पार लगाते हैं,
इस हेतु तुम्हारे चरणों में श्रद्धा के सुमन चढ़ाते हैं।।४।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक सहिताय काम बाण विध्वसनाय पुष्प नि०।

व्यंजन के विविध समूह प्रभो तन की कुछ क्षुधा मिटाते हैं,
चेतन की क्षुधा मिटाने में प्रभु! ये असफल रह जाते हैं।
इनके आस्वादन से प्रभु मैं सन्तुष्ट नहीं हो पाया हूं,
इस हेतु आपके चरणों मे नैवेद्य चढाने आया हू।।५।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक सहिताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि०।

प्रभु दीपक की मालाओं से जग अन्धकार मिट जाता है,
पर अन्तर्मन का अन्धकार इनसे न दूर हो पाता है।
यह दीप सजाकर लाए हैं इनमें प्रभु दिव्य प्रकाश भरो,
मेरे मानस-पट पर छाए अज्ञान तिमिर का नाश करो।।६।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक महिताय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि०।

यह धूप सुगन्धित द्रव्यमयो नभमण्डल को महकाती है,
पर जीवन-अघ की ज्वाला में ईधन बनकर जल जाती है।
प्रभुवर इसमे वह तेज भरो जो अघ को ईंधन कर डाले,
हे वीर विजेता कर्मों के, हे मुक्ति-रमा वरने वाले।।७।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक महिताय अष्ट कर्म दहनाय धूप नि०।

यों तो ऋतुपति ऋतु में ही फल से उपवन को भर जाता है,
पर अल्प अवधि का ही झोंका उनको निष्फल कर जाता है।

दो सरस भक्ति का फल प्रभुवर, जीवन-तरु तभी सफल होगा।
सहजानन्द सुख से भरा हुआ, इस जीवन का प्रतिफल होगा।।८।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक सहिताय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि०।

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं ममता से स्वीकार करूं,
जीवन-विकास के प्रिय-पथ की बाधाओं का परिहार करूं।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का प्रभुवर आतंक हटाने को,
वसु द्रव्य संजोकर लाया हूं चरणों में नाथ चढ़ाने को।।९।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण पच कल्याणक सहिताय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ नि०।

पंचकल्याणक

शिवदेवी के गर्भ में, आये दीनानाथ।
चिर अनाथ जगती हुई, मजग, समोद, सनाथ।।
अज्ञानमय इस लोक मे, आलोक सा छाने लगा,
होकर मुदित सुरपति नगर मे, रत्न बरसाने लगा।
गर्भस्थ बालक की प्रभा प्रतिभा, प्रकट होने लगी,
नभ से निशा की कालिमा अभिनव उषा धोने लगी।।१।।

ॐ ह्री बैसाख कृष्ण द्वितीया या गर्भ मगल मडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

द्वार द्वार पर सज उठे, तोरण बन्दनवार।
काशी नगरी में हुआ, पार्श्व प्रभु अवतार।।
प्राची दिशा के अंग मे नूतन दिवाकर आ गया,
भविजन जलज विकसित हुए जग मे उजाला छा गया।
भगवान के अभिषेक को जल क्षीर सागर ने दिया,
इन्द्रादि ने है मेरू पर अभिषेक जिनवर का किया।।२।।

ॐ ह्री पौष कृष्णैकादश्या तपो जन्म मगल मडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

निरख अथिर संसार को, गृह कुटुम्ब सब त्याग।
बन में जा दीक्षा धरी, धारण किया विराग।।

निज आत्मसुख के श्रोत मे तन्मय प्रभु रहने लगे,
उपसर्ग ओर परीषहो को शान्ति से सहने लगे।
प्रभु की विहार वनस्थली तप से पुनीता हो गई,
कपटी कमठ शठ की कुटिलता भी विनीता हो गई।।३।।

ॐ ह्री पौष कृष्णैकादश्या तपो मगल मडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मज्योति से हट गये, तम के पटल महान्।
प्रकट प्रभाकर सा हुआ, निर्मल केवल ज्ञान।।

देवेन्द्र द्वारा विश्वहित सम अनुसरण निर्मित हुआ,
समभाव से सबको शरण का पथ निर्देशित हुआ।
था शान्ति का वातावरण उसमे न विकृत विकल्प थे,
मानो सभी तब आत्महित के हेतु कृत-सकल्प थे।।४।।

ॐ ह्री चैत्र कृष्ण चतर्थी दिने ज्ञानप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

युग युग के भव भ्रमण से, देकर जग को त्राण।
तीर्थकर श्री पार्श्व ने, पाया पद-निर्वाण।।

निर्लिप्त आज नितान्त है चैतन्य कर्म अभाव से,
है ध्यान, ध्याता, ध्येय का किंचित न भेद स्वभाव मे।
तव पाद पद्मो की प्रभु सेवा सतत पाते रहे,
अक्षय असीमानन्द का अनुराग अपनाते रहे।।५।।

ॐ ह्री श्रावणशुक्ल सप्तम्या मोक्षमगल मडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

वन्दनागीत

अनादिकाल से कर्मों का मैं सताया हूं,
इसी से आपके दरबार आज आया हूं।
न अपनी भक्ति, न गुणगान का भरोसा है,
दया निधान श्री भगवान का भरोसा है।

इक आस लेकर आया हूं कर्म कटाने के लिये
भेंट मैं कुछ भी नहीं, लाया चढ़ाने के लिए।।१।।

जल न चन्दन और अक्षत पुष्प भी लाया नहीं,
है नहीं नैवेद्य, दीप, मैं धूप फल लाया नहीं।
हृदय के टूटे हुए उद्‌गार केवल साथ है,
और कोई भेंट के हित, अर्घ सजवाया नहीं।

है यही फलफूल जो समझो चढ़ाने के लिए।
भेंट मैं कुछ भी नहीं लाया चढाने के लिए।।२।।

मागना यद्यपि बुरा समझा किया मै उम्र भर,
किन्तु अब जब मागने पर बांध कर आया कमर।
और फिर सौभाग्य से जब आप सा दानी मिला,
तो भला फिर मागने में आज क्यो रक्खू कसर।

प्रार्थना है आप ही जैसा बनाने के लिए।
भेंट मै कुछ भी नहीं लाया चढाने के लिये।।३।।

यदि नहीं यह दान देना आपको मन्जूर है।
और फिर कुछ मागने से दास ये मजबूर है।
किन्तु मुंह मागा मिलेगा मुझको ये विश्वास है,
क्योंकि लौटाना न इस दरबार का दस्तूर है।

प्रार्थना है कर्म बन्धन से छुड़ाने के लिए।
भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।४।।

हो न जब तक मांग पूरी नित्य सेवक आयेगा,
आपके पदकंज में 'पुष्पेन्दु' शीश झुकायेगा।
है प्रयोजन आपको यद्यपि न भक्ति से मेरी,
किन्तु फिर भी नाथ मेरा तो भला हो जायेगा।
आपका क्या जायेगा बिगड़ी बनाने के लिये।
भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।५।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ जिन पूजा भाषा

(मंगल पाठ) ॐ नमः सिद्धेभ्यः

मंगल मूर्ति परम पद पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।१।।

मंगल जिनवर पदनमों, मंगल अर्हत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दो स्वयमेव।।२।।

मंगल आचार्य मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, बन्दों मन वच काय।।३।।

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म।।४।।

या विधि मंगल से सदा, जग मे मंगल होत।
मंगल नाथूराम यह, भव सागर दृढ़ पोत।।५।।

।। इति मंगलपाठ ।।

श्री कुलिकुण्ड पार्श्वनाथ जिन पूजा

अडिल्ल छद

हूं कार अक्षरात्मक देव जो ध्यावते।
देव मनुष पशु कृत सो व्याधि नशावते।।
कासी तावे पत्र पै शुद्ध लिखावते।
केशर चन्दन ता पर गंध रचावते।।

दोहा–ऐसे अनुपम यत्र को, मन वच काय सभार।
जे भवि पूजे प्रीति धर, हो भवदधि से पार।।१।।

।। यत्र स्थापना ।। चाल जोगीरासा ।।

है महिमा को थान शुद्धवर यत्र कलिकुण्ड जानो।
डाकिनि शाकिनि अगनि चोर भय नाशत सब दुख खानो।।
नव ग्रहो का सब दुख नाशो रवि शनि आदि पिछानो।
तिनका मैं स्थापन करहूँ त्रिविधि योग मन लानो।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्डदण्ड श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्रपद्मावतीसेवित अतुलबल-वीर्य-पराक्रमयुक्त सर्वविघ्न-विनाशक, अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

अथाष्टक

छदत्रिभगी

गंगाको नीर अति ही शीर गध गहीर मेल सही।
भर कंचन भारी आनद धारी धार करो मन प्रीति लही।।
कलिकुण्ड सुयत्रं पढ़ कर मंत्र ध्यावत जे भवि जन ज्ञानी।
सब विपति विनाशै, सुख परकाशै, होवै मगल सुखदानी।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं कलिकण्ड दड श्री पार्श्वनाथाय धरणेद्र पद्मावती सेविताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय सर्वविघ्न विनाशनाय हम्ल्व्र्यूं भम्ल्व्र्यूं

मम्ल्व्र्यूं रम्ल्वर्यूं घम्ल्व्र्यूं झम्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं ख्म्ल्व्र्यूं जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

क्षीरोदधिनन्दन मलया चन्दन केशर और कर्पूर घसो।
भर सुवरण कलशा मन अति हुलसा भय आताप का दुःख नशा।।
प्रत्येक द्रव्य चढाते समय पूरा मंत्र पढिये। **कलिकुण्ड स० ।।चंदनं।।२।।**

शशि सम उजियारो तंदुल प्यारो अणि इक सारो जुग लेवो।
हो गंध मनोहर रतन थार भर पुंज सुकर मद तज देवो।।
कलिकुण्ड० ।।अक्षतं।।३।।

बहु फूल सुवास मधुकर राशं करके आसं आवत हैं।
सुरतरु के लावो पुण्य बढावो काम व्यथा नश जावत हैं।।
कलिकुण्ड० ।।पुष्प।।४।।

पकवान बनाये बहु घृत लाये खाड पगाये मिष्ट करे।
मन आनन्द धारैं मंत्र उचारैं क्षुधा रोग तत्काल टरे।।
कलिकुण्ड० ।।नैवेद्यं।।५।।

रतनन की जोत अति उद्योत तम क्षय होतं ज्ञान बढ़े।
अति ही सुख पावै पाप नशावै जो मन लावै पाठ पढ़े।।
कलिकुण्ड० ।।दीप।।६।।

चंदन कर्पूरं अगर सुचूरं लौंगादिक दश गध मिला।
वर धूप बनाकर अगनि मांहि धर, दुष्ट कर्म तत्काल जला।।
कलिकुण्ड० ।।धूप।।७।।

खर्जूर मगावो श्रीफल लावो दाख अनार बदाम खरे।
पुंगीफल प्यारे मन सुखकारे अन्तराय विधि दूर करे।।
कलिकुण्ड० ।।फलं।।८।।

जल गध सुधारा तंदुल प्यारा पुष्प चरू ले दीप भली।
दश धूप सुरगी फल ले अभंड़ी करो अर्घ उर हर्ष रली।।
कलिकुण्ड० ।।अर्घं।।९।।

जयमाला।

सर्वज्ञ परम गुण सागर हैं, तिन पद के हरि सब चाकर हैं।
सब विघ्न विनाशक सुखकर हैं।। कलिकुण्डसुयंत्र नमूं वर हैं।
नित ध्यान करैं जो जन मन ला, वर पूज रचैं कर यंत्र भला।
सब विघ्न० ।।२।।
तिनके घर ऋद्धि अनेक भरै। मन वांछित कारज सर्व सरैं।।
सब विघ्न० ।।३।।
सुर वंदित है तिनके चरणं। उर धर्म बढ़ै अघ को हरणं।।
सब विघ्न० ।।४।।
भय चोर अगनि जल साप मही, सब व्याधि नशै छिन मे जु सही।
सब विघ्न० ।।५।।
सब बन्ध खुलै छिन मांहि लखो, अरि मित्र होंय गुरु सांच अखो।
सब विघ्न० ।।६।।
अतिसार सग्रहणी रोग नसै, बंझा नारी लह पुत्र हंसैं।
सब विघ्न० ।।७।।
सब दूर अमंगल होय जान, सुख संपत दिन दिन बढ़त मान।
सब विघ्न० ।।८।।
इस यंत्र की जे पूजा करंत, सुर नर सुख लह हों मुकति कंत।
सब विघ्न० ।।९।।

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ अर्हं कलिकुण्डदड श्रीपाश्र्वनाथ धरणेद्रपद्मावति-सेविताय अतल-बलवीर्य-पराक्रमाय सर्व-विघ्न-विनाशकाय महार्घं निर्व०।।

जाप्य मंत्र।

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ अर्हं श्रीपार्श्वनाथाय धरणेद्रपद्मावतीसेविताय ममेप्सित कार्य कुरु कुरु स्वाहा।।

जयमाला

नागेन्द्र प्रभु के चरण नमते मुकुट प्रभा महा बढ़ी।
बढ़ो पुण्य अपार सब दुख कार अघ प्रकृति घटी।।
ध्याये श्री कलिकुण्ड दण्ड प्रचण्ड पारसनाथ जी।
तिनकी सुनो जयमाल भविजन कहूँ नवाके माथ जी।।१।।

त्रोटक छन्द

विधि घाति हनो वर ज्ञान लहो, सब ही पदार्थ को भेद कहो।
नित यंत्र नमूं कुलिकुण्ड सार, सब विघ्न विनाशन सुक्खकार।।२।।

कुमती वसु मान विनाशत हैं, मुकती का मारग भाषत हैं।
नित यंत्र० ।।३।।

दुर्गति मारग का नाश करै, एकांत मिथ्यात विवाद हरै।
निराकुल निर्मल शील धरै, निर्मल मुक्त लक्ष्मी को वरै।
नित यंत्र० ।।५।।

नहि क्रोध मान छल लोभ पाप, अष्टादश दोष विमुक्त आप।
नित यत्र ।।६।।

हैं अजर अमर गुण के भंडार, सब विघ्न विनाशक परम सार।
नित यंत्र० ।।७।।

नागेंद्र नरेंद्र सुरेंद्र आय, नमि हैं आनन्दित चित्त लाय।
नित यंत्र० ।।८।।

विनेंद्र मुनेंद्र निशेन्द्र आय, पूजत नित मनमे हर्ष लाय।।
नित यत्र० ।।९।।

(घत्ता छन्द)

सब पाप निवारण, संकट टारण, कलिकुण्ड पारस परचड।
जग में यश पावैं, सपति आवैं, लहैं मुकत जो सुख है अखण्ड।।
प्रति दिन जो वन्दैं, मन आनन्दै हो, बलवन्त पाप सब दूर।

सब विघ्न विनाशा, लहैं सुख संपति वुष्टकर्म होवैं चकचूर ।।अर्घ।।

श्री पारस स्वामी अन्तर्यामी, ध्यान लगायो वन मांही।
चर कमठ जु आयो क्रोध बढ़ायो परिषह कीनी अधिकाई।।
जिन मेरु समाना अचल महाना लख नागेंद्र ने पूज कियो।
सुर फण मंडप कीनो सुरबल हीनो, है प्रभु को निज शीश नयो।।
महार्घं।।

सोरठा

पूजन ये सुखकार, जे भवि करि हैं प्रीतिधर।
विधि बलवंत अपार, हन कर शिव सुखको लहैं।।

।। इत्याशीर्वाद ।। पुष्पाजलि क्षिपेत ।।

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना

हे पार्श्वनाथ करुणानिधान महिमा महान मंगलकारी।
शिव भर्तारी, सुख भंडारी सर्वज्ञ सुखारी त्रिपुरारी।।
तुम धर्मसेत, करुणानिकेत आनन्द हेत अतिशय धारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कन्द दुख–द्वन्द फन्द संकटहारी।।

आवाहन करके आज तुम्हे अपने मन में पधाराऊंगा।
अपने उर के सिंहासन पर गद-गद हो तुम्हें बिठाऊँगा।।
मेरा निर्मल मन टेर रहा, हे नाथ हृदय में आ जाओ।
मेरे सूने मन-मन्दिर में, पारस भगवान समा जाओ।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भव वन में भटक रहा हूं मैं, भर सकी न तृष्णा की खाई।
भव सागर के अथाह दुःख में, सुख की जल बिन्दु नहीं पाई।।

जिस भाँति आपने तृष्णा पर, जय पाकर तृषा बुझाई।
अपनी अतृप्ति पर, अब तुमसे जय पाने की सुधि आई है।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

क्रोधित हो कर कमठ ने जब नभ से ज्वाला बरसाई थी।
उस आत्मध्यान की मुद्रा में आकुलता तनिक न आई थी।।
विघ्नों पर बैर-विरोधों पर मैं साम्यभाव धर जाय पाऊँ।
मन की आकुलता मिट जाये ऐसी शीतलता पा जाऊं।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय ससार तापविनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

तुमने कर्मों पर जय पाकर मोती सा जीवन पाया है।
यह निर्मलता में भी पाऊं मेरे मन यही समाया है।।
यह मेरा अस्तव्यस्त जीवन इसमें सुख कहीं न पाता हूं।
मैं भी अक्षय पद पाने को शुभ अक्षत तुम्हें चढ़ाता हूं।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्ताय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

अध्यात्मवाद के पुष्पों से जीवन फुलवारी महकाई।
जितना जितना उपसर्ग सहा उतनी उतनी दृढ़ता आई।।
मैं इन पुष्पों से वंचित हूं अब इनको पाने आया हूं।
चरणों पर अर्पित करने को कुछ पुष्प संजोकर लाया हूं।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

जय पाकर चपल इन्द्रियों पर अन्तर की क्षुधा मिटा डाली।
अपरिग्रह की आलोक शक्ति अपने अन्दर ही प्रगटा ली।।
भटकाती फिरती क्षुधा मुझे मैं तृप्त नहीं हो पाया हूं।
इच्छाओं पर जय पाने को मैं शरण तुम्हारी आया हूं।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

अपने अज्ञान अंधेरे में वह कमठ फिरा मारा मारा।
व्यन्तर विमानधारी था पर तप के उजियारे से हारा।।
मैं अंधकार में भटक रहा उजियारा पाने आया हूं।
जो ज्योति आम में दर्शित है वह ज्योति जगाने आया हूं।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

तुमने तपके दावानल में कर्मों की धूप जलाई है।
जो सिद्ध-शिला तक आ पहुंची वह निर्मल गंध उड़ाई है।।
मैं कर्म बन्धनों में जकडा भव बन्धन से घबराया हूं।
वसुकर्म दहन के लिए तुम्हें मैं धूप चढ़ाने आया हूं।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

तप महा तपस्वी शान्ति मूर्ति उपसर्ग तुम्हें न डिगा पाये।
तप के फल ने पद्मावति के इन्द्रों के आसन कम्पाये।।
ऐसे उत्तम फल की आशा मैं मन में उमड़ी पाता हूं।
ऐसा शिव सुख फल पाने को, फल की शुभ भेंट चढ़ाता हूं।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

संघर्षों में उपसर्गों में तुमने समता का भाव धरा।
आदर्श तुम्हारा अमृत बन भक्तों के जीवन में बिखरा।।
मैं अष्ट द्रव्य से पूजा का शुभ थाल सजा कर लाया हूं।
जो पदवी तुमने पाई है मैं भी उस पर ललचाया हूं।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

पंचकल्याणक

बैशाख कृष्ण दुतिया के दिन तुम वामा के उर में आये।
श्री अश्वसेन नृप के घर में, आनन्द भरे मंगल छाये।।

ॐ ह्री वैशाख-कृष्ण द्वितीयाया गर्भमगलमडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जब पौष कृष्ण एकादशि को, धरती पर नया प्रसून खिला।
भूले भटके भ्रमते जग को, आत्मोन्नति का आलोक मिला।।

ॐ ह्री पौष कृष्ण एकादश्या जन्ममगलमडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

एकादशि पौष कृष्ण के दिन, तुमने मंसार अथिर पाया।
दीक्षा लेकर आध्यात्मिक पथ, तुमने तप द्वारा अपनाया।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादशी दिने तपो मगलमडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

अहिच्छत्र धरा पर जी भर कर, की क्रूर कमठ ने मनमानी।
तब कृष्णा चैत्र चतुर्थी को, पद प्राप्त किया केवलज्ञानी।।
यह वन्दनीय हो गई धरा, दश भाव का बैरी पछताया।
देवों ने जय जयकारों से, सारा भूमण्डल गुंजाया।।

ॐ ह्री चैत्र कृष्णा चतुर्थी दिवसे श्री अहिच्छत्रतीर्थे ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

श्रावण शुक्ला सप्तमि के दिन, सम्मेदशिखर ने यश पाया।
'सुवरण गिर' भद्र कूट से जब, शिव मुक्ति रमा को परिणाया।

ॐ ह्री श्रावणशुक्लासप्तम्या सम्मेद शिखरस्य सुवरणभद्र कूटात् मोक्षमगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

जयमाला

सुरनर किन्नर गणधर फणधर योगीजन ध्यान लगाते हैं।
भगवान तुम्हारी महिमा का, यशगान मुनीश्वर गाते है।।१।।

जो ध्यान तुम्हारा ध्याते है दुख उनके पास न आते है।
जो शरण तुम्हारी रहते है उनके सकट कट जाते है।।२।।

तुम कर्मदली, तुम महाबली इन्द्रिय सुख पर जय पाई है।
मैं भी तुम जैसा बन जाऊ मन में यह आज समाई है।।३।।

तुमने शरीर औ आत्मा के अतर सवभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह तजा निश्चय स्वरूप पहिचाना है।।४।।

तुम द्रव्य मोह, औ भाव मोह इन दोनों से न्यारे न्यारे।
जो पुद्गल के निमित्त कारण वे राग द्वेष तुम से हारे।।५।।

तुम पर निर्जन वन में बरसे ओले-शोले पत्थर पानी।
आलोक तपस्या के आगे चल सकी न शठ की मनमानी।।६।।

यह सहन शक्तियों का बल है जो तप के द्वारा आया था।
जिसने स्वर्गो मे देवों के सिहासन को कम्पाया था।।७।।

'अहि' का स्वरूप धर कर तत्क्षण धरणेन्द्र स्वर्ग से आया था।
ध्यानस्थ आप के ऊपर प्रभु फण-मण्डप बन कर छाया था।।८।।

उपसर्ग कमठ का नष्ट किया मस्तक पर फण-मण्डप रचकर।
पद्मादेवी ने उठा लिया तुम को सिर के सिहासन पर।।९।।

तप के प्रभाव से देवो ने व्यतर की माया विनशाई।
पर प्रभो आपकी मुद्रा में तिल मात्र न आकुलता आई।।१०।।

उपसर्गों का आतक तुम्हें हे प्रभु तिल पर न डिगा पाया।
अपनी विडम्बना पर बैरी असफल हो मन में पछताया।।११।।

शठ कमठ, बैर के वशीभूत भौतिक बल पर बौराया था।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव यह मूरख समझ न पाया था।।१२।।

दश भव तक जिसने बैर किया पीड़ायें देकर मन मानी।
फिरहारमानकरचरणोंमेंझुकगयास्वयमुवहअभिमानी।।१३।।

यह बैर महा दुख दायी है यह बैर न बैर मिटाता है।
यह बैर निरन्तर प्राणी को भव सागर मे भटकाता है।।१४।।

जिनको भव सुखकी चाह नहीं दुखसे न जरा भय खाते हैं।
वे सर्व-सिद्धियों को पाकर भव सागर मे तिर जाते हैं।।१५।।

जिसने भी शुद्ध मनोबल से ये कठिन परीषह झेली हैं।
सब ऋद्धि-सिद्धिया नत होकर उनके चरणों पर खेली हैं।।१६।।

जो निर्विकल्प चैतन्य रूप शिव का स्वरूप तुमने पाया।
ऐसा पवित्र पद पाने को मेरा अन्तर मन ललचाया।।१७।।

कार्माण वर्गणाये मिलकर भव मन मे भ्रमण कराती हैं।
जो शरण तुम्हारी आते है ये उनके पास न आती हैं।।१८।।

तुमने सब बैर विरोधो पर समदर्शी बन जय पाई है।
मै भी ऐसी समता पाऊँ यह मेरे हृदय समाई है।।१९।।

अपने समान ही तुम सब का जीवन विशाल कर देते हो।
तुम हो तिखाल वाले बाबा जग को निहाल कर देते हो।।२०।।

तुम हो त्रिकाल दर्शी तुमने तीर्थंकर का पद पाया है।
तुम हो महान अतिशय धारी तुम में आनन्द समाया है।।२१।।

चिन्मूरति आप अनत गुणी रागादि न तुमको छू पाये।
इस पर भी हर शरणागत पर मनमाने सुख साधन आये।।२२।।

तुम रागद्वेष से दूर दूर इनसे न तुम्हारा नाता है।
स्वयमेव वृक्ष के नीचे जग शीतल छाया पा जाता है।।२३।।

अपनी सुगन्ध क्या फूल कहीं घर घर आकर बिखराते हैं।
सूरज की किरणों को छूकर सुमन स्वयम् खिल जाते हैं।।२४।।

भौतिक पारस मणि तो केवल लोहे को स्वर्ग बनाती हैं।
हे पार्श्व प्रभो तुमको छूकर आत्मा कुन्दन बन जाती हैं।।२५।।

तुम सर्व शक्ति धारी हो प्रभु ऐसा बल मैं भी पाऊंगा।
यदि यह बल मुझको भी दे दो फिर कुछ न मांगने आऊगा।।२६।।

कह रहा भक्ति के वशीभूत हे दया सिन्धु स्वीकारो तुम।
जैसे तुम जग से पार हुये मुझ को भी पार उतारो तुम।।२७।।

जिसने भी शरण तुम्हारी ली वह खाली हाथ न आया है।
अपनी अपनी आशाओ का सबने वांछित फल पाया है।।२८।।

बहूमूल्य सम्पदायें सारी ध्याने वालो ने पाई हैं।
पारस के भक्तों पर निधियाँ स्वयमेव सिमट कर आई है।।२९।।

जो मन से पूजा करते है पूजा उनको फल देती है।
प्रभु-पूजा भक्त पुजारी के, सारे सकट हर लेती है।।३०।।

जो पथ तुमने अपनाया है वह सीधा शिव को जाता है।
जो इस पथ का अनुयायी है वह परम मोक्ष पद पाता है।।३१।।

ॐ ह्री श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पार्श्वनाथ भगवान को जो पूजे धर ध्यान।
उसे लोक परलोक के मिले सकल वरदान।।

इत्याशीर्वाद। पुष्पाज्जलि क्षिपेत्

श्री महावीर जिन पूजा

मत्तगयन्द

श्रीमत वीर हरे, भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अक अरीकरदंक, नये हरि पंकति मौलि सुआई।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणा-धन-धारक देव, इहा अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्री श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ॐ ह्री श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ। स्थापनम्।
ॐ ह्री श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अष्टक

(चाल-द्यानतरायकृत नदीश्वराष्टकादिक अनेक रागो मे **बनती है।**)

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातें धार करों।
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।१।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल नि०।।१।।

मलयागिर चन्दनसार, केसर सग घसों।
प्रभु भवआताप निवार, पूजत हिय हुलसो।। श्रीवीर०।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदन नि०।।२।।

तदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनो थार भरी।
तसु पुंज धरो अविरुद्ध, पावों शिवनगरी।। श्रीवीर०।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व०।।३।।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजों पद थारे।। श्रीवीर०।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाण विध्वसनाय पुष्प नि०।।४।।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी।।

श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि०।।५।।

तमखंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों।। श्रीवीर०।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहाधकार विनाशनाय दीप नि०।।६।।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठौं कर्म जरा।। श्रीवीर०।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूप नि०।।७।।

रितुफल कल-वर्जित लाय, कंचन थार भरों।
शिव फलहित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरो।।श्रीवीर०।।१।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फल नि०।।८।।

जल फल वसुसजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरो।। श्रीवीर०।।१।।

ॐ ह्री श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ नि०।।९।।

पंचकलयाणक ।राग टप्पा।

मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमानजिनरायजी, मोहि राखा०।
गरभ साढ़सित छट्ट लियो थित, त्रिशला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव करौ नित, मैं पूजू भवतरना।।मोहि०।।

ॐ ह्री आषाढ शुक्लषष्टया गर्भमगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कनवरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना।।मोहि०।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममगलप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृपति कूलघर पारन कीनो, मैं पूजों तुम चरना।। मोहि०।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षकृष्णदशम्या तपोमगलमडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

शुक्लदशै वैसाख दिवस अरि, घात चतुक क्षय करना।
केवललहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना।। मोहि०।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्लदशम्या केवलज्ञानमडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं वरना।
गणफनिवृन्द जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना।। मोहि०।।

ॐ ह्री कार्तिककृष्णअमावस्याया मोक्षमगलप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

जयमाला। छन्द हरिगीता। २८ मात्रा।

गणधर अशनिधर, चक्रधर हलधर, गदाधर वरवदा।
अरु चापधर, विद्यासुधर तिरशूलधर सेवहिं सदा।।
दुखहरन आनंभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुण मनिमाल उन्नत भालकी जयमाल हैं।।१।।

छन्द घत्तानन्द।

जय त्रिशलानदन, हरिकृतवदन, जगदानदन चदवर।
भवतापनिकदन, तनकनमंदन, रहित सपंदन नयन धरं।।२।।

छन्द त्रोटक।

जय केवलभानु-कला-सदनं। भवि-कोक-विकाशन कदवनं।
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञान-दृगांवर चूर करं।।१।।
गर्भादिक-मंगलमंडित हो। दुखदारिदको नितखंडित हो।

जबमाहिं तुम्हीं सतपंडित हो। तुमहीभवभाव-विहंडित हो।।२।।

हरिवंश सरोजनको रवि हो। बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो।
लहि केवलधर्म प्रकाशकियो। अबलों सोइमारग राजतियो।।३।।

पुनि आप तने गुण माहिं सही। सुरमग्न रहैं जितने सबही।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं। लय माननिसों मनभावत हैं।।४।।

पुनि नाचत रंग उमंग-भरी। तुअ भक्ति विषै पग एम धरी।
झननं झननं झनन झननं। सुर लेत तहां तननं तननं।।५।।

घननं घनन घनघंट बजै।। दृमद दृमदं मिरदंग सजै।
गगनांगन-गर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता।।६।।

धृगतां धृगतां गति बाजत है। सुरताल रमालजु छाजत है।
सननं सननं सनन नभमें। इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें।।७।।

कई नारि सुबीन बजावत हैं। तुमरो जस उज्ज्वल गावत हैं।
करताल विषे करताल धरैं। सुरताल विशाल जुनाद करैं।।८।।

इन आदि अनेक उछाह भरी। सुरभक्ति करें प्रभुजी तुमरी।
तुमही जग जीवन के पितु हो। तुमही बिनकारनतें हितु हो।।९।।

तुमही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनंदभासन हो।
तुमही चितचिंतितदायक हो। जगमाहि तुम्हीं सबलायकहो।।१०।।

तुमरे पन मंगल माहि सही। जिय उत्तम पुन्य लियो सबही।
हमको तुमरी शरणागत है। तुमरे गुन मे मन पागत है।।११।।

प्रभु मोहिय आप सदा बसिये। जबलों वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतो। तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतो।।१२।।

तबलौं व्रत चारित चाहतु हो। तबलो शुभभाव सुगाहतु हों।
तबलों सतसगति नित्त रहो। तबलों मम संजम चित्त गहो।।१३।।

जबलों नहिं नाश करों अरिको, शिव नारि वरों समता धरिको।
यह द्यो तबलो हमको जिनजी। हम जाचतु हैं इतनी सुनजी।।१४।।

घत्तानंद—श्रीवीरजिनेशा नमित सुरेशा, नाग नरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वाँछित पावै शर्म वरा।। १५।।

ॐ ह्री श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा—श्री सन्मति के जुगल पद, जो पूजैं धरि प्रीति।
वृन्दावन सो चतुर नर, लहैं मुक्ति नवनीत।।

इत्याशीर्वाद।

श्री चांदन गांव महावीर स्वामी पूजा।

छन्द।

श्रीवीर सन्मति गांव चादनमें प्रगट भये आय कर।
जिनको वचन मन कायसे मैं पूजहूं शिर नाय कर।।
हुये दयामय नार नर लखि, शातिरूपी भेषको।
तुम ज्ञानरूपी भानसे कीना सुशोभित देशको।।
सुर इन्द्र विद्याधर मुनी नरपति नवावें शीसको।
हम नवत हैं नित चावसों महावीर प्रभु जगदीशको।।

ॐ ह्री श्री चादनगाव महावीर स्वामिन् अत्र अवतर अवतर सवौषट्।।
ॐ ह्री श्री चादन गाव महावीर स्वामिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन।
ॐ ह्री श्री चादन गाव महावीर स्वामिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम।

अथाष्टक

क्षीरोदधिसे भरि नीर कंचन के कलशा।
तुम चरणनि देत चढाय आवागमन नशा।।
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी।। १।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिने जल नि०

मलयागिर और कपूर केशर ले हरषों।
प्रभु भव आताप मिटाय तुम चरननि परसों।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिने चन्दन नि०

तंदुल उज्ज्वल अति धोय थारी में लाऊं।
तुम सन्मुख पुन्ज चढ़ाय अक्षय पद पाऊं।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिने अक्षय नि०

बेला केतुकी गुलाब चंपा कमल लऊं।
जे कामबाण करि नाश तुम्हरे चरण दऊं।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिने पष्प नि०

फैना गुज्जा अरु स्वार मोदक ले लीजे।
कारि क्षुधा रोग निरवार तुम सन्मुख कीजे।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिने नैवेद्य नि०

घृतमे करपूर मिलाय दीपक मे जोरो।
करि मोहतिमरिको दूर तुम सन्मुख बारो।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिन दीप नि०

दशविधि ले धूप बनाय तामें गंध मिला।
तुम सन्मुख खेऊ आय आठों कर्म जला।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपर महावीर स्वामिने धूप नि०

पिस्ता किसमिस बादाम श्रीफल लौंग सजा।
श्री वर्द्धमान पद राख पाऊं मोक्ष पदा।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिने फल नि०

जल गंध सु अक्षत पुष्प चरुवर जोर करों।
ले दीप धूप फल मेलि आगे अर्घ करों।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर स्वामिने अर्घ नि०

टोकके चरणोका अर्घ

जहां कामधेनु नित आय दुग्ध जु बरसावै।
तुम चरननि दरशन होत आकुलता जावै।।
जहां छतरी बनी विशाल तहां अतिशय भारी।
हम पूजत मन वच काय तजि सशय सारी।।चांदन०।।

ॐ ह्री टोकमे स्थापित श्री महावीर चरणोभ्यो अर्घ।

टीलेके अन्दर आप सोहें पदमासन।
जहा चतुर निकाई देव आवे जिन शासन।।
नित पूजन करत तुम्हार करमें ले झारी।
हम हू वसु द्रव्य बनाय पूजे भरि थारी।।चादन०।।

ॐ ह्री श्री चादनपुर महावीर जिनेद्राय टीलेके अदर विराजमान समयका अर्घ।

पचकल्याणक

कुंडलपुर नगर मझार त्रिशला उर आयो।
सुदि छठि असाढ सुर आई रतनजु बरसायो।।चादन०।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनन्द्राय अषाढ सुदि छठि गर्भ मगल प्राप्ताय अर्घ।

जनमत अनहद भई घोर आये चतुर निकाई।
तेरस शुक्लाकी चैत्र सुर गिरि ले जाई।।चांदन०।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत सुदि तेरस जन्ममगल प्राप्ताय अर्घ।

कृष्णा मगसिर दश जान लौकातिक आये।
करि केश लौंच ततकाल झट बनको धाये।।चादन०।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मगसिर वदी दशमी तममगल प्राप्ताय अर्घ।

बैसाख सुदी दशमांहि घाती क्षय करना।

पायौ तुम केवल ज्ञान इन्द्रनिकी रचना।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय वैसाख सुदी दशमी केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घ।

कार्तिक जु अमावस कृष्ण पावापुर ठार्हीं।
भयो तीनलोकमें हर्ष पहुंचे शिव मार्हीं।। चांदन०।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय कार्तिक वदी अमावस मोक्षमगल प्राप्ताय अर्घ।

जयमाला दोहा।

मंगलमंय तुम हो सदा श्रीसन्नमति सुखदाय ।
चांदनपुर महावीरकी कहूं आरती गाय ।।

पद्धडी छन्द।

जय जय चांदनपुर महावीर, तुम भक्तजनों की हरत पीर ।
जड़ चेतन जगके लखत आप, दई द्वादशांग बानी अलाप ।। १ ।।

अब पंचम काल मझार आय, चांदनपुर अतिशय दई दिखाय ।
टीलेके अंदर बैठि बीर, नित हरा गायका तुमने क्षीर ।। २ ।।

ग्वालाको फिर आगाह कीन, जब दरशन अपना तुमने दीन ।
मूरति देखी अति ही अनूप है नग्न दिगंबर शांति रूप ।। ३ ।।

तहां श्रावक जन बहु गये आय, किये दरशन करि मनवचनकाय
है चिन्ह शेरका ठीक जान, निश्चय है ये श्रीवर्द्धमान ।। ४ ।।

सब देशनके श्रावक जु आय, जिन भवन अनूपम दियो बनाय ।
फिर शुद्ध दई वेदी कराय, तुरतहि गजरथ फिर लयो सजाय ।। ५ ।।

ये देख ग्वाल मनमें अधीर, मम ग्रह को त्यागो नहीं वीर ।
तेरे दरशन बिन तजूं प्राण, सुनि टेर मेरी किरपा निधान ।। ६ ।।

कीन रथमें प्रभु विराजमान, रथ हुआ अचल गिरके समान ।
तब तरह तरहके किये जोर, बहुतक रथ गाड़ी दिये तोड ।। ७ ।।

निशिमांहि स्वप्न सचिवहिं दिखात, रथ चले ग्वालका लगत हाथ ।
भोरहिं झट चरण दियो बनाय, संतोष दियो ग्यालहिं कराय ।। ८ ।।

करि जय जय प्रभु से करी टेर, रथ चल्यो फेर लागी न देर ।
वहु निरत करत बाजे बजाई, स्थापन कीने तहँ भवन जाइ ।। ९ ।।

इक दिन मत्रीको लगा दोष, धरि तोप कही नृप खाइ रोष ।
तुमको जब ध्याया वहां वीर, गोलासे झट बच गया वजीर ।। १० ।।

मंत्री नृप चांदन गांव आय, दरशन करि पूजा की बनाय ।
करि तीन शिखर मंदिर रचाय, कंचन कलशा दीने धराय ।। ११ ।।

यह हुक्म कियो जयपुर नरेश, सालाना मेला हो हमेश ।
अब जुड़न लगैबहु नर उ नार, तिथि चैत सुदी पूनों मंझार ।। १२ ।।

मीना गूजर आवै विचित्र, सब वरण जुड़े करि मन पवित्र ।
बहु निरत करत गावेंसुहाय, कोई कोई घृतदीपक रह्यो चढ़ाय ।। १३ ।।

कोइ जय जय शब्द करै गंभीर, जय जय जय हे श्री महावीर ।
जैनी जन पूजा रचत आन, कोई छत्र चंवरके करत दान ।। १४ ।।

जिसकी जो मन इच्छा करंत, मन वांछित फल पावै तुरंत ।
जो करै वदना एकबार, सुख पुत्र संपदा हो अपार ।। १५ ।।

जो तुम चरणों में रखै प्रीत, ताको जगमें को सकै जीत ।
है शुद्ध यहाका पवन नीर, जहां अति विचित्र सरिता गंभीर ।। १६ ।।

पूरनमल पूजा रची सार, हो भूल लेउ सज्जन सुधार ।
मेरा है शमशावाद ग्राम, त्रय काल करूं प्रभुको प्रणाम ।। १७ ।।

घत्ता।

श्री वर्द्धमान तुम गुण निधान उपमा न बनी तुम चरनन की ।
है चाह यही नित बनी रहै अभिलाष तुम्हारे दरशन की ।।

ॐ ह्री श्री चादन गाव महावीर जिनेद्राय अर्घ।

दोहा

अष्टकर्मके दहनको पूजा रची विशाल ।
पढ़े सुनें जो भावसे छूटे जग जंजाल ।। १ ।।

संवत जिन चौबीस सौ है बासठकी साल ।
एकादश कार्तिक वदी पूजा रची सम्हाल ।। २ ।।

इत्याशीर्वाद

बाहुबलि स्वामी की पूजा

दोहा।

कर्म अरिगण जीतिके, दरशायो शिव पथ ।
प्रथम सिद्ध पद जिन लयो भोग भूमिके अंत ।। १ ।।

समर दृष्टि जल जीत लहि, मल्लयुद्ध जय पाय ।
वीर अग्रणी बाहुबलि, वंदो मन वच काय ।। २ ।।

ॐ ह्री श्रीमत गोमटेश्वर अत्र अवतर अवतर सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथ अष्टक चाल जोगीरासा।

जन्म जरा मरनादि तृषा कर, जगत जीव दुख पावै ।
तिहि दुख दूर करन जिनपद को पूजन जल ले आवै ।।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी ।
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ।। १ ।।

ॐ ह्री वनमानवर्मार्पिणी समये प्रथम मक्ति स्थान प्राप्तायकर्मारि विजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबलि परम योगीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल।।१।।

यह संसार मरुस्थल अटवी तृष्णा दाह भरी है ।
तिहि दुख वारन चदन लेकै जिन पद पूज करी है ।। प० पू० ।।

।। चदन० ।।

स्वक्ष सालि शुचि नीरज रजसम गध अखड प्रचारी ।
अक्षय पदके पावन कारन पूजै भवि जगतारी ।। प० पू० ।।

।। अक्षत० ।।

हरिहर चक्रपति सुर दानव मानव पशु बस याकै ।
तिहि मकरध्वज नासक जिनको पूजो पुष्प चढाकै ।। प० पू० ।।

।। पुष्प० ।।

दुखद त्रिजग सीवनको अति ही दोष क्षुधा अनिवारी ।
तिहि दुख दूर करनको चरु वर ले जिन पूज प्रचारी ।। प०पू० ।।

।। नैवेद्य० ।।

मोह महातम मे जग जीवन सिव मग नाहि लखावै ।
तिहि निरवारन दीपक करले जिनपद पूजन आवै ।। प० पू० ।।

।। दीप० ।।

उत्तम धूप सुगंध बनाकर दश दिशमे महकावै ।
दश विधि बध निवारन कारण जिनवर पूज रचावै ।। प० पू० ।।

।। धूप० ।।

सरस सुवरण सुगध अनूपम स्वक्ष महासुचि लावै ।
शिव फल कारण जिनवर पदकी फलसो पूज रचावै ।। प०

।। फल० ।।

वसु विधिके वस वसुधा सव ही परवश अति दुख पावै ।
तिहि दुख दूर करनको भविजन अर्घ जिनाग्र चढ़ावै ।।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी ।
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ।। ९ ।।

।। अर्घ० ।।

जयमाला दोहा।

आठ कर्म हानि आठगुण प्रगट करे जिन रूप ।
सो जयवंतो भुजवली प्रथम भये शिव भूप ।।

जै जै जै जगतार शिरोमणि क्षत्रिय वस असस महान,
जै जै जै जग जन हितकारी दीनौ जिन उपदेश प्रमाण ।
जै जै चक्रपति सुत जिनके सतसुत जेष्ठ भरत पहिचान,
जै जै जै श्री ऋपभदेव जिनसों जयवत सदा जग जान ।। १ ।।

जिनके द्वितीय महादेवी सुचि नाम सुनदा गुण की खान,
रूप शील सम्पन्न मनोहर तिनके सुत भुजवली महान ।
सवापंच शत धनु उन्नत तनु हरिततवरण सोभा असमान,
बैडूरजमणि पर्वत मानों नील कुलाचल सम थिर जान ।। २ ।।

तेजवंत परमाणु जगतमे तिन करि रचो शरीर प्रमाण,
सत वीरत्व गुणाकर जाको निरखत हरि हरषै उर आन ।
धीरज अतुल बज्र सम नीरज सम वीराग्रणि अति बलवान,
जिन छबि लखि मनु शशि छबि लाजै कुसुमायुध लीनो सुपमान ।। ३ ।।

बालसमै जिन बाल चन्द्रमा शसि से अधिक धरे दुतिसार,
जो गुरुदेव पढ़ाई विद्या शास्त्र सब पढी अपार ।
ऋषभदेव ने पोदन पुरके नृप कीने भुजबली कुमार,
दई अयोध्या भरतेश्वरको आप बने प्रभुजी अनगार ।। ४ ।।

रायकाज षटखड महीपति सब दल लै चढ़ि आये आप,
बाहुबलि भी सन्मुख आये मंत्रिन तीन युद्ध दिये थाप ।
दृष्टि नीर अरु मल्ल युद्धमे दोनो नृप कीजो बलधाम,
वृथा हानि रुक जाय सैंन्यकी यातैं लड़िये आपों आप ।। ५ ।।

भरत भुजवली भूपति भाई उतरे समर भूमिमे जाय,
दृष्टि नीर रण थके चक्रपति मल्लयुद्ध तब करो अघाय ।
पगतल चलत चलत अचला तब कपत अचल शिखर ठहराय,
निषध नील अचलाधर मानौं भये चलाचल क्रोध बसाय ।। ६ ।।

भुज विक्रमवलबाहुबलीनें लये चक्रपति अधर उठाय,
चक्र चलायो चक्रपति तब सोभी विफल भयो तिहि ठाय ।
अति प्रचंड भुजदंड सुंड़ सम नृप सार्दूल बाहुबलि राय,
सिंहासन मंगवाय जासपें अग्रजको दीनों पधराय ।। ७ ।।

राजरमा रामासुर धनुमे जोवन दमक दामिनी जान,
भोग भुजंग जंग सम जगको जान त्याग कीनों तिहि थान ।
अष्टापद पर जाय बीरनृप वीर व्रतीधर कीनों ध्यान,
अचल अंग निरभंग संगतज संवतसरलों एक स्थान ।। ८ ।।

विषधर बंबी करी चरनतल ऊपर बेल चढ़ी अनिवार,
युगजघा काटि बाहुबेढि कर पहुंची वक्षस्थल परसार ।
सिरके केश बढ़े जिस मांहीं नभचर पक्षी बसे अपार,
धन्य धन्य इस अचल ध्यानको महिमा सुर गावै उरधार ।। ९ ।।

कर्मनासि शिव जाय बसे प्रभु ऋषभेश्वरसे पहले जान,
अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि जगदीश्वर पद लयो पुमान ।
वीरव्रती वीराग्रगन्य प्रभु बाहुबली जगधन्य महान,
वीरवृत्तिके काज जिनेश्वर नमैं सदा जिन बिब प्रमान ।। १० ।।

दोहा।

श्रवनबेलगुल विंध्य गिरि जिनवर बिंब प्रधान ।
छप्पन फुट उतगतनो खड़गासन अमलान ।। १ ।।

अतिशयवंत अनत बल धारक बिंब अनूप ।
अर्घ चढ़ाय नमो सदा जै जै जिनवर भूप ।।

ॐ ह्री वर्तमानावसर्पिणी समये प्रथम मुक्तिस्थान प्राप्ताय कर्मारिविजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबलि स्वामिने अनर्घपद प्राप्ताय महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती पूजा।

दोहा।

जनम जरा मृतु, क्षय करै, हरै कुनय जड़रीति ।
भव-सागरसों ले तिरै, पूजै जिन वच प्रीति ।।

ॐ ह्री श्री जिन-मुखोभ्द्‌व-सरस्वत्यै पष्पाजंलि ।

छीरोदधि गंगा विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा ।
भरि कंचनझारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा ।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ।।

ॐ ह्री श्री जिन-मखोद्‌भव-सरस्वतीदेव्यै जल निर्व०।।१।।

करपूर मंगाया चन्दन आया, केशर लाया रंग भरी ।
शारद-पद वंदों, मन अभिनंदों, पाप निकंदों दाह हरी ।।
तीर्थं० ।।चदनम्।।२।।

सुखदास कमोदं, धारक मोदं अति अनुमोदं चंदसमं ।
बहु भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ।।
तीर्थं० ।।अक्षतान्।।३।।

बहु फूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनंद रासं लाय धरे ।
मम काम मिटायो, शील बढायो, सुख उपजायो दोष हरे ।।
तीर्थं० ।।पुष्प।।४।।

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विध भाया मिष्ठ महा ।
पजूं थुति गाऊं, प्रीति बढ़ाऊँ, क्षुधा नशाऊँ हर्ष लहा ।।
तीर्थं० ।।नैवेद्य।।५।।

कर दीपक-जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै ।
तुम हो परकाशक, भरम-विनाशक हम घट भासक, ज्ञानबढ़ै ।।
तीर्थं० ।।दीप।।६।।

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं ।
सब पाप जलावे, पुण्य कमावे, दास कहावे सेवत हैं ।।
तीर्थ० ।।धूपम्।।७।।

बादाम छुहारी, लोग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं ।
मन वांछित दाता मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत हैं ।।
तीर्थ० ।।फलम्।।८।।

नयनन सुखंकारी, मृदु गुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोलधरैं ।
शुभगंध सम्हारा, वसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करैं ।।
तीर्थ० ।।अर्घ्यम्।।९।।

जल चंदन अक्षत फूल चरू, अरु दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुखपावै ।।
तीर्थ० ।।अर्घ्यम्।।१०।।

जयमाला सोरठा।

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशाग वाणी विमल ।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जडता हरै ।।

पहलो आचाराग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो ।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं ।।

तीजो ठाना अंग सुजान, सहस बयालिस पद सरधान ।
चौथो समवायांग निहारं, चौंसठ सहस लाख इक धारम् ।।

पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं ।
छटंठो ज्ञातृकथा विसतारं, पांच लाख छप्पन हज्जारं ।।

सप्तम उपासकाध्ययनगं, सत्तर सहस ग्यारहलख भंगं ।
अष्टम अंतकृत दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं ।।

नवम अनुत्तरदश सुविशाल, लाख बानवै सहस चावलं ।
दशम प्रश्न व्याकरण विचार, लाख तिरानव सोल हजारं ।।

ग्यारम सूत्र विपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं ।
चार कोड़ि अरु पंद्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ।।

द्वादस दृष्टिवाद पनभेद, इकसौ आठ कोड़ि पन वेदं ।
अड़सठ लाख सहस छप्पनहैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं।।

इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो ।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादस अंग सर्व पद माने ।।

कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं ।
साढे इकीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये ।।

जा बानी के ज्ञान ते, सूझे लोक अलोक।
'द्यानत' जग जयवंत हो, सदा देत हूँ धोक।।

ॐ ह्री श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

सरस्वती स्तवन

जगन्माता ख्याता जिनवर मुखांभोज उदिता ।
भवानी कल्याणी मुनि मनुज मानी प्रभुदिता ।।
महादेवी दुर्गा दरनि दु.खदाई दुरगती ।
अनेका एकाकी द्वच्युत दशागी जिनमती ।। १ ।।

कहें माता तो को यद्यपि सबही अनादि निधना ।
कंथचित् तो भी तू उपजि विनशै यों विवरना ।।

धरैं नाना जन्म प्रथम जिनके बाद अबलों ।
भयो त्यों विच्छेद प्रचुर तुव लाखों बरसलों ।।

महावीर स्वामी जब सकल ज्ञानी मुनि भये ।
बिडौजा के लाये समवसृत में गौतम गये ।।

तबै नौका रूपा भव जलधि मांही अवतरी ।
अरूपा निर्वर्णा विगत भ्रम मांनी मलकारी ।।

धरैं हैं जे प्राणी नित जननि तो को हृदय में ।
करे हैं पूजा व मन बचन काया कहि नमें ।।
पढ़ावें देवें जो लिखि लिखि तथा ग्रन्थ लिखवा ।
लहें ते निश्चय सो अमर पदवी मोक्ष अथवा ।।

(यह सरस्वती स्तवन पढकर पुष्प-क्षेपण करे)

श्री पंच परमेष्ठी पूजन

(राजमल पवैया भोपाल)

अर्हंत सिद्ध आचार्य नमन, हे उपाध्याय हे साधु नमन ।
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भव सागर तारण हार नमन ।।
मन वच काया पूर्वक करता, हूँ शुद्ध हृदय से आवाहन ।
मम हृदय विराजो तिष्ठ तिष्ठ, सन्निकट होहु मेरे भगवान ।।
जिन आत्म तत्त्व की प्राप्ति हेतु, ले अष्ट द्रव्य करता पूजन ।
तव चरणो के पूजन से प्रभु निज सिद्ध रूप का हो दर्शन ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधु पच परमेष्ठिन्!
अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्री श्री अरहन्त–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधु पच परमेष्ठिन्!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्री श्री अरहन्त–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधु पच परमेष्ठिन!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूं ।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्ज्वल जल भरकर लाया हूं ।।
मैं जन्म जरा मृत नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी ।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दुख मेटो अंतर्यामी ।।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्०

संसार ताप में जल जल कर, मैंने अगणित दुख पाए हैं ।

निज शान्त स्वभाव नहीं भाया, पर के ही गीत सुहाए हैं ।।
शीतल चंदन हैं भेंट तुम्हें, संसार ताप नाशे स्वामी । हे पंच

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो ससारतापविनाशनाय चदन०

दुख मय अथाह भव सागर में, मेरी यह नौका भटक रही ।
शुभ अशुभ भाव की भँवरों में, चैतन्य शक्ति निज अटक रही ।।
तंदुल है धवल तुम्हें अर्पित, अक्षयपद प्राप्त करूँ स्वामी। हे पंच०।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

मैं काम व्यथा से घायल हूं, सुख की न मिली किंचित् छाया ।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूं, तुमको पाकर मन हर्षाया ।।
मैं काम भाव विध्वंस करू, ऐसा दो शील हृदय स्वामी । हे पंच०।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्प०।

मैं क्षुधा रोग से व्याकुल हूं चारों गति में भरमाया हू।
जगके सारे पदार्थ पाकर भी तृप्त नहीं हो पाया हूं ।।
नैवेद्य समर्पित करता हूं, यह क्षुधा रोग मेटो स्वामी । हे पंच०।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य०।

मोहान्ध महाअज्ञानी मैं, निज को पर का कर्त्ता माना।
मिथ्यातम के कारण मैंने, निज आत्म स्वरूप न पहचाना ।।
मैं दीप समर्पण करता हूं, मोहान्धकार क्षय हो स्वामी । हे पंच०।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप०।

कर्मों की ज्वाला धधक रही संसार बढ़ रहा है प्रतिफल ।
संवर से आश्रव को रोकूं, निर्जरा सुरभि महके पल पल ।।
मैं धूप चढ़ाकर अब आठों, कर्मों का हनन करूं स्वामी । हे पंच०।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूप०।

निज आत्म तत्त्व का मनन करूं, चिंतवन करूं निज चेतन का ।
दो श्रद्धा ज्ञान चरित्र श्रेष्ठ, सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का ।।

उत्तम फल चरण चढ़ाता हूं, निर्वाण महाफल हो स्वामी ।हे पंच०।

ॐ ह्रीं श्री पच परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल०।

जल चंदन अक्षत पुष्प दीप नैवेद्य धूप फल लाया हूं ।
अब तक के संचित कार्मों का मैं पुंज जलाने आया हूं ।।
यह अर्घ समर्पित करता हूं अविचल अनर्घपद दो स्वामी ।हे पंच०।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य।

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, निज ध्यान लीन गुणमय अपार ।
अष्टादश दोष रहित जिनवर, अर्हंत देव को नमस्कार ।।

अविकल अविकारी अविनाशी, निजरूप निरंजन निराकार ।
जय अजर अमर हे मुक्तिकंत भगवंत सिद्ध को नमस्कार ।।

छत्तीस सुगुण से तुम मंडित, निश्चय रत्नत्रय हृदय धार ।
हे मुक्ति वधू के अनुरागी, आचार्य सुगुरु को नमस्कार ।।

एकादश अंग पूर्व चौदह के पाठी गुण पच्चीस धार।
बाह्मान्तर मुनि मुद्रा महान् श्री उपाध्याय को नमस्कार।।

व्रत समिति गुप्ति चारित्र प्रबल वैराग्य भावना हृदय धार ।
हे द्रव्य भाव संयम मय मुनि वर सर्व साधु को नमस्कार ।।

बहु पुण्य संयोग मिला नरतन जिनश्रुत जिन देव चरण दर्शन ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे तो सफल बने मानव जीवन ।।

निज पर का भेद जानकर मैं निज को ही निज में लीन करूं ।
अब भेद ज्ञान के द्वारा मैं निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूं ।।

निज में रत्नत्रय धारण कर, निज परणति को ही पहचानूँ ।
पर परणति से हो विमुख सदा, निजज्ञान तत्त्व को ही जानूँ ।।

जब ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता विकल्प तज, शुक्ल ध्यान मैं ध्याऊंगा ।
तब चार घातिया क्षय करके अर्हंत महापद पाऊंगा ।।

हे निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा, हे प्रभु कब इसको पाऊंगा ।
सम्यक् पूजा फल पाने को अब निज स्वभाव में आऊंगा ।।

अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु हे प्रभु मैंने की है पूजन ।
तब तक चरणों में ध्यान रहे जब तक न प्राप्त हो मुक्ति सदन ।।

ॐ ह्री श्री अर्हंत–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधु पच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मंगल रूप अमंगल हर, मंगलमय मंगल गान करूं।
मंगल में प्रथम श्रेष्ट मंगल, नवकार मंत्र का ध्यान करूं।।

(पुष्पाज्जलि क्षिपामि)

सप्तर्षि-पूजा

(कविवर मनरगलालजी)

छप्पय

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर ।।
पंचम श्रीजयजवान विनयलालस षष्ठम भनि ।
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्र-धाम गनि ।।

ये सातों चारण-ऋद्धि-धर, करूं तास पद थापना ।
मैं पूजूं मन वचन काय करि, जो सुख चाहूं आपना ।।

ॐ ह्री चारण ऋद्धिधर श्रीसप्त ऋषीश्वरा ! अत्र अवतरत अवतरत सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ अत्र मम सन्निहितो भवत-भवत वषट्।

शुभ-तीर्थ-उद्भव-जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायकैं ।
भव-तृषा-कंद-निकंद-कारण, शुद्ध-घट भरवायकैं ।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिनकी पूजा करूँ ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ ।।

ॐ ह्रीं श्रीचारण-ऋद्धिधर श्रीमन्व-स्वरमन्व-निचय सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस- जयमित्रऋषिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखंड कदलो नंद केशर, मंद मंद घिसायकैं ।
तस गंध प्रसरित दिग-दिगंतर, भर कटोरी लायकैं ।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिनकी पूजा करूं ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनँद विस्तरूं ।।

ॐ ह्रीं श्रीमान्वादिमप्तर्षिभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अति धवल अक्षत खंड-वर्जित, मिष्ट राजन भोग के ।
कलधौत-थारा भरत सुन्दर, चुनित शुभ उपयोग के ।। मन्वादि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु-वर्ण सुवरण-सुमन आछे, अमल कमल गुलाब के ।
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज-कर चावके ।। मन्वादि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये ।
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु, पुरटके थारा लये ।। मन्वादि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलधौत-दीपक जडित नाना, भरित गोघृत-सारसो ।
अति ज्वलितजगमग-ज्योति जाकी, तिमिर नाशनहारसों ।। मन्वादि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्-चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश अंगी कही ।
सो लाय मन-वच-कायशुद्ध, लगाय कर खेऊं सही ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं ।
द्रावडी दाडिम चारु पुगी, थाल भर भर लायकैं ।। मन्वादि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।। मन्वादि० ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सुलावना ।
वंदू ऋषिराजा धर्म-जहाजा निज-पर-काजा करत भले ।
करुणा के धारी गगन-विहारी दुख-अपहारी भरम दले ।।
काटत जम-फंदा भवि-जन-वृंदा करत अनंदा चरणन में ।
जो पूजें ध्यावें मंगल गावें फेर न आवें भव-वन में ।। १ ।।

छन्द पद्धरी

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस-थावरकी रक्षा करंत।
जय मिथ्या-तम-नाशक पतंग, करूणा-रस-पूरित अंग अंग।
जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप, पद-सेव करत नित अमर भूप।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन – समान।
जय निचय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप-रमातनों तनमें प्रकाश।
जय विषय-रोधसंबोधभान, परपरणति नाशन अचल ध्यान।
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल, लखि इंद्रजालवत जगत-जाल।
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज परणतिमें पायो विराम।
जय आनंदघन कल्याण रूप, कल्याण करत सबको अनूप।
जय मद-नाशन जयवान देव, निरमद विचरत सब करतसेव।
जय जयहिं विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान।
जय कृशित–काय तपके प्रभाव, छबि-छटा उड़ति आनंद-दाय।
जयमित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र।
जय चन्द्र-वदन राजीव नैन, कबहूँ विकथा बोलत न बैन।
जय सातौं मुनिवर एकसंग, नित गगन-गमन करते अभंग।
जय आये मथुरा पुरमँझार, तहं मरी रोगको अति प्रचार।
जय जय तिन चरणनिके प्रसाद, सबमरी देवकृत भई बाद।
जय लोक करे निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड़ हस्त।

जय ग्रीषम-ऋतु पर्वत मँझार, नित करत अतापन योग सार।
जय तृषा-परीषह करत जेर, कहुं रंच चलत नहि मन-सुमेर।
जय मूल अठाइस गुणन धार, तप उग्र तपत आनंदकार।
जय वर्षा-ऋतु में वृक्ष-तीर, तहँ अतिशीतल झेलत समीर।
जय शीत-काल चौपट मँझार, कै नदी-सरोवर-तट विचार।
जय निवसत ध्यानारूढ़होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय।
जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय।
जय आसन नानाभाँति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार।
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुल वृद्धि होय।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्रतनो दुख होय छार।
जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच, अरु ईति भीति सब-नसत-साच।
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर असुर नमत पद देत धोक।

छन्द रोला

ये सातों मुनिराज, महातप लक्ष्मी धारी।
परम पूज्य पद धरैं, सकल जगके हितकारी।।
जो मन वच तन शुद्ध, होय सेवै औ ध्यावै।
सो जन 'मनरंगलाल' अष्ट ऋद्धिनकौं पावैं।।

दोहा

नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज।
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

इत्याशीर्वाद

निर्वाण क्षेत्र पूजा

(कविवर द्यानतरायजी) सोरठा

परम पूज्य चौबीस, जिहं जिहं थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निश-दीस, मन वच तन पूजा करौ।। १।।

ॐ ह्री चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि! अत्र अवतर अवतरत संवौषट।
ॐ ह्री चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।
ॐ ह्री चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्राणि! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्।

गीता-छन्द

शुचि छीर-दधि-सम नीर निरमल, कनक-झारी में भरौं ।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों ।। १ ।।

ॐ ह्री चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जल निर्व०।

केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं ।
भव-तापको सताप मेटो, जोर कर विनती करौं ।। सं० ।।

ॐ ह्री चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्व०।

मोती-समान अखंड तंदुल, अमल आनंद धरि तरौं ।
औगुन हरौं गुन करौं हमको, जोरकर विनती करौं ।। सं० ।।

ॐ ह्री चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्व०।

शुभ फूल-रास सुवास-वासित, खेद सब मनकी हरौं ।
दुख-धाम-काम विनाश मेरो, जोरकर विनती करों ।। सं० ।।

ॐ ह्री चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्प निर्व०।

नेवज अनेक प्रकार जोग मनोग धरि भय परिहरौं ।
मम भूख-दुखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं ।। सं० ।

ॐ ह्री श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्य नि०

दीपक-प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहि डरौ।
संशय-विमोह-विभ्रम-तम-हर, जोर कर विनती करौं।सं०।

ॐ ह्रीं चतुर्विशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीप निर्व०।

शुभ-धूप परम-अनूप पावन, भाव पावन आचरौं ।
सब करम-पुंज जलाय दीज्यौ, जोर कर विनती करौं ।। सं० ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूप निर्व०।

बहु फल मंगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसों निरवरौं ।
निहचै मुकति-फल देहु मोको, जोर कर विनती करौं ।। सं० ।।

ॐ ह्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो फल निर्व०।

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं ।। सं० ।।

ॐ ह्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्य निर्व०।

जयमाला

सोरठा

श्रीचौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों ।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ।। १ ।।

चौपाई १६ मात्रा

नमो ऋषभ कैलासपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चंपापुर वंदौं, सन्मति पावापुर अभिनंदौं ।। २ ।।

वंदौं अजित अजित पद-दाता, वंदौं संभव भव-दुख-घाता ।
वंदौं अभिनंदन गुण-नायक, वंदौं सुमति सुमतिके दायक ।। ३ ।।

वंदौं पदम मुकति-पदमाकर, वंदौं सुपास आश-पासाहर ।
वंदौं चंद्रप्रभ प्रभु चंदा, वंदौं सुविधि सुविधि-निधि-कंदा ।। ४ ।।

वंदौं शीतल अघ-तप-शीतल, वंदौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल ।
वंदौं विमल विमल उपयोगी, वंदौं अनंत अनंत-सुखभोगी ।। ५ ।।

वंदौं धर्म धर्म-विस्तारा, वंदौं शांति शांति-मन-धारा ।
वंदौं कुंथ कुंथ-रखवालं, वंदौं अरह अरि-हर गुण मालं ।। ६ ।।

वंदौं मल्लि काम-मल-चूरन, वंदौं मुनिसुव्रत व्रत-पूरन ।
वंदौं नमि जिन नमित-सुरासुर, वंदौं पास पास-भ्रम-जग-हर ।। ७ ।।

बीसौं सिद्धिभूमि जा ऊपर, शिखरसम्मेद-महागिरि भूपर ।
भावसहित बंदे जो कोई, ताहि नरक-पशु-गत-नहिं होई ।। ८ ।।

नरपति नृप सुर शक्र कहावै, तिहुं जग-भोग भोगि शिव पावै ।
विघन-विनाशन मंगलकारी, गुण-बिलास वंदौं भव तारी ।। ९ ।।

दोहा

जो तीरथ जावै पाप मिटावे, ध्यावै गावै भगति करै ।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरैं ।।

ॐ ह्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व०।

पंच बालयति तीर्थंकर पूजा

दोहा।

श्रीजिन पांच अनंग-जित, वासुपूज्य मलि नेमि ।
पारसनाथ सुवीर अति, पूजूं चित धर प्रेम ।। १ ।।

ॐ ह्री पच बालयति-तीर्थंकरा अत्र अवतर अवतर सवौषट आह्वानम्।
अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ स्थापनम्।
अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरण।

अथाष्टक

शुचि शीतल सुरभि सुनीर लायो भर झारी ।
दुख जामन मरन गहीर, याकों परिहारी ।।
श्री वासुपूज्य मलि नेमि, पारस वीर अति ।
नमूँ मन वच तन धरि प्रेम पाँचों बालयति ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी,
श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति

चंदन केशर कर्पूर. जल में घसि आनौ,
भव तक भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानौ ।।चंदनं।।

वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे,
बहु देश देश के लाय, तुमरी भेंट धरे ।।अक्षातं।।

यह काम सुभट अति सूर, मनमें क्षोम करौ,
मैं लायौ सुमन हजूर, याको वेग हरौ ।।पुष्पं।।

षट् रस पूरित नैवेद्य, रसना सुखकारी,
द्वय कर्म वेदनी छेद, आनन्द है भारी ।।नैवेद्यं।।

धरि दीपक जगमग ज्योति, तुम चरणन आगे,
मम मोहतिमिर क्षय होत, आतम गुण जागे ।।दीपं।।

ले दशविधि धूप अनूप खेऊं गंध मई,
दशबंध दहन जिन भूप तुम हो कर्म जई ।।धूपं।।

पिस्ता अरु दाख बदाम श्रीफल लेय घने,
तुम चरण जजूं गुणधाम द्यौ सुख मोक्ष तने ।।फलं।।

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग ताहि नशावत हैं।
श्री वसुपूज्य मल्लि नेमि पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति ।।अर्घ्यम्।।

जयमाला

दोहा।

बालब्रह्मचारी भये, पांचो श्री जिनराज ।
तिनकी अब जयमालिका, कहूं स्वपर हितकाज ।।

पद्धरी छन्द

जय जय जय जय श्री वासुपूज्य, तुम सम जग में नहिं और दूज ।
तुम महाशुक्र सुरलोक छार, जब गर्भ मात माहीं पधार ।।

पोडश सपने देखे सुमात, बल अवधि ज्ञान तुम जन्म तात ।
अति हर्ष धार दंपति सुजान, बहु दान दियो जाचक जनान ।।
छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान ।
छः मास अगाऊ गर्भ आय, धनपति सुवरन नगरी रचाय ।।
तुम तात महल आँगन मंझार, तिहुं काल रतन धारा अपार ।
वरषाए षट् नव मास सार, धनि जिन पुरुषन नयनन निहार ।।
जय मल्लिनाथ देवन सुदेव, शत इन्द्र करत तुम चरण सेव ।
तुम जन्मत ही त्रय ज्ञान धार, आनन्द भयो तिहुं जग अपार ।।
तब ही ले चहुं विधि देव संग, सौधर्म इन्द्र आयो उमंग ।
सजि गज ले तुम हरि गोद आप, वन पाँडुक शिल ऊपर सुथाप ।।
क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय, भरि जल घट हाथों हाथ लाय ।
करि न्हवन वस्त्र भूषण सजाय, दे मात नृत्य ताँडव कराय ।।
पुनि हर्ष धार हृदय अपार, सब निर्जर तब जय जय उचार ।
तिस अवसर आनन्द हे जिनेश, हम कहिवे समरथ नहीं लेश ।।
जब जादोपति श्री नेमिनाथ, हम नमत सदा जुग जोरि हाथ ।
तुम ब्याह समय पशुवन पुकार, सुनि तुरत छुड़ाये दया धार ।।
कर कंकण अरु सिर मौर बन्द, सो तोडभये छिनमें स्वच्छन्द ।
तब ही लौकान्तिक देव आय, बैराग्य वर्द्धनी थुति कराय ।।
ततक्षण शिविका लायो सुरेन्द्र, आरूढ़ भये तापर जिनेन्द्र ।
सो शिविका निजकंधन उठाय, सुरनर खग मिल तपवन ठराया ।।
कच लौंच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नगन मुद्रा सुधार ।
हरि केश लेय रतनन पिटार, सो क्षीर उदधि माहीं पधार ।।
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, सुर असुरनमत तुम चरणमाथ ।
जुग नाग जरत कीनो सुरक्ष, यह बात सकल जगमें प्रत्यक्ष ।।

तुम सुरधनुसम लखिजग असार, तप तपत भयेतन ममत छांड़ ।
शठ कमठ कियो उपसर्ग आय, तुम मन सुमेर नहिं डगमगाय ।।

तुमशुक्लध्यान गहि खड़गहाथ, अरि च्यारि घातियाक रसुघात ।
उपजायो केवल ज्ञान भानु, आयो कुबेर हनि बच प्रमाण ।।

की समोशरण रचना विचित्र, तहाँ खिरत भई वाणी पवित्र ।
मुनि सुर नर खग तिर्यंच आय, सुनि निज निज भाषा बोधपाय ।।

जब वर्द्धमान अन्तिम जिनेश, पायो न अंत तुम गुण गणेश ।
तुम च्यारि अघाती करम हान, लियोमोक्ष स्वयं सुख अचलथान ।।

तब ही सुरपति बल अवधि जान, सब देवन युत बहु हर्ष ठान ।
सजि निज वाहन आयो सुतीर, जहं परमौदारिक तुम शरीर ।।

निर्वाण महोत्सव कियो भूर, ले मलयागिर चंदन कपूर ।
बहुद्रव्य सुगंधित सरससार, तामे श्रीजिनवर वपु पधार ।।

निज अगनिकुमारिन मुकुट नाय, तिहंरतनन शुचिज्वालाउठाय ।
तस सर माहीं दीनी लगाय, सो भस्म सबन मस्तक चढ़ाय ।।

अति हर्ष थकी रचि दीप माल, शुभ रतन मई दश दिश उजाल ।
पुनि गीत नृत्य बाजे बजाय, गुणगाय ध्याय सुरपति सिधाय ।।

सो थान अबै जग में प्रत्यक्ष, नित होत दीप माला सुलक्ष ।
हे जिन तुम गुण महिमा अपार, बसु सम्यक् ज्ञानादिक सु सार ।।

तुम ज्ञान माहिं तिहुं लोक दर्व, प्रतिबिम्बित हैं चर अचर सर्व ।
लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि, भये वीतराग जग में प्रसिद्ध ।।

हैव बालवती तुम सबन एम, अचरज शिव काँता वरी केम ।
तुम परम शाँति मुद्रा सुधार, किय अष्ट कर्म रिपु को प्रहार ।।

हम करत बीनती बार-बार, कर जोर स्व मस्तक धार-धार ।
तुम भवे भवोदधि पार-पार. मोको सुवेग ही तार-तार ।।

अरबस्त बास ये पूर-पूर, बसु कर्म शैल चक चूर-चूर ।
दुख सहन दास अब शक्ति नाहिं, गहि चरण शरण कीजेनिबाह ।।

चौपाई

पाँचों बाल यती तीर्थेश, तिनकी यह जयमाल विशेष। ।
मन बच काय त्रियोग सम्हार, जे गावत पावत भव पार ।।

ॐ ह्री श्रीपंच बालयति तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घम्।।

दोहा।

ब्रह्मचर्य सों नेरि धरि, रचियो पूजन ठाठ।
पाँचों बाल यतीन का, कीजे नित प्रतिपाठ।।

इत्याशीर्वाद

श्री निर्वाण क्षेत्र पूजा

दोहा—बंदौं श्री भगवान् को, भाव भगति सिर नाय।
पूजा श्री निर्वाण की, सिद्धक्षेत्र सुखदाय।।१।।

द्वीप अढाई के विषै, सिद्धक्षेत्र जो जान।
तिनको मैं वंदन करौं, भव भव होइ सहाय।।२।।

अथ स्थापना (अडिल्लं छन्द)

परम महा उत्कृष्ट मोक्ष मंगल सही,
आदि अनादि संसार भानि मुक्ति लही ।
तिनके चरन अरु क्षेत्र जजों शिवदायही।
आव्हानन विधि ठानि बार त्रय गायही ।। १ ।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्रस्य आर्य खण्ड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

अथ अष्टक (ढाल पचमेरु पूजा भाषा की चाल में)

शीतल उज्ज्वल निर्मलनीर, पूजों सिद्धक्षेत्र गम्भीर ।
लहों निर्वाण पूजों मन वच तन धरि ध्यान ।।
अब मैं शरण गही तुम आन, भवदधिपार उतारन जान ।।ल०।।

ॐ ह्री भारत क्षेत्रस्य आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंदन घिसौं कपूर मिलाय, भव आताप तुरति मिट जाय ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो भवाताप-विनाशनाय चदन निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अमल अखंडित अक्षत धोय, पूर्जो सिद्ध क्षेत्र सुख होय ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्ताय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पुष्प सुगंध मधुप झंकार, पूजों सिद्ध क्षेत्र मंझार ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रभ्य काम-बाण विध्वसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

वर नैवेद्य मिष्ट अधिकाय, पूजों सिद्ध क्षेत्र समभाय ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रभ्य क्षुधावेदनीय रोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

दीप रतनमय तेज सुहाय। पूजों सिद्ध क्षेत्र समझाय ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप सुगंध लहै दश अंग। पूजों सिद्ध क्षेत्र सरवंग लहौं

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

फल प्रासुक उत्तम अतिसार। सिद्ध क्षेत्र वाँछित दातार ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

अर्घ करों निज माफिक शक्ति। पूजों सिद्ध क्षेत्र करि भक्ति ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीनि स्वाहा।।९।।

तीरथ सिद्ध क्षेत्र के सबै, बांछा मेरी पूरो अबै ।।ल०।।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खड सम्बन्धी मिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घ महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

अथ प्रत्येक निर्वाण क्षेत्र के अर्घ (अडिल्ल छन्द)

श्री आदीश्वरदेव भये निर्वाणजू।
श्री कैलाश शिखर के ऊपर मानजू।।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय कै।
भवदधि उतरों पार शरण तुम आय कै।।

ॐ ह्री कैलाश पर्वत मेती श्री ऋषभदेव तीर्थंकर दश हजार मुनि **सहित** मुक्ति पधारे और वहाँ ते और मुक्ति पधारे होहिनिनको **अर्घ** महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंपापुर तें मुक्ति भये जिनराजजी।
वासपूज्य महाराज करम क्षयकारजी ।।तिन०।।

ॐ **ह्री** चपापुर सेती श्री वासपूज्य तीर्थंकर हजार मुनि सहित **मुक्ति** पधारे और वहाँ ते और मुनि मुक्ति पधारे होहि तिनको अर्घ **महार्घ** निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

श्री गिरनार शिखर जग मे विख्यात जी।
सिद्ध वधू के नाथ भये नेमिनाथजी ।।तिन०।।

ॐ **ह्री** गिरनार शिखर सेती श्री नेमिनाथ तीर्थंकर पाच सौ **छत्तीस मुनि** सहित मुक्ति पधारे अर बहत्तर कोडि सात सौ मुनि मुक्ति **पधारे** तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पावापुर सरवर के बीच महावीरजी।
सिद्ध भये हनि कर्म करें सुरसेवजी ।।तिन०।।

ॐ ह्री पावापुर के पदम सरोवर मध्य सेती श्री महावीर तीर्थंकर छत्तीस मुनि सहित मुक्ति पधारे और वहा ते और मुनि मुक्ति पधारे होहि तिनिको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

श्री सम्मेद शिखर शिवपुर को द्वार जी।
बीस जिनेश्वर मुक्ति भये भवतारजी ।।तिन०।।

ॐ ह्री सम्मेद शिखर सेती श्री बीस तीर्थंकर मुक्ति पधारे और उस शिखरते और मुनि मुक्ति पधारे होहि तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

नंगानंग कुमार दोय राजकुमार जू।
मुक्ति भये सोनागिर जग हितकार जू।।
साढ़े पांच कोडि भये शिवराजजी।
पूजों मन वच काय लहो सुखसारजी।।

ॐ ह्री सोनागिर पर्वत सेती नगानग कुमारादि साढ़े पाच कोडि मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

राम हनू सुग्रीव नील महानील जी।
गवया गवाक्ष इत्यादि गये शिवतीरजी।।
कोडि निन्यानवैं मुक्ति तुंगीगिर पाय कै।
तिनि के चरण जजों मैं मन वच काय कै।।

ॐ ह्री तुगीगिरि पर्वत सेती श्रीरामचन्द्र हनुमान सुग्रीव नील महानील गवय गवाक्ष इत्यादि निन्यानवे कोडि मुनि मुक्ति पधारे तिनि को अर्घं महार्घं निर्वमीति स्वाहा।।७।।

वरदत्तादि वरंग मुनीन्द्र सुनामजी।
सायरदत्त महान महा गुणधामजी।।
तारवर नगरतें मुक्ति भये सुखदायजी।
तीन कोड़ि अरु लाख पचास सुगाय जी।।

ॐ ह्री तारवनगर सेती वरदत्तादि साढ़े तीन कोड़ि मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घ महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

श्री गिरिनार शिखर जग में विख्यात है।
कोटि बहत्तर अधिके अरु सौ सात हैं।
संबु पद्युम्न अनिरुद्ध मुक्ति को पाय कै।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय कै।।

ॐ ह्री श्री गिरनार शिखर सेती सबुकुमार प्रद्युम्नकुमार अनिरुद्धकुमारादि बहत्तर कोडि सात सौ मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

रामचंद्र के सुत दोय जिन दीक्षा धरी।
लाडनरिंद आदि मुनि सब कर्मन हरी।।
पावागिरि के शिखर ध्यान धरिके सही।
पांच कोडि मुनि सति परम पदवी लही।।

ॐ **ह्रीं पावागिरि** शिखर सेती लाडनरिद आदि पाच कोडि **मुनि मुक्ति पधारे** तिनको अर्घं महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

पांडव तीन बड़े राजा तुम जानियो।
आठ कोडि मुनि चरम शरीरी मानियो।।
श्री शत्रुंजय शिखर मुक्ति वर पाय के।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय कै।।

ॐ **ह्रीं** शत्रुजय शिखर सेती तीन पाडव् को आदि दे आठ कोडि मुनि मुक्त पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्री गजपंथ शिखर पर्वत सुखधाम है।
मुक्ति गये बलभद्र सात अभिराम है।।
आठ कोडि मुनि सहित नमों मन लाय के।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय कै।।

ॐ ह्रीं गजपंथ सेती सात बलभद्र को आदि दे आठ कोडि मुनि

मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निवपामीति स्वाहा।।१२।।

रावण के सुत आदि पंच कोडि जानिये।
ऊपर लाख पचास परम सुख मानिये।।
रेवा नदी के तीर मुक्ति में जाय के।
तिन के चरण जजो मैं मन वच काय के।।

ॐ ह्रीं रेवा नदी के तीर सेती रावण के सुतो को आदि दे साढे पाच कोडि मुनि मुक्ति पधारे तिनि को अर्घ महार्घं निवपामीति स्वाहा।।१३।।

द्वै चक्री दश काम कुमार महाबली।
रेवा नदी के पच्छिम कूट सिद्ध है भली।।
साढे तीन कोड़ि मुनि शिव को पाय के।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय के।

ॐ ह्रीं रेवा नदी के पश्चिम भागते सिद्ध कूट सेती **द्वैचक्री दश कामदेव** को आदि दे साढे तीन कोडि मुनि मुक्ति पधारे तिनको **अर्घं** महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

दक्षिण दिशि में चूल उतग शिखर जहाँ।
बड़नयरी बडनयर तहां शोभित महा।।
इन्द्रजीत अरु कुभकरण व्रत धारि के।
मुक्ति गये वसु कर्म जीति सुख कारिके।।

ॐ ह्रीं दक्षिण दिशा मे चूलगिरि उतग शिखर सेती इन्द्रजीत कुभकरण मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घ महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

अचला नदी के तीर व पावाशिखरजी।
समंतभद्र मुनि चार बड़ी है ऋद्धिजी।।
जहाँ तें परम धाम के सुख को पाय के।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय के।।

ॐ ह्रीं अचला नदी के तीर पावागिरि शिखर सेती **समतभद्रादि चार मुनि** मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

फल होड़ी बड़गांव अनूप जहाँ बसे।
पच्छिम दिसि में द्रोण महा पर्वत लसे।।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर शिव को पाय के।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय के।।

ॐ ह्री फलहोडी बडगाव की पच्छिम दिशा मे द्रोणगिरि पर्वत सेती गुरुदत्तादि मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

व्याल महाव्याल मुनीश्वर दोय हैं।
नागकुमार मिलाय तीन ऋषि होय हैं।।
श्री अष्टापद शिखर तें मुक्ति में जाय के।
तिनके चरण जजों मैं मन वच काय के।।

ॐ ह्री श्री अष्टपद सेती व्याल महाव्याल नागकुमार तीन मुनि मुक्ति पधारे अरु वहानै और जे जिन मुनि मुक्ति पधारे होहि तिनि को अर्घं महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

अचलापुर की दिशि ईशान महा बसे।
तहाँ मेढगिरि शिखर महा पर्वत लसे।।
तीन कोडि अरु लाख पचास महामुनी।
मुक्ति गये धरि ध्यान करम अरि तिन हनी।।

ॐ ह्री अचलापुर की ईशान दिशा मेढगिर पर्वत के शिखर सेती साढे तीन कोडि मनि मक्ति पधारे तिनको अर्घ महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

वशस्थल वन पश्चिम कुंथ पहार है।
कूलभूषण देशभूषण मुनि सुखकार है।।
तहां तें शुक्ल ध्यान धरि मुक्ति में जाय के।
तिन के चरण जजौं मैं मन वच काय के।।

ॐ ही वशस्थल वन की पच्छिमदिशा मे कुथलगिरि शिखर सेती कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्ष पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

जसहर राजा के सुत पंच सतक कहे।
देश कलिंग मझार महा मुनि ते भये।।
शुक्ल ध्यान तें मुक्ति रमनि सुख पाय के।
तिनके चरण जजों मैं मन वच काय के।।

ॐ ह्री कलिग देश सेती जसहर राजा के पाच सौ पुत्र मुनि होय मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

कोटि शिला एक दक्षिण दिशि में है सही।
निहचै सिद्ध क्षेत्र है श्री जिनवर कही।।
कोटि मुनीश्वर मुक्ति गये सुख पाय के।
तिनके चरण जजों मैं मन वच काय के।।

ॐ ह्री दक्षिण दिशा मे कोटि शिला सेती कोडि मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

समवशरण श्री पार्श्व जिनेश्वर देव को।
करें सुरासुर सेव परम पद लेव को।।
रेसिंदीगिर उत्तम थान सुपाय के।
वरदत्तादि पाँच मुनि मुक्ति सुजाय के।।

ॐ ह्री पार्श्वनाथ स्वामी के समवशरण पासि रेसिदीगिर शिखर सेती वरदत्तादि पाच मुनि मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

पोदनपुर को राज त्याग मुनि जे भये।।
बाहुबलि स्वामी तहाँ तें सिद्ध भये।।
तिन के चरण जजों मैं मन वच काय के।
भवदधि उतरों पार शरण तुम आय के।।

ॐ ह्री पोदन पुर का राजत्याग बाहुबलि जी मुनि हो मुक्ति पधारे तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

श्री तीर्थंकर चतुर बीस भगवान हैं।
गर्भ जन्म तप ज्ञान भये निरवान हैं।।

तिनि के चरण जजों मैं मन वच काय के।
भववधि उतरों पार शरण तुम आय के।।

ॐ ह्री पचकल्याणकधारी चौबीस तीर्थंकर भगवान तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

तीन लोक में तीर्थ जे सुखदाय हैं।
तिनि प्रति वंदों भाव सहित सिरनाय हैं।।
तिन की भक्ति करूं मैं मन वचकाय के।
भवदधि उतरों पार शरण तुम आय के।।

ॐ ह्री तीन लोक मे जे जे तीर्थ हैं तिनको अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२६।। पूर्णार्घ्यं।।

अर्थ जयमाला—पद्धडी छद

श्री आदीश्वर वंदों महान, कैलाश शिखर तें मोक्ष जान।
चंपापुर तें श्री वासुपूज्य, तिन मुक्ति लही अति हर्ष हूज्य।
गिरिनार नेमजी मुक्ति पाय, पावापुर तें श्री वीर राय।
सम्मेद शिखर श्री मुक्ति द्वार, श्री बीस जिनेश्वर मोक्ष धार।
सोनागिर साढ़े पांच कोड़ि, तुंगीगिरि राम हनू सुजोड़ि।
निन्याणवें कोड़ि मुक्ति मझार, तिनके हम चरण नमें त्रिकाल।
वरदत्तादि वरंग मुनेन्द्र चंद्र, तहां सायरदत्त महान बिंब।
तारवरनयरतें मोक्ष पाय, तिनके चरननि हम सिर नमाय।
संबू प्रद्युमन अनिरुद्ध भाय, गिरिनार शिखर तें मोक्ष पाय।
बहत्तर कोड़ि सौ सात जान, तिनको मैं मन वच करूँ ध्यान।
श्रीरामचंद्र के दोइ पूत, अरु पांच कोड़ि मुनि सहित हूत।
लाडनरिंद इत्यादि जान, श्री पावागिर तें मोक्ष थान।
श्री अष्ट कोडि मुनिराज जान, पांडव त्रय बड़ि राजा महान।
श्री शंत्रुजयतें मुक्ति पाय, तिनि को मैं वंदों सिर नमाय।
गजपंथ शिखर जग में विशाल, मुनि आठ कोड़ि हूजे दयाल।

बलभद्र सात मुक्तै सुजाय, तिनिको हम मन वच शीस नाय।
रावणके सुत अरु पाँच कोडि, पचास लाख ऊपरि सु जोडि।
रेवा तट तें तिन मुक्ति लीन, करि शुक्ल ध्यान तें कर्म क्षीन।
द्वै चक्रवर्ति दश कामदेव, आहूत कोडि मुनिवर सुएव।
रेवा के पच्छिम कूट जानि, तिनवरी मुक्ति वसुकर्म हानि।
दक्षिण दिशमें गिरिचूल जानि, तहाँ इन्द्रजीत कुंभकरण मानि।
ते मुक्ति गए वसु कर्म जीत, सो सिद्धक्षेत्र वदौं विनीत।
पावागिर शिखर मझार जान, तहा स्वर्णभद्र मुनि चार मान।
तिनि मुक्तिपुरी को गमन कीन, शिवमारग हमको सोधि दीन।
फल होडी बडगाव सु अनूप, पश्चिम दिसि द्रोणागिरि रूप।
गुरुवत्तादिक शिव पद लहाय, तिनको हम बंदे सीस नाय।
व्याल महाव्याल मुनीश दोइ, श्री नागकुमार मिलि तीन होइ।
श्री अष्टापद तें मुक्ति होइ, तिनि आठ कर्म मलको सुधोइ।
प्रचलापुर की दिसि में ईशान, तहाँ मेढगिरि नामा प्रधान।
मुनि तीन कोडि ऊपरि सुजोई, पचास लाख मिलि मुक्ति होइ।
वशास्थलवन कुंथु पहार, कुलभूषण देशभूषण कुमार।
भारी उपसर्ग कर्यो वितीत, तिनि मुक्ति लई अरि कर्म जीत।
जसहर के सुत सत पच सार, कलिंग देश तें मुक्ति धार।
मुनि कोटि शिला तें मुक्ति लीन, तिनिको बदन मन बचन कीन।
बरवत्तादिक पाँचों मुनीश, तिनके मुक्ति लई तिन नमूं शीस।
श्री बाहुबलि बल अधिक जान, बसु कर्म नाशि के मोक्षथान।
जहा पंचकल्याण जिनेन्द्रदेव, तिनके हम निति मागें सुसेव।
यह अरज गरीबन की दयाल, निर्वाण देऊ हमको सु हाल।

ॐ ह्री भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड सम्बन्धी सिद्ध क्षेत्रेभ्य पूर्णार्धं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल—यह गुण माल महान सु भविजन गाइयो ।
स्वर्ग मुक्ति सुखदाय कंठ में लाइयो ।।

यातें सब सुख होय सुजस को पाय के ।
भवदधि उतरों पार शरण प्रभु आय के ।।

इत्याशीर्वाद

दोहा—नर भव उत्तम पाय के, अवसर मिलियो मोहि ।
चोखा ध्यान लगाय के, सरन गही प्रभु तोहि ।। १ ।।

बालक सम हम बुद्धि है, भक्ति थकी गुणगाय ।
भूल चूक तुम सोधियो, सुनियो सज्जन भाय ।। २ ।।

औगुन तुम मति लीजियो, गुण गह लीजो मीत ।
पूजा नित प्रति कीजियो, कर जीवन सों प्रीति ।। ३ ।।

संवत अष्टादश शतक, सत्तरि एक महान ।
भादों कृष्ण जु सप्तमी, पूरण भयो सुजान ।। १ ।।

।। इति श्री निर्वाण क्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।।

श्री ऋषि-मण्डल पूजा भाषा

स्थापना

दोहा

चौबिस जिन पद प्रथम नमि, दुतिय सुगणधर पाय ।
त्रितिय पंच परमेष्ठि को, चौथे शारद माय ।।
मन वच तन ये चरन युग, करहुं सदा परनाम ।
ऋषि मण्डल पूजा रचों, बुधि बल द्यो अभिराम ।।

अडिल्ल छन्द।

चौबीस जिन वसु वर्ग पंच गुरु जे कहे ।
रत्नत्रय चव देव चार अवधी लहे ।।
अष्ट ऋद्धि चव दोय सूर ह्रीं तीन जू ।
अरहंत दश दिग्पाल यन्त्र में लीन जू ।।

दोहा

यह सब ऋषिमण्डल विषै, देवी देव अपार ।
तिष्ठ तिष्ठ रक्षा करो, पूजूं वसु विधि सार ।।

ॐ ह्री वृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अर्हतादि पचपद, दर्शनज्ञानचारित्र रूपरत्नत्रय, चतुर्निकाय देव, चार प्रकार अवधि धारक श्रवण, अष्ट ऋद्धि, चौबीस सूर, तीन ह्रीं, अर्हंत बिम्ब, दश दिग्पाल, यन्त्रसम्बन्धी परमदेव समूह अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

(इति स्थापना)

अष्टक-विधान

हरिगीता छन्द।

क्षीर उदधि समान निर्मल तथा मुनि चित सारसो ।
भर भृंग मणिमय नीर सुन्दर तृषा तुरित निवारसो ।।
जहां सुभग ऋषिमण्डल विराजैं पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय जलं।।१।।

नोट—प्रत्येक द्रव्य चढ़ाते हुये स्थापना के मन्त्र को भी पूरा पढ़ा जा सकता है। हमने यहा केवल संक्षिप्त मन्त्र देकर लिखा है।

मलय चन्दन लाय सुन्दर गंध सों अलि झंकरै ।
सो लेहु भविजन कुंभ भरिके तप्त दाह सबै हरै ।। जहाँ० ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय चदनं।।२।।

इन्दु किरण समान सुन्दर जोति मुक्ता की हरैं ।
हाटक रकेबी धारि भविजन अखय पद प्राप्ती करैं ।। जहाँ० ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय अक्षत।।३।।

पाटल गुलाब जुही चमेली मालती बेला घने ।
जिस सुरभितें कलहंस नाचत फूल गुंथि माला बने ।। जहाँ० ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय पुष्प।।४।।

अर्द्ध चन्द्र समान फेनी मोदकादिक ले घने ।
घृत पक्व मिश्रित रस सु पूरे लख क्षुधा डायनि हने ।। जहाँ० ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय नैवेद्य।।५।।

मणि दीप ज्योति जगाय सुन्दर वा कपूर अनूपकं ।
हाटक सुथाली मांहि धरिके वारि जिनपद भूपकं ।। जहाँ० ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय दीप।।६।।

चन्दन सु कृष्णागरु कपूर मँगाय अग्नि जराइये ।
सो धूप-धूम्र अकाश लागी मनहुँ कर्म उड़ाइये ।। जहाँ० ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय धूप।।७।।

दाडिम सु श्रीफल आम्र कमरख और केला लाइये ।
मोक्ष फल के पायवे की आश धरि करि आइये ।।
जहां सुभग ऋषिमंडल विराजैं पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवाँछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय फल।।८।।

जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवार भगवान् वारि तुम पद में दिया ।। जहाँ० ।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय यन्त्र-सम्बन्धि-परम-देवाय अर्घं।।९।।

अर्घावली

अडिल्ल छन्द

वृषभ जिनेश्वर आदि अंत महावीर जी।
ये चौबिस जिनराज हनों भवपीर जी।।
ऋषि-मंडल बिच ह्रीं विषैं राजै सदा।
पूजूं अर्घ बनाय होय नहिं दुख कदा।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय वृषभादि-चतुर्विंशति तीर्थंकर-परमदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि कवर्ग सु अन्तजानि शाषासहा।
ये वसुवर्ग महान यन्त्र मे सुभ कहा।।
जल शुभ गंधादिक वर द्रव्य मँगायके।
पूजहुँ दोऊ करजोर शीश निज नायके।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय अष्टवर्ग कवर्गादि देशाषासाहा हल्व्यूँ परमयंत्रेभ्यो अर्घं निर्ववामीति स्वाहा।।

कामिनी मोहिनी छन्द।

परम उत्कृष्ट परमेष्ठी पद पांच को।
नमत शत इन्द्र खगवृन्द पद सांच को।।
तिमिर अघनाश करण को तुम अर्क हो।
अर्घ लेय पूज्य पद देत बुद्धि तर्क हो।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय पच-परमेष्ठि-परम-देवाय अर्घं।।

सुन्दरी छन्द

सुभग सम्यग् दर्शन ज्ञान जू। कह चारित्र सुधारक मान जू ।
अर्घ सुन्दर द्रव्य सु आठ ले। चरण पूजहुं साज सु ठाठले ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र- रूपरत्नत्रयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

भवनवासी देव व्यन्तर ज्योतिषी कल्पेन्द्र जू।
जिनगृह जिनेश्वर देव राजै रत्न के प्रतिविम्ब जू।।
तोरण ध्वजा घंटा विराजै चंवर ढरत नवीन जू।
वर अर्घ ले तिन चरण पूजों हर्ष हिय अति लीन जू।।

ॐ ह्री सर्वापद्रव विनाशन समर्थेभ्यो भवनेन्द्र व्यतरेन्द्र ज्योतिषीन्द्र कल्पेन्द्र चतु प्रकार देवगृहेषु श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अवधि चार प्रकार मनि, धारत जे ऋषिराय ।
अर्घ लेय तिन चर्ण जजि, विघन सघन मिटजाय ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्य चतु प्रकार अवधिधारक-मुनिभ्यो अर्घं।।

भुजगप्रयात

कही आठ ऋद्धि धरे जे मुनीशं। महा कार्यकारी बखानी गनीशं ।
जल गंध आदि दे जजों चर्न नेरे। लहों सुख सबेरे हरो दुःख फेरे ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रविनाशन-समर्थेभ्यो अष्टऋद्धिसहितमुनिभ्यो अर्घ।

श्रीदेवी प्रथम बखानी। इन आदिक चौबीसों मानी ।
तत्पर जिन भक्ति विषै हैं। पूजत सब रोग नशैं हैं ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्य श्री आदि चतुर्विंशति देविभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हसा छन्द

यंत्र विषै वरन्यो तिरकोन।.ह्रीं तहं तीन युक्त सुखभोन ।
जल फलादि वसु द्रव्य मिलाय। अर्घ सहित पूजूं शिरनाय ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय त्रिकोणमध्ये तीम ह्रीं संयुक्ताय अर्घं।

तोमर छन्द

दस आठ दोष निरवारि। छियालीस महागुण धारि ।
वसु द्रव्य अनूप मिलाय। तिन चर्न जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय अष्टादशदोष-रहिताय छियालीस-महागुणयुक्ताय अरहन्त-परमेष्ठिने अर्घ।

सोरठा

दश दिश दस दिग्पाल, दिशा नाम सो नामवर ।
तिनगृह श्रीजिन आल, पूजों मैं वन्दौं सदा ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो दशदिग्पालेभ्यो जिनभक्तियुक्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ऋषि मंडल शुभयन्त्र के, देवी देव चितारि ।
अर्घ सहित पूजहुँ चरन, दुख दारिद्र निवारि ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो ऋषिमडल-सर्वान्धिदेवी-देवेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

(इति अर्घावलि)

जयमाला

दोहा

चौबीसों जिन चरन नमि, गणधर नाऊं भाल ।
शारद पद पकज नमूं, गाऊं शुभ जयमाल ।।

जय आदीश्वर जिन आदिदेव, शत इन्द्र जजैं मैं करहुँ सेव ।
जय अजित जिनेश्वर जे अजीत, जे जीत भये भव ते अतीत ।।

जय सम्भव जिन भवकूप माँहि, डूबत राखहु तुम शर्ण आंहि ।
जय अभिनन्दन आनन्द देत, ज्यों कमलों पर रवि करत हेत ।।

जय सुमति सुमति दाता जिनन्द-जै कुमति तिमिर नाशन विनन्द ।
जय पद्मालंकृत पद्मदेव, दिन रयन करहुँ तव चरन सेव ।।
जय श्री सुपार्श्व भवपाश नाश, भवि जीवन कूं दियो मुक्तिवास ।
जय चन्द जिनेश दया निधान, गुण सागर नागर सुख प्रमान ।।
जय पुष्पदन्त जिनवर जगीश, शत इन्द्र नमत नित आत्मशीश ।
जय शीतल वच शीतल जिनन्द, भवताप नशावन जगत चन्द ।।
जय जय श्रेयांस जिन अति उदार, भवि कंठ मांहि मुक्ता सुहार ।
जय वासु पूज्य वासव खगेश, तुम स्तुति करि नमि हैं हमेश ।।
जय विमल जिनेश्वर विमलदेव, मल रहित विराजत करहुं सेव ।
जय जिन अनन्त के गुण अनन्त, कथनी कथ गणधर लहे न अंत ।।
जय धर्म धुरन्धर धर्मधीर, जय धर्म चक्र शुचि ल्याय वीर ।
जय शान्ति जिनेश्वर शान्तभाव, भव वन भटकत शुभ मग लखाव ।।
जय कुंथु कुंथुवा जीव पाल, सेवक पर रक्षा करि कृपाल ।
जय अरहनाथ अरि कर्म शैल, तपवज्र खंड लहि मुक्ति गैल ।।
जय मल्लि जिनेश्वर कर्म आठ, मल डारे पायो मुक्ति ठाठ ।
जय मुनि सुव्रत सुव्रत धरन्त, तुम सुव्रत व्रत पालन महन्त ।।
जय नमि नमत सुर वृन्द पाय, पद पंकज निरखत शीश नाय ।
जय नेमि जिनेन्द्र दयानिधान, फैलायो जग में तत्वज्ञान ।।
जय पारस जिन आलस निवारि, उपसर्ग रुद्र कृत जीत धारि ।
जय महावीर महा धीरधार, भवकूप थकी जग तैं निकार ।।
जय वर्ग आठ सुन्दर अपार, तिन भेद लखत बुध करत सार ।
जय परम पूज्य परमेष्ठि सार, सुमरत बरसे आनन्द धार ।।
जय दर्शन ज्ञान चरित्र तीन, ये रत्न महा उज्ज्वल प्रवीन ।
जय चार प्रकर सुदेव सार तिनके गृह जिन मन्दिर अपार ।।
वे पूजें वसुविधि द्रव्य ल्याय, मैं इत जजि तुम पद शीश नाय ।

जो मुनिवर धारत अवधि चारि, तिन पूजैं भवि भवसिन्धु पार ।।

जो आठ ऋद्धि मुनिवर धरन्त, ते मौपै करुणा करि महन्त ।
चौबीस देवि जिन भक्ति लीन, वन्दन ताको सु परोक्ष कीन ।।

जे ह्रीं तीन त्रेकोण मांहि, तिन नमत सदा आनन्द पाहिं ।
जय जय जय श्रीअरहंत बिम्ब, तिन पद पूजूं मैं खोई डिंब ।।

जो दस दिग्पाल कहे महान, जे दिशा नाम सो नाम जान ।।

जे तिनके गृह जिनराज धाम, जे रत्नमई प्रतिमाभिराम ।
ध्वज तोरण घटा युक्त-सार, मोतिन माला लटके अपार ।।

जे ता मधि वेदी है अनूप, तहाँ राजत हैं जिन राज भूप ।
जय मुद्रा शान्ति विराजमान, जा लखि वैराग्य बढ़ै महान ।।

जे देवी देव सु आय आय, पूजे तिन पद मन वचन काय ।
जल मिष्ट सु उज्ज्वल पय समान, चन्दन मलियागिर को महान ।।

जे अक्षत अनियारे सुलाय, जे पुष्पन की माला बनाय ।
चरु मधुर विविध ताजी अपार, दीपक मणिमय उद्योतकार ।।

जे धूप सु कृष्णागरू सुखेय, फल विविध भांति के मिष्ट लेय ।
वर अर्घ अनूपम करत देव, जिनराज चरण आगे चढ़ेव ।।

फिर मुखते स्तुति करते उचार, हो करुणानिधि ससार तार ।
मैं दु.ख सहे संसार ईश, तुमतैं छानी नांही जगीश ।।

जे इह विध मौखिक स्तुति उचार, तिन नशत शीघ्र संसार भार ।
इह विधि जो जन पूजन कराय, ऋषि मंडल यन्त्र सु चित्त लाय ।।

जे ऋषि-मंडल पूजन करन्त, ते रोग शोक संकट हरन्त ।
जे राजा रण कुल वृद्धि जान, जल दुर्ग सुजग केहरि बखान ।।

जे विपत घोर अरु अहि मसान, भय दूर करै यह सकल जान ।
जे राज भ्रष्ट ते राज पाय, पद भ्रष्ट थकी पद शुद्ध थाय ।।

घन अर्थी घन पावै महान, या मैं संशय कछु नहिं जान।
भार्या अर्थी भार्या लहन्त, सुत अर्थी सुत पावे तुरन्त।।
जे रूपा सोना ताम्र पत्र लिख तापर यन्त्र महा पवित्र ।
ता पूजै भागे सकल रोग, जे वात पित्त ज्वर नाशि शोग ।।

तिन गृह तैं भूत पिशाच जान, ते भाग जांहि संशय न आन ।
जे ऋषि मंडल पूजा करन्त, ने सुख पावत कहि लहै न अन्त ।।

जब ऐसी मैं मन माहिं जान, तब भाव सहित पूजा सुठान ।
वसुविधि के सुन्दर द्रव्य ल्याय, जिनराज चरण आगे चढाय ।।

फिर करत आरती शुद्ध भाव, जिनराज सभी लख हर्ष आव ।
तुम देवन के हो देव देव, इक अरज चित्त में धारि लेव ।।

हे दीन दयाल दया कराय, जो मैं दुखिया इह जग भ्रमाय ।
जे इस भववन मैं बास लीन, जे काल अनादि गमाय दीन ।।

मैं भ्रमत चतुर्गति विपिन मांहि, दुख सहे सुक्ख को लेश नाहि ।
ये कर्म महारिपु जोर कीन, जे मनमाने ते दुःख दीन ।।

ये काहू को नहिं डर धराय, इनतैं भयभीत भयो अघाय ।
यह एक जन्म की बात जान, मैं कह न सकत हू देवमान ।।

जब तुम अनन्त परजाय जान, दरशायो संसृति पथ विधान ।
उपकारी तुम बिन और नांहि, दीखत मोकों इस जगत माँहि ।।

तुम सब लायक ज्ञायक जिनन्द, रत्नत्रय सम्पति द्यो अमन्द ।
यह अरज करूं मैं श्री जिनेश, भव भव सेवा तुम पद हमेश ।।

भव भव में श्रावक कुल महान्, भव भव में प्रकटित तत्वज्ञान ।
भव भव में व्रत हो अनागार, तिस पालन तैं हों भवाब्धि पार ।।

ये योग सदा मुझको लहान, हे दीनबन्धु करुणा-निधान ।
"दौलत आसेरी" मित्र दोय, तुम शरण गही हरषित सुहोय ।।

नन्द छन्द घत्ता

जो पूजै ध्यावै, भक्ति बढ़ावै, ऋषि मंडल शुभ यंत्र तनी ।
या भव सुख पावै सुजस लहावै परभव स्वर्ग सुलक्ष धनी ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय रोग-शोक-सर्व-सकट हराय सर्वशान्ति-पुष्टि-कराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अरहतादि पचपद, दर्शन ज्ञान चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋषि सयुक्त ऋषि, बीस चार सुर, तीन ह्री, अर्हतबिम्ब, दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय जयमाला-पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

आशीर्वाद

ऋषि मंडल शुभ यंत्र को जो पूजे मन लाय।
ऋद्धि सिद्धि ता घर बसै, विघन सघन मिट जाय।।

विघन सघन मिट जाय, सदा सुख सो नर पावै।
ऋषि मंडल शुभ यत्र तनी, जो पूजे रचावै।।

भाव भक्ति युत होय, सदा जो प्राणी ध्यावै।
या भव मे सुख भोग, स्वर्ग की सम्पत्ति पावै।।

या पूजा परभाव मिटे, भव भ्रमण निरन्तर।
यातै निश्चय मानि करो, नित भाव भक्तिधर।।

इत्याशीर्वाद। पुष्पाजलि क्षिपेत्

नवदेवता पूजन

गीताछन्द

अरिहत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वद्य हैं।
जिनधर्म **जिनआगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वद्य हैं ।।**

नव देवता ये मान्य जगमे, हम सदा अर्चा करे ।
आह्वान कर थापें यहाँ मन में अतुल श्रद्धा धरें ।।

ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्री अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन।
ॐ ह्री अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरण।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा ।
अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूं मुदा ।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें ।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें ।। १ ।।

ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता ।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता ।। नव० ।। २ ।।

ॐ ह्री चन्दन।

क्षीरोदधी के फेन सम सित तंदुलों को लायके ।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके ।। नव० ।। ३ ।।

ॐ ह्री अक्षत।

चंपा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये ।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये ।। नव० ।। ४ ।।

ॐ ह्री पुष्प।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में ।।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहूँ नत भाल मैं ।। नव० ।। ५ ।।

ॐ ह्री नैवेद्य।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में ।
तुअ आरती तम वारती, पाऊं सुज्ञान प्रकाश मैं ।। नव० ।। ६ ।।

ॐ ह्री दीपं।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊं सदा ।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा ।।

नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करे ।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें ।। ७ ।।
ॐ ह्रीं ~धूप।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊं थाल में ।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूं आज मैं ।। नव० ।। ८ ।।
ॐ ह्रीं ~फल।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले ।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ्य से पूजत मिले ।। नव० ।। ९ ।।
ॐ ह्रीं ~अर्घ्यं।

दोहा–जलधारा से नित्य मैं, जगकी शांति हेत ।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत ।। १० ।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विधि के सुमन ले, मन में बहु हरषाय ।
मैं पूजूं नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय ।। ११ ।।

दिव्य पुष्पांजलि ।

जाप्य

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः ।

(९, २७ या १०८ बार)

जयमाला

सोरठा–चिंच्चितामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो ।
गाऊं गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा ।। १ ।।

चाल–हे दीनबंधु श्रीपति

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे ।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे ।।

जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूं ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूं ।। २ ।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं ।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहें हैं ।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी ।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें धनी ।। ३ ।।

जय साधु अठाईस गुणें को धरें सदा ।
निज आतमा की सादाना से च्युत न हों कदा ।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे ।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें ।। ४ ।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा ।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा ।।
जिन की ध्वनि पियूष का जो पान करेंगे ।
भव रोग दूर कर वें मुक्ति कांत बनेंगे ।। ५ ।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं ।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं ।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें ।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें ।। ६ ।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें ।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें ।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूं ।
संपूर्ण "ज्ञानमती" सिद्धि हेतु ही भजूं ।। ७ ।।

दोहा—नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम ।
भक्ती का फल मैं चहूँ निजपद में विश्राम ।। १ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं

शांतिधारा, पुष्पांजलि ।

गीताछंद—जो भव्य श्रद्धाभक्ति से नव देवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।९।।

इत्याशीर्वाद ।

श्री रविव्रत पूजा

अडिल्ल छन्द।

यह भविजन हितकार, सु रवि व्रत जिन कही ।
करहु भव्यजन सर्व, सुमन देकें सही ।।

पूजों पार्श्व जिनेन्द्र, त्रियोग लगायके ।
मिटै सकल सन्ताप, मिलै निधि आयके ।।

मतिसागर इक सेठ, सुग्रन्थन में कहो ।
उनने भी यह पूजा कर आनन्द लहो ।।

तातें रविव्रत सार, सो भविजन कीजिये ।
सुख सम्पति संतान, अतुल निधि लीजिये ।।

प्रणमों पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ सिर नाय ।
परभव सुख के कारने, पूजा करूं बनाय ।।

रवीवार व्रत के दिना, येही पूजन ठान ।
ता फल सम्पति को लहैं, निश्चय लीजे मान ।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

उज्ज्वल जल भरकें अतिलायो, रतन कटोरन माहीं ।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत, जन्म जरा मिट जाहीं ।।

पारसनाथ जिनेश्वर पूजो, रविव्रत के दिन भाई ।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरतही, आनन्द मंगल दाई ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

मलयागिर केशर अतिसुन्दर, कुंकुम रंग बनाई ।
धार देत जिन चरनन आगे, भव आताप नशाई ।। पारस ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दन।।२।।

मोतीसम अति उज्ज्वल तंदुल, लावो नीर पखारो ।
अक्षयपद के हेतु भावसों, श्री जिनवर ढिग धारो ।। पारस ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम्।।३।।

बेला अरु मचकुंद चमेली, पारिजात के ल्यावो ।
चुनचुन श्रीजिन अग्र चढाऊं मनवांछित फल पावो ।। पारस ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम्।।४।।

बावर फैनी गुजिया आदिक, घृत में लेत पकाई ।
कंचन थार मनोहर भरके, चरनन देत चढ़ाई ।। पारस ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्।।५।।

मणिमय दीप रतनमय लेकर, जगमग जोति जगाई ।
जिनके आगे आरति करके, मोहतिमिर नश जाई ।। पारस ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्।।६।।

चूरन कर मलयागिर चंदन, धूप दशांग बनाई ।
तट पावक में खेय भाव सो, कर्मनाश हो जाई ।। पारस ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।।७।।

श्रीफल आदि बदाम सुपारी, भांति भांति के लावो ।
श्रीजिन चरन चढाय हरषकर, नातें शिव फल पावो ।। पारस ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।।८।।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, अर्घ बनावो भाई ।
नाचत गावत हर्षभाव सों, कंचन थार भराई ।। पारस ।।

ॐ ह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम्।।९।।

गीतिका छन्द।

मन वचन काय त्रिशुद्ध करके, पार्श्वनाथ सु पूजिये ।
जल आदि अर्घ बनाय भविजन, भक्तिवंत सु हूजिये ।।
पूज्य पारसनाथ जिनवर, सकल सुखदातार जी ।
जे करत हैं नर नारि पूजा, लहत सौख्य अपार जी ।।

ॐ ह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

यह जग मे विख्यात हैं पारसनाथ महान ।
तिन गुण की जयमालिका, भाषा करू बखान ।।

जय जय प्रणमों श्री पार्श्वदेव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव ।
जय जय सु बनारस जन्म लीन, तिहुँ लोक विषै उद्योत कीन ।।

जय जिनके पितु श्री विश्वसेन, तिनके घर भये सुख-चैन देन ।
जय वामा देवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान ।।

जय तीन लोक आनन्द देन, भविजन के दाता भये ऐन ।
जय जिनने प्रभु का शरण लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन ।।

जय नाग नागिनी भये अधीन, प्रभु चरणन लाग रहे प्रवीन ।
तज देह देवगति गये जाय, धरणेन्द्र पद्मावति पद लहाय ।।

जय अजन चोर अधम अजान, चोरी तज प्रभु को धरो ध्यान ।
जय मृत्यु भये वह स्वर्ग जाय, ऋद्धी अनेक उनने सो पाय ।।

जय मतिसागर इक सेठ जान, तिन अशुभकर्म आयो महान ।
तिनकै सुत थे परदेश मांहि, उनसे मिलने की आश नांहि ।

जय रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फल कर सब से भई भेंट ।

जिन जिन ने प्रभु का शरण लीन, तिन ऋद्धि सिद्धि पाई नवीन ।।

जय रविव्रत पूजा करहिं जेय, ते सौख्य अनन्तानन्त लेय ।
धरणेन्द्र पद्मावति हुये सहाय, प्रभुभक्त जान तत्काल आय ।।

पूजा विधान इहिविधि रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय ।
जो भक्तिभाव जयमाला गाय, सोही सुखसम्पत्ति अतुल पाय ।।

बाजत मृदंग बीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार ।
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर सो लेत ।।

ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय ।
जे करहिं निरत इहि भांत भांत, ते लहहिं सुक्ख शिवपुर सुजात ।।

रविव्रत पूजा पार्श्व की, करै भविक जन जोय ।
सुख सम्पत्ति इह भव लहै, आगे सुर पद होय ।।

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र, पूज भवि मन धरें ।
भव भव के आताप, सकल छिन में टरें ।।

होय सुरेन्द्र नरेन्द्र, आदि पदवी लहे ।
सुख सम्पति सन्तान, अटल लक्ष्मी रहे ।।

फेर सर्व विधि पाय, भक्ति प्रभु अनुसरें ।
नानाविधि सुख भोग, बहुरि शिवतिय वरें ।।

इत्याशीर्वाद।

रविव्रत जाप्य मन्त्र

ॐ ह्री नमो भगवते चितामणि–पार्श्वनाथय सप्तफणमण्डिताय श्री धरणेन्द्र पद्मावती–सहिताय मम ऋद्धि सिद्धिं वृद्धि सौख्य कुरु कुरु स्वाहा।

अरहंत पासा केवली

प्रत्येक व्यक्ति के मन मे अपना भविष्य जानने की प्रबल इच्छा होती है और इसके लिए वह जन्म कुण्डली, हस्तरेखा या अन्य उपायो द्वारा भविष्य जानने के लिए प्रयत्नशील रहता है। इसी इच्छा की पूर्ति के लिए श्री पडित वृन्दावन जी काशी निवासी रचित अरहत पासा केवली यहा दी जा रही है। अत्यन्त शुद्धिपूर्वक, श्रद्धा सहित, बताई हुई विधि के अनुसार कार्य करके इसके द्वारा अपने भवितव्य की झाकी का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

पास केवली से शुभाशुभ देखने के लिए पवित्रता, मनमे शन्ति एव श्रद्धा होना आवश्यक है। प्रात काल स्नानादि क्रियाओ से स्वच्छ होकर स्वच्छ वस्त्र पहिन कर किसी पाटे, चौकी पर पुस्तक को रख कर, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुह करके पद्मासन या अर्द्धपद्मासन से बैठे। उस समय सीधा स्वर चल रहा हो इसका भी ध्यान रखा जाय। फिर अपने मनमे प्रश्न का विचार करे और श्री अरहन्त प्रभु का ध्यान करते हुए पुस्तक मे लिखे मन्त्रो का उच्चारण कर तीन बार पासा डालना चाहिए। प्रत्येक बार जो वर्ण पासा के ऊपर की ओर आये उसे लिख लेना चाहिए। इस प्रकार तीन बार मे तीन वर्ण आयेगे उनका फल पुस्तक मे देखकर विश्वास करना चाहिए, और उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए।

अरहंत पास केवली

दोहा—श्रीमत वीर जिनेश पद, बन्दों शीस नवाय ।
गुरु गौतम के चरण नमि, नमों शारदा माय ।।

श्रेणिक नृप के पुण्यते, भाषी गणधर देव ।
जगत हेत अरहंत यह, नाम केवली सेव ।।

चन्दन के पासा विषै, चारों ओर सुजान ।
एक एक अक्षर लिखो, श्री अ र हं त विधान ।।

तीन बार डारो तबे, करि वर मन्त्र उचार ।
जो अक्षर पास कहैं, ताको करो विचार ।।

तीन मन्त्र हैं तासु के, सात सात ही बार ।
थिर हवै पासा डालियो, करिके शुद्ध उच्चार ।।
जानि शुभाशुभ तासुतैं, फल निज हृदय नियोग ।
मन प्रसन्न है सुमरियो, प्रभु पद सेवहु जोग ।।

प्रथम मन्त्र– ॐ ह्रीं श्रीं बाहुबलि लंब बाहु ॐ क्षीं क्ष्रूं क्षें क्षैं क्षं क्षः उर्द्धवभुजा कुरु कुरु शुभाशुभं कथय कथय भूत-भविष्यत-वर्तमानं दर्शय दर्शय सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा। (यह प्रथम मन्त्र सात बार जप कर पासा डालना)

दूसरा मन्त्र– ॐ ह. ओ स ओं क्ष. सत्यं वद सत्यं वद स्वाहा।
(दूसरा मन्त्र भी सात बार जपकर पासा डालना)

यदि मन्त्र के उच्चारण मे कठिनाई हो तो णमोकार मन्त्र को बोलकर भी पासा डाला जा सकता है।

तीसरा मन्त्र– ॐ ह्रीं श्रीं विश्वमालिनि, विश्व प्रकाशिनि अमोघवादिनि सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि एह्योहि विश्वमालिनी स्वाहा।
(यह भी सात बार पढकर पासा डालना)

नोट– मन एकत्र कर, विनय सहित अभिप्राय विचार कर श्री अरहत भगवान के नाम के अक्षरो (अ, र, ह, त) का पासा तीन बार डालना चाहिए। जो जो अक्षर पडे, उनको मिलाकर उनका फल जानना चाहिए। जिन मार्ग मे यह बडा निमित्त है।

अथ अकारादि प्रथम प्रकरण

अ, अ, अ। यदि ये तीन अक्षर बडे, **सुख और** कल्याण मगल हो, **सम्मान बढ़े, लक्ष्मी की प्राप्ति हो, व्यापार मे तथा विदेश मे धन लाभ हो, युद्ध में जीत हो, राज दरबार मे सम्मान मिले, सब संकट रोग, शोक, दरिद्रता का नाश हो सब प्रकार से कल्याण हो। यह नि·सन्देह विश्वास करना चाहिए।**

अ, अ, र। इन तीनो का फल मध्यम होता है। मन का विचारा हुआ, पूर्व पाप के कारण बाधा पडने से शीघ्र सफल नही होगा। इसलिए मनवांछित फल प्राप्त करने के लिए अपने इष्टदेव श्री अरहत वीतराग भगवान की आराधना करनी चाहिए। इससे कुछ समय बाद इच्छित फल की प्राप्ति होगी।

अ, अ, हं। इनका फल शुभ होता है। धन धान्य का समागम होगा। परदेश गमन से इच्छित फल की प्राप्ति होगी। भाई बन्धु से प्रेम भाव बढेगा। शत्रुओ का दमन होगा। सम्पूर्ण बाधाएँ दूर होगी। घरमे पुण्य के प्रभाव से सब प्रकार का मगल होगा। हे प्रश्नकर्त्ता! तुम्हारा विचारा हुआ शुभ है। अत शुभ फल की निश्चित प्राप्ति होगी।

अ, अ, त। हे दयालु! तेरा प्रश्न शुभ है। तेरे घर मे पुत्र पौत्रादि का सुख होगा, हितैषी मित्रो से लाभ होगा। सब प्रकार के रोगादि से छुटकारा होगा। खोटे ग्रह दूर होगे। परदेश मे गए हुए भाई और मित्रो का शुभ मिलन होगा। कुल की बढवारी होगी, सज्जनो मे मित्रता होगी। तेरे आगामी दिन सुख और सौभाग्य को देने वाले होगे। तू वीतराग भगवान का सदा ध्यान किया कर।

अ, र, अ। तेरा विचार श्रेष्ठ है, उत्तम फलका देने वाला है, प्रतिदिन आनन्द की वृद्धि होगी। पाप के उदय से तेरा नष्ट हुआ धन फिर मिलेगा, राजा द्वारा सम्मान होगा, भाई बन्धुओ से मिलाप होगा। हर प्रकार मे तेरी गृहस्थी सुखी होगी। अब तेरे सब पापो का अन्त हो गया है। इसलिए धर्म के प्रभाव से सुख समृद्धि का वास होगा। तू अपने कर्त्तव्य कर्म मे विश्वास पूर्वक लगा रह।

अ, र, र। हे भाई! तेरा पुण्य बलवान है। तुझे धन का लाभ होगा। सब स्थानो मे यश बढेगा। जहा भी जायगा सम्मान पायेगा और सब तेरे शुभ-चिन्तक हो जावेगे। जल, अग्नि मरी आदि उपद्रव तेरा कुछ भी बिगाड नही कर सकेगे। शत्रु वश मे होगे, सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होगी। यह सब तेरे धर्म का प्रभाव है। इसलिये तू धर्म का पालन मत छोडना, बस तेरा भविष्य सुखमय है।

अ, र ह। ये तीनो वर्ण सौभाग्य सम्पत्ति के सूचक हैं। तेरा जो मनोरथ है वह सरलता से फलित होगा। जो घर मे थोडा सा क्लेश है, उसकी चिन्ता न कर। इसके लिए तू श्री महावीर प्रभु की पूजा कर, तेरे सब विघ्न दूर होगे। मनकी

चिन्ता दूर कर मनको एकाग्र कर, तुझे सब सुखो की प्राप्ति होगी। श्री अरहत का ध्यान कर, तुझको सब सिद्धिया प्राप्त होंगी।

अ, र, त। इन तीनो वर्णों के आने पर सब सुखो की प्राप्ति होती है। तुझे स्त्री, पुत्र और पश्चात् पौत्र का भी लाभ होगा। तेरे कुल की शोभा होगी। तुम जहा भी जाओगे, वही तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी। ससार तुम्हे प्यार करेगा। तुम्हारा प्रश्न शुभ है, तुम्हारे मन मे प्रभु का ध्यान होना चाहिए। देखो तुम्हारे ललाट पर तिल का चिन्ह होना चाहिए।

अ, हं, अ। हे प्रश्नकर्त्ता! सुनो। पहले तुम्हे कुछ कष्ट होगा, परन्तु शीघ्र ही वह दु ख दूर होगा और दिन प्रतिदिन धन की बढ़वारी होगी, सज्जनो की सगति होगी। हे विचारक ! तुमने जो सोचा है सो सब सफल होगा। तुम महावीर भगवान के नाम की तीनो (प्रात , मध्याह्न, सायकाल) समय एक एक माला फेरा करे।

अ, हं, र। जब यह तीनो अक्षर आवे तब धन-लाभ यशलाभ पृथ्वी का लाभ हो। राजा, भाई आदि आदर करे। बिछुडे हुए भाई इष्टजनो, धनादि का लाभ हो। हे भाई! तुम धैर्य धारण करो। तुम्हे व्यापार मे परदेश मे, सब प्रकार सुख–लाभ होगा। तुम मनका सशय दूर करो, और सर्व विघ्न विनाशक श्री पार्श्व प्रभु का स्मरण करो।

अ, ह, ह। ये तीनो अक्षर मिलने पर इष्टसिद्धि कठिन होती है। हे भाई! तेरा कार्य मुश्किल से ही सिद्ध होगा। तेरा वर्तमान धन भी नष्ट होता नजर आता है, क्लेश बढेगा, व्यापार मे हानि होगी। परदेश मे भी सिद्धि नही। इसलिए हे सज्जन! तू भगवान की पूजा भक्ति कर। जपदान होम कर। ४१ दिन तक स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर प्रात सायकाल श्री पार्श्वनाथ भगवान के नाम की ५० हजार जाप दे। इसके बाद तेरा पुण्य उदय आवेगा और इच्छित फल की प्राप्ति होगी।

अ, ह, त। इन अक्षरो का मिलाप सब प्रकार के कल्याण और आनन्द को देने वाला है। इसलिए ह सज्जन! तुझे आज्ञाकारी पुत्र और भाइयो का समागम होगा। तुझे तेरे उद्योग मे धन, धान्य और सम्पत्ति मिलेगी। युद्ध मे तेरी विजय निश्चित्त है। अगर तू या तेरा सम्बन्धी बन्धन मे होगा तो छुटकारा पावेगा। इसलिये हे बुद्धिमान तू सदेह छोड। तेरा सब प्रकार कल्याण होगा।

अ, त, अ। ये वर्ण तेरे कल्याण मगल के बताने वाले हैं। तुझे तेरे प्रयत्नो से लक्ष्मी की प्राप्ति होगी, सब विघ्न बाधाओ को दूर करता हुआ, पुत्र पौत्रादि के सुखको प्राप्त करेगा और इच्छित मणि मुक्तादि का लाभ होगा। आज से आठवे दिन तेरा भाग्य और भी अधिक श्रेष्ठ फल को देने वाला होगा।

अ, त, र। हे सज्जन! तेरे शुभ दिन हैं। तुझे सब मगल के सामान मिलेगे। तेरे घर पर आनन्द के बाजे बजेगे। तुझे जो प्यारे बन्धुओ की चिन्ता सता रही है, यह दूर होगी। वे धन धान्य से भरे हुए हाथी घोडो के साथ सुख पूर्वक तेरे से मिलेगे। तू अपने हृदय की चिन्ता दूर कर। अब तेरे सुख के दिन हैं।

अ, त, ह,। हे बन्धु! तेरा अशुभ का उदय है, कही लाभ दिखाई नही देता। अभी तो तेरा हाथ का धन और जाता दिखता है। तेरे शुभ चिन्तक भाई बन्धु स्त्री पुत्र, सम्पत्ति आदि का अनिष्ट ही दिखाई पडता है और चारो ओर शत्रु ही शत्रु भरे पडे हैं। इसलिए इन विघ्नो को दूर करने के लिए तू ६१ दिन तक "ॐ ह्री अ, सि, आ उ, सा, सर्वविघ्न विनाशनाय नम स्वाहा।" इस मन्त्र का नित्य शुद्ध होकर ११-११ मालाओ से जाप दे, तेरा विघ्न दूर होगा और घर मे मगलाचार होगा।

अ, त, त। हे भव्य जीव! तुझे धन लाभ होगा सम्पत्ति बढ़ेगी, सुख का विस्तार होगा। सब इच्छाएँ पूर्ण होगी। प्रिय बन्धु ओर मित्रो का मिलाप होगा, दिन दिन लाभ ही बढेगा तू जिस तरफ भी ध्यान देगा सब तरफ सफलता मिलेगी। युद्ध मे वाद विवाद मे तेरी विजय होगी। तू सन्देह मत कर। तू अपना पुण्य उदय समझ कर धीरज से कार्य कर, सफलता तेरे चरणो मे हैं।

अथ रकारादि द्वितीय प्रकरण

र, अ, अ! इन अक्षरो के पडने से धन, सम्पत्ति का और सज्जनो से मिलाप होता है। सोना, चाँदी, वस्त्र, गहने, नाना प्रकार के रत्न आदि इच्छित पदार्थों की प्राप्ति अवश्य होगी। रात्रि के अन्त मे हाथी, घोडे या रथ मे चढे हुए फलो की माला पहने हुए देवताओ का विमान मे बैठे हुए आना दिखाई देगा।

र, अ, र। हे पृच्छक! तुझे इच्छित फलकी प्राप्ति होगी। तुम्हे व्यापार और खेती में लाभ होगा। तुमसे देश और उसके निवासियो को लाभ पहुचेगा, तुम्हे

परदेश में लाभ होगा। तुम्हारे घर मे सुख रहेगा भयानक युद्धमे कुलदेवी तुम्हारी रक्षा करेगी और सब प्रकार सुख का विस्तार होगा।

र, अ, हं। हे भ्राता! तुम्हारे विचार कार्य मे लाभ की आशा नहीं तुम्हें दु.ख, धनका नाश, शारीरिक कष्ट होगा, तुम्हारे भाई बन्धुओ का वियोग होगा। विदेश मे भी तुम्हे सफलता प्राप्न न होगी। इसलिए शान्ति से अपने स्थान पर रहते हुए ही श्री जिनेन्द्रदेव की सेवा पूजा भक्ति आदि करो। इसके लिए अगर २१ दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एक बार भोजन कर स्नान आदि क्रियाओ से शुद्ध होकर ॐ ह्री, अ, सि, आ, उ, सा नम इस मन्त्र का सवा लाभ जाप करो, तो तुम्हारे सब सकट दूर होकर सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

र, अ, त। हे सज्जन! तुम्हारा अशुभका उदय है। चोरो द्वारा धन का चुराना, नाव मे डूब जाना, आग लगना, रोग होना आदि से अशुभ होगा। तुम्हारा कियाहुआ सब उल्टा होगा, इसे कर्मों का फल समझकर तुम्हे शोक न करना चाहिए और शान्ति से भगवान का स्मरण करते हुए परोपकार की भावना से कार्य करो। कुछ समय बाद सफलता मिलेगी।

र, र, अ। हे भाई! तुम्हारा मन बडा चचल है, तुम स्थिर विचार के नही हो। तुम धनका लाभ चाहते हो, पर अशुभ के कारण मूलका भी नाश दिखाई देता है। तुझे राजा के दण्ड, चोरो से, अग्नि से सावधान रहना चाहिए। तेरा शरीर भी निरोग नही रहेगा। स्त्री, पुत्र कुटुम्ब से तेरा विछोह होगा, इन दिनो मे तू सदा शुभ काम करना।

र, र, र। हे पूछने वाले! तेरा शुभ का योग है। तुझे मन वांछित फल प्राप्त होगा। तुझे धन, दौलत, जमीन, मकान, सब मिलेगे। तुझे कुटुम्ब मे स्त्री, पुत्र, पुत्र-वधू आदि शुभ लक्षणो वाले आज्ञाकारी मिलेगे। तुझे व्यापार मे, घर मे, परदेश मे सर्वत्र बडा लाभ होगा। तेरे कार्य में तुझे सफलता ही सफलता प्राप्त होगी।

र, र, हं। दो र के साथ ह आने पर महाफल का लाभ होता है। आनन्द देने वाली सुख सम्पत्ति सरलता से ही प्राप्त होगी। घर मे नित्य आनन्द का राज होगा। नित्य धन की प्राप्ति होगी। तुम्हे जमीन, जायदाद, देश और नगरो पर भी अधिकार मिलेगा। तुम मन मे जो विचारोगे वही मिलेगा। राजा से तुम्हें सब प्रकार का लाभ होगा। इस प्रकार तुम्हारे घरमें सदा सुख का निवास होगा।

र, र, त। तुमने अपने मनमे बडा बुरा सोचा है। तुमने परस्त्री की इच्छा से अनेको खोटे काम किये हैं और इसी से तुम्हारे धनका नाश हुआ है। घर मे कलह हुई है। तुमने राज दण्ड भी भोगा है। इसलिए अब इस मार्ग को छोडकर ब्रह्मचर्य को धारण करो और शुभ कार्य करो। इसीसे मनुष्य जन्म सफल होगा।

र, हं, अ। ये तीनो वर्ण शुभ के सूचक हैं। स्त्री, पुत्र, धन, मान आदि की प्राप्ति होगी। ससार मे यश बढ़ेगा। धर्मके मार्ग में मन लगेगा। युद्ध मे, विदेश मे, व्यापार मे सब जगह शीघ्र ही विजय होगी।

र, ह, र। हे भाई! तुमने बडा उल्टा मार्ग पकडा है। तुमने जो सोचा है उसे मनसे निकाल दो। इसके करने से लाभ न होगा, बल्कि सब प्रकार कष्ट ही होगा। तुम्हारे दुश्मन बहुत हैं, तुम्हे कही भी सुख न मिलेगा। इसलिए तू इस विचारे हुए कार्य को छोड दे, और ससार के सुखको व्यर्थ समझकर सच्चे सुखकी प्राप्ति के लिए वीतराग भगवान के मार्ग को ग्रहण कर।

र, ह, ह। हे प्रश्नकर्त्ता! तेरा अशुभ का उदय है। इसलिए जो भी तू करेगा उसका खोटा ही फल मिलेगा। तुम्हारे जो मित्र बने हुए हैं उन पर विश्वास मत करो, सब तुम्हारे शत्रु हैं, तुम्हारे धन का नाश कराने पर तुले हुए हैं। तुम धनकी इच्छा करते हो, वह इस समय नही मिलेगा। इसलिए तुम धर्म की आराधना करो। पार्श्वनाथ भगवान की भक्ति और जाप करो उससे कुछ समय बाद सफलता मिलेगी।

र, ह, त। अहो पूछने वाले! इसका क्या फल कहूँ। तेरा बडा शुभ का उदय है। तुझे विद्या की प्राप्ति, कवियो मे सम्मान, व्यवहार मे निपुणता मिलेगी, स्त्री और पुत्र का लाभ होगा। व्यापार मे धन प्राप्त होगा। भाई बन्धुओ और मित्रो से वस्त्र और आभूषणो के साथ मिलाप होगा। परिवार के सुख के लिए नित्य भगवान की पूजा कर।

र, त, अ। हे पृच्छक! तुम्हारे सौभाग्य दिन हैं तुम्हारे हृदय मे जो पुत्रादि के सुखकी लालसा है, धन सुख आनन्ददायक भोजन पान की इच्छा है वह सब पूर्ण होगी। तुम्हे मन्त्र तन्त्र और औषधि से सर्वत्र सफलता प्राप्त होगी।

र, त, र। हे सज्जन! तुम शान्ति से सुनो। तुम्हारे उद्योग से पद पद पर

सफलता मिलेगी। इसलिए तुम अपने कार्य मे लगे रहो, तुम्हे लाभ होगा। श्री जिनराज की सेवा से तुम्हे स्त्री, पृथ्वी, धन मिलेगा। गजा द्वारा सम्मान मिलेगा। हाथी, घोडे, आभूषणो की बिना चाहे ही प्राप्ति होगी।

र, त, हं। हे भाई! तुमने पहले बहुत कष्ट भोगे हैं पर वे अब दूर होगये। तुम्हारे हृदय मे जो धन, स्त्री, पुत्र, गहनो की चिन्ता है वह दूर होगी। शरीर के रोग, शोक और दु खो का नाश होकर जिनधर्म के प्रभाव से तेरे हृदय के सब मनोरथ पूर्ण होगे।

र, त, त। हे प्रश्नकर्त्ता! तेरा पश्न अच्छा है। तेरे सब कार्य सफल होगे। इच्छित धन सम्पत्ति का लाभ होगा। तुम जो विचारोगे वह सरलता से सिद्ध होगा। यह सब धर्म का प्रभाव है इसमे सन्देह मत करो। तुम जो कल्याणके लिए तप धारण करना चाहते हो, तुम्हे उसमे भी सफलता मिलेगी। इसलिए तुम वीतराग भगवान के बताये हुए तप के मार्ग को ग्रहण करो जिससे सच्चे और स्थायी सुखकी प्राप्ति हो।

अथ हंकरादि तृतीय प्रकरण।

हं, अ, अ। इन तीनो वर्णों का फल चिन्ताकारक है। कष्ट चिन्ता, कार्य-विनाश, लोक-निन्दा और युद्धमे पराजय, उद्योग मे असफलता मिलती है। कार्यसिद्धि के लिए जो भी प्रयत्न करते हो उसीमे असफलता मिलेगी। इसलिए इस समय मौन होकर कुछ समय धर्म ध्यान करो। शुभ उदय आते ही सफलता मिलेगी।

ह, अ, र। यह बहुत लाभदायक पासा पडा है। तुम्हारे सभी मनोरथ सफल होगे। स्त्री एव धनकी प्राप्ति होगी, भाइयो से सुख पहुँचेगा। हरके कार्य मे, घरमे, विदेशमे, सर्वत्र लाभ ही लाभ होगा। तुम्हारे सब रोग शोक दूर होंगे। अच्छे दिनो मे भगवान की आराधना भक्तिपूवर्क करते ही रहना क्योंकि धर्म ही सदा सहायक होता है।

ह, अ, हं। हे भव्य तुम बहुत सरल एव सीधे स्वभाव के हो। तुम मित्र और शत्रु को समान समझते हो। तुमने ऐसे लोगों के लिए अपना धन खर्च किया है।

परन्तु यह कलिकाल है और तुम साधु स्वाभाव बाले हो। चिन्ता मत करो, तुम्हारा अच्छा समय है, गया हुआ धन मिलेगा। पुण्य की जड सदा हरी होती है।

हं, अ, त। हे प्रश्नकर्त्ता! तेरा शुभ का उदय है। धर्म के प्रताप से तेरे सारे क्लेश और व्याधिया दूर हुई हैं, धनधान्य की प्राप्ति होगी। परदेश मे धन लाभ होगा, तुझे जो धन की चिन्ता है वह पूरी होगी और स्त्री, पुत्र आभूषण तथा सकल सुखो की प्राप्ति होगी।

ह, र, अ। ये तीनो वर्ण परम लाभ के सूचक हे। तेरे सभी इच्छित कार्य पूरे होगे, धन धान्य बढ़ेगा। देश विदेशो मे यश फैलेगा। राज्य मे प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धनादि आभूषणो से सम्मान होगा। इस तरह से तुम सबके प्रिय बनोगे।

ह, र, र। हे प्रश्नकर्त्ता! तेरे वर्तमान समय मे अशुभ उदय है, इसलिए तू दुश्चिन्ताओ मे फसा हुआ है और धनका भी नाश हुआ परन्तु तू घबरा मत और पुण्य कार्यों मे तथा धर्म पर अटल रह शीघ्र ही लाभ होगा और देश विदेश मे सम्मान तथा मित्रो कुटुम्बी जनो मे भी सुख प्राप्त होगा।

हं, र, ह। हे सज्जन! तेरे पास के ये तीनो वर्ण परम शुभ हैं। तेरे को बडा लाभ होगा। पुत्र का विवाह होगा और धन मिलेगा। विरोधी भी मित्र बनकर भला करेगे, युद्ध मे वाद-विवाद मे सफलता होगी। तेरा शुभका उदय है, इसे स्थायी बनाने के लिए धर्म के कार्य कर और श्रीचन्द्रप्रभु भगवान की पूजा विशेष रूपसे कर उसमे तेरा कल्याण होगा।

हं र, त। हे पृच्छक! तेरे मनमे कुछ चिन्ता है परवह व्यर्थ का वहम है, तू अपने हृदय से उसे निकाल दे। तेरा सब सोचा हुआ कार्य सिद्ध होगा। उद्यम मे लक्ष्मी की प्राप्ति, मुकदमे मे जीत होगी। किसी भी प्रकार की हानि न होगी। तू सयम और दान मे मन लगा, तेरे मनकी चिन्ता नष्ट होकर तेरी गृहस्थी मे सुखका विस्तार होगा।

हं, हं, अ। ये वर्ण आनन्द के सूचक हैं। तेरे पास पर्याप्त लक्ष्मी है, पुत्र पौत्रादि से सुख बढेगा। बिछुडे हुए भाई, मित्र परदेश मे सुखी हैं, और उनका शीघ्र ही सुखकारक मिलाप होगा। श्री जिनेन्द्र भगवान की सेवा के प्रताप से सब प्रकार के मगल होगे और आगामी एक वर्ष में बहुत धनका लाभ होगा।

हं, हं, र। हे भाई तुम्हारे सब प्रकार का आनन्द होगा तुम्हारे पुत्र के विवाह की चिन्ता दूर होगी और विवाह शीघ्र होगा। तू श्री चौबीसीजी की पूजा विधान कर उससे धन, धन्य वस्त्राभूषण की बढवारी होगी। जहा जायगा लाभ होगा। यह सब जानते हैं कि भगवान की भक्ति से तथा जप दानसे सब कार्य सिद्ध होते हैं।

ह, हं, हं। इन तीनो वर्णों का फल परम लाभ का सूचक है। देश मे सुख शान्ति हो, धन की प्राप्ति हो, खोई हुई जायदाद प्राप्त हो, लडाई झगडे मे सफलता मिले, व्यापार में धन मिले, बन्धुओं और मित्रो से स्नेह बढ़े। तुम्हारे सम्पूर्ण प्रकार के आनन्द होगे, श्रद्धा से धर्म का सेवन करो।

हं, हं, त। हे पूछने वाले! तुझे अच्छा लाभ होगा। तुम परदेश जाना चाहते हो, वहा तुम्हे धन लाभ होगा। खेती व्यापार नौकरी आदि में इच्छानुसार लाभ होगा। देव, गुरु शास्त्र के प्रभाव से ससार मे सुखके साधन, धन, धान्य, सोना, चांदी आदि तुझे इच्छानुसार मिलेगे। तू श्री महावीर प्रभु की सेवा मे मन लगा।

हं, त, अ। ये तीनों वर्ण पूछने वाले के मनके भाव साफ प्रगट कर रहे हैं। हे पृच्छक! तू लोभ में फसकर परधन चाहता है, यह अच्छा नही। तू सतोष को धारण कर लोभ को त्याग कर जो होनहार है होकर रहेगा। परन्तु कुछ समय बाद तेरे पुण्य का उदय है, उस समय तेरा कल्याण होगा, तब तक तू वीतराग भगवान की आराधना कर।

हं, त, र। तेरे मन मे दूसरे के धन की आशा लगी है, तू चाहता है वह तुझे मिलेगा। धनकी प्राप्ति, यशकी वृद्धि का समागम होगा और तेरा गया हुआ धन भी पुन. मिलेगा। इस प्रकार हे सज्जन! तू जो भी विचारता है तेरा सब मनवांछित प्राप्त होगा। ऐसा समझकर हृदय की चिन्ता दूर कर दांन पुण्य आदि शुभ कार्यों को कर।

हं, त, हं। हे पूछने वाले! तेरा मन खोटे कर्मों मे लगा हुआ है, तू चोरी से, जुए से, सट्टे से धन चाहता है तू दुःख पाता है, बदनाम हो रहा है और तेरा विश्वास उठ गया है। अब तू इस मार्ग को छोड दे और ठीक मार्ग पर इच्छित कार्य पूरा होगा।

हं, त, त। हे मित्र! तेरे मन मे जो धन, धान्य तथा सुख सम्पत्ति से भरे हुए

घरकी चाह है वह सफल होगी। तू चिन्ता का त्याग कर विदेश जा। वहा तुझे मन्त्र, सम्मोहन एव और भी जितनी विद्याएँ हैं सब प्राप्त होगी। उनसे तेरे मनकी अभिलाषा पूर्ण होगी।

अथ तकरादि चतुर्थ प्रकरण

त, अ, अ। हे पूछने वाले! यह पासा बतलाता है कि यदि तू देव पूजा, दान पुण्यादि पवित्र कार्य करेगा तो तुझे सब लाभ की प्राप्ति होगी। जैसे बीज के बिना वृक्ष नही होता, वैसे ही बिना पुण्य क सुख प्राप्त नही होता। तुझे पुत्र, पौत्र, धन, धान्य का लाभ और व्यापार मे धन लाभ होगा। लडाई मे विजय होगी।

त, अ, र। हे भाई! तेरा प्रश्न मध्य फलदाता है। तुम्हारे हृदय मे जिस स्त्री या पुरुष की चाह है, उसको छोड दो तथा त्याग दो क्योंकि स्त्री पुरुष, धन कुटुम्ब आदि होनहार के आधीन हैं। प्रभु भक्ति मे मन लगा, कुछ समय बाद तुम्हे पर्याप्त धन लाभ होगा।

त, अ, हं। हे प्रश्नकर्त्ता! तेरे मन मे दिन रात धन की चाह रहती है या नही? परन्तु भाई! बिना पुण्य के मिले कैसे? तेरे ये दिन बुरे हैं। लेकिन दुखी मत हो, और जिनदेव की आराधना कर भक्ति मे तल्लीन होजा, तेरा शुभोदय शीघ्र ही होगा। उस समय अचानक धन लाभ होगा।

त, अ, त। हे भाई! प्रसन्न होकर सुन, तेरे हृदय मे जो परदेश गमन तथा तीर्थयात्रा की इच्छा है तथा तेरे शरीर मे जो रोग या पीडा है वह एक महीने में दूर होगी और इच्छानुसार धन लाभ होगा। तुझे सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होगे। तू बीच का यह एक महीने का समय श्री वीर प्रभु की सेवा मे लगा।

त, र, अ। तुम्हारा डाला हुआ यह पासा प्रकट करता है कि तुझे धन की चिन्ता है, और इसलिए तुम परदेश गमन करना चाहते हो। अत हे सज्जन तुम जाओ। तुम्हे वहा धन का लाभ, वस्त्र, आभूषण स्त्री पुत्रादि की प्राप्ति होगी। माता, पिता और बन्धु का समागम होगा। यह सब गुरु सेवा का फल है। इसलिए हे भाई! तुम आगे भी वीतराग भगवान की मन लगाकर सेवा करते रहो, इसी मे तुम्हारा कल्याण है।

त, र, र। हे पृच्छक! तुम्हारी चिन्ता तुम्हारे पासे से ही प्रकट होती है। तुम्हारे घर मे दरिद्रता ने पैर जमाये हैं, अत तुम रात दिन धन की चिन्ता करते हो और उसी के उपाय भी करते हो, किन्तु अभी ३ वर्ष तक तुम्हारा शुभका उदय नही। अत इस समय के बाद ही तुम्हे सुखकी सामग्री प्राप्त होगी, उसी समय तुम किसी अन्य नये कार्य मे मन लगाना। उसी से तुम्हे लाभ और यश मिलेगा।

त, र, हं। हे सज्जन! यह बहुत शुभ पासा है। इसके प्रताप से तुझे सब कल्याण की सामग्री मिलेगी। जिनेन्द्र भगवान की सेवा के प्रभाव से सब विघ्न बाधाएँ पल भरमे दूर होगी। धन, पुत्र, युद्ध मे विजय, भाइयो के साथ प्रेम बढेगा। घरमे लडाई झगडे न होगे। तुम्हारे सारे पाप, सन्ताप दूर होकर कल्याण की प्राप्ति होगी। तुम इस सुखको स्थायी बनाने के लिए भगवान की आराधना करते रहो।

त, र, त। यह बहुत अच्छा शकुन है। तुम्हारा मन धन की चिन्ता मे दुखी है, बहुत दिन से तुम चिन्ता कर रहे हो पर अब अच्छा समय आ गया है। तुम्हे सुखकी सामग्री, प्रियजनो का समागम धन लाभ होगा। यदि परदेश गमन करो तो बहुत अधिक लाभ हो। वाद विवादमे जीत, सभ्य समाज मे मान और प्रतिष्ठा मिलेगी। देव गुरु धर्म पर अटल श्रद्धा रखो।

त, हं, अ। पासा डालने पर जब ये तीन वर्ण पडे तो बडा लाभ हो। सारे विघ्न और सकट दूर हो, जहा भी जाये वही इच्छित फलकी प्राप्ति हो। धन, धान्य वस्त्र, गाय, भैंस, घोडा आदि वैभव की सामग्री का मिलाप हो। तीर्थयात्रा, परदेश गमन, युद्ध, समुद्र पार सर्वत्र सफलता ही सफलता प्राप्त होगी। इसलिए हे पृच्छक! इस कल्पवृक्ष समान फलदाता शकुन का फल भोगता हुआ तू अपने इष्टदेव की सेवा मे मन लगा।

त, हं, र। हे पूछने वाले! तेरा पाप का उदय है, तेरा लिया हुआ शकुन यही बताता है, तुम दुखी हो, कष्ट पा रहे हो, तुम्हारा धन नष्ट हो गया शरीर मे भी बीमारियां हो रही हैं। पुत्र और मित्रो का वियोग हुआ है, जो भी विचारते हो उसीसे कष्ट बढते हैं। तुम्हारे घर मे क्लेश पहुँचाने वाली लडाकू स्त्री है या पुरुष है, और यही पाप दु ख दे रहा है। इसलिए तू कुछ समय तक विपत्ति नाशक भगवान पार्श्वनाथ की पूजा कर इससे तुझे शान्ति मिलेगी।

त, हं, हं। हे शकुन लेने वाले! तेरा पाप का उदय है, अत तू कुछ दिन युद्ध में या वाद विवाद झगडे मे योग मत दे। इन कामों मे तुझे कष्ट ही उठाना पडेगा, धन की धर्म की हानि ही होगी। तुम्हारे घरमे कलह, लडाई, झगडे, चिन्ता का राज्य है, भाई बान्धव मित्र आदि भी शत्रु जैसे प्रतीक होते हैं। इसलिए अपना खोटा समय जानकर भगवान की भक्ति करता हुआ दुख नाश करने का उपाय सोच।

त, हं, त। हे भाई! तुम्हारा शकुन मध्यम है। इसलिए जो तुम सोचते हो वह फल न होगा। कुछ दिन ठहरना ही ठीक है। पाप का उदय समझकर चिन्ता मत करो, भावी बलवान होता है। मनमे मृत्यु का भय मत कर, अज्ञान बुद्धि को छोड दे। सुख पाने के लिए महावीर प्रभु का स्मरण कर।

त, त, अ। हे प्रश्नकर्त्ता! तुम्हारा शुभका उदय है, तुम्हे महान सुख मिलेगा, धन धान्य का समागम होगा। राज्य मे भी आदर होगा। व्यापार मे धन प्राप्त होगा। पुत्री का विवाह, साथ ही तुम्हे सुपुत्र की प्राप्ति भी होगी।

त, त, र। हे प्रश्नकर्त्ता! तुम्हारा शकुन उत्तम है। तुमने सदा सुख ही पाया है, आगे भी भाई बन्धु, पुत्र, धन, धान्य की बढ़वारी ही होगी। विदेश में भी सुख ही मिलेगा। सबसे मित्रता और बन्धुता का व्यवहार होगा। तुम्हारे शत्रु डरकर तुम्हारे मित्र हो जायेगे। घर मे गाय, भैंस, घोडा आदि वाहन भी रहा करेगे।

त, त, हं। हे भाई! तुम आलस्य छोडकर उद्योग करो, तुम्हे लाभ होगा और मनकी भावना पूरी होगी। तीर्थयात्रा, पूजन विधान, सब सफल होगे। तुम्हारे घरमे जो रोग शोक हैं वह शीघ्र दूर होगा। सब प्रकार की भोग सामग्री प्राप्त होगी। अपने मन मे किसी प्रकार का सन्देह मत कर। भगवान की भक्ति से सब सुख सामग्री सरलता से पाप्त हो जाती है।

त, त, त। हे पृच्छक! तेरा शकुन बडा कल्याणकारी है। तुम्हारे मन चाहे कार्य सिद्ध होगे। घर मे पुत्र पौत्रादि का जन्म होगा। धन बढेगा, सुख बढ़ेगा, विवाह होगे। नष्ट हुआ धन पुन प्राप्त होगा। शत्रु शत्रुता छोडेगे। हितैषी मित्रो का मिलन होगा। तुम सदा धर्म की आराधना करते रहो, यही सब सुखो का देने वाला है।

।। ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।।

नवग्रह अरिष्टनिवारक विधान।

प्रशम्याद्यन्ततीर्थेशं, धर्म-तीर्थप्रवर्तकम् ।
भव्यविघ्नोपशान्त्यर्थं ग्रहार्चा वर्ण्यते मया ।।

मार्तंडेन्दुकुजसौम्य-, सूरसूर्यकृतांतकाः ।
राहुश्च केतुसंयुक्तो, ग्रहशांतिकरा नव ।।

दोहा ।

आदि अन्त जिनवर, नमों, धर्म प्रकाशनहार ।
भव्य विघ्न उपशांत को,ग्रहपूजा चित धार ।।

कालदोष परभावसौं, विकलप छूटे नाहि ।
जिनपूजामें ग्रहनकी, पूजा मिथ्या नाहि ।।

इस ही जम्बूद्वीप में, रवि शशि मिथुन प्रमान ।
ग्रह नक्षत्र तारा सहित, ज्योतिष चक्र प्रमान ।।

तिनहीके अनुसार सौं, कर्म चक्र की चाल ।
सुख दुख जानै जीवकौ, जिनवच-नेत्र विशाल ।।

ज्ञान प्रश्न व्याकर्णमें प्रश्न अंग है आठ ।
भद्रबाहु मुख जनित जो, सुनत कियो मुख पाठ ।।

अवधि धार मुनिराजजी, कहे पूर्व कृत कर्म ।
उनके वचन अनुसारसौं, हरे हृदयको भर्म ।।

समुच्चय पूजा।

दोहा ।

अर्क चन्द्र कुज सोम गुरु, शुक्र शनिश्चर राहु ।
केतु ग्रहारिष्ट नाशने, श्री जिनपूज रचाहु ।।

ॐ ह्री सर्वग्रह-अरिष्ट-निवारक चतुर्विंशतिजिना अत्र अवतरत अवतरत सवौषट् (आह्ननम्), अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ स्थापनम्, अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक ।

गीतिका छन्द।

क्षीरसिंधु समान उज्ज्वल, नीर निर्मल लीजिये ।
चौबीस श्रीजिनराज आगे, धार त्रय शुभ दीजिये ।।
रवि सोम भूमज सौम्य गुरु कवि, शनि नमो पूतकेतवै ।
पूजिये चौवीस जिन, ग्रहारिष्ट नाशन हेतवै ।।

ॐ ह्री सर्वगहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याक प्राप्तेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड कुंकुम हिम सुमिश्रित, घिसौं मनिकर चावसौं ।
चौवीस श्री जिनराज अघहर, चरण चरचौं भावसौं ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित सालि तंदुल, पुंज मुक्ताफलसमं ।
चौवीस श्रीजिनराज पूजन, नाम ह्वैं नव ग्रह भ्रमं ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद कमल गुलाब केतकि, मालती जाही जुही ।
कामबाण विनाश कारण, पूजि जिनमाला गुही ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी सुहारी पुवा पापर, लेऊं मोदक घेवरं ।
शतछिद्र आदि विविध विंजन, क्षुधाहर बहु सुखकरं ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप जगमग जोत तमहर, प्रभू आगे लाइये ।
अज्ञान नाशक निज प्रकाशक, मोह तिमिर नसाइये ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो दीप निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णा अगर घनसार मिश्रित, लोंग चन्दन लेइये ।
ग्रहारिष्ट नाशन हेत भवि जन, धूप जिन पद खेइये ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो धूप निर्वपामीति स्वाहा।

वादाम पिस्ता सेव श्रीफल, मोच नीबू सद फल ।
चौवीस श्रीजिनराज पूजत, मनोवांछित शुभ फल ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गध सुमन अखण्ड तन्दुल, चरु सुदीप सुधूपक ।
फल द्रव्य दूध दही सुमिश्रित, अर्घ देय अनूपक ।। रवि० ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

। जयमाला ।

दोहा—श्री जिनवर पूजा किये, ग्रहअरिष्ट मिट जाय ।
पच ज्योतिषी देव सब, मिल सेवें प्रभु पाय ।।

पद्धरी छद

जय जय जिन आदिमहत देव, जय अजित जिनेश्वर करहि सेव ।
जय जय संभव संभव निवार, जय जय अभिनन्दन जगत तार ।।

जय सुमति सुमति दायक विशेष, जय पद्मप्रभु लख पदम लेष ।
जय जय सुपार्स हर कर्म फास, जय जय चन्द्रप्रभु सुख निवास ।।

जय पुष्पदन्त कर कर्म अंत, जय शीतल जिन शीतल करंत ।
जय श्रेय करन श्रेयांस देव, जय वासुपूज्य पूजत सुमेव ।।

जय विमल विमल कर जगतजीव, जय जय अनंत सुख अति सदीव ।
जय धर्म धुरन्धर धर्मनाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति साथ ।।

जय कुंथनाथ शिव सुखनिधान, जय अरहजिनेश्वर मुक्तिथान ।
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत सुव्रत प्रकाश ।।

जय नमिदेव दयाल संत, जय नेमनाथ तसु गुण अनंत ।
जय पारस प्रभु संकट निवार, जय वर्धमान आनन्दकार ।।

नव ग्रह अरिष्ट जब होय आय, तब पूजै श्रीजिनदेव पाय ।
मन वच तन मन सुखसिंधु होय, ग्रह शांति रीत यह कही जोय ।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणकप्राप्तेभ्य अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—चौबीसौं जिनदेव प्रभु, ग्रह सम्बन्ध विचार ।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम, जो पाऊं सुख सार ।।

सूर्य ग्रह अरिष्ठ निवारक पद्मप्रभ पूजा ।

सोरठा

पूजो पदम जिनेन्द्र, गोचर लग्न विषै यदा ।
सूर्य करे दुख दंद, दुख होवे सब जीवकों ।।

अडिल्ल छन्द

पच कल्याक सहित ज्ञान पंचम लसैं ।
समोसरन सुख साध मुक्तिमांहीं बसैं ।।

आह्वान कर तिष्ठ सन्निधी कीजिये ।
सूरज ग्रह होय शांत जगत सुख लीजिये ।।

ॐ ह्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभ जिन अत्र अवतर अवतर सवोषट् (आह्वानन), अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (स्थापनम् अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणम्) परिपुष्पाजलि क्षिपेत्।

छन्द त्रिभगी

सोनेकी भारी सब सुखकारी, क्षीरोदधि जल भर लीजे ।
भव ताप मिटाई तृषा नसाई, धारा जिन चरनन दीजे ।।

पद्मप्रभ स्वामी शिवमग-गामी, भविक-मोर सुन कूजत हैं ।
दिनकर दुख जाई पाप नसाई, सब सुखदाई पूजत हैं ।।

ॐ ह्री श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय जल निर्वपामीति स्वाहा।

मलियागिरि चंदन दाह निकंदन, जिनपद वंदन सुखदाई ।
कुमकुं जुत लीजे अरचन कीजे, ताप हरीजे दुख दाई ।। पद्म०।।

ॐ ह्री श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय चदन निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल गुणमंडित सुर भवि मंडित, पूजत पंडित हितकारी ।
अक्षयपद पावो अक्षत चढ़ावो, गावो गुण शिव-सुखकारी ।।पद्म०।।

ॐ ह्री श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद मंगावे कमल चढ़ावे, वकुल बेल दृग चित हारी ।
मंदर ले आवो मदन नसावो, शिवसुख पावो हितकारी ।।पद्म०।।

ॐ ह्री श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

गौ घृत ले धरिये, खाजे करिये, भरिये हाटकमय थारी ।
विंजन बहु लीजे पूजा कीजे, दोष क्षुधादिक अघ हारी ।। पद्म०।।

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीपक लीजे, घीव भरीजे, कीजे घनसारक बाती ।
जग जोत जगावे जगमग जगमग, मोह-तिमिरको है घाती ।।पद्म०।।

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु धूपं अधिक अनूपं, निर्मल रूपं घनसारम् ।
खेवो प्रभु आगे पातक भागे, जागे सुख दुख सब हरनं ।।पद्म०।।

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल ले आओ सेव चढ़ाओ, अन्य अमरफल अविकारं ।
वांछित फल पावो जिनगुन गावो, दुख दरिद्र वसु कर्महरं ।।पद्म०।।

ॐ ह्री श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन लाया सुमन सुहाया, तन्दुल मुक्ता सम कहिये ।
जल दीपक लीजे धूपसु खेजे, फल ले वसु कर्मन दहिये ।।पद्म०।।

ॐ ह्री श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध ले फूल सुगन्धित लीजिये,
तंदुल ले चरु दीप धूप खेवीजिये ।।
कमल मोद को दोष तुरन्त ही धूजिये,
पद्मप्रभ जिनराज सुसन्मुख हूजिये ।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याकप्राप्ताय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जै जै सुखकारी सब दुखहारी, मारी रोगादिक हरनम् ।
इन्द्रादिक आवे, प्रभु गुण गावे, मंदिर गिर मंजन करणं ।।
इत्यादिक साजै दुंदुभि बाजै, तीन लोक सेवत चरणं ।
पद्मप्रभ पूजत, पातक धूजत, भव भव भव मांगत शरणं ।।

पद्धडी छद ।

जय पद्मप्रभ पूजा कराय, सूरज ग्रह दूषण तुरत जाय ।
नौ योजन समवसरण बखान, घण्टा भालर सहित वितान ।।
शत इन्द्र नमत तिस चरन आय, दश शत गणधर शोभा धराय ।
वाणी घनघोर जु घटा जोर, घन शब्द सुनत भवि नचै मोर ।।
भामण्डल आभा लसत भूर, चन्द्रादिक कोट कला जु सूर ।
तहां वृक्ष अशोक महा उतंग, सब जीवन शोक हरै अभंग ।।
सुमनादिक सुर वर्षा कराय, वे दाग चंवर प्रभुपै ढराय ।
सिंहासन तीन त्रिलोक ईश, त्रय छत्र फिरे नग जड़त शीस ।।
मन भई आवत मकरन्द सार, त्रय धूलि सार सुन्दर अपार ।
कल्यानक पाँचों सुख निधान, पंचम गति दाता हैं सुजान ।।
साढ़े बारह कोड़ी जु सार, बाजै विन वेद बजें अपार ।
धरणेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र ईश त्रैलोक नमत कर धरी ऋषीश ।।
सुर मुक्ति रमावन नमत बार, दोउ हाथ जोड़कर बार बार ।
याके पद नमत आनंद होय, दुति आगे दिनकर छिपत जोय ।।
मन शुद्ध समुद्र हृदय विचार, सुखदाता सब जिनको अपार ।
मन वच तन कर पूजा निहार, कीजे सुखदायक जगत सार ।।

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यग्रहारिष्टनिवारकश्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन हितकारी सुखअतिभारी, मारी रोगादिक हरणा
पापादिक टारै ग्रह निरवारै, भव्य जीव सब सुख करणं ।।

इति आशीर्वाद (परिपुष्पाजलि क्षिपेत्)

चन्द्र अरिष्ठनिवारक श्री चन्द्रप्रभु पूजा

सोरठा

निशपति पीड़ा ठान, गोचर लग्न विषै परे ।
वसु विधि चतुर सुजान, चन्द्रप्रभ पूजा करे ।।

अडिल्ल छन्द ।

चन्द्रपुरीके बीच चन्द्रप्रभ अवतरे ।
लक्षण सोहे चन्द्र सबनके मन हरे ।।
भव्य जीव सुखकाज द्रव्य ले धरत है ।
सोम दोषके हेत थापना करत हैं ।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिरवारकचन्द्रप्रभजिन अत्र अवतर अवतर सवोषट् (आह्वाननम्), अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (स्थापनम्), अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)। परिपुष्पाजलि क्षिपत्।

अथाष्टक ।

कंचन झारी जड़त जड़ात, क्षीरोदक भर जिनहि चढ़ात ।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो ।।
चन्द्रप्रभ पूजौं मन लाय, सोम दोष तातैं मिट जाय।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो ।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय जल निर्वपामीति स्वाहा।

मलियागिर केसर घनसार, चरचत जिनभव ताय निवार ।चन्द्र ।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

खण्डरहित अक्षत शशिरूप, पुंज चढ़ाय होय शिवभूप ।चन्द्र ।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

कमल कुन्द कमलिनी अभंग, कल्पतरु जस हरै अभंग ।चन्द्र ।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर मोदक लेऊं, दोष क्षुधाहर थार भरेऊ ।चन्द्र।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक घृत जु भरेऊ, वाती वरत तिमिर जु हरेऊ ।चन्द्र।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरुकी कनी खिवाय, वसु विधि कर्म जु तुरत नसाय ।चन्द्र।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल अंब सदा फल लेउ, चोच मोच अमृत फल देउ ।चन्द्र।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध पुष्प शालि नैवेद्य, दीप धूप फल से अनिवेध ।चन्द्र।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द।

जल चन्दन बहु फल जु तंदुल लीजिये।
दुग्ध शर्करा सहित सु विंजन कीजिये।।
दीप धूप फल अर्घ बनाय धरीजिये।
पूजों सोम जिनेन्द्र सुदुःख हरीजिये।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चन्द्रप्रभ चरणं, सब सुख भरणं, करणं आतम हित अतुलं ।
दर्द जु हरणं, भवजल तरणं मरन हरं शुभकर विपुलं ।।

त्रोटक छन्द।

भव्य मन हृदय मिथ्यात तम नाशकं ।
केवलज्ञान जग-सूर्य प्रतिभासकं ।।
चन्द्रप्रभ चरण मन हरण सब सुखकरं ।
शाकिनी भूत ग्रह सोम सब दुखहरे ।।
वर्धनं चन्द्रमा धर्म जलनिधि महा ।
जगत सुखकार शिव-मार्ग प्रभुने गहा ।। चन्द्रप्रभ० ।।

ज्ञान गम्भीर अति धीर वर वीर हैं ।
तीनहूँ लोक सब जगतके मीर हैं ।। चन्द्रप्रभ० ।।

विकट कन्दर्पको दर्प छिनमें हरा ।
कर्म वसु पाय सब आप ही तैं झरा ।। चन्द्रप्रभ० ।।

सोमपुर नगर में जन्म प्रभु ने लहा ।
क्रोध छल लोभ मद मान माया दहा ।। चन्द्रप्रभ० ।।

देह जिनराजकी अधिक शोभा धरे ।
स्फटिकमणि कांति ताहि देख लज्जा करे ।। चन्द्रप्रभ० ।।

आठ अरु एक हजार लक्षण महा ।
वाहिने चरणको निशपति गह रहा ।। चन्द्रप्रभ० ।।

कहत मनसुख श्री चन्द्रप्रभ पूजिये ।
सोम दुख नाशके जगत भय धूजिये ।। चन्द्रप्रभ० ।।

ॐ ह्री चन्द्रारिष्टनिवारकश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप तापके नाशको, धर्मामृत रस कूप।
चन्द्रप्रभ जिन पूजिये, होय जो आनंद भूप।।

इत्याशीर्वाद

मंगल अरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य की पूजा।

दोहा।

वासुपूज्य जिन चरण युग, भूसुत दोष पलाय ।
तातैं भवि पूजा करो, मन में अति हरषाय ।।

अडिल्ल छन्द।

वासुपूज्यके जन्म समय हरषायके।
आये गज ले साज इन्द्र सुख पायके।।
लै मंदिर गिरजाय जु न्हवन करायके।
सौंपे माता जाय जो नाम धरायके।।

ॐ ह्री भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्य जिन! अत्र अवतर अवतर सवौषट् (आह्वानन), अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः (स्थापन), अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणम्)।

कनक झारी अधिक उत्तम रतन जड़ित सु लीजीये ।
पद्म द्रहको जल सुगंधित कर धार चरनन दीजिये ।।

भूतनय दूषण दूर नाश जु सकल आरत टारके ।
श्री वासुपूज्य जिन चरण पूजौं हर्ष उरमें धारके ।।

ॐ ह्री भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय जल निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड मलय जु महा शीतल सुरभि चन्दन घिस धरौं ।
जिन चरन चरचों भविक हित, सों पाप ताप सबै हरौं ।।भूत०।।

ॐ ह्री भौमारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय चदन निर्वपामीनि स्वाहा।

अक्षत अखण्डित सुरभि मण्डित, थारि भर करमें गहों ।
अक्षत सु पुज दिखाय जिन पद, अखय पदमैं जो लहों।।भूत० ।।

ॐ ह्री भौमारिष्टनिवारक श्रीवासपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय अक्षत निवपामीति स्वाहा।

कमल कुन्द गुलाब चम्पा, पारिजातक अति घने ।
पहुप पूजत चरण प्रभुके, कुसुमशर तब ही हने।। भूत०।।

ॐ ह्री भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

गो घृत सद्य मगाय भविजन, दुग्ध मिश्रित शर्करी ।
चरु चारु लेकर जजों जिनपद, क्षुधा वेदन सब हरी।।भूत०।।

ॐ ह्री भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

मणि जड़ित कंचन दीपसुन्दर, सद्य घृत तामे भरों ।
उद्योत कर जिन चरण आगे, हृदय मिथ्यातम हरों।।भूत०।।

ॐ ह्री भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

काला अगर घनसार मिश्रित, देव फूल सुहावने ।
खेवत धुंआ सो सुरंग मोदित, करत वसु कर्मन हने।।भूत०।।

ॐ ह्रीं भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल अनार जो आम नींबू, सोच मोच सुधा फलं।
जिन चरन चरचत फलन सेती, मोक्ष फलदाता रलं।।भूत०।।

ॐ ह्रीं भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध अक्षत पुष्प विंजन, दीप धूप फलोत्तमं।
जिनराज अर्घ चढ़ाय भविजन, लेऊ मुक्ति सुखोत्तमं।।भूत०।।

ॐ ह्रीं भौमारिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पचकल्याणकप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द ।

सुरभित जल श्रीखण्ड कुसुम तन्दुल भले।
बिंजन दीपक धूप सदा फल सों रले।
वासुपूज्य जिन चरण अर्घ शुभ दीजिये।
मंगल ग्रह दुख टार सो मंगल लीजिये।।

जयमाला ।

मंगल ग्रह हरनं मंगल करनं, सुखकर शिव-रमनी वरनं।
आतम हित करनं भवजल तरनं, वासुपूज्य सेवत चरनं।।

पद्धडी छन्द ।

इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र जु देव, आय करें जिनवर की सेव।
वासुपूज्य जिन पूजा करो, मंगल दोष सकल परिहारो।।टेक०।।

विजया जननी मन हर्षाय, जनक जु वासुपूज्य सुखदाय।
शुब लक्षण कर लक्षित काय, चम्पापुर जनमें जिनराय।।वा०।।

महिमा अंक चरनमें परो, देखत सबको संशय हरो।।वा०।।

फागुन असि जो चौदस जान, हो वैराग्य सु धरियो ध्यान।
घात घातिया केवल पाय, जैन धर्म जगमें प्रगटाय।।वा०।।

षट शत एक मुनीश्वर भयो, गिरि मंदार शिव लहि गयो।
मंगल हेतु जजों जिनराय, मंगल ग्रह दूषण मिट जाय।।वा०।।

पूजन प्रभु कीजे दोष हरीजे, छीजे पातक जन्म जरा।
सुख हो।य अविकारी ग्रह दुखहारी, भवजल भारी नीरतरा ।।

ॐ ह्री भौभारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय पचकल्याकप्रापताय महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री भौमारिष्टनिवारश्रीवासुपूज्य जिनपूजा सपूर्ण।

अथ बुधग्रह अरिष्टनिवारक आठ जिन पूजा।

सोम्य ग्रह पीड़ा करै, पूजों आठ जिनेश ।
आठों गुण जिनमें लसैं, नावत शीस सुरेश ।।

छप्पय।

विमलनाथ जिन नमों, नमों जु अनन्तनाथ जिन ।
धर्मनाथ जिन वन्द वन्द हौं, शांति शांति जिन ।।

कुन्थु अरह जिन सुमरि, सुमरि पुनि वर्धमान जिन !
इन आठें जिन जजों, भजों सुख करन चरन तिन ।।

बुध महाग्रह अशुभता, धरत करत दुख जोर जब ।
आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ, सन्निधि करहु तब ।।

ॐ ह्री बुधग्रहारिष्टनिवरका अष्ट जिना अत्र अवतरत अवतरत सवौषट् (आह्वानन) अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ (स्थापन), अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् (सन्नधिकरण) परिपुष्पाजलि क्षिपेत्।

अथाष्टक

गीतिका छन्द

हेम झारी जड़ित मन जल, भरों क्षीरोदक तनं ।
धार देत जिनराज आगे, पाप ताप जु नाशनं ।।
विमलनाथ अनंतनाथ, सु धर्मनाथ जु शांत ये ॥
कुंथु अरह जु नमिय महावीर आठों जिन जजे ।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि सुमरत लेउं चन्दन, घिसौं कुमकुम संग ही ।
जिन चरन चरचत मिटे ग्रीषम, मोह ताप जु भागहीं।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखंड उभय कोट, समान शुभ अति घने ।
ले कनक थार भराय भविजन, पुंज देत सुहावने।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार माली मालती, मचकुन्द मरुवो मोतिया ।
कमल कुन्द कुसुम करना, कामबान जु घातिया।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

घृत शुद्ध मिश्रित शर्करामृत, करहु बिंजन भावसों ।
ग्रह शांतिक होत जिनके, चरन चरचों चावसों।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

मणि जड़ित हाटक दीप सुन्दर, खातका घनसार है ।
सर्पि सहित शिखा प्रकाशित, आरती तमहार है।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो दीप निर्वपामीति स्वाहा।

लोभान अगर कर्पूर चन्दन, लौंग चूरन लाइये ।
वह्नि धूप विवर्जितम्, जिन चरन आगे खेइये।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो धूप निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पपादक जिन श्रीफल, फल समूह चढ़ाइये ।
भक्ति भाव बढाय करके, सरल श्रीफल लीजिये।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो फल निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सलिल चंदन सुमन अक्षत, क्षुधा हर चरु लीजिये ।
मणि दीप धूपक फल सहित, वसु द्रव्य अर्घ करीजिये।।विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदिक दरब, पूजों वसु जिनराय ।
सौम्य ग्रह दूषण मिटे, पूरन अर्घ चढाय।। विमल०।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारकेभ्योअष्टजिनेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

विमलनाथ जिन नमों, नमों जु अनन्तनाथ जिन ।
धर्मनाथ पुनि नमों, नमों शांति कर्ता तिन ।।

कुन्थुनाथ पद वन्द, बन्दहो अरहनाथ जिन ।
नमिय प्रणमि जिन पाय, पाय जिन वर्धमान जिमि ।।

ये आठें जिनरायको, हाथ जोड़ शिर धरत हों ।
सोमतनुज दुखहरनको, मंगल आरति करत हों ।।

पद्धडि छन्द

जय विमल विमल आतम प्रकाश।
षट् द्रव्य चराचर लोक वास।।
जय जय अनन्तगुण हैं अनन्त।
सुर नर जस गावत लहैं न अन्त।।
जय धर्म धुरन्धर धर्मनाथ।
जग जीव उधारन मुक्ति साथ।।
जय शान्तिनाथ जग शान्ति करन।

भव जीवन के दुख दारिद्र हरन।।
जय कुन्थु जिन कुन्थादि जीव।
प्रतिपालन कर सुख दे अतीव।।
जय अरह जिनेश्वर अष्ट कर्म।
रिपु नाम लियो शिव रमन शर्म।।
जय नमिय नमिय सुर वर खगेश।
इन्द्रादि चन्द्र थुति करत शेष।।
जय वर्धमान जग वर्धमान।
उपदेश देय लहि मुक्ति थान।।
शशि सुत अरिष्ट सब दूर जाय।
भव पूजे अष्ट जिनेन्द्र पाय।।
मन वच तन कर जुग जोड़ हाथ।
मनसिन्धु जलधि तव नवत माथ।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारवेभ्योअष्टजिनेभ्यो अर्घ नि०।

ये आठ जिनेश्वर, नमत सुरेश्वर, भव्य जीव मंगल करनं।
मन वांछित पूरे, पातक चूरे, जन्म मरण सागर तरनं।।

इति आशीर्वाद ।

अथ गुरु अरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनपूजा ।

मन वच काया शुद्ध कर, पूजों आठ जिनेश ।
गुरु अरिष्ट सब नाश हों, उपजे सुक्ख विशेष ।।

छप्पय।

ऋषभदेव जिनराज, अजित जिन सम्भव स्वामी ।
अभिनंदन जिन सुमति, सुपारस शीतल स्वामी ।।
श्री श्रेयांस जिनदेव, सेव सब करत सुरासुर ।
मनवांछित दातार, मारजित तीन लोक गुरु ।।

संवौषट् ठ ठः तिष्ठ, सुसन्निधि हूजिये ।
गुरु अरिष्टके नाशको, आठ जिनेश्वर पूजिये ।।

ॐ ह्री बुधग्रहरिष्टनिवारका अष्ट जिना अत्र अवतर अवतर अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ, अत्र मम सन्निहिता भवत-भवत वषट्।

अष्टक।

उज्ज्वल जल लीजे, मन शुचि कीजे, हाटकमय भृंगार भरं ।
जिन धार दिवाई, तृषा नसाई, भवजल निधि वे पार परं ।।
ऋषभ अजित, सभव अभिनन्दन, सुमति सुपारसनाथ परं ।
शीतलनाथ श्रेयांस जिनेश्वर पूजत सुरगुरु दोषहरं ।।

ॐ ह्री गुर्वरिष्टनिवारकार्ष्टजिनेभ्यो जल नि०

मलयागिरि चन्दन, दाह निकन्दन, कुंकुभ शुभ ले घनसार ।
चरचों जिन चरनं, भव तप हरनं, मनवांछित सब सुख निकरं ।।

ॐ ह्री गुर्वरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्यो चदन नि० **।। ऋषभ० ।।**

सरल शाली कृष्ण जीरक, वसुमती जो मन हरं ।
उभय कोटक, अरु अखण्डित, अखय गुण शिवपद धरं ।।
।। ऋषभ० ।।

ॐ ह्री गुर्वरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्यो अक्षत नि०

चम्पक चमेली, करन केतकी, मालती मरुवो मोलसरं ।
कमल कुमुद गुलाब कुंद जु, सरन जुही शिव-तिय वरं ।।
।। ऋषभ० ।।

ॐ ह्री गुर्वरिष्टनिवारकार्ष्टजिनेभ्यो पुष्प नि०

घेवरहि सुबावर पुवा पुरैयै, मोदक फेनी घेवरं ।
सुरहि घृत पय शर्कराजुत , विविध चरु क्षुध क्षयकरं ।।
।। ऋषभ० ।।

ॐ ह्री गर्वीरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्यो नैवेद्य नि०

मणिकर जड़ित, सुवर्ण थाल ले, कदली सुत घृत मांहि तरं।
दीपक उद्योत, तम क्षय होतं, निज गुण लखि भा भारमरं।।
।। ऋषभ० ।।

ॐ ह्री गर्वीरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्यो दीप नि०

चंदन अगर, लोंग सुतरग, विविध द्रव्य लै सुरभतरं।
खेवत जिन आगे, पातक भागे, धूवां मिस वसु कर्मजरं।।
।। ऋषभ० ।।

ॐ ह्री गर्वीरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्या धूप नि०

बादाम सुपारी, श्रीफल भारी, चोच मोच कमरख सुवरं।
लैके फल नाना, शिव सुख थाना, जिनपद पूजत देत तुरं।।
।। ऋषभ० ।।

ॐ ह्री गर्वीरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्यो फल नि०

जल चन्दन फूल तदुन्त तूलं, चरु दीपक लै धूप फलं।
वसुविधि से अरचे वसुविधि विरचै, कीजे अविचल मुक्तिधरं।।
।। ऋषभ० ।।

ॐ ह्री गर्वीरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्यो अर्घ नि०

अडिल्ल छन्द।

मन वच काया शुद्ध पवित्र जु हूजिये।
लेकर आठों दरव आठ जिन पूजिये।।
मंगलीक वसु वस्तु पूर्ण सब लीजिये।
पूरन अर्घ मिलाय आरती कीजिये।।

ॐ ह्री गर्वीरिष्टनिवारकाष्टजिनेभ्यो महार्घ नि०।

जयमाला

सुर गुरु दुख नाशन, कमलपत्रासन, वसुविधि वसु जिन पूजकरं।
भव भव अघहरनं, भवसुखकरनं, भव्य जीव शिवधामकरं।।

पद्धडी छन्द।

जय धर्म-धुरंधर ऋषभ धार, जय मुक्ति-कामनी कंत सार ।
जय अजित कर्म अरि प्रवल जान, जय जीत लियो सब गुणनिधान ।।

जय संभव संभव दभ छेद, जय मुक्ति-रमा लइयो अखेद ।
जय अभिनन्दन आनदकार, जय जय जन सुखकर्ता अपार ।।

जय सुमतिदेव, देवाधिदेव, जय शुभमतिजुत मुर करहिं सेव ।
जय जय सुपार्श्वसुख परमज्ञान, जय लोकालोक प्रकाशमान ।।

जय जन्म जरा मृतुविह्न हर्न, जय तिनका हमका नित्य शर्ण ।
जय श्रेयकरन श्रेयांसनाथ, जयश्रेयसषद दय मक्ति साथ ।।

जय जय गुणगरिमा जग प्रधान, जय भव्य-कमल परकाश भान ।
जय मनसुखसागर नमत शीस, जय सुरगुर दोषन मेट ईश ।।

ॐ ह्रीं गुर्वारिष्टनिवारकार्ष्टजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

आठ जिनेश्वर पूजते, आठ कर्म दुख जाय ।
अष्ट सिद्धि नव निधि लहै, सुरगुरु होय सहाय ।।

इत्याशीर्वाद ।

अथ शुक्रारिष्टनिवारक
श्री पुष्पदंत पूजा ।

दोहा

पुष्पदत जिनरायको, भवि पूजौ मन लाय ।
मन वच काया शुद्धसों, कवि अरिष्ट मिट जाय ।।

अडिल्ल छन्द।

गोचर में ग्रह शुक्र आय जब दुख करैं।
पुष्पदंत जिन पूज सकल पातक हरैं।।
आह्वानन कर तिष्ठ सन्निधि हूजिये।
आठ द्रव्य ले शुद्ध भावसों पूजिये।।

ॐ ह्री शुक्रग्रहारिष्टनिवारकपुष्पदत जिन अत्र अवतर अवतर सवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ , अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक

सोरठा

निर्मल शीत सुभाय, गंगाजल झरी भरौं ।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदतजिनराय पचकल्याणकप्राप्ताय जल निर्वपामीति स्वाहा।

कुमकुम लेइ घिसाय, कनक कटोरी में धरौं ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदतजिनाय पचकल्याणकप्राप्ताय चदन निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल अक्षत लाय, भाव सहित तुष परिहरौ ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदतजिनाय पचकल्याणकप्राप्ताय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली जय, जुही कुन्द जु केवरो ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदतजिनाय पचकल्याणकप्राप्ताय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

विंजन विविध बनाय, मधुर स्वाद युत आचरो ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्रीं शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदतजिनाय पचकल्याणकप्राप्ताय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन दीप कराय, कदलीसुत बाती करों ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदंतजिनाय पंचकल्याणकप्राप्ताय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर मिलाय, लोग धूप बहु विस्तरौं ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदंतजिनाय पंचकल्याणकप्राप्ताय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

चोच मोच फल पाय, सरस पक्व लीजे हरो ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदंतजिनाय पंचकल्याणकप्राप्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक ले आय अर्घ देत पातक हरो ।। कवि अरिष्ट० ।।

ॐ ह्री शुक्रारिष्टनिवारकायपुष्पदंतजिनाय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन ले फूल और अक्षत घने।
दीप धूप नैवेद्य सुफल मनमोहने।।
गीत नृत्य गुण गाय अर्घ पूरण करो।
पुष्पदंत जिन पूज शुक्र दूषण हरो।।महार्घम्।।

जयमाला

मन वच तन ध्यावो पाप नसावो, सब सुख पावो अघ हरणं।
ग्रह **दूषण** जाईहर्ष बढाई, पुष्पदन्त जिनवर चरणं।।

पद्धडी छंद।

जय पुष्पदन्त, जिनराज देव, सुर असुर सकल मिल करहि सेव।
जय फागुनसुदि नौमी बखान, सुरपति सुर गर्भकल्याण ठान।।
जय मार्गशीर्ष शशि उदय पक्ष, नौमी तिथि जगमें भये प्रत्यक्ष।
जय जन्ममहोत्सव इन्द्र आय, सुरगिर ले इन्द्र न्हवन कराय।।

जय वज्रवृषभनाराच देह, दस शत वसु लक्षण सुनहिं गेह ।
जब राजनीति कर राज कीन, मगसिर सित पड़वा तप सु लीन ।।

जय घात घातिया कर्म धीर, निज आतम शक्ति प्रकाश वीर ।
जय कातक सुदि दुतिया महान, लहि केवलज्ञान उद्योत मान ।।

जय भव्य जीव उपदेश देय, जग-जलधि उबारन सुजस लेय ।
जय भादों सुदी आठे प्रसिद्ध,हन शेष कर्म प्रभु भये सिद्ध ।।

जय जय जगदीश्वर भये देव, भृगु तजहिं दोष हर करत सेव ।
जय मन वाँछित तुम करत ईश, मन शुद्ध जलधि तुम नमत शीश ।।

ॐ ह्रीं शक्रारिष्टनिवारकाय पुष्प दन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गुण अधिकारी दूषण हारी, मारी रोगादिक हरनं ।
भृगु सुत दुख जाई पाप मिटाई, पुष्पदन्त पूजत चरनं ।।

इत्याशीर्वाद ।

शन्यरिष्टनिवारक

श्री मुनिसुव्रत जिन पूजा ।

दोहा।

जन्म लग्न गोचर समय, रविसुत पीड़ा देय ।
तब मुनिसुव्रत पूजिये, पातक नाश करेय ।।

अडिल्ल छन्द।

मुनिसुव्रत जिनराज, काज निज करनको ।
सूर्यपुत्र ग्रह क्रूर, अरिष्ट जु हरनको ।।

आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः करो ।
होय सन्निधि जिनराय, भव्य पूजा करो ।।

ॐ ह्रीं शन्यरिष्टनिवारक श्रीमुनिसुव्रतजिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ , अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक

चाल कातक ।

प्राणी गंगोदक ले सीयरो, निर्मल प्रासुक ले नीर हो ।
प्राणी झारी भर त्रय धार दे, जासे कर्म-कलंक मिटाय हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय जल निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी चन्दन घिस मलियागिरो, अरु कुम कुम तामें डार हो ।
प्राणी जिनपद चरचों भावसों, जासों जन्म जरा जर जाय हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी उज्ज्वल शशिसम लीजिये, एजी तंदुल कोटसमान हो ।
प्राणी पाच पुंज दे भावसों, अक्षय पद सुखदा हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी बेल चमेली केंवडो, करनार कुमुद गुलाब हो ।
प्राणी केतकी दल से पूजिये, तब कामबाण मिटजाय हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी विंजन नाना भांतिके, एजी षट् रस कर संयुकत हो ।

प्राणी जिन पद पूजों भावसों, तब जाय क्षुधादिक रोग हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी रतन जोत तम नासनी, कर दीपक कंचन थार हो ।
प्राणी जिन आरति कर भावसों, एजी भव आरत तम जाय हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी चन्दन अगर कपूर ले, सब खेवो पावक माहिं हो ।
प्राणी अष्ट करम जर क्षार हों, जिन पूजत सब सुख होय हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी आम अनार पियूष फल, चोंच मोच बादाम हो ।
प्राणी फलसों जिनपद पूजिये, एजी पावे शिवफल सार हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी नीरादिक वसु द्रव्य ले, मन वच काय लगाय हो ।
प्राणी अष्टकर्म को नाश ह्वै, एजी अष्टमहागुण पाय हो ।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये ।।

ॐ ह्री शन्यरिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द।

जल चन्दन ले फूल और अक्षत घने।
चरु दीपक बहु धूत महाफल सोहने।।
पूर्ण अर्घ बनाय जिन आगे हूजिये।
मुनिसुव्रत जिनराय भावसों पूजिये।।

ॐ ह्री शर्न्यारिष्टनिवारकाय श्रीमुनिसुव्रतजिनाय पचकल्याकप्राप्ताय पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

दोहा।

मुनिसुव्रत सुव्रत करन, त्याग करन जगमाल ।
शनि ग्रह पीड़ा हरणाकोरे, पढ़ो हर्ज जयमाल।।

पद्धडी छन्द।

जय जय मुनिसुव्रत त्रिजगराय, शत इन्द्र आय माथा नमाय ।
जय जय पद्मावती गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्षदाय।।

जय जय सुमित्र धर जन्म लीन, वैशाखकृष्ण दशमी प्रवीन ।
जय जय दश अतिशय लसत काय, त्रय ज्ञान सहित हित मित कहाय।।

जय जय तन लक्षण सहस आठ, भवि जीवन में थुतिकरन पाठ ।
जय जय सौधर्म सुरेश आय, जन्म कल्याण करियो सुभाय।।

जय जय तप ले वैशाख मास, सुदि दशमी कर्मकलँक नाश ।
जय जय वैशाख जो असित पक्ष, नौमी केवल लहि जग प्रत्यक्ष।।

जय जय रचियों तब समवसरन, सुर नर खग मुनि के चित्त हरन ।
जय छयालिस गुण सहित देव, शत इन्द्र आय तहाँ करत सेव।।

जय जय फागुन वदि द्वादशीय, शिवनाथ बसे मुनि सिद्ध लीय ।
जब जय शनि पीड़ा हरन हेत, मनसुखसागर कर सुख निकेत।।

ॐ ह्रीं शन्यरिष्टनिदारकाय श्रीमुनिसुव्रतजिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता-छन्द

मुनिसुव्रत स्वामी सब जग नामी, भव्य जीव बहु सुख करनं ।
मन बांछित पूरैं पातक चूरैं, रविसुतग्रह पीड़ा हरनं।।

इति आर्शीवाद ।

राहवरिष्टनिवारक श्री नेमिनाथ जिनपूजा

गोचर में जब आय पीड़ा करे, नेमिनाथ जिनराज तबै पूजा करे ।
आठद्रव्यलेशुद्धभावहिआनके, श्यामपुण्यमनलायभक्तिकोठानके।।

पूजोनेमजिनेशभव्यचितलायके, राहुदेयदुखदुष्टराशिमेंआयके ।
करआह्वाननिष्ठतिष्ठठःठःउच्चरौ,होयसन्निधिशक्तिभक्तपूजकरो।।

ॐ ह्री राह्वारिष्टनिवारक श्री नेमिनाथजिन अत्र अवतर अवतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ , अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (पुष्पाजलि क्षिपेत्)

अष्टक ।

गीतिका छन्द

कनक झारी मणिजड़ित ले, शीत उदक भरायके ।
प्रभु नेम जिनके चरन आगे, धार दे मन लायके।।

जब राहु गोचर समय दुख दे, देय दुष्ट स्वाभावसों ।
तब नेम जिनके भावसेती, चरन पूजों चावसौं।।

ॐ ह्री राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जल नि०।

श्रीखण्ड मलय मिलाय केसर, कदलिसुत तामें घिसौं।
जिनचरण चरचत भाव धरके, पाप ताप तबै नसौं।।जब राहु।।

ॐ ह्री राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय चन्दनम् नि०।

अक्षत अनूपम सालि सम्भव कनकभाजन लेइये।
जिन अग्रपुंज चढ़ाय भवि जन, एक चित मन देइये।।जब राहु।।

ॐ ह्रीं राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षतम् नि०।

कमल कुन्द गुलाब गुंजा केतकी करना भले।
सुमन लेके सुमन सेती, पूजते जिन अघ टले।।जब राहु।।

ॐ ह्रीं राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय पुष्पम् नि०।

विंजन विविध रस जनित, मनहर क्षुधादूषणको हरे।
भर थार कञ्चन भावसेती, नेमि जिन आगे धरे।।जब राहु।।

ॐ ह्री राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नैवेद्यम् नि०।

मणिमई दीप अनूप भरके, चन्द्र ज्योति सु जगमगै।
निज हाथ लै प्रभु आरती कर, मोह तम तब ही भगै।।जब राहु।।

ॐ ह्री राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय दीपम् नि०।

कृष्णागरु लोभान लेके, और द्रव्य सुगन्ध मथ।
जिन चरण आगे अगनिपर धर, धूप धूम सुरभिभमै।।जब राहु।।

ॐ ह्री राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय धूपम् नि०।

अम्बा बिजोरा नारियल, श्रीफल सुपारी सेवको।
फल ले मनोहर सरस मीठे, पूज ले जिनदेवको।।जब राहु।।

ॐ ह्री राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय फलम् नि०।

जल गन्ध अक्षत पुष्प सुरभित, चरु मनोहर लीजिये।
दीप धूप फलौघ सुन्दर, अर्घ जिनपद दीजिये।।जब राहु।।

ॐ ह्रीं राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

आठ द्रव्य ले सार नेम प्रभु पूजिये।
राहु होय ग्रह शांति पाप सब धूजिये।।
मन वंछित फल पाय होय बड़भागसो।
जो पूजे जिन देव बड़े अनुरागसो।।

ॐ ह्रीं राह्वरिष्टनिवारकाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

जयमाला

**श्री नेम जिनेश्वर जगपरमेश्वर, जीवदया जु धुरंधरं ।
मैं शरणन आयो शीश नमायो, सिंधुसुत दूषण हरनं।।**

पद्धडी छन्द ।

जय जय जिन नेम सुनेम धार, करुणाकर जग जन जलधि ताार ।
जय कातक सुदी छठमी प्रधान, शिवदेवी उर अवतरे आन।।

जय जय सावन सुदि छठ सुदेव, इन्द्रादि न्हवन विधि करहि सेब ।
जय जय यदुकुल मंडित दिनेश, सुर नर खग स्तुति करत शेष।।

जय जय शुचि शुक्ल उदास होय, छठको तप कर निज आत्म जोय ।
जय जय निर्मल तन निर्विकार, भामंडल छवि शोभा अपार।।

जय जय आश्विन सुदि ज्ञान भान, तिथि प्रथम पहर जग सुखनिधान ।
जय जय सावन छठ शुल्क पक्ष, सब लोकालोक कियो प्रत्सक्ष।।

जय जय वसुविध विधि सकल नास, लहि सुख अनंत शिवलोक वास ।
जय जय अजरामर पद प्रधान, हो त्रिभुवनपति लोकाग्र थान।।

जय जय छायासुत परिहरन, मनसुख समुद्र जु गहिये शरन। ।

घत्ता छन्द।

भव जन सुखदाई होउ सहाई, मन वच काया गावत हों ।
सब दूषण जाई पाप नसाई, नेम सहाई छावत हो।।

आशीर्वाद ।

केतु अरिष्टनिवारक मल्लिनाथ-पार्श्वनाथ पूजा ।

दोहा ।

केतु आय गोचर विषै, करै इष्टकी हान ।
मल्लि पार्श्वजिन पूजिये, मन वांछित सुख खान।।

अडिल्ल छन्द

मल्लि पार्श्व जिन देव सेव, बहु कीजिये।
भवित भाव वसु द्रव्य शुद्ध कर लीजिये।।
आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः करौ।
मम सन्निधि कर पूज हर्ष हियमें धरौ।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवारक श्रीमल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ , अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

चाल नन्दीश्वर।

उत्तम गंगाजल लाय, मणिमय भर भारी।
जिनचरन धार दे सार, जन्म जरा हारी।।
मैं पूजों मल्लि जिनेश, पारस सुखकारी।
ग्रह केतु अरिष्ट निवार, मनसुख हितकारी।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवारकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथजिनेन्द्राभ्या जल०

श्रीखण्ड मलय तरु ल्याय, कदलीसुत डारी।
घिस केसर चरणनि ल्याय, भव आपात हरी।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवारकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथजिनेन्द्रायभ्या चदन०

तंदुल अक्षत अविकार, मुक्ता सम सोहैं
भरले हाटक मय थाल, सुर नर मन मोहैं।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या अक्षत०

ले फूल सुगंधित सार, अलि गुञ्जार करै
पद पकज जिनहि चढ़ाय, काम विथा जु हरै।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या पुष्प०

विंजन बहुत प्रकार, षट्रस स्वाद मई
चरु जिनवर चरण चढ़ाय, कंचन थार लई।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या नैवेद्य०

मणि दीपक तूप भराय, चंद्रककी बाती
जगज्योति जहाँ लहकाय, मोह-तिमिर घाती।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्रीं केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या दीपं०

कृष्णागरु चंदन लाय, धूप दहन खेई
मोदित सुरगण ह्वै जाय, रुचि सेती लेई।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या धूप०

बहु चोच मोच बादाम, श्रीफल फल देई
अमृत फल सुख बहु धाम, लीजे मन लाई।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या फल०

जल चन्दन सुमन सुलेय, तंदुल अघहारी
चरु दीप धूप फल लेय, अर्घ करूँ भारी।। मैं पूजों० ।।

ॐ ह्रीं केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या अर्घं०

अडिल्ल छन्द ।

लै वसु द्रव्य विशेष सु मंगल गायके।
गीत नृत्य करवाय जु तूर बजायके।।
मनमें हर्ष बढाय, अर्घं पूरण करौं।
केतु दोषको मेंट पाप सब परिहरौं।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या महार्घ०

जयमाला ।

जय मल्लि जिनेसुर, सेव करैं सुर, पार्श्वनाथ जिनचरण नमों ।
मन वच तन लाई, अस्तुति गाई,करौं आरती पाप गमों।।

पद्धडी छन्द ।

जय जय त्रिभुवनपति देव देव, इन्द्रादिक सुरनर करहिं सेव ।
जय जय निजगुण ज्ञायक महंत, गुण वर्णन करत न लहत अंत।।

जय जय परमातम गुण अरिष्ट, भव पद्धति नाशन परम इष्ट ।
जय जय अष्टादश दोष नाश, कर दिन सम लोकालोक भास।।

जय जय वसुकर्म कलंक छीन, सम्यक्त्व आदि वसु सुगुणलीन ।
जय जय वसु प्रतिहारज अनूप, वसुनी शुभ भूमिके भये भूप।।

जय जय अदेह तुम देह धार, वर्णादि रहित में रुप सार ।
जय जय अजरामर पदप्रधान, गुणज्ञान आलोकालोक मान।।

जय जय सुखसाता बोधदर्श, निजगुणजुत परगुण नहीं पर्श ।
जय जय चित शुद्ध समुद्र सार, कर जोर नमों हों बार बार।।

ॐ ह्री केत्वरिष्टनिवाकाभ्या श्रीमल्लिनाथ-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्या अर्घ०

आशीर्वाद ।.

अथ नवग्रह शान्ति स्नोत्रम् ।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्।
ग्रह शान्तिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे।।

जिनेन्द्रा खेचरा ज्ञेया पूजनीया विधिक्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे।।

पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिनाम्।।

विमलानन्तधर्मेशशान्तिकुंथुनमेस्तथा।
वर्धमानजिनेन्द्रस्य पादद्मं बुधो नमेत्।।

ऋषभाजितसुपार्श्वा. साभिनन्दनशीतलौ।
सुमतिः सम्भवस्वामी श्रेयांसेषु वृहस्पतिः।।

सुविधि कथित शुक्रे, सुव्रतश्च शनिश्चवरे।
नेमनाथो भवेद्राहो केतु श्रीमल्लिपार्श्वयोः।।

जन्मलग्नं च राशिं च, यदि पीडयन्ति खेचराः।

तदा संपूजयेत् धीमान्, खेचरान् सह तान् जिनान्।।
आदित्यसोममंगलबुधगुरुशुक्रे शनिः।
राहुकेतुमेरवाग्रे या जिनपूजविधायक·।।
जिनान् नमोऽग्नतयोहिं, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे।
नमस्कारशंत भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतं।।
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचम श्रुतकेवली।
विद्याप्रसादतः पूर्व ग्रहशान्तिविधिः कृता।।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय शुचिर्भूत्वा समाहित·।
विपत्तितो भवेच्छान्ति. क्षेमं तस्य पदे पदे।।

नव ग्रहों के जाप्य

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं सूर्यग्रह अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नम· शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।१।। ७००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नम शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।२।। ११००० जाप्य।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय नम· शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।३।। १०००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्रौं आँ श्रीबुधग्रहारिष्टनिवारक श्री विमल अनंत धर्म शांति कुन्थु अरह नभि वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नम. शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।४।। ८००० जाप्य।

ॐ औं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति सुपारस शीतल श्रेयांस अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नभः शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।५।। १९००० जाप्य।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।७।। २३००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्लीं हूँ राहु ग्रहारिष्टनिवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।८।। १८००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्लीं एँ केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नम शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।९।। ७००० जाप्य।

अभिषेक पूजन विधान के बाद इन जाप्यों को जपना चाहिये। फिर शांति विसर्जन करें।

।। ॐ नम: सिद्धेभ्य. ।।

नवग्रह अरिष्टनिवारक पूजा

प्रशम्याद्यन्ततीर्थेश, धर्म-तीर्थप्रवर्तकम् ।
भव्यविघ्नोपशान्त्यर्थ ग्रहार्चा वर्ण्यते मया ।।

मार्तंडेन्दुकुजसौम्य-, सूरसूर्यकृतांतका ।
राहुश्च केतुसंयुत्को, ग्रहशांतिकरा नव ।।

दोहा ।

आदि अन्त जिनवर, नमों, धर्म प्रकाशनहार ।
भव्य विघ्न उपशांत को,ग्रहपूजा चित धार ।।

कालदोष परभावसौं, विकलप छूटे नाहि ।
जिनपूजामें ग्रहनकी, पूजा मिथ्या नाहि ।।

इस ही जम्बूद्वीप में, रवि शशि मिथुन प्रमान ।
ग्रह नक्षत्र तारा सहित, ज्योतिष चक्र प्रमान ।।

तिनहीके अनुसार सौं, कर्म चक्र की चाल ।
सुख दुख जानै जीवकौ, जिनवच-नेत्र विशाल ।।

ज्ञान प्रश्न व्याकर्णमें प्रश्न अंग है आठ ।
भद्रबाहु मुख जनित जो, सुनत कियो मुख पाठ ।।

अवधि धार मुनिराजजी, कहे पूर्व कृत कर्म ।
उनके वचन अनुसारसौं, हरे हृदयको भर्म ।।

समुच्चय पूजा।

दोहा ।

अर्क चन्द्र कुज सोम गुरु, शुक्र शनिश्चर राहु ।
केतु ग्रहारिष्ट नाशने, श्री जिनपूज रचाहु ।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रह-अरिष्ट-निवारक चतुर्विंशतिजिना अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् (आह्वननम्), अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ (स्थापनम्, अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् (सन्निधिकरणम्)।

अष्टक ।

गीतिका छन्द।

क्षीरसिंधु समान उज्ज्वल, नीर निर्मल लीजिये ।
चौबीस श्रीजिनराज आगे, धार त्रय शुभ दीजिये ।।
रवि सोम भूमज सौम्य गुरु कवि, शनि नमो पूतकेतवै ।
पूजिये चौवीस जिन, ग्रहारिष्ट नाशन हेतवै ।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पंचकल्याक प्राप्तेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड कुंकुम हिम सुमिश्रित, घिसौं मनिकर चावसौं ।
चौवीस श्री जिनराज अघहर, चरण चरचौं भावसौं ।। रवि० ।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पंचकल्याणक प्राप्तेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित सालि तंदुल, पुंज मुक्ताफलसम ।
चौवीस श्रीजिनराज पूजन, नाम ह्वैं नव ग्रह भ्रम ।। रवि० ।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पंचकल्याणक प्राप्तेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद कमल गुलाब केतकि, मालती जाही जुही ।
कामबाण विनाश कारण, पूजि जिनमाला गुही ।। रवि० ।।

ॐ ह्वी सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विशंतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी सुहारी पुवा पापर, लेऊ मोदक घेवर ।
शतछिद्र आदि विविध विंजन, क्षुधाहर बहु सुखकरं ।। रवि० ।।

ॐ ह्वी सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विशंतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप जगमग जोत तमहर, प्रभू आगे लाइये ।
अज्ञान नाशक निज प्रकाशक, मोह तिमिर नसाइये ।। रवि० ।।

ॐ ह्वी सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विशंतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो दीप निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णा अगर घनसार मिश्रित, लोग चन्दन लेइये ।
ग्रहारिष्ट नाशन हेत भवि जन, धूप जिन पद खेइये ।। रवि० ।।

ॐ ह्वी सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विशंतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो धप निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव श्रीफल, मोच नीबू सद फल ।
चौवीस श्रीजिनराज पूजत, मनोवांछित शुभ फल ।। रवि० ।।

ॐ ह्वी सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विशंतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गध सुमन अखण्ड तन्दुल, चरु सुदीप सुधूपक ।
फल द्रव्य दूध दही सुमिश्रित, अर्घ देय अनूपकं ।। रवि० ।।

ॐ ह्वी सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विशंतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणक प्राप्तेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घं

अडिल्ल-सलिल गंदाले फूल सुगन्धित लीजिए।
तन्दुल ले चरु दीपक धूप खेवीजिये।।
फल ले अर्घं बनाय प्रभू पद पूजिये।।
रवि अरिष्ट को दोष तुरत तहे धूजिये।

ॐ ह्री रवि अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं ।।१।।

जल चन्दन बहु फूल सु तन्दुल लीजिये।
दुग्ध शर्करा राशि हित सु व्यंजन कीजिये।।
दीप धूप फल अर्घं बनाय धरीजिये।
शीस जिनेन्द्र को नवाय अरिष्ट हरीजिये।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्ट निवारक चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं।।२।।

सुरभित जल श्रीखण्ड कुसुम तन्दुल भले।
व्यंजन दीपक धूप सदा फल सो रले।।
वासु पूज्य जिनराय अर्घं शुभ दीजिये।
मंगल ग्रह को रिष्ट नाश कर लीजिये।।

ॐ ह्री भौमारिष्ट निवारक वासुपूज्य-जिनाय नम अर्घं।।३।।

शुभसलिलचन्दनसुमनअक्षतक्षुधाहरचरुलीजिये।
मणिदीप धूप सुफल सहित बसु दरब अर्घं जु दीजिये।
विमलनाथ अनन्तनाथ सु धर्मनाथ जु शांतये।
कुन्थु अरह जु नमि जिन महावीर आठ जिनं यजे।।

ॐ ह्री सौम ग्रहारिष्ट निवारक अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।।४।।

जल चन्दन फूलं तन्दुल मूलं चरु दीपक ले धूप फलं।
बसु विधि से अर्चे बसुविधि चर्चे कीजे अविचल
मुक्ति धरं।।
ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति।
सुपारसनाथ वरं।

शीतलनाथश्रेयांसजिनेश्वरपूजतसुरगुरुदोषहरं।।

ॐ ह्री सुर गुरु दोष निवारक वसु जिनवरभ्यो अर्घं।।५।।

जल चन्दन ले पुष्प और अक्षत घने,
चरु दीपक बहु धूप सु फल अति सोहने।।
गीत नृत्य गुण गाय अर्घ पूरन करैं।
पुष्पदन्त जिन पूज शुक्र दूषण हरैं।।

ॐ ह्री शुक्ररिष्ट निवारक पुष्पदन्त जिनाय अर्घं।।६।।

प्राणी नीरादिकर बसु द्रव्य ले, मन वच काय लगाय।।
अष्ट कर्म को नाश हैव अष्ट महा गुण पाय हो।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।
ए जी रवि सुत सहज दुख जाय।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्री शनि अरिष्ट नाशक मुनिसव्रत जिनेन्द्राय अर्घं।।७।।

जल गन्ध पुष्प अखण्ड अक्षय चरु मनोहर लीजिए।
दीप धूप फलोघ सुन्दर अर्घ जिन पद दीजिए।
जब राहु गोचर रासि में दुख देइ दुष्ट सुभावसों।।
तब नेमि जिनके भाव सेति चरण पूजै चावसों।

ॐ ह्री राहु अरिष्ट नाशक नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।।८।।

जल चन्दन सुमन सु लाय तन्दुल अघ हारी।
चरु दीप धूप फल लाय अर्घं करों भारी।।
मैं पूजों मल्लि जिनेश पारस सुखकारी।
ग्रह केतु अरिष्ट निवार मन सुख हितकारी।।

ॐ ह्री केतु अरिष्ट निवारक मल्लि पार्श्व जिनाभ्याम् अर्घं।।९।।

रवि शशि मंगल सौम गुरु भृगु शनि राहु सुकेतु।
इनको रिष्ट निवार करे अर्चे जिन सुख हेतु।।

ॐ ह्री सर्व ग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विशति जिनेभ्यो अर्घं।।१०।।

जयमाला

दोहा—श्री जिनवर पूजा किये, ग्रहअरिष्ट मिट जाय ।
पंच ज्योतिषी देव सब, मिल सेवें प्रभु पायं ।।

पद्धरी छंद

जय जय जिन आदिमहंत देव, जय अजित जिनेश्वर करहि सेव ।
जय जय संभव संभव निवार, जय जय अभिनन्दन जगत तार ।।
जय सुमति सुमति दायक विशेष, जय पद्मप्रभु लख पदम लेष ।
जय जय सुपार्स हर कर्म फास, जय जय चन्द्रप्रभु सुख निवास ।।
जय पुष्पदन्त कर कर्म अंत, जय शीतल जिन शीतल करंत ।
जय श्रेय करन श्रेयांस देव, जय वासुपूज्य पूजत सुमेव ।।
जय विमल विमल कर जगतजीव, जय जय अनंत सुख अति सदीव ।
जय धर्म धुरन्धर धर्मनाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति साथ ।।
जय कुंथनाथ शिव सुखनिधान, जय अरहजिनेश्वर मुक्तिथान ।
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत सुव्रत प्रकाश ।।
जय नमिदेव दयाल संत, जय नेमनाथ तसु गुण अनत ।
जय पारस प्रभु संकट निवार, जय वर्धमान आनन्दकार ।।
नव ग्रह अरिष्ट जब होय आय, तब पूजै श्रीजिनदेव पाय ।
मन वच तन मन सुखसिंधु होय, ग्रह शांति रीत यह कही जोय ।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकचतुर्विंशतितीर्थंकरजिनेन्द्रेभ्य पचकल्याणकप्राप्तेभ्य अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—चौबीसौं जिनदेव प्रभु, ग्रह सम्बन्ध विचार ।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम, जो पाऊं सुख सार ।।

सर्वग्रह शान्ति मन्त्र

ॐ हां हीं हूँ हौं ह्र अ सि आ उ सा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा
(प्रात इस मन्त्र की माला फेरने से सर्वग्रहों की शान्ति होती है।)

अथ नवग्रहशांति स्तोत्र

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु भाषितं।
ग्रहशांति प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे।।
जिनेन्द्राः खेचराज्ञेया, पूजनीयाविधिक्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनैर्धू पैर्नैवद्यैस्तुष्टिहेतवे।

पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिनां।।

विमलानन्तधर्मेश-शांतिकुन्थ्वरहनमि।
वर्द्धमानजिनेन्द्राणां, पादपद्मं बुधो नमेत्।।

ऋषभाजितसुपार्श्वा· साभिनन्दनशीतलौ।
सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः।।

सुविधिः कथित शुक्रे, सुव्रतश्च शनैश्चरे।
नेमिनाथो भवेद्राहो., केतु: श्रीमल्लिपार्श्वयोः।

जन्मलग्नं च राशिं च, यदि पीडयन्ति खेचरा.।
तदा संपूजयेद् धीमान्-खेचरान् सह तान् जिनान्।।

भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचम· श्रुतकेवली।
विद्याप्रसादत· पूर्वं ग्रहशांतिविधिः कृता।।
य· पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहित.।
विपित्तितो भवेच्छांति. क्षेमं तस्य पदे पदे।।

प्रात काल इस स्तोत्र का पाठ करने से क्रूरग्रह अपना असर नही करते। किसी ग्रह के असर होने पर २७ दिन तक प्रति दिन २१ बार पाठ करने से अवश्य शान्ति होगी।

नव ग्रहों के जाप्य

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं सूर्यग्रह अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।१।। ७००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।२।। ११००० जाप्य।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।३।। १०००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्रौं आं श्रीबुधग्रहारिष्टनिवारक श्री विमल अनंत धर्म शांति कुन्थु अरह नमि वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।।४।। ८००० जाप्य।

ॐ औं क्रौं ह्रीं श्री क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति सुपारस शीतल श्रेयांस अष्ट जिनेन्द्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।।५।। १९००० जाप्य।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नम शांति कुरु कुरु स्वाहा ।।६।। ११००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्रों ह. श्रीं शनि ग्रह अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम. शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।।७।। २३००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्लीं ह्रू राहु ग्रहरिष्टनिवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।।८।। १८००० जाप्य।

ॐ ह्रीं क्ली ऐ केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां नमः शाति कुरु कुरु स्वाहा ।।९।। ७००० जाप्य।

अभिषे पूजन विधान के बाद इन जाप्यों को जपना चाहिए। फिर शांति विसर्जन करें।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

श्री स्वरूपचन्दजी विरचित

चौसठ ऋद्धि पूजा

।। दोहा ।। (वृहत्गुर्वावली पूजा)

सारासार विचार करि, तजि संसृतिको भार।
धारा धरि निज ध्यान की, भये सिंधु भव पार।। १ ।।

भूत भविष्यत काल के, वर्तमान ऋषिराज।
तिनके पद को नमन करि, पूज रचों शिव काज।। २ ।।

स्तुति– मदावलिप्तकपोल छंद।

यह संसार असार दुखमय जानि निरंतर,
विषय-भोग धन धान्य त्यागि सब भये दिगम्बर।
परपरणति परिहार लगे निजपरणति माहीं,
राग द्वेष मद मोह तणी नांही परछांही।। ३ ।।

जन्म जरा अरू मरण त्रिदोष जु या जग माहीं,
सब जगवासी जीव भ्रमत कछु साता नाहीं।
इम विचारि चितमाहि धारि संयम अविकारी,
शुक्लध्यान धरि धीर वरी अविचल शिवनारी।। ४ ।।

षट्कायनि के जीवतणी करूणा पतिपालै,
करि चोरी परिहार मृषा वच सबही टालै।
ब्रहमचर्य व्रत धरचो परिग्रह द्विविध तज्यो जिन,
पंच महाव्रत धारि येह मुनि भये विचक्षन।। ५ ।।

चार हाथ भू निरखि चलै हित मित बच भाखै,
षट्चालीस जु दोषरहित शुभ अशन जु चाखै।
भूमि शुद्ध प्रतिलेखि बस्तु क्षेपै रू उठावै,
भू निर्जन्तु निहारि मूत्र मल क्षपण करावै।। ६ ।।

स्पर्शन के हैं आठ पंच रस रसना केरे,
घ्राणेन्द्रिय के दोय चक्षुके पांच गिनेरे।
कर्णेन्द्रिय के सप्तबीस अरू सात विषय सब,
इष्ट अनिष्ट जु मांहि करै नहिं राग द्वेष कब।। ७ ।।

सामायिक अरू वंदन स्तुति प्रतिक्रमण भजै हैं,
प्रत्याख्यान व्युत्सर्ग दिवस तिरकाल सजै हैं
भूमिशयन अरू स्नानत्याग नग्नत्व धरै हैं,
कच लोंचैं दिन मांहि एक वर अशन करैं है।। ८ ।।

खडे होय आहार करैं सब दोष टालि मित.
दंत-धवन तिन त्यज्यो देह जिय भिन्न लख्यो नित।
अष्टाविंशति ये जु मूलगुण धरत निरंतर,
उत्तर गुण लख च्यार असि धर वाहय अभ्यंतर।। ९ ।।

।। दोहा ।।

इत्यादिक बहु गुण सहित, अनागार ऋषिराज।
नमों नमों तिन कमल, तारण तरण जिहाज।। १० ।।

(इति पठित्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ समुच्चय पूजा

।।गीता छन्द ।।

संसार सकल असार जामें सारता कछु है नहीं,
धन धाम धरणी और गृहिणी त्यागि लीनी वन मही।
ऐसे दिगम्बर होगये, अरू होयंगे, वरतत सदा,
इह थापि पूजो मन वचन करि देहु मंगल विधि तदा।। १ ।।

ॐ ह्री भूतभविष्यद्वर्तमानकालसम्बन्धिपंचप्रकारसर्वऋषीश्वरा। अत्र अवतरत अवतरत सवौषट् (आह्वाननम्), अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः (स्थापनम्), अत्र सन्निहिता भवत भवत वषट् (सन्निधापनम्)।

।। चाल रेखता ।।

लाय शुभ गंगजल भरिकै, कनक भृंगार धरि करिकै।
जन्म जर मृत्यु के हरनन, यजों मुनिराज के चरणन।। १ ।।

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसम्बन्धिपुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातक-पचप्रकारसर्वमुनीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

घसों काश्मीर संग चदन, मिलावों केलिकों नंदन।
करत भ्वतापको हरनन, यजों मुनिराजके चरणन।। २ ।।
।। चंदन ।।

अक्षत शुभचंद्रके करसे, भरों कण थालमें सरसे।
अक्षय पद प्राप्तिके करणन, यजों मुनिराजके चरणन ।। ३ ।।
।। अक्षतं ।।

पुहुप ल्यों घ्राणके रंजन, उड़त तामांतिं मकरंदन।
मनोभव बाणके हरनन, यजों मुनिराजके चरणन ।। ४ ।।
।। पुष्पं ।।

लेय पक्वान्न बहुविधिके, भरों शुभ थाल सुवरणके।
असातावेदनी क्षरणन, यजों मुनिराजके चरणन ।। ५ ।।
।। नैवेद्यं ।।

जगमगे दीप लेकरिके, रकाबी स्वर्ण मे धरिके।
मोहविध्वंस के करणन, यजों मुनिराजके चरणन ।। ६ ।।
।।दीपं।।

अगर मलयागिरी चंदन, खेयकरि धूपके गंधन।
होय कर्माष्टको जरनन, यजो मुनिराजके चरणन ।। ७ ।।
।। धूंप ।।

सिरीफल आदिन फल ल्यायो, स्वर्णको थाल भरवायो।
होय शुभ मुक्तिको मिलनन, यजों मुनिराजके चरणन ।। ८ ।।

।। फलं ।।

जलादिक द्रव्य मिलवाये, विविध वादित्र बजवाये।
अधिक उत्साह करि तनमें, चढ़ावों अर्घ चरणन में ।। ९ ।।

।। अर्घं ।।

जयमाला

।। सोरठा ।।

तारण तरण जिहाज, भवसुमद्र के मांहिं जे।
ऐसे श्री ऋषिराज सुमरि सुमरि विनती करों।। १ ।।

।। पद्धडी छद ।।

जय जय जय श्रीमुनि युगल पाय, मैं प्रणमों मन वच शीश नाय।
जे सब असार संसार जानि, सब त्यागि कियो आतम कल्यान ।। २ ।।

क्षेत्र वास्तु अरू रत्न स्वर्ण, धन धान्य द्विपद अरू चतुकचर्ण।
अरू कुप्य भांड दश बाह्य भेद, परिग्रह त्यागे नहि रंच खेद ।। ३ ।।

मिथ्यात्व तज्यो संसार मूल, पुनि हास्य अरति रति शोक शूल।
भय सप्त जुगुप्सा स्त्रीय वेद, पुनि पुरूष वेद अरू क्लीव वेद ।। ४ ।।

क्रोध मान माया रू लोभ, ये अंतरंग में करत क्षोभ।
इम ग्रंथ सबै चौबीस येह, तजि भए दिगम्बर नग्न जेह ।। ५ ।।

गुणमूल धारि तजि राग दोष, तप द्वादश धरि तन करत शोष।
तृण कंचन महल मसान मित्त, अरू शत्रुनिमें समभाव चित्त ।। ६ ।।

अरू मणि पाषाण समान जास, पर परणति में नहिं रंच वास।
यह जीव देह लखि भिन्न भिन्न, जे निज-स्वरूप में भाव किन्न ।। ७ ।।

ग्रीषम ऋतु पर्वत शिखर वास, वर्षा में तरूतल है निवास।
जे शीतकाल में करत ध्यान, तटिनी तट चोहट शुद्ध थान ।। ८ ।।

हो करूणासागर गुण अगार, मुझ देहि अखय सुख को भंडार।
मैं शरण गही मुझ तार तार, मो निज स्वरूप द्यो बार बार ।। ९ ।।

घत्ता--

यह मुनिगुणमाला, परम रसाला, जो भविजन कंठे धरही ।
सब विघ्न विनाशहि, मंगल भासहि, मुक्ति रमा वर नरवरही ।।

ॐ ह्रीं भूतभविष्यद्वर्तमानकालसबंधिपुलाकवकुशकुशील निर्ग्रंथस्नातकसर्व-प्रकारमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

।। दोहा ।।

सर्व मुनिन की पूजा यह, करै भव्य चित लाय।
ऋद्वि सर्व घरमें बसै, विघ्न सबै नशि जाय ।। १ ।।

इत्याशीर्वाद ।

चतुर्विंशतितीर्थंकरसंबधिगणधर मुनिवर पूजा।

(लक्ष्मीधरा छन्द)

वृषभसेनादिअस्सीचऊगणधरा,वृषभकेचउअसीसहससबमुनिवरा।
नीरगंधाक्षतंपुष्पचरूदीपकं,धूपफलअर्घलेहमयजेंमहर्षिकं।।१।।

ॐ ह्रीं आदिजिनेन्द्रास्य वृषभसेनादिचतुरशीतिगणधर-चतुर-शीतिसहस्त्रसर्व-मुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहसेनादि सब नवति गणधार हैं,
अजित जिनराज के लक्ष अनगार हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। २ ।।

ॐ ह्रीं अजिनजिनस्थ सिहसेनादिनवतिगणधरैकलक्षसर्वमुनिवरेभ्योअर्घं निर्वपा-मीति स्वाहा।

गणी चारूषेणादि शत एक अरू पांच हैं,
लक्ष सब दोय संभवतणो सांच हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। ३ ।।

ॐ ह्री सभवजिनस्य चारूषेणादिपचोत्तरैकशतगणाधर-लक्षद्वयसर्वमुनिवरे-भ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एकसौ तीन वज्रादि हैं गणधरा,
सर्वअभिनंदन के तीन लक्ष मुनिवरा। नीर गंधाक्षतं० ।। ४ ।।

ॐ ह्री अभिनन्दनजिनेद्रस्य वज्रादित्र्युत्तरैकशतगणधर-लक्षत्रय-मुनिवरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

चमरादिका एकशत षोडशा गणधरा,
सुमतियति चौगुणा सहसअस्सी परा। नीर गंधाक्षतं० ।। ५ ।।

ॐ ह्री सुमतिजिनेद्रस्य चमरादिषोडशोत्तरैकशतगणाधर-विशतिसहस्त्रोत्तरल-क्षत्रयसर्वमुनिरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

बज्रादि शत एक दश पद्मके गणधरा,
तीन लक्ष तीस हज्जार सब मुनिवरा। नीर गंधाक्षतं० ।। ६ ।।

ॐ ह्री पद्मप्रभजिनेद्रम्य दशोत्तरैकशतगणाधर-त्रिशत्सहस्त्रोत्तरलक्षत्रयसर्व-मुनिवरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

चमरबल आदि पिच्यानवै गणधरा,
सुपार्श्व के तीनलक्ष सर्व योगीशवरा। नीर गंधाक्षतं ।। ७ ।।

ॐ ह्री सुपार्श्वजनेद्रस्य चमरबलादिपचोत्तरनवतिगणधर-लक्षत्रय सर्वमुनी-श्वरभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

नवति अरू तीन दतादि गणराज हैं,
चंद्र जिनके मुनी सार्द्धद्वय लाख हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। ८ ।।

ॐ ह्री चद्रप्रभजिनस्य च्युत्तरनवतिगणाधर-सार्द्धद्वयलक्षसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वीत स्वाहा।

विदर्भादि गणराज अस्सी रू शुभ आठ हैं,
पुष्पदंत जिनतणो तीन लाख साधु हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। ९ ।।

ॐ ह्री पुष्पदन्तजिनस्य विदर्भाद्यष्टाशीतिगणधरलक्षत्रयसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अस्सी गणधरा आदि अनगार हैं,
एक लक्ष शीतलके और मुनिराज हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। १० ।।

ॐ ह्री शीतलनाथ जिनस्यानगाराद्येकाशीतिगणधरैकलक्षसर्वमुनिवरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथादि गणराज सत्तर अरू सात हैं,
चउअसी सहस श्रेयांसके साध है। नीर गंधाक्षतं० ।। ११ ।।

ॐ ह्री श्रेयासजिनस्य कुथादिसप्तसप्ततिगणधरचतुरशीतिसहस्त्रसर्वमुनिव-रेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुधर्मादि षट्षष्ठी वासुपूज्य गणधर सबै,
सहस बहत्तर अवर मुनीश्वर सब फबै। नीर गधाक्षतं० ।। १२ ।।

ॐ ह्री वासुपूज्यजिनस्य सुधर्मादिषटषष्ठिगणाधर-द्विसप्तसिसहस्त्रसर्वमुनिवरे-भ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गणी नंदरार्यादि पंच पच्चास हैं,
विमल मुनि सर्व अडसठि हज्जार हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। १३ ।।

ॐ ह्री विमलनाथजिनस्य नदरार्यादिपचपचाशद्गणाधराष्टषष्ठिसहस्त्रसर्व-मुनिवरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

गणाधर जय आदि पंचास जिनानंत के,
अवर मुनि षष्ठिषट्सहस्त्र सब भंतके। नीर गंधाक्षतं० ।। १४ ।।

ॐ ह्री अनतनाथ जिनस्य जयादिपचाशद्गणधर-षट्षष्ठिसहस्त्रसर्वमुनिवरे-भ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अरिष्टादि चालीस त्रय सर्व गणाधार हैं,
धर्मजिनके यती चउसठ हज्जार हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। १५ ।।

ॐ ह्री धर्मनाथ जिनस्यारिष्ठादित्रिचत्वारिशद्गणाधर-चतु षष्ठिसहस्त्रसर्व-मुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

षडत्रिंश गणधार चक्रायुधादी महा,
शांति जिनवर मुनी सहस्त्र बासठ लहा। नीर गंधाक्षतं० ।। १६ ।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथजिनस्य चक्रायुधादिषट्त्रिंशद्गणाधर-द्विषष्ठिसहस्त्रसर्व-मुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभ्वादि गणराज पैंतीस जिन कुंथके,
साठ हज्जार मुनिराज सब संघके । नीर गंधाक्षतं० ।। १७ ।।

ॐ ह्रीं कुथुनाथ जिनेद्रस्य स्वयभ्वादिपचत्रिंशद्गणधरषष्ठिसहस्त्रमुनिवरे-भ्योअर्घ स्वाहा।

तीस गणाधार कुंथ्वादि अरनाथके,
सहस्त्र पंचास मुनिराज सब साथके। नीर गंधाक्षतं० ।। १८ ।।

ॐ ह्री अरनाथ जिनस्य कुथ्वादित्रिशद्गणाधर-पञ्चाशत्सहस्त्रसर्वमुनीश्वरे-भ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विशाखादि गणराज सब बीस अरू आठ हैं,
मल्लिजिनके मुनी सहस्त्र चालीस हैं। नीर गंधाक्षतं० ।। १९ ।।

ॐ ह्री मल्लिनाथ जिनस्य विशाखाद्यष्टाविशतिगणधर-चत्वारिशत्सहस्त्रसर्व-मुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीनि स्वाहा।

अष्टदश गणधरा मल्लि आदिक सदा,
मुनिसुव्रन तीस हज्जार मुनिवर तदा। नीर गंधाक्षतं० ।।२०।।

ॐ ह्री मुनिसुव्रतजिनस्य मल्ल्याद्यष्टादशगणधर-त्रिशत्सहस्त्रसर्वमुनीश्वरे-भ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोमादि गणधार दश सप्त नमिनाथ के,
बीस हज्जार सब अवर मुनि साथके। नीर गंधाक्षतं० ।।२१ ।।

ॐ ह्री नमिनाथजिनस्य सोमादिसप्तदशगणधर-विशतिसहस्त्रमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि वरदत्त गणधार एकादशा,
नेमिके अवर मुनि सहस्त्र अष्टादशा। नीर गंधाक्षतं० ।। २२ ।।

ॐ ह्री नेमिनाथजिनेद्रस्य वरदत्ताद्येकादशगणाधराष्टादशसहस्त्रसर्वमुनीश्वरे-भ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभ्वादि गणधर दश अवर सब मुनवरा,
पार्श्वजिनराज के सहस्त्र षोड़श परा । नीर गंधाक्षतं० ।।२३।।

ॐ ह्री पार्श्वजिनेद्रस्य स्वयभ्वादिदशगणधर-षोडशसहस्त्रसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

गौतमादिक सबै एकादश गणधरा,
वीरजिनके मुनी सहस्त्र चउदस वरा। नीर गंधाक्षत्० ।।२४ ।।

ॐ ह्री महावीरजिनस्य गौतमाद्येकादशगणाधर-चतुर्दसासहस्त्रसर्वमुनिवरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा। छप्पय जद।

तीर्थकर चौबीस सबन के गणधर सारे।
चोदहसै पच्चास और त्रय सर्व निहारे।।
अवर मुनीश्वर सब संघके सप्त प्रकार जु।
लख उनतीस रू अधिक अष्टचालीस हजार जु।।
इम तीर्थेश्वर सकलके, सर्व मुनीश मिलाय।
अष्टद्रव्य कणथाल भरि, पूजों शीस नवाय।।

ॐ ह्री चतुर्विशतितीर्थकराण एकसहस्त्रचतु शतत्र्यधिकपञ्चाशद्गणधरेभ्य-सप्तप्रकारीय एकोनत्रिशल्लक्षाष्टचत्वारिशत्सहस्त्रममस्तसप्तप्रकारेतरमुनी-श्वरेभ्यश्च जलाद्यर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथमकोष्ठस्थबुद्धि ऋद्धिधारक मुनि पूजा।

स्थापना.... (लक्ष्मीधरा छद)

बुद्धिऋद्धीश्वरा बुद्धिऋद्धीश्वरा ,
अत्र आगच्छ आगच्छ तिष्ठो वरा।
मम निकट होउ निकट होउ निकट होउ सर्वदा,
तुम पूजिहों पूजिहों जोरि कर शर्मदा।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरा अत्र अवतरत अवतरत सवौषट् (आह्वननम्), अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ (स्थापनम्), अत्र मम सन्निहिता भवत भवत (सन्निधापनम्)

अष्टक— चाल—द्यानतरायकृत अठाई पूजन की।

प्रासुक जल शुभ लेय, कंचन भृंग भरों।
त्रय धार चरण ढिग देय, कर्म-कलंक हरों।।
मैं बुद्धि ऋद्धि धर धीर, मुनिवर पूज करों।
याते हो ज्ञान गहीर, भव संताप हरों।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चदन लेय, कुंकुम संघ घसों।
अर्चा कर श्री ऋषिराज भव आताप नसों। मै बुद्धिऋद्धि० ।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो चदन निर्वपामीति स्वाहा।

अखित अखंडित सार, मुनिचित से उजरे।
ले चन्द्रकिरणउनहार, चरणनि पुज धं रे।। मैं बुद्धिऋाद्धि०।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसवऋषीश्वरेभ्यो अक्षत निर्वपामीनि स्वाहा।

सुमन सुमन मनहार, अधिक सुगंध भरे।
मन्मथके नाशनकार, ऋषिवर पाद हरे।। मैं बुद्धिऋद्धि०।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध मनोज्ञ, मोदक थाल भरे।
ऋषिवर चरण चढ़ाय, रोगक्षुधादि हरे।। मैं बुद्धि० ।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वांत हरण शुभ ज्योति, दीपककी भारी।
ले ज्ञान उद्योतन कार, कणमय भरि थारी।। मैं बुद्धि० ।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो दीप निर्वपामीति स्वाहा।

या धूप दशांग बणाय हुताशनपें डारी।
भरि स्वर्ण धूपायन मांहि जरत सब करमारी।। मैं बुद्धि०।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल पूग बदाम, खारिक मनहारी।
मैं मुक्ति मिलनके काज, चढावों भरि थारी ।। मैं बुद्धि०।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधरसर्वऋषीश्वरेभ्यो फल निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्रव्य अष्ट भरि थार, बहुविधि तूर बजै।
करि गीत नृत्य उत्साह, हर्षित अर्घं सजै।।
श्री ऋषिवर चरण चढ़ाय फल यह मागत हों।
मम बुद्धिऋद्धि द्यो सार जोरि कर याचत हों।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक पूजा।

दोहा

अष्टादश बुधिऋद्धिके, धारक जे ऋषिराज।
तिन्हें अर्घ प्रत्येक करि, यजों बुद्धिके काज।।

ॐ ह्री अष्टादशबुद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योअर्घ निर्व०

चाल टप्पा

सकल द्रव्य पर्याय गुणनि करि समय एक लखवाई।
लोक अलोक चराचर जामें हस्तरेख समझाई।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, केवल बुद्धि ऋद्धि धार मुनीश्वर।

ॐ ह्री केवलबुद्धिऋद्धिधारकसर्वऋषीश्वरेभ्योअर्घ निर्व०

ढाई द्वीपके सब जीवनकी मनकी बात लखाई
युगपत् एक कालमें जानें मनपयर्य ऋद्धि पाई।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, मनपर्यय ऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्री मन पर्ययबुद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

अवि भागी पुद्गल परमाणू सो प्रत्यक्ष लखाई।
अवधिबुद्धि ऋद्धि धार मुनीश्वर चरण कमल सिरनाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई अवधि बुद्धि ऋद्धिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्रीं अवधिबुद्धिऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्योअर्घं नि०

कोष्ठ मांहि जो वस्तु भरी है मन वांछित कढवाई।
प्रश्न करत ही शब्द-अर्थमय शास्त्र सर्व रचवाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई कोष्ठबुद्धि ऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घं नि०

बीज बोय ज्यों भूमि मांहि कृषि बहुत धान्य निपजाई।
बीज एक त्यों धारि चित्त ऋषि सर्वग्रंथ सुनवाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, बीज बुद्धि ऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्योअर्घं नि०

चक्रवर्त्ति की सब सेनाके जीव अजीव रू तांई।
युगपत् शब्द सुणै जो श्रवणन सब धारण हो जाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, संभिन्नश्रोतृऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्रीं संभिन्न श्रोत्रर्द्धिधारक मुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

सर्व ग्रंथको एक पाद लखि दे सब ग्रंथ सुनाई।
पादानुसारिणी ऋद्धि यही है याहिं धरें मुनिराई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, पादानुसारिणी ऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी ऋद्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

नव योजनतें बहुत अधिकको स्पर्शन बल अधिकाई।
दूर स्पर्श ऋधि धार ऋषीश्वर चरण कमल लवलाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दूरस्पर्शऋधि धार ऋषीश्वर०

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शनर्द्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

नव योजनतें अधिक स्वाद बल रसनेंद्रियमें थाई।
दूरास्वादन ऋधि धार ऋषीश्वर चरणां सीस नमाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दूरास्वाद ऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्रीं दूरास्वादनर्द्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

नव योजनतें बहु अधिककी गंध नासिका जाई।
दूरगंध ऋधि धार मुनीश्वर चरणां शीस नमाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दूरगंध ऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्री दूरगधर्द्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

सहस सैंतालल्व्द्विसत तरेसठि योजनते अधिकाई।
चक्षिंद्रिय बल अधिक अनूपम दूरदृष्टि ऋधि पाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दूरावलोक ऋधिधार मुनीश्वर०

ॐ ह्री दूरावलोकनर्द्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

द्वादश योजन बहु अधिकको शब्द श्रवण बल पाई।
दूर श्रवण ऋधिधर ऋषिवर के चरण-कमल सिरनाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, दूरश्रवण ऋधिधार ऋषीश्वर पूजो०

ॐ ह्री दूरश्रवणर्द्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्योअर्घ नि०

चौदह पूरब धारण होवे पत प्रभाव मुनीराई।
चौदह पूरब धारण समरथ तिन मन वच सिरनाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, चौदह पूरब धारि मुनीश्वर०

ॐ ह्री चतुर्दशपूर्वधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्योअर्घ नि०

अतंरीक्ष अरू भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण तांई।
चिह्न स्वप्न अष्टांग- निमित लखि होनहार बतलाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, अष्टांग-निमित ऋधिधार ऋषीश्वर०

ॐ ह्री अष्टागनिमित्तबुद्धि ऋद्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

बिना पढे ही जीवादिक के सकल भेद बतलाई।
चौदह पूरब ज्ञान धार सम भेद देय समझाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, प्रज्ञाश्रवण ऋधिधार, मुनीश्वर०

ॐ ह्री प्रज्ञाश्रवणार्द्धिधारक सर्व मनश्वरेभ्योअर्घ नि०

पर पदार्थतें आप भिन्न है जीव यहै लखवाई।
चौदह पूरब ज्ञान सम भेद देय समभाई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, प्रज्ञाश्रवण ऋधिधार, मुनीश्वर

ॐ ह्री प्रत्येक बुद्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घ नि०

परवादी जब वाद करनकों ऋषिवर सम्मुख आई।
स्याद्वाद करि तिन वच खंडन विजय-ध्वजा फहराई।।
मुनीश्वर पूजो हो भाई, वादित्वऋद्धिधर धीर मुनीश्वर०

ॐ ह्री वादित्वऋद्धिधारक सर्व मनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

केवल ऋधि को आदि लेय बुधि ऋधि अष्टदश,
धारक तिनके नग्न दिगंबर साधु सर्व दिश।
समुचय अर्घं चढ़ाय पूज हों सर्वदा।
सर्व विघ्न करि नाश बुद्धि द्यो शर्मदा।।

ॐ ह्रीं केवलबुद्धिऋद्धयादिवादित्वर्द्धिपर्यताष्टादशबुद्धिऋद्धिधारकसर्वर्षीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सर्व संघ मंगल करन, बुद्धि ऋद्धि धर धीर।
मुनी तास थुति करत ही, बुद्धि शुद्ध हो वीर।।
प्रथम अंग आचार जु जानो, मुनि आचरण तासमें मानों।
सहस अठारह पद लखि याके, परकों त्यागि आप रंग राचे।।
सूत्रकृतांग अंग है दूजो, सूत्र अर्थ सामान्य जु बूजो।
पद छत्तीस हजार जु यांके, पढ़े मुनी सब अवयव तांके।।
स्थान अंग तीजो हे यामें, सम स्थाननकी संख्या जामें।
सहस बयाल पदनमें ये हैं, पढ़े मुनी तिम नमन करें हैं।।
समवाय अंग चौथो है यामें, सदृश पदारथ वरणया जामें।
पद इक लख चउसठि हज्जारं, पढ़े मुनी उतरें भव पारं।।
पंचम अंग व्याख्याप्रज्ञप्ती, तामें सप्त भंग विज्ञप्ती।
गणधर प्रश्न कियो जो वरनन, पद लख दो अठबीस सहस्त्रन।।
ज्ञानृकथा अंग षष्ठम जानो, त्रिषष्टि पुरूष का धर्म कथानो।
पांच लाख अरू छप्पन हजांर, पद सब पढ़े मुनीश्वर सारं।।
सप्तम अंग उपासकाध्ययनं, श्रावक धर्म तणों सब अयंन।
पद ग्यारह लख सतर हजारं, सो सब पढ़ें मुनी अविकारं।।
अष्टम अंग अंतकृत दश है, तामें अंतकृत्केवलि जस है।
तेविस लख अढ़तीस हजांर, पाद पढ़ें मुनिवर भवतारं।।
सह उपसर्ग अनुत्तर जननं, अनुतरपाददशांगं नवमं।
बाणव लाख चवचाल हजांर. पाद पढें मनिवर सखकारं।।

दशम अंग है प्रश्नव्याकरणं, होनहार सब सुख दुख निरणं।
लाख तवेणव सोल हजार, पाद पढे मुनिवर जगतारं।।
विपाकसूत्र एकादश अग कर्मविपाक रसादिक भग।
पद इक कोड चौरासी लक्ष, ताको पढि मनि भये विचक्ष।।
अंग द्वादशमो दृष्टीवाद, पच भेद ताके सब पाद।
शत अठ कोडि रू अडसठ लक्ष, छपन हजार पाच सब दक्ष।।
प्रथम भेद परिकर्मज नाम, पन्न पन्नप्ति गथ अभिराम।
चद्र सूर्य जबद्वीप सव्यश्ती दीपसमद व्याख्यापन्नप्ती।।
इनके पद इक कोड इक्यासी लाख हजार पाच है खासी।
तिनमे सब इनको है रूपा ये सब पढे मनीश्वर भपा।।
दूजो भेद सूत्र मरजादी त्रिशत तरेसठि भेद कवादी।
लाख तरेसठि पद है याके पढे ताहि बदो पद जाके।।
प्रथमानुयोग तीजोबर भेद, त्रिसठि शलाका परूष निवेद।
पांच सहस्त्र पद याके जानो पाप पणय फल सर्व पिछानो।।
चौथो भेद पूर्वगत जामे प्रव चौदह गर्भित तामे।
कोड़ि पिच्याणव लक्ष पचास, अधिक पाच पद जानो तास।।
श्रुत संपति सब इनके माही, धारण कर सब श्रुत अवगाही।
जो मुनीश सब पूरव धारी तिनकी महिमा अगम अपारी।।
पंच भेद चूलिका जासा, जल थल माया रूप अकाशा।
पद दशकोड़ि रूलख उणचासा, षट् चालीस सहस सब तासा।।
इकसौ बारह कोड़ि पदावन, लाख तियासी सहस अठावन।
पांच अधिक सब पद अंग जिनके मुनिवर पढे नमो पद तिनके।।
इक्कावनकोड़िरूलाखआठतित,सहसचौरासीषट्शतपरिमित
साढ़ा इकविस श्लोक अनुष्ट, एक जु पदके भये स्पस्टं।।
द्वादशंगमय रचना सारी, बुद्धि ऋद्धिमें गर्भित भारी।
तप प्रभाव ऐसी ऋधि, तिन पद ढोक त्रिकाल हमारी।।

घत्ता—

यह जयमाला परम रसाला, चद्दिऋद्धि धर गणमाला।

मुनिगण गुणमाला, हर जंजाला, बुद्धि विशाला करि माला।।
ॐ ह्री शुद्धबुद्धचर्द्धिदायकसर्वऋषीश्वरेभ्यो पूर्णाअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–

बुद्धि ऋद्धिधर मुनितणी पूज करै जु सदीव।
बुद्धि प्रचुर ताकै हृदय, परगट होय अतीव।।

इत्याशीर्वाद (इति प्रथम कोष्ठ पूजा)

अथ द्वितीयकोष्ठे चारणर्द्धिधारक मुनिवर पूजा।

अडिल्ल–

क्रिया चारणी ऋद्धि भेद नव है सही।
तिनके धारक सर्व मुनीश्वर है मही।।
आह्वानन, स्थापन, मम सन्निहित करों।
मन वच तन करि शुद्ध त्रय उच्चरों।।

ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वर्षीश्वरसमूह1अत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वर्षीश्वरसमूह।अत्र तिष्ठ ठ तिष्ठ (स्थापनम्)।
ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वर्षीश्वरसमूह। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अष्टक– चाल गोक्षेलणी, भग तथा होली।

रत्न जडित भृंग भरि गंग-जल लायोजी।
जन्म मरण मेटिबेकों भावसों चढ़ायोजी।।
चरणऋद्धिके धारी मुनीश्वर पूज करूंजी।
पूजकरूं पूजकरूं पूजकरूंजी।।

ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जन्मजशमृत्युरोगविनाश नाय जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंद–गंध को घसाय कुंकुमा मिलाई जी।
भवातापके मेटिबे को चरण चढ़ाई जी।।चारणऋद्धि०।।

ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो चन्दनम् नि०।।२।।

चन्द्र–किरणके समान श्वेत तंदुलौघ जी।
मुनींद्र चन्द्र चरण चोढें होय सुख बोध जी।।चारणऋद्धि०।।

ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वमनीस्वरेभ्योअक्षतान् नि०।।३।।
पुष्प गंधते मनोज्ञ घ्राण चक्षु हारी जी।
मुनींद्र-चंद्र चरण पूजे होय मदन छारी जी।। चारणऋद्धि०।।
ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वमनीश्वरेभ्यो पुष्प नि०।।४।।
घेवरा सुफेणिका मोदकादि चंद्रिका जी
रोग क्षुधा नष्ट होय चहोढे पद मुनींद्रका जी।। चारण ऋद्धि०।।
ॐ ह्री चारण र्द्धिधारक सर्वमनीश्वरेभ्यो नैवध नि० ।।५।।
दीपको उद्योत होत ध्वात होय ना कदा जी।
मनींद्र-चर्ण-ज्योति किये मोह-ध्वात ह्वै बिदा जी।।चारणऋद्धि०।।
ॐ ह्री चरणा र्द्धिधारक सर्व मुनीश्वरेभ्यो दीप नि० ।।६।।
अगर तगर चूर चदन गंधमें मिलाया जी।
अग्नि सग खेय धूप कर्म सब जराया जी।। चारणऋद्धि।।
ॐ ह्री चारणर्द्धिधरकसर्वमुनीश्वरेभ्यो धूप नि०।।७।।
सुष्ठु मिष्ट श्रीफलादि हिरणय थाल भरो जी।
श्री मुनींद्र चरण चहोड़ि मुक्ति अंगना वरों जी।।चरणऋद्धि०।।
ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो फल नि०।।८।।
जलादि द्रव्य लेय हेम थालमें भरें जी।
मुनींद्र-चरण चहोड़ि सर्व ऐनको हरें जी।।चारणऋद्धि।।७।।
ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ न०।।९।।

अथ प्रत्येक पूजा।

सोरठा—

क्रियाचारण नव भेद, ऋद्धि धार जे हैं मुनी।
जुदे जुदे निरखेद, पूजो अर्ध चढ़ायके।।

ॐ ह्री नवभेदक्रियाचारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०।

चालछद—

जल ऊपर थलवत् चालै, जल-जन्तु एक नहिं हालै।
चल चारण मुनियर जे हैं, तिन पद पूजें शिव ले हैं।।

ॐ ह्री जलचारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति०

धरती से अंगुल च्यारै, ऊंचो तिनको सुविहारै ।
क्षण में बहु योजन जै हैं, जंघाचारण पूजैं हैं।।

ॐ ह्री जघाचारणार्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

मकड़ी-तंतूपर चालै, सो तंतु टूटे नहिं हालै ।
ते तंतूचारण ऋधिधर, तिन पूजेंतें हो शिव-वर।।

ॐ ह्री ततूचारणक्रियार्द्धिप्राप्तसर्वमु..श्वरेभ्योअर्घं नि०

पुष्पन परि गमन कराही, पुष्प-जीवन बाधा नांही ।
मुनि चारण-पुष्प वही है, तिन पूजें मुक्ति लही है।।

ॐ ह्री पुष्पचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

पत्रन परि गमन करंता, पत्र-जीव बाध नहि रंचा ।
यह पत्रचारण मुनि पूजें, तिनतें सब पातक धूजें।।

ॐ ह्री पत्राचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

बीजन परि मुनि विचराहीं, बीज-जीवसु बाधा नाहीं
जे चारण बीज-ऋषीश्वर, तिन पूजें हैं अवनीश्वर।।

ॐ ह्री बीजचारणद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

श्रेणीवत् गमन करंता, सब जीवजाति रंक्षता ।
श्रेणी चारण ते कहिए, पूजैं मनवांछित पइये।।

ॐ ह्री श्रेणीचारणर्द्धिप्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

जे अग्नि-शिखापर चालै, सो अग्नि शिखा नहि हालै ।
ते अग्निचारण मुनि पूजै, तिनको शिव-मारग सूझै।।

ॐ ह्री अग्नि चरणर्द्धि प्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्यो अर्घं नि०

पालै आज्ञाजिनशासन, कायोत्सर्गादिक आसन-
धरि गमन करें नभ मांही, नभचारण पूज रहीं।।

ॐ ह्री नभश्चारणर्द्धिप्राप्त सर्व मुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

सोरठा-

जलचारणतें आदि, भेद क्रिया ऋधिके सकल।
धारक तिन ऋषिपाद, मन वच तन पूजों सदा।।

ॐ ह्री नवभेदक्रियाचारणर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

जयमाला

अडिल्ल-

चारण ऋधिके धार मुनीश भए तिन्हें
मन वच तन करि शुद्ध नमन करिहों जिन्हें
जीवभेद षट् काय अभय सबको दियो।
तिनके तनतें बिना यतन ही सिध भयो।।१।।

पृथ्वी अरु अप् तेजकी सब जब जाणी हो,
वायु कायकी जाति, मुनिवरजी।
नित्य रु इतर निगोद की सब जाणी हो,।
सात सात लख जाति, मुनिवरजी।।।२।

वनस्पतीकी लाख दस सब जाणी हो,
विकलत्रयकी दो दो लाख, मुनिवरजी।
पंचेंद्रिय तिर्यंचकी सब जाणी हो,
देव नारकी चव चव लाख, मुनिवरजी।।३।।

चौदह लाख मनुष्य की सब जाणी हो,
ये योनि चौरासी लाख, मुनिवरजी।
इकसौ साढ़ा निन्याणवै सब जाणी हो,
लाख कोड़िकुल भाख, मुनिवरजी।।४।।

इंद्रिय पंच जु च्यारगति सब जाणी हो,
षट् काय पंद्रह योग, मुनिवरजी।

वेद तीन द्रव्य भावतें सब जाणया हो,
कषाय पचीस को थोक, मुनिवरजी।।५।।
ज्ञान आठ में भेद दो वह जाएया हो,
सम्यक् अरु कुज्ञान, मुनिवरजी।
संयम सातरु दर्श चउ सब जाएया हो,
लेश्या षट् पहिचान, मुनिवरजी।।६।।
भव्य दोय सम्यक्त्व छह जाणी हो,
संज्ञी उभय बखानि, मुनिवरजी।
अहारक युग सब जीवके सो जाएया हो,
भार्गण चौदह जाणि, मुनिवरजी।।७।।
गुणस्थान चउदस सकल सब जाएया हो,
चौदह जीवसमास, मुनिवरजी।
पर्यापत षट् भेद युत सब जाएया हो,
प्राण जु दश है तास, मुनिवरजी।।८।।
संज्ञा चार जु जीवकै सब जाणी हो,
है बारह उपयोग मुनिवरजी।
बीस प्ररूपणातें सकल श्री ऋषिवरजी,
जाएयो जीव प्रयोग मुनिवरजी।।९।।
इनतें जहँ तहँ जीव हैं श्रीमुनिवरजी,
त्रस थावर दो भांति जाएया हो।
सूक्ष्म वादर भेद युत सब जाणी हो,
संसारकी जाति, मुनिवरजी।।१०।।
सबै जानि आगम गमन सब करतजी,
सम्यक् धर निज भाव, मुनिवरजी
पालै करुणा सबनकी श्री मुनिवरजी,
जीव जाति करि चाव, मुनिवरजी।।११।।

चारण ऋाधक हात ह। करुणा प्रतिपालै,
पृथ्वी धरत न पांव, मुनिवरजी।
तातें जिनकी देहतें श्री मुनिवरके,
रंच न हिंसा भाव, मुनिवरजी।।१२।।

चारण मुनिके गुणनिको धी तुछ धारी हो,
कोलों करै कहान, मुनिवरजी।
स जीभतें इन्द्र भी श्रीमुनिवर को
नहिं करसकै बखान, मुनिवरजी।।१३।।

अब मेरी यह विनती श्रीमुनिवरजी,
सुन लीज्यो ऋषिराज, सारीजी।
जोलों शिव पाऊं नहीं मुनिवरजी,
तोतों दरश दिखाय, यतिवरजी।।१४।।

सोरठा-

जो यह पढ़ै त्रिकाल, गुणमाला ऋषिराजकी
हो वह भवदधि पार, मुनिस्वरूप को ध्यान करि।।१५।।

ॐ ह्री चारणर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय—

चारण मुनिकी पूज करैं इहि विधि भवि प्राणी ।
सकल विघनको नाश होय मंगल सुनिधानी।।
ऋद्धि वृद्धि बहु होय तासके गृहके मांही ।
पुत्र पौत्र सुख बढ़ै और परियण सुखदाई।।
मन वचन काय पूजा करत, पाप सकलकों नाश फिर ।
भरत पुणय भणडार बहु, मुनिप्रसादतें तास घर।।

(इत्याशीर्वाद) इतिद्वितीय कोष्ठ पूजा।

अथ तृतीयकोष्ठे विक्रियर्द्धिधर मुनि पूजा ।

स्थापना चाल—चौपाई रूपक

सब जीवन के सुखके कंदा, विक्रि ऋधिके धार मुनिंदा ।
थापों पूजन काज सदीवा, मन वांछित फल दाय अतीवा।।

ॐ ह्री विक्रियार्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वर! अत्र सवौषट् !

ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (स्थापनम्)।

ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनम्)।

अथाष्टक

चाल—आवत नीडो काल वरज्यो ना ह्यो।

मुनीश्वर पूजत हों, मैं विक्रयऋधिके धार मुनीश्वर पूजत हों ।।
कमल सुवासित परिमल गंधित गंगादिक जल सार।
निर्गत रत्नभृडगं त्रय धारा जन्म जरा मृति हार।। मुनी० ।।

ॐ ह्री विक्रियद्धिप्राप्तसर्वऋषीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन घसि केसर और मिला घनसार।
भव संताप हरन के कारण अरचों बारम्बार ।।मुनी०।।

कमल शालिके अखित अखण्डित मुकता सम अविकार ।
अखयअखण्डितसुखकारणभरिकनकरतनमयथार।।मुनी०।।

११ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्त सर्वऋषीखरेभ्यो चन्दन नि०

अमर तरू अरू कल्प बेलिके पुष्प सुगन्ध अपार ।
मनमथभंजनकारनअरचोंभरकंचनमयशुभथार ।।मुनी०।।

ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्त मर्वऋषीखरेभ्यो पुष्प नि०

पिंड सुधामय मोदक उज्ज्वल दिव्य सुगन्ध रसाल।
स्वर्णथाल भरि चरण चढ़ाये होत क्षुधा निरवार ।।मुनी०।।

ॐ ह्रीं विक्रियर्द्धिप्राप्त सर्वऋषीश्वरेभ्यो नैवेद्य नि०

जगमग जगमग ज्योति करत है दीप शिखा तमहार।
मोह विध्वंसक ज्ञान उद्योतक आर्तिक चरण उतार ।।मुनी०।।

ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्त सर्वऋषीश्वरेभ्यो दीप नि०

कृष्णागरू मलयागिरि चन्दन–धूप अग्नि संग जार।
कर्म–धूम्र उड़ि दस दिशि धावे भ्रमर करत गुँजार ।।मुनी०।।

ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्त सर्वऋषीश्वरेभ्यो धूप नि०

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी एला-फल सहकार।
सुवरण थाल भराय यजत ही होय मुकित-भरतार ।।मुनी०।।

ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्त सर्वऋषीश्वरेभ्यो फल नि०

जल गन्धाक्षत पुष्प जु नेवज दीप धूप फल सार।
स्वर्णथाल भरि अर्घ चढ़ावों करि जय जय जयकार ।।मुनी०।।

ॐ ह्री विक्रियर्द्धिप्राप्त सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घं नि०

प्रत्येक पूजा।

दोहा।

विक्रय ऋधिके एकदस, भेद धार ऋषिराज।
भिन्न भिन्न तिन अर्घं दे, पूजों शिव हित काज।।

ॐ ह्री एकादशभेदसहितविक्रयर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

चाल–अठाई पूजनक की।

मुनीश्वर पूजों अर्घ चढाई, जो विक्रयऋधि शुभ पाई।
कमल-तंतु पर जो जो निवसै निराबाध तिष्ठाई ।
अणु समान काया हो जावे यह अणिमाऋधि पाई।। मुनी० ।

ॐ ह्री अणिमर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रवति–संपति निपजावै, योजन लाख उँचाई।
निज शरीरकी क्षणमें करत हैं यह महिमा ऋधि गाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री महिमार्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

काय बड़ी दीखत सब जनकों अर्कतूल हलकाई।
ऐसी ऋधि उपजत मुनिवरको सो लघिमा जु कहाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री लघिहमर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

शरीर सूक्ष्म सब जनकों दीखै, इन्द्रादिक मिल आई।
जिनतें हलै नहिं कबहूँ यह गरिमाऋधि पाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री गरिमार्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

पृथ्वी ऊपर तिष्ठै मुनिवर,मेरु–शिखर स्पर्शाई।
चन्द्र सूर्य ग्रह अंगुली धारें, प्राप्ति ऋद्धि कर भाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री प्राप्तदिर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

अनेक प्रकार शरीर बनावें, पृथ्वी में धसि जाई।
भूमि मांहि डुबकी जलवत् ले, ऋद्धि प्राकाम्य कहाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री प्राकाम्यर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तपबल मुनिवरके सब होवे तीन लोक ठकुराई।
इन्द्रादिक सब शीस नमावें ईशित्व ऋधि उपजाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री ईशित्वर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक जिनके दर्शनतें देखत बशि हो जाई।
सबके बल्लभ गुणके दाता ये वशित्व ऋधि पाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री वशित्वर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत भेद निकसि वे जावें छिद्र न हो ता मांही।
रूकें नहीं काहूसे मुनिवर अप्रतिघात ऋधि पाही।।मुनी०।।

ॐ ह्री अप्रतिघातर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

देखत सबके प्रछन्न होवें काहूके दृष्टि न आई।
अन्तर्धानऋद्धि है ये ही तपबल पर प्रकटाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री अन्तर्धानर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

मनवांछित जो रूप बनावें जो होवे मनमांही।
कामरूपिणी ऋद्धि यही है तपबल यह उपजाई।।मुनी०।।

ॐ ह्री कामरूपिणयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०।

सोरठा-

तप मात्म्यतें येह, विक्रियऋधि उपजी जिन्हें।
मन वांछित फल लेह, पूजै ध्यावै जो तिन्हें।।

ॐ ह्री अ णिमादिकामरूपिणीपर्यन्तविक्रियर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला।

गीता छद।

वज्रधर अरू चक्रधर अरू धरणिधर विद्याधरा।
तिरशूलधर अरू काम-हलधर सीस चरणनि तल धरा।।
ऐसे ऋषीश्वर ऋद्धि विक्रियधरी तिनके पद-कमल।
पूजों सदा मन वचन तन करि हरों मेरे कर्म-मल।।

ढाल त्रिभुवनगुरूकी

संसार असाराजी, मिथ्यात्व अंधाराजी।
यामें दुख भारा, चतुर्गतिके विषेंजी।।२।।
नरकनिके मांहीजी, कहुँ साता नाहींजी।
सागर बहु तांई, दुख भुगत्या घणाजी।।३।।
तिर्यंच गति धारीजी, पशुकाया सारीजी।
तामें दुख भारी, भूख तृषा तणोजी।।४।।
कोई लादै बांधैजी, धरि जूड़ा कांधेजी।

बहु मारै अरू रांधै, निर्दय नरे घणाजी।।५।।

मानुष भव मांहीजी, सुख है छिन नांहीजी।
सबकूं दुखदाई, गर्भज वेदनाजी।।६।।

बालक वय मांहीजी, कछु ज्ञानहु नांहीजी।
पाई फिर तरूणाई, विषयचिंता घणीजी।।७।।

बहु इष्टवियोगाजी, अरू अशुभ संयोगाजी।
तामें दुख भुगते, क्षण समता नांहीजी।।८।।

तीजो पन आयोजी, बहु रोग सतायोजी।
इह विध दुख पायो, मानुषभवमें महीजी।।९।।

सुरपदवी मांहीजी, माला मुरझाईजी।
चिन्ता दुखदाई, भोगी मरणकीजी।।१०।।

ईं विधि संसारजी, ताको नहि पाराजी।
यह जाण असारा, त्यागि मुनी भएजी।।११।।

गृह-भोग विनश्वरजी, जाणै योगीश्वरजी।
पद त्याग अवनीश्वर, लीनी बनमहीजी।।१२।।

तप बहुविध कीन्होजी, निज आतम चीन्होजी।
सकलागमभीनो, मुनीपद जे धरेंजी।।१३।।

बहु ऋद्धिको धारेंजी, नहि कारिज सारेंजी।
आतमगुण पालें, लगें निज काजकोजी।।१४।।

विक्रिय ऋधिधारीजी, मुनिवर अविकारीजी।
तिनके गुण भारी, कहांलों वरणऊंजी।।१५।।

ऐसे मुनिवरकोजी, कब ह्वै हम औसरजी।
धनि धनि वह द्यौसर, मुनि मोकों मिलेंजी।।१६।।

तिनके पदकी रजजी, धरि हैं शुभ शीर्षजजी।
तबही हम कारज, बहुविधि के सरेंजी।।१७।।

हम शरण तिहारीजी, भव भव सुखकारीजी।
तातें हम धारी भक्ति हिरदा विषेंजी।।१८।।

दोहा- -

विक्रियऋद्धिधर मुनिनकी, कठ धरै गुणमाल।
मुनिस्वरूपको ध्यायकै, होवै बुद्धिविशाल।।१९।।

ॐ ह्वी विक्रियर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा--

होय विघन सब नाश, मगल नितप्रति हो सदा ।
होय ऋद्धि परकाश, पूजन जो याविधि करै।।

इत्याशीर्वाद । (इति तृतीय कोष्ठ पूजा)

अथ चतुर्थ कोष्ठस्थतपोतिशयऋद्धिप्राप्त ऋषीश्वर पूजा।

स्थापना। अडिल्ल छद।

तपऋद्धि धारक मुनी जहां तिष्ठै सही,
मरी आदि सब रोग तहां कछु हो नहीं।
जातिविरोधी जीव बैर सबही तजै।
शांति प्रवर्तन काज थापि हमहू यजैं।।

ॐ ह्वी तपोतिशयर्द्धिसहितसर्वऋषीश्वरसमूह। अत्रअवतर अवतर । अवौषट्।। (आह्वाननम्)

ॐ ह्वी तपोतिशयर्द्धिसहितसर्वमुनीश्वरसमूह। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ। (स्थापनम्)

ॐ ह्वी तपोतिशयर्द्धिसहितसर्वमुनीश्वरसमूह। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (सन्निधापनम्)।

अष्टक। त्रिभगी छद।

निर्मल शुभ नीरं, गंध गहीरं, प्रासुक सीरं ले आया ।
भरि कंचनझारी, धार उतारी, जन्म मृतुहारी, पद ध्याया।।

तपऋद्धिके स्वामी, शिवपद-गामी, शान्ति-करामी तुम ध्यावें ।
करि विघन विनाशं मंगलभासं, हरि त्रासं गुण गावें।।

ॐ ह्री तपोतिशयसहितसर्वमुनीश्वरेभ्यो जल निर्वपामीति०

मलय संुचदन, कदली नंदन, भव-तप भंजनको लाया ।
तुम चरण चढामी, शिवसुखगामी, गुणधामी पूजन आया।।
।। तप० ।।

ॐ ह्री तपोतिशयर्द्धिप्राप्तमुनीश्वरेभ्यो चदन नि०

सित सालि अंखडित, सौरभ मंडित, चन्द्र-किरण से अनियारी ।
भूपनको मोसर, हम इह औसर, पूज करों शिव-पदकारी।।
।। तप० ।।

ॐ ह्रीं तपोतिशर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअज्ञतान् नि०

गुञ्जत बहु भृंगं, पुष्पसुगंधं, कल्पवृक्ष के शुभ ल्यायो ।
हरि वाण मनोजं, पद अंभोजं, पूजन कारन में आयो।।
।। तप० ।।

ॐ ह्री तपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्य पुष्प नि०

घेवर बावर, फेणी मोदक, चंद्रक सुवरण थाल भरे ।
रसनाके रंजन, रसके पूरे, पूजत रोग क्षुधादि हरे।।
।। तप०।।

ॐ ह्री तपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो नैवेद्य नि०

कनक रकाबी मे मणिदीपक, ललित ज्योति करि अति प्यारे ।
मोह-तिमिर विध्वंसन कारन, चरण-कमल पर हम वारे।।
।। तप०।।

ॐ ह्री तपोनिशर्याद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो दीप नि०

अगर तगर मलयागिरि चदन, केलीनदन धूप करी ।
स्वर्ण धुपायन संग हुताशन, खेवत भाजै कर्म-अरी।।
।। तप० ।।

ॐ ह्री तपोनिशर्याद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो धूप नि०

सुष्ठु मिष्ठ बादाम जायफल दाख पूग श्रीफल भारी ।
एला आदि फलनितें पूजों मुक्ति मिलावन भरि थारी।।
।। तप० ।।

ॐ ह्री तपोनिशर्याद्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्या फल नि०

स्वच्छ नीर मलियागिरि चदन अखित पुष्प नेवज भारी ।
दीप धूप फल स्वर्णथाल भरि अर्घ चढावो सुखकारी।।
।। तप० ।।

ॐ ह्री तपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

प्रत्येक पूजा।

दोहा --

तपतऋद्धिधर तपत नित, टरत, उपद्रव-वृन्द ।
षट् ऋतु तरूवर फल फलै, अरचत सकल नारिन्द।।

ॐ ह्री तपोतिशयऋर्द्धिसहितेभ्य सर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

(चाल-आओ जी आओ सब मिल जिन चैन्यालय चाला)

एक वास करि घटै नहीं फिर अधिक अधिक विस्तारै।
येही जी उग्रतपोऋद्धि-धारक मुनि भव तारै,राज।।
आओजी आओ सब मिल मुनिवर पूजन चालां।
मुनिजीके दर्शन-जलतें कर्म-कलंक पखालां, राज।।आओ०।।

ॐ ह्री उग्रतपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

बहुत वास करि खीण भयो तन अधिक दीप्तता धारै।
ये ही जी दीप्ततपोऋधि मुख सुगध विस्तारै, राज।।आओ०।।

ॐ ह्री दीप्ततपोतिशयर्द्धिप्राप्तमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

अहार करत नीहार होत नहि शुष्क भये तनमांही।
ये ही जी तप्तपो ऋधि धारक मुनी अरचाही, राज।। आओ०।।

ॐ ह्री तप्ततपो तिशयर्द्धि प्राप्त मनीश्वरेभ्यो अर्घ नि०

मति श्रुत अवधि ज्ञान कर सूक्षम त्रसनाडीके माही।
जानैं सबहु भाव जीवके महातपोऋधि याही, राज।।आओ०।।

ॐ ह्री महातपोतिशयर्द्धिप्राप्तमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

रोग व्यथा उपजत मुनिजन तो उपवासादि कराई।
चिगैं नहीं तप ध्यान सयमतैं घोर तपोऋधि याही, राज।।आओ०।।

ॐ ह्री घोरतपोतिशयर्द्धिप्राप्तमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

घोर पराक्रमऋधिके धारक तिनको दुष्ट सतावै।
ता कारणतें सर्व देशमें मरी आदि भय आवै, राज।।आओ०।।

ॐ ह्री घोरपराक्रमतपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

गुण अघोर ब्रह्मचर्य धार मुनि तिष्ठत जहां सुखदाई।
मरी आदि सब रोग मिटत तहँ ऋद्धि वृद्धि अधिकाई, राज।।
।।आओ०।।

ॐ ह्री अघोरब्रहमचर्यतपोतिशयर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०।

सोरठा——

उग्रतपादिकऋद्धि ब्रह्मचर्यलों सात सब।
धारक मुनी समृद्धि, पूजों अर्घ चढ़ायकै।।

ॐ ह्री उग्रतपोतिशयाद्यघोरब्रह्मचर्यान्तमप्ततपोतिशयर्द्धिप्राप्त-सर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

जयमाला

दोहा

तपोऋद्धि धारक मुनी, भए सकल गुणपाल।
तिनकी थुति मैं करतहों, गूंथि गुणनिकी माल।।

चाल—आगमकी।

कर्म निर्जरा करनको संवर करि शिव-सुखदाई जी।
बाह्य अभ्यंतर तप करै द्वादश विधि हों हरषाई जी।।

तपऋधि धारक जे मुनी, बंदो तिन शीस नवाई जी।।

षष्ठम अष्ठम आदि दे उपवास करै षट् मासा जी।
अनशन तप इह विधि धरै छांडे सब तनकी आशा जी।।तप०।।

बत्तीस ग्राम भोजन-तणौं तिनमें घटि घटि लेय आहारो जी।
ऊनोदर तपको करै मम अशुभ कर्म निरवारो जी।।तप०।।

वृत्ति अटपटी धारिकै भोजन करि हैं अविकारों जी।
व्रतपरिसंख्या तप तणी विधि धारि करै विस्तारो जी।।तप०।।

षट्‌रस-मय-भोजन विषें रस त्यागि लेत आहारो जी।
रस-परित्याग जु तप करै मौकूं भव-सागरतें त्यारो जी।।तप०।।

ग्राम पशु जन नहिं तहां पर्वत वन नदी किनारो जी।
शून्य गुफा में जे रहें विविक्तशय्यासन धारो जी।।तप०।।

ग्रीष्मऋतु पर्वत-शिखरपै वर्षामें तरूतल ध्यानो जी।
शीत नदी-तट चोहटै, तप कायकलेश महानो जी।।तप०।।

बाहिज षट् विधि तप यही, सब कर्म निर्जरा थानो जी।
आभ्यंतर तप भेदको धारत पद ह्वै निरवाणो जी।।तप०।।

प्रायश्चित दश भेदतें, सोधै संयमको अतिचारो जी।
रात्रिदिवस में दोष जे लागे तिनको निरवारो जी।।तप०।।

दर्शन ज्ञान चरित्रको अरू तपको विनय करावै जी।
इनके धारकको करै सो विनयाचार कहावै जी।।तप०।।

दश प्रकार के मुनिनकी धरि भक्ति हृदय के मांही जी।
टहल करै मृति रोगमें वैयावृत तप सुखदाई जी।।तप०।।

वाचन प्रच्छन चिंतवन अरू आज्ञा सर्वज्ञ की धारै जी।
धर्मोपदेश विधि पंच ये तप स्वाध्याय संभालै जी।।तप०।।

बाह्य अभ्यंतर उपधि को त्यागि करयो संमभावो जी।
तप व्युत्सर्ग महान यह तन ममत्त तज्यो करि चाहो जी।।तप०।।

आर्त रौद्र दुर्ध्यान हैं तिनको मन वच तन त्यागै जी।
धर्म शुक्ल शुभ ध्यान द्वय ध्यावै तिनको अनुरागै जी।।तप०।।

ऐसे द्वादस तप तपै तिनके हो केवलज्ञानो जी।
सकल कर्मको नाशिकै पद पावै निर्वाणो जी।।तप०।।

ऐसे मुनि तिष्ठत जहां तहां मरी आदि सब रोगा जी।
सिंह सर्प डाकनी शाकिनी नाशै भूत प्रेत सब शोका जी।।तप०।।

ऐसे गुरू हमको मिलें तब होवे मम निस्तारो जी।
याते मुनि-चरण विषैं अब लाग्यो ध्यान हमारो जी।।तप०।।

दोहा।

सुनो हमारी वीनती, हे ऋषिवर। चित लाय।
जिनस्वरूपमय मो करो, पूजों मन वच काय।।

ॐ ह्री तपोतिशर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

दयामयी जिनधर्म यह, वृद्धि होउ सुखकार।
सुखी होउ राजा प्रजा, मिटै सर्व दुखभार।।

इत्याशीर्वाद. (इति चतुर्थ कोष्ठ पूजा)।

अथ पंचम कोष्ठस्थ बलऋद्धिधारक मुनिपूजा।

स्थापना। लक्ष्मीधरा छन्द।

धरन सिर धरत सिर धरत सिर चरन तर।
करत हम करत हम करत गुरु भक्ति वर।।
थपन इत थपत इबल थपत इत ऋषि-चरन।
बलऋद्धि बलऋद्धि बलऋद्धि अर्चन करन।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (स्थापनम्)।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनम्)

अष्टक। चाल जोगीरासा।

क्षीरोदधि पद्मादि द्रहनिको गंगादिक जल लायो।
रतन जड़ित भृंगार धार दे श्रीगुरु-चरण चढ़ायो।।
जन्म जरा मृति नाश होत पुनि कर्म-कलंक हराई।
बल ऋद्धिधार मुनीश्वर पूजत बल अनंत हो जाई।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जलं निर्वपामीति०

मलयागिर चन्दन के माही केसर रंग मिलावे।
कर्पूरादि सुगंधा द्रव्य बहु तामैं मेलि घसावे।
भव-आताप हरत भ्रम नाशत तम अज्ञान नशाई।।बलऋधि०।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति०

अखित अखंडित सौरभ मंडित चन्द-किरणसे श्वेतं।
जल प्रक्षालित कनकथाल भरि पुंज करों शुभ हेतं।
परमअखंडितपदहोयातेंअनुक्रमसुखअधिकाई।।बलऋधि।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु मंदार सुपारिजातके हरिचंदनके लावें।
चांदी सुवंरण कमल मनोहर घ्राण रु चक्षु सुहावें।
काम-बाणविध्वंसनकारनश्रीगुरु-चरनचढ़ाई।।बलऋधि०।।

ॐ ह्री बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योपुष्प निवपामीति स्वाहा।

रोग-क्षुधा यह नित प्रति मोकों दुख देवै अति भारे ।
ताके नाशन कारन नेवज फेणी मोदक तारे ।
चंद्रिका गुँजा घेवर बावर कनकथाल भरवाई।।बलऋधि०।।

ॐ ह्री बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो नेवैद्य निर्वपामीति०

दीप रत्नमय कर्पूरादिक स्वर्ण-रकाबी धारें ।
जगमग जगमग ज्योति करत है श्री मुनि-चरण उतारें ।
मोहि निबिड़ विध्वंसन हो निज ज्ञान उद्योत कराई।।बल ऋधि।।

ॐ ह्रीं बलर्द्धिधारक सर्व मुनिश्वरेभ्यो दीप निर्वपामीति०

अगर तगर मलयागिर चंदन धूप दशांग बणावें ।
गुंजत भृंग सुगंध मनोहर खेवत दशदिशि धावें।।
कर्म उड़ैं मनु धूम्र मिसनितें आतम उज्ज्वल थाई।।बलऋधि०।।

ॐ ह्री बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो धूप निर्वपामीति०

ज्ञानावरणी दर्शनावरणी मोहकर्म दुखदाई ।
वेदनि नाम रू गोत्र अंतराय शिव-मग रोक कराई ।
तिनको हर करि शिव-फल पावन -श्रीफल आदि चढ़ाई।।

ॐ ह्री बलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो फल निर्वपामीति०

जल गंधाक्षत पुष्प जु नेवज दीप धूप फल ल्याई ।
अष्ट द्रव्य ये कनक-थाल भरि अर्घं करों गुण गाई।।
झं झं झं झं झांज बजावत द्रम द्रम मिरदंग धुनाई ।
नृत्यकरतनूपुरझंकारतमुनिपदअर्घंचढ़ाई।।बलऋधि०।।

ॐ ह्री बलर्द्धिधारकसवमिुनीश्वरेभ्योअर्घं निवपामीति स्वाहा।

प्रत्येक पूजा।

दोहा।

बलऋधि धार मनिंदवर, भये कर्म-मल छेद ।
अर्घं प्रत्येक चढ़ायके, पूजों ऋधिके भेद।।

ॐ ह्री बलर्द्धिधारकमर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि० स्वाहा।

सवैया तेईसा तथा कुसुमलता छन्द।

एक घाट एकट्ठी परिमित श्रुतज्ञान अक्षर सब तिनको ।
मन करिकै सब अर्थ विचारै एक महूरत-माही जिनको।।
मनोबली यह ऋद्धि कहावत ताहि धरै तिन श्रीमुनिवर को ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घं लेय करि निशि दिन पूजत चरण कमलको।।

ॐ ह्री मनोबलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि० स्वाहा।

द्वादशांगमय श्रुतज्ञानको पाठ करे मुनिवर उच्चस्वर ।
एक महूरत मांही सबकी स्वर व्यंजन मात्रादि शुद्धवर ।
तालव कंठ खेद नहिं होवे वचनबली है सो ही ऋषिवर ।
तिनके चरन कमलको पूजों अष्टद्रव्यको धार अर्घंकर।।

ॐ ह्री बचनबलर्द्धिप्राप्तसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

एक बरस का उत्सर्ग धारै अचल अग चल आसन नाहीं ।
तीन लोक चिट्ठी अगुलतें ऊँच नीच बलतें जु करांई।।
गर्व करै नहिं ऐसे बलको वही मुनीश्वर शिव सुखदाई ।
कायबली यह ऋद्धिधार ऋषि तिन्हें पूजि हैं सीस नवाई।।

ॐ ह्री कायबलर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

सोरठा।

ऐसी बलऋधि धार, जे मुनि ढाई द्वीपमें ।
तिनकी पूजन सार, करिहों अर्घं चढ़ायकें।।

जयमाला।

सोरठा।

गुणको नाहीं पार बलऋधि-धारी मुनिनको ।
पढ़ौ अबै जयमाल, भक्ति थकी बाचाल हो।।

दोहा-ढाल-हमारी करुणा ल्यो जिनराज।

बलऋधि-धर मुनिराजके, चरण कमल सुखदाय ।
बारबार विनती करों, मनवच सीस नमाय
हमारी करूणा ल्यो ऋषिराय।।

थावर जंगम जीवके, रक्षक हैं मुनिराय।
मोहि कर्म दुख देत है, इनते क्यों न छुड़ाय।।हमारी०।।

राज ऋद्धि तज वन गए, धरचो ध्यान चिद्रूप।
ऋद्धि आप चरणा लगी, नमन करत सब भूप।।हमारी०।।

तप-गज चढ़ि रण-भमिमें, क्षमा खड्ग कर धार।
करम अरी की जय करी, शांति ध्वजा करि लार।।हमारी०।।

निरामरण तन अति लसै, निरअंबर निरदोष।
नगन दिगंबर रूप है, सकल गुणनिको कोष।।हमारी०।।

क्रोध कपट मद लोभको, किंचित् नहिं लवलेश।
मूरति शांत दयामयी, बंदित सकल सुरेश।हमारी०।।

तुम ऋषि दीनदयाल हो, अशरण के आधार।
बार बार बिनती करों मोहि उतारो पार।।हमारी०।।

जो त्रिभुवनके सब मिले दानव मानव इन्द्र।
हलै चलै नहिं सबनितें, बल ऋधिधार मुनिंद।।हमारी०।।

मैं दुखिया संसार में, तुम करूणानिधि देव।
हरौ दु:ख यह मों तणों, करि हों तुम पद सेव।।हमारी०।।

तुम समान संसारमे तारण तरण जिहाज।

हे मुनीश! कोऊ नहीं, यातें तुमको लाज।।हमारी०।।

तुम पद मस्तक हम धरें, भरी भक्ति उर माहिं।
निजस्वरूप-मय कीजिए, भव संतति मिट जाहिं।।हमारी०।।

घत्ता

हे करूणानिधि सकल गुणाकर भक्ति हृदय हम तमु धारी ।
इहभवदुखहर अनुपम सुखकर ऋषिवर बल ऋधिके धारी।।

ॐ ह्री बलर्द्धिप्राप्तसर्वमनीश्वरेभ्य जयमालार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द – –

मात ईति भय मिटै देश सुखमय बसै।
प्रजा-मांहि धन धान्य महर्द्धिकता लसै।।
राजा धार्मिक होय न्यायमगमे चलै।
या पूजन फल येह धर्म जिनवर भिलै।।

इत्याशीर्वाद । (इति पचम काष्ठ पूजा)

अथ षष्ठकोष्ठस्थ औषधऋद्धिधर मुनीश्वर पूजा।

स्थापना। सवैया तेईसा।

औषधऋधि-धार मुनी अविकार धरै तप भार महा अधिकाई ।
तिनके तनकी परछांहि परै तहा रोग विषाद अनेक नशाई।।
ऐसे मुनिराज करे सब शांति हरें भव भ्रांति जिनेशकी नाई ।
थापत है हम पूजन काज हरो मम विघ्न कल्याण कराई।।

ॐ ह्री क्षुद्रोपद्रवसर्वविघ्नविनाशकौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र अवतर अवतर सवौषट् (आह्वननम्)।

ॐ ह्री क्षुद्रोपद्रवसर्वविघ्नविनाशकौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (स्थापनम्)।

ॐ ह्री क्षुद्रोपद्रवसर्वविध्नविनाशकौषधर्द्धिधारकसर्वमनीश्वरममह! अत्र मम सन्निहितो भव मव वषट् (सन्निधीकरणम्)

अष्टक । चाल-आसावरी तथा होली काफी।

रतन जड़ित भृंगार मध्य शुभ भर करि प्रासुक जलको।
धार देत ही नाश करत है सब कर्मदिक मलको।।
यजों मुनि-चरण-कमलको, औषधि ऋद्धचधीश यतीश।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सर्वरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमुनीश्वरेभ्यो जल निर्वपामीनि स्वाहा।

भव-आताप बढ़यो अति भारी शोषत मोहि निबलकों।
चन्दन केसर चरण चढ़ाओ पावो पद निर्मल को।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सवरोगहरेभ्य सर्वशातिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमुनीश्वरेभ्यो चदन निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णथालभरिचंद-किरणसमल्यायोअक्षतउज्ज्वलकों।
अक्षय पद पावन कारण पूजों श्रीगुरु पादयुगलको।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य मवरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमुनीश्वरेभ्यो पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

काम शत्रु मो अधिक सतावै आतमके ल्यावत मलकों।
याके नाश करन के कारन मुनिपद चहोड़ों कमलकों।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सर्वरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमुनीश्वरेभ्यो पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधावेदना रोग महा दुठ जारत हृदय-कमलको।
नाना विधि नेवजतें पूजों शांति करत क्षुत मलको।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सर्वरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमुनीश्वरेभ्यो नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप रतनमय ज्योति मनोहर नाश करत तम-मलकों।

ज्ञान उद्योतन कारन पूजों श्रीगुरू-पादन-कमलकों।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सर्वरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमनीश्वरेभ्यो दीप निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर मलयागिरि चदन केलीनंद विमलकों।
खेवत धूप दशांश अग्नि संग जारत है अघ-मलकों।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सर्वरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमनीश्वरेभ्यो धूप निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भातिके स्वर्णथाल भरि लीन्हे बहु शुभ फलकों।
शुद्ध भाव करि नितप्रति पूजें शिव सुख पावें विमलकों।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सर्वरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमनीश्वरेभ्यो फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत अरू पुष्प जु नेवज दीप विमल को।
धूप फलादिक अर्घ चढाये पावत पद निर्मलको।।यजोमुनि०।।

ॐ ह्री सर्वक्षद्रोपद्रवविनाशकेभ्य सर्वरोगहरेभ्य सर्वशानिकरेभ्य औषधर्द्धि-धारकमनीश्वरेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक पुजा।

दोहा।

औषध ऋधिके भेद वसु, ता धारक ऋषिराय ।
भिन्न भिन्न तिनके चरण, पूजों अर्घ चढाय।।

ॐ ह्री अष्टधौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

अडिल्ल छन्द।

अग उपाग रू नख केशादिक सर्व ही।
रज पद मुनिकी लगत हरत सब रूज मही।।

आमर्शौषधिऋद्धि याहि मुनीवर धरैं।
ता ऋषिवरके पाद यजत शिव-तिय बरैं।।

ॐ ह्री आमर्शौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

मुनि-मुखका खंखार थूकके लगत ही।
सर्व रोग मिट जाय असाध्य जु तुरत ही।
खेलौषधि ये ऋद्धिधार मुनिवर तनें।
पाद-पद्म हम यजत व्याधि सब ही हनें।।

ॐ ह्री खेलौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति०

मुनिके अंगके स्वेदमाहिं जो रज परै।
सो लागत ततकाल व्याधि सब ही हरै।।
यह जल्लौषधिऋद्धिधारकों नित यजों।
निशदिन तिनके चरण-कमलकों मैं भजों।।

ॐ ह्री जल्लौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

दंत नासिका अंग मैल-मल सर्व ही
व्याधि सर्वको नाश करत है लगत ही।।
मल्लौषधिऋधि येह ताहि धारक मुनी।
पूजत मन बच काय अर्घ करके गुनी।।

ॐ ह्री मल्लौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

विष्ठा मूत्र जु वीर्य सर्वऋषिराज के।
नाना व्याधि-हरंत लगत ही साधिके।।
ऋद्धि विडौषधधार तास पायन परैं।
अष्ट द्रव्यकों मेलि सदा पूजन करैं।।

ॐ ह्री विडौषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

जिनके तनसूं पवन लागि जा तन लगै।
आधिव्याधि बहु रोग विषादिक सब भगै।।

भूत प्रेत सर्पादि सिंह को भय मिटै।
सर्वौषधि ऋधिधार पूजतैं अघ हटै।।

ॐ ह्री सर्वौषधर्द्धिधारकसर्वमुनश्वरेभ्योअर्घ नि०

जिनके करमें अमृत होय विष सर्व ही।
मूर्छित निरविष होत वचन सुन तुरत ही।।
आस्यविषौषधिऋद्धि-धार ऋषिवर तिन्हें।
पूजो मन वच काय शुद्ध करिके जिन्हें।।

ॐ ह्री आस्यविषौधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

थावर जंगम सर्प आदिको भय भरै।
दृष्टि परत ततकाल सर्व छिनमें हरै।।
दृष्टिविषौषधि ऋद्धिधार मुनिराजकों।
मन वच तन कर यजों मिटन सब व्याधिकों।।

ॐ ह्री दृष्टिविषौषधिर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

सोरठा—

सर्वौषधि-ऋद्धिधार, सर्व मुनीश्वर हैं तिन्हे ।
वसु द्रव्यते भरि थार, पूजों अर्घ चढायकें।।

ॐ ह्री आमर्शोषधर्द्धिधारकादिदृष्टिविषौषधर्द्धिधारकपर्यन्तसर्वमुनीश्वरेभ्यो-अर्घ नि० स्वाहा।

जयमाला

दोहा—

जिनके बंदत पूजतें, व्याधि मिटि जाय ।
औषधऋधि-धर मुनिनकों, नमों नमों मनलाय।।

चाल बीजाकी।

जय सर्वौषधिऋधिके धार मुनिराय,
मन वच बंदोजी मैं सीस नवाय, ऋषिवरजी ।

नग्न दिगम्बर हो परम पवित्र हो चित अति अमलान,
करूणा-सागर हो दया-निधान, ऋषिवरजी ।
दरश करत ही हो वात पित्त कफ खांस रू सांस,
ज्वर शीतादिक हो दाह हुलास, ऋषिवरजी ।

कुष्ट उदम्बर हो कालज्वर अरू सब संनिपात,
साध्य असाध्य जु हो सब रोग नशात, ऋषिवरजी ।

पंगु पुरूषकै जी चरण होय गिरि शिखर चढ़ंत,
जन्म अन्धकों जी सब सूझत, ऋषिवरजी ।

गूंगा बोलत है हो बचन शुभ मुनिवर परताप,
सब जीवां के होवे जी सुन्दरगात, ऋषिवरजी ।

सिंह व्याघ्र उन्मत्त गज सब भय मिट जाय,
तुम पाद ध्यावै जी जो लव ल्याय, ऋषिवरजी ।

कृष्ण सर्प तुम नामतें लटसम हो जाय,
श्वान स्याल अरू वृश्चिकको भय न रहाय, ऋषिवरजी ।

डायनि सायनि हो योगिनी ये दूर भजाय,
भूत प्रेत ग्रह दुष्टजु हो तुरत नसाय, ऋषिवरजी ।

तुम नाम मंत्रतें हो अगनि झल जलसम हो जाय,
सिंधु भयानक जी थलसम थाय, ऋषिवरजी ।

हृदय-कमलमें जी तुम नामको जो ध्यान कराय,
नृप-भय ताकै जी होवे कछु नांय, ऋषिवरजी ।

विघ्न अनेक जु जी नाश हो शुभ मंगल थाय,
जो ध्यावै जी मन वच काय, ऋषिवरजी ।

सर्वौषधिऋधिधार जी जहँ करत विहार,
दुरभिक्ष रहै नहीं जी ता देश मंझार, ऋषिवरजी ।

आधि व्याधि भय देश के सब ही मिट जाय,

सब जीवां कै जी अति सुख थाय, ऋषिवरजी ।

वह मुनि जा बनके विषें शुभ ध्यान करात,
जाति-विरोधी हो सब बैर नसात, ऋषिवरजी ।

षट्ऋतुके हो फूल फल सब वृक्ष फलंत,
सूखे सरवर हो तुरत भरंत, ऋषिवरजी ।

नाम तिहारो जो जपै मन बच तन तिरकाल,
जो भवि गावै जी तुम गुणमाल, ऋषिवरजी ।

भोग संपदा हो वै नर पायकै फिर इन्द्र पदादि,
शिवसरूप मय होवै जी निज आस्वाद, ऋषिवरजी ।

घत्ता—

औषधऋधि-धारी, मुनि अविकारी, भक्ति तिहारी, हृदय धरी ।
करि पूजा सारी, अष्टप्रकारी यह गुणमाला कंठ धरी।।

ॐ ह्री औषधर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द ।

आधि व्याधि कर नाश सर्व भयकों हरो।
ऋद्धिवृद्धि घरमाहिं सकल संपति भरो ।।
जिनधर्मी जनमाहिं सकल मगल करो।
या पूजा परता विघ्न सबही टरो ।।

इत्याशीर्वाद (इति षष्ठ पूजा)

सप्तमकोष्ठे रसऋद्धिधारकमुनि-पूजा ।

कुडलिया ।

रसऋद्धि-धार मुनिंदके, चरण-कमल सिर नाय। ।
वन्दो मन बच काय करि, भाव भक्ति चित लाय।।
भाव भक्ति चित लाय करों मैं शुभ आह्वनन ।

आप पधारो नाथ तिष्ठ इत यह संस्थापन।।
निकट होहू मम बार-बार विनती यह मेरी ।
पूज करन चित चाह हमारे ऋषिवर तुमरी।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनिसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट (आह्वाननम्)।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनिसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनिसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनम्)।

अष्टक सुन्दरी छन्द।

विमल केवल उज्ज्वल ल्यायकै, सुर नदी-भृंग भरायकै ।
जनम मृत्यु जरा क्षयकारणं, मुनि यजामि ऋधीरसधारकं।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जल नि०।

सघज कर्म कलंक विनाशनै, मलय उदभव गंध सुगंधनै।
कदलि-नंदन कुंकुम वारंक मुनि यजामि० ।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो चदन नि०।

अखिल उज्ज्वल दीर्घ अखंडकं, किरण चन्द्र समान सुद्यातकं।
अतुल सौख्य सुथानक दायकं, मुनि यजामि० ।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो अक्षतान् नि०।

प्रचुर गंध सुपुष्प सुमालजा, भ्रमर गुञ्जत सौरभ धारिया।
निविड़ बाण मनोद्भव वारंक मुनि यजामि० ।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो पुष्प नि०।

स्र्वण पात्र भरै नैवेद्यके, घृत सुचारू रसादिक सज्यके।
प्रचुर रोग क्षुधादि निवारकं, मुनि यजामि० ।।

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो नैवेद्य नि०।

रतन दीप मनोज्ञ उद्योतकं, स्वर्ण पात्र धरे शुभ ज्योतिकं।
निरवधी सुविकाश प्रकाशकं, मुनि यजामि० ।।

ॐ ह्री रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो दीप नि०।

अगर चन्दन धूप सुधूपनै, अलि समूह भ्रमैति सुगंधनै।
कर्म-काष्ठ-समूह सुजारकं, मुनिं यजामि० ।।

ॐ ह्री रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो धूप नि०।

सुभग मिष्ट मनोज फलावली, हरत घ्राण सुचक्षु सुखावली।
मुकति थान मनोहर दायकं, मुनि यजामि० ।।

ॐ ह्री रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो फल नि०।

जल सुगंध सुतंदुल पुष्पकै, चरू सुदीप सुधूप फलार्घकै।
पद अनर्घ्य महाफल दायंक, मुनि यजामि० ।।

ॐ ह्री रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ नि०।

प्रत्येक पूजा ।

सोरठा ।

रस ऋधि षट् परकार, तिनके धारक जे मुनी ।
रोग क्षुधानिनिवार, पूजों अर्घ चढ़ायकै।।

ॐ ह्री षट्प्रकाररसऋद्धिधारकमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति०

चौपाई

कर्म-उदै कोउ कारन पाय, क्रोध थकी मरि बच निकसाय ।
सो प्राणी ततकाल मराय । ते आशीविष यजन कराय ।।

ॐ ह्री आशीर्विषरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

क्रोध दृष्टि मुनिकी जो परै, परतैंही ततकाल सो मरै ।
दृष्टिविषारसऋधिधर मुनी। यजन करों मैं तिनकों गनी।।

ॐ ह्री दृष्टिविषरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

क्षीर रहित जहँ अहार जु कोय, सो मुनि कर रस दुग्ध जु होय ।
वचन दुग्ध सम पुष्टि कराय। क्षीरस्त्रावि-धर अरचों पाय।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्त्रविरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

मिष्ट रहित जो मुनि कर अहार। होय मिष्टरस सहित जु अहार ।
मुनि बच पुष्ट करत मधु समा। मधुस्त्रावी ऋधि पूजत हमां।।

ॐ ह्रीं मधुस्त्रविरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

घृत करि रहित अहार कर मुनी, घृत-संयुक्त होय बहु गुनी ।
बच मुनिके धृतसम गुण करें, सर्पिस्त्रवि रस पूजन करें।।

ॐ ह्रीं सर्पिस्त्राविरसऋधिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

विष अमृत मुनि कर हो जाय, वचनामृतसम पुष्टि कराय ।
अमृतस्त्राविरसऋद्धी यही, ता घर पूजे हो शिव मही।।

ॐ ह्रीं अमृतस्त्राविरसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

दोहा ।

ये रसऋधिके भेद युत, सर्व ऋषीश्वर पाय,
मन वच तन करि पूजि हों, हरषित चित अधिकाय।।

ॐ ह्रीं आशीर्विषरसऋद्धिचादिअमृतस्त्रविऋद्धिपर्यतषट्रसऋद्धिधारक-सर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

जयमाला ।

सवैया तेईसा ।

रसपरित्याग धरयो मुनिराज, तिन्हे फल ये रसऋद्धि उपाई ।
अहार रसादिक त्याग करै तिनके पद बंदत सीस नवाई।।
सो ऋषिराज करो हम काज, हरो अघसाज जु पुणय बढ़ाई ।
मन-वच-काय त्रिशुद्धि त्रिकाल, धरों तिनपाद सदा उरसाहीं।।

(ढाल वीर जिनंदकी)

दुष्ट कहै मुनिराजकोजी, कर्कश बचन महान
अति कठोर कठु निंद्य सुनजी क्रोध करै नहिं मान।।
ऋषीश्वर बसो हृदय के मांहि।

कुल जात्यादिक बुद्धिकोजी, तपको नहिं अभिमान।
कोमल उर करूणामयीजी, मार्दवधर्म महान ।।ऋषी० ।।

कूट कपट सब त्यागियोजी, रंच न हिरदा मांहि।
येही आर्जव र्धम धरैजी, मन बच बंदो ताहि।। ऋषी० ।।

हित मित सत्य जु वाक्यकों जी, बोलत वे मुनिराय।
धर्मोपदेशतें अन्य कछु जी, बोलत नाहिं सुभाय।। ऋषी० ।।

लोभ सर्व तिनको गयोजी, धरि संतोष महान।
शौच धर्म यह धारिकै जी, भए चित्त अमलान।। ऋषी० ।।

छहों कायके जीवकी जी, करूणा है अधिकाय।
पाचों इंद्रिय वश करी जी, संयम धरि चित लाय।। ऋषी० ।।

द्वादश विधि तपको तपैं जी, अंतर बाह्य महान।
ध्यावें नित चिद्रू पको जी, ध्यान सुधारस पान।। ऋषी० ।।

सर्व परिग्रह त्याग करचोजी, ज्ञानदान नित देय।
जाति जीवको अभय दियोजी, त्याग र्धम धरि एव।। ऋषी० ।।

बाह्यनगनता अति लसै जी, अन्तरंग अति शुद्ध।
ममत तज्यों निज देह सों जी, आकिंचन व्रत इद्ध।। ऋषी० ।।

सहस अठारा शीलकोजी पालत मन बच काय।
ब्रह्मचर्य ऐसो धरैजी आतममें रति थाय।। ऋषी० ।।

या विधि दस परकारकोजी, जिनभाषित जो धर्म।
ताहि शुद्ध धारचो मुनीजी, मेटि पापके कर्म।। ऋषी० ।।

ऐसे हम मुनिराजको जी, नमत सीस धरि हाथ।
बांह पकरि भव-सिंधुतें जी, काढ़ो मोकों नाथ।। ऋषी० ।।

स्वरूप तिहारों हृदय विषैंजी, धारों मन वच काय।
भवसागर को भय मिटयोजी, यातें त्रिभुवनराय।। ऋषी० ।।

घत्ता।

ऐसी गुणमाला परमरसाला जो भविजन कंठे धरई ।
हनि जर-मरणावलि नाश भवावलि मुक्तिरमा वह नर वरई।।

ॐ ह्री रसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा ।

सुखी होहु राजा प्रजा, मिटो सकल संताप ।
बढ़ो धर्म जिनदेवको, श्री ऋषिराज प्रताप।।

इत्याशीर्वाद (इति सप्तम कोष्ठ पूजा)

अष्टमकोष्ठे अक्षीणमहानसर्द्धिधारकमुनि-पूजा

अडिल्ल छन्द।

अक्षयनिधिके दायक घायक कर्मके।
अक्षीण महानस ऋद्धि-धार मुनिवर्य के।।
आह्वानन संस्थापन मम सन्निहितो करो।
संवौषट् ठः ठः वषट् वारत्रर उच्चरों।।

ॐ ह्री अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र अवतर अवतर सवौषट् (आह्वननम्)।

ॐ ह्री अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र अवतर अवतर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (स्थापनम्) ।

ॐ ह्री अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणम्)।

अष्टक। गीता छद ।

हिमवन समु दभव नीर शीतल रतन भृंग भरावही ।

जन्म जर अरू मृत्यु नाशन क्षपक चरण चढ़ावही।।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित अखयनिधि दायक सदा ।
अक्षीण महानऋद्धि-धर मुनि पूजिहों मैं सर्वदा।।

ॐ ह्री अक्षीणमहानर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो जल नि०

काश्मीर चदन केलिनंदन घसत परिमल दिग महै ।
अलि गुंज करत दिगंतरालै पूजतें भव तप जहै।।
इन्द चन्द्र नरेन्द्र पूजित०

ॐ ह्री अक्षीणमहानर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो चदन नि०

सित अखित चद्रमरीचिका सम अति सुगंधित पावना ।
भरि थाल कणमय अखयपदको चरण-कमल चढ़ावना।।
इन्द चन्द्र नरेंद्र पूजित०

ॐ ह्री अक्षीणमहानर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो अक्षतान नि०

पंच वरण प्रसून सुन्दर गधते मधुकर भ्रमें ।
सो लेय मुनिपदकों चढ़ोड़े समरको छिनमें दमें।।
इन्द्र चन्द्र नरेंद्र पूजित०

ॐ ह्री अक्षीणमहानर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो पुष्प नि०

घेवर सुबाबर मोदकादिक कनकथाल भराइये ।
चरू सद्यतें मुनि-चरण पूजै क्षुधारोग नसाइये।।
इन्द्र चन्द्र नरेद्र पूजित

ॐ ह्री अक्षीणमहानर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो नैवेद्य नि०

दीप मणिमय ज्योति सुन्दर धूम्रवर्जित सोहने ।
तम मोह पटल विध्वंस कारण चरण युग मुनि अरचने।।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित०

ॐ ह्री अक्षीणमहानर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो दीप नि०

धूप दशविधि अगनिके संग स्वर्ण धूपायन भरै ।

धूम्र मिस वसु कर्म नाशै भविकजन जय जय करै।।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित०

ॐ ह्री अक्षीणमहानसर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो धूप नि०

दाख श्रीफल चारू पुंगी स्वर्ण थाल भराइये ।
श्रीऋषीश्रवर पूजतें ही मुक्तिके फल पाइये।।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित०

ॐ ह्री अक्षीणमहानसर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो फल नि०

नीर गंध सुगंदा तदुल पुष्प चरू दीपक धरैं ।
धूप फल ले स्वर्ण भाजन अर्घ लैं शिव तिय वरैं।।
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्र पूजित०

ॐ ह्री अक्षीणमहानसर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्यो अर्घ नि०

प्रत्येक पूजा।

सोरठा—द्विविध प्रकार सुजानि, अक्षीणमहानसऋद्धि यह ।
होय पापकी हानि, ता धारक मुनिवर यजत।।

ॐ ह्री द्विविधप्रकारअक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

कुसुमलता छद ।

अहार करै जाके घर मुनिवर ता दिन अहार अटूट हो जाई ।
चक्रवर्ति-सब जीमें तो भी वा दिन टूटत नांही।।
वे अक्षीणमहानसऋधिधर यतिवर बंदो सीस नमाई ।
तिनके पद पूजत जो अहनिशि नवनिधि हो ताकै घर मांही।।

ॐ ह्री अक्षीणमहानसर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

च्यार हाथ घर मांही मुनिवर तिष्ठत सब जीवन सुखदाई ।
ता थानक इंद्रादिक सब अरू चक्रर्ति की सैन्य समाई।।
भीर तहाँ नहिं होत सर्व जन सुखमय तिष्ठत ता मधि भाई ।

अक्षीणमहानसऋधि-धारी गुरू तिनकों पूजों मन बच काई।।

ॐ ह्री अक्षीणमहानसऋद्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

दोहा–जो ऐसी ऋद्धि को धरे, श्री ऋषिराज महान ।
तिनको पूजों अर्घं दे, देहु यथारथ ज्ञान।।

ॐ ह्री द्विविधाक्षीणमहर्द्धिधारकसर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घं नि०

जयमाला ।

अक्षीणमहानसऋद्धि धरा, तिनके पद बंदत सर्व नरा ।
मैं ध्यावत हूँ गुण गावत हूँ, मो दीजे ऋषिवर सिद्धधरा।।

ढाल–'ते गुरू मेरे उर बसो' ससार असारियो, दश भव' तथा गोपीचन्द' की इन चारो चाल मे।

पक्ष मास कै पारणै, अहार करन के काज।
मुनिवर करत विहार हैं, ईर्यापथकूं साज।

वे गुरू मो हिरदे बसो, तारने तरन जिहाज
धनिका दरिद्री घर तणों, तिनके नाही भेद
चांद्री चर्या धतर हैं, लाभ अलाभ न खेद।। वे गुरू० ।।

अयाचीक जिन वृत्ति है, मुखतें नाहिं कहात।
केवल देह दिखायकै, खडे रहत नहिं भ्रात।। वे गुरू० ।।

जो गृहस्थ शुभ भक्तिधर, प्रासुक जल भृगार।
जाहि दिखावै ताहि गृह, खड़े रहत हि बार।। वे गुरू० ।।

पक्षालन मुनिचरण को, पूज करैं हरषाय।
मन-वच-काया शुद्ध करि, नमन करत शिरनाय।। वे गुरू० ।।

तिष्ठ तिष्ठ मुनिराज इत, अहार पान है शुद्ध।
यह नवधा मुनि भक्ति लख, अहार करत अविरूद्ध।। वे गुरू० ।।

श्रद्धा शक्ति रू भक्ति युत, ईर्षा लोभ हरंत।

दया क्षमा ये गुण धरै, ता घर अहार करंत।। वे गुरू० ।।

षट् चालीस जु दोष तजि, अंतराय बत्तीस।
चौवह मल वर्जित सदा, अहार करत गुरू ईश।। वे गुरू० ।।

मुनि-अहार प्रभावतें, गृहस्थ घरनि के मांहि।
देव करैं नभतैं तहां, रत्नवृष्टि सुखदाहिं।। वे गुरू० ।।

कल्पवृक्षके पुष्प अरू, जल सुगंदा वरषांहि।
धन्य दान दातार धनि, पंचाश्चर्य करांहि।। वे गुरू० ।।

धन्य दिवस धनि वा घड़ी, धनि मेरो तब भाग।
ऐसे मुनिवरके विषैं, करै दान अनुराग।। वे गुरू० ।।

धन्य युगल पद होय तब करै जात ऋषिराज।
धन्य हृदय हो ध्यानतै, ध्याऊ निज हित काज।। वे गुरू० ।।

दरश करत तब चरनको, चक्षु धन्य तब थाय।
सफल करणयुग होय तब, बचन सुनै ऋषिराय।। वे गुरू० ।।

पूज करों तब चरणकी, करयुग धनि जब थाय।
शीस धन्य तब ही हमे, नमत चरण ऋषिराय।। वे गुरू० ।।

मो किंकरकी वीनती, सुनिये श्रीऋषिराय।
भवदधि दुखमयतें मुझे, डुबत काढो आय।। वे गुरू० ।।

बार बार बिनती करू, मन बच शीस नमाय।।
पर सरूप मय हो ह्यै, मो निजरूप कराय।। वे गुरू० ।।

घत्ता—उर निज ध्याऊँ शीश नमाऊँ गाऊँ गुण मैं हो चेरा ।
पद अजरामर सकल गुणाकर द्यो मुनिवर हर भव-फेरा।।

ॐ ह्री अक्षीणमहाऋद्धिधारसर्वमुनीश्वरेभ्यो महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षीणमहानसऋद्धि-धार जो ऋषि यजै,
ताके घरतें दुख भार आपद भजैं।

ऋद्धि वृद्धि हो अखै सकल गुण सिद्धि हो,
केवलज्ञान लहाय अचल समृद्धि हो।

इत्याशीर्वाद (इति अष्टम कोष्ठ पूजा)

पंचम कालकी आदि में हुए मुनिराजों को अर्घ

चौपाई—रूपक

गौतमस्वामी सुधर्म जु स्वामी, जंबूस्वामी अति अभिरामी ।
वीर जिनेंद्र पछै त्रय नामी, बासठ वर्ष मदय शिवगामी।।
पंचकाल आदि के माहीं, केवलज्ञान लह्यो सुखदाई ।
तिनकों पूजों अर्घ चढ़ाई, ता फल केवलज्ञान लहाई।।

ॐ ह्री वर्द्धमानजिनेद्रपश्चाद् द्विषष्ठिवर्षमध्ये त्रयकेवलज्ञानधारक मुनीश्वरे भ्यो अर्घ निर्वपामिति स्वाहा।

विष्णुनन्दि मित्र मुनिराई, अपराजित गोवर्धन भाई ।
भद्रबाहु ये पंच मुनिंदा, सब श्रुत धारक भए यतिंदा। ।
शत सवत्सर में सुखदाई, तिनके चरण नमों मनलाई। ।
वसु द्रव्यन ले अर्घ बनाई, पूजत हों मैं मन वच काई।।

ॐ ह्री केवलित्रयपश्चात्वर्षमध्येजातेभ्य पचश्रुतकेवलिभ्योअर्घ नि०

बिशाख प्रौष्ठिल क्षत्रिय जयाचारज नागसेन मुनि हुया ।
सिद्धारथ धृतसेन मुनीशा, विजय बुद्धि लिंग जु यतीशा ।
अंगदेव धरमेन मुनिंदा, ये दश पूरबधार यतिंदा ।
इकसै वियासी बरस मझारा, पूजों मैं उतरे भव पारा।।

ॐ ह्री विशाखाचार्यादिश्रुतकेवल्यनन्तर त्रयशीत्युत्तरैकशनवर्षमध्येजातेभ्य दशपूर्वधारकैकादशमुनिभ्योअर्घ०

नक्षत्राचारज जयपाल मुनीशा, पांडव धु वसेनादिक कंसा ।
चारज पंच एकादश अंगा, बन्दन करत पाप हो भंगा ।

ये मुनिशत अरु बरस-तेईशा, मांहि भए गुणगण के ईशा ।
पूजों कर ले अर्घं मुनीशा, सकल दोष क्षयकार गणीशा।।

ॐ ह्री दशपूर्व त्रयोविंश त्र्युश्कैशत वर्षमध्ये जातेभ्य एकादश गधारकर्मुनिभ्योअर्घ०।

सुभद्र और यशोभद्र नामा, भद्रबाहु लोहाचार्य बखाना ।
चार मुनी सत्याणव बरसा, मांहि भए दसअंगधर परसा।।

ॐ ह्री एकादशागधरानन्तर सप्तन वतिवर्षमध्येजातेभ्य सुभद्रादिदशा-गधारकमुनिभ्योअर्घ०।

ऐलााचार्य जु माघ सु नंदी, धरसेनाचारज गुणवृन्दी ।
पुष्पदन्त भूतबलि नामा, प्रथम अंग धारी अभिरामा।।
सौ अरु अठारा वर्ष मांही, विद्यागण करि सब अधिकाई ।
अर्घं लेय पद पूज कराई, ताफल केवलज्ञान लहाहि।।

ॐ ह्री दशागधारकानन्तर अष्टादशोत्तरशतवर्षमध्ये एलाचार्याद्येकागधार-कमुनीश्वरेभ्योअर्घ नि०

जिनचंद्र कुंदकुंदमुनि इन्दा, मुनिगणमें ज्यों उडुगन चंदा ।
उमास्वामि सूत्रके कर्त्ता, समंतभद्र बहु दुख के हरता।।

शिवकोटी रू शिवायन स्वामी, पूज्यपाद बंदा गुणधामी ।
एलाचार्य वीरसेन जु जानों, जिनसेन नेमिचन्द्रनैं मानों।।

रामसेन तार्किक गुणधारी, अकलंकस्वामी बोध जितारी ।
विद्याअनन माणिकनंदी, प्रभाचन्द्र भव भव हर फन्दी।।

रामचन्द्र वासवचंद स्वामी, गुणभद्राचारज है नामी ।
वीरनंदि आदिक गुणस्वामी, सिद्धान्तचक्रवर्ति गुणधामी।।

नग्न दिगंबर विद्या ईशा, पंचमकाल 'आदि गुणधीशा ।
जिनमत थापन बुद्धि गंभीरा, परमत उत्थापक महावीरा।।

बारंबार त्रिकाल हमारी, तिन पद बंदन है सुखकारी ।

निर्विकार मूलगुण-धारी, निज संपति द्यो मो अघहारी।।
अष्टद्रव्य मय अर्घ बनावों, पद पूजों मैं गुणगण गावो ।
सम्यगज्ञान देहु मुक्ष ईशा, याचत हों पदतर धरि शीसा।।

ॐ ह्री एकागधास्कानन्तर जानेभ्यो जिनचन्द्र-कुन्दकुन्दादिकमर्वनिग्रथ-मुनिभ्योअर्घ निर्वापामीत्ति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला ।

सवैया तेईसा ।

पाणिपात्र–धर्मोपदेश करि भव-सागरतें भविजन तारैं,
तीर्थंकरपद दायक भवानन षोडश चित्त विषैं विस्तारे ।
ग्रंथ त्यागि तप करें दुवादश दशलक्षण मुनि धर्म संभारें,
पंच महाव्रत धारत तिन पद शीस नायके मस्तक धारें।।

चाल–बाजा बाजिया भला

जयशील महा नग धर नमोंमुनी, पंचन्द्रिय सयम योग संयुक्त ।
चरणं लागिहों भला, मोहि त्यारोजी ऋधि दीनदयाल।।
ग्यारह अंग धारकनमों मुनी, पुनि चौदहजी पूरब के धार ।
।। चरणां ।।

कोष्ठ बुद्धि धर नमों मुनी, पादानुसार आकाश विहार ।।च०।।
पाणहारी हू नमो मुनी, धरें वृक्षमूल आतापन योग ।।च०।।
जे मौन धार स्थित अहार ले मुनी, जाएया राज-रंकगृह सब
इकसार ।। चरणां ।।

जय पंच महाव्रत धर नमों मुनी, जे समिति गुप्ति पालक वरवीर ।
।। चरणां ।।

जे देह मांहि विरक्त नमों मुनी, ते राग रोष भर मोह हरंत ।च० ।।

लोभ रहित संवर धरै मुनी, दुखकारीजी नास्यो काम रू क्रोध ।
।। चरणां ।।

स्वेद मैलतें लिप्त हैं मुनी, आरंभ परिग्रहतें विरक्त ।। च० ।।
षट् आवश्यक घर नमों मुनी, द्वादशतप धर तन वे सोखंत । च० ।।
एक गास दोय लेत हैं मुनी, वे नीरस भोजन करत अनिंद । च० ।।
स्थिति मसान करते नमों मुनी, जो कर्म डहर सोखनकों दिनिंद ।
द्वादश संयम धर नमो मुनी, जो विक्था च्यार करी परिहार ।
।। चरणां ।।
दो बीस परीषह सह नमों मुनी, संसार महार्णवते उतरत ।। च० ।।
जय धर्म बुद्धि नृप करै मुनि जे काउसग्ग करि रात्रि गमंत ।
।। चरणां ।।
सिद्धि-रमा वर वे नमों मुनी, जे पक्ष मास अहार करंत । च० ।।
गोदोहन वीरासन धरैं मुनी, सेज धनुष वज्रासनधार । च० ।।
तप बल नभ बिहरत नमों मुनी, वे गिरि गुहा कदर करत निवास
। च० ।।
शत्रु मित्र समचित धरै मुनी, मैं वंदों दिढ़ चारित्र के धार । च० ।।
धर्म शुक्ल ध्यावें ध्यानकूं मुनी, मैं बन्दो यतिवर मोक्ष गमंत ।
।। चरणं ।।
चोवीस परिग्रह च्युत नमों मुनी, ध्यावों मुनिवर जगत पवित्त ।
।। चरणं ।।
रत्नत्रय करि शुद्ध हैं मुनी, तिनकों मैं बंदों शुद्ध कर चित्त । च० ।।
मुनिगुण पार न पाइयो सुरा, मैं तुच्छ बुद्धि किम कहोजी बखान ।
।। चरण ।।
बारबार बिनती करू मै तुम्हें, करूणानिधि मोकूं करि निज दास ।
।। चरणं ।।
भविजन जो मुनि गण धरे मनां, पद पूजत श्रीगुरू बारबार ।

।। चरणं ।।

मुनिस्वरूप को ध्यायकै मनां, बह उतरैजी भव दधि पार ।च० ।।

कविता छद

जे तपसूरा सयम धीरा मुक्तिवधू अनुरागी ।
रत्नत्रय-मणिडत कर्म-विहंहड़ित ते ऋषिवर बड़भागी ।
सूरि उपाध्याय सर्वसाधु त्रय पद धारत सब त्यागी ।
पूज करत हो भक्ति भावतैं निज स्वरूप लवलागी ।।

ॐ ह्री आचार्योपाध्यायमर्वसाधुत्रयपदधारकातीतानागतवर्तमानकालसबंधि-मर्वमुनीश्वरेभ्य पुष्टितुष्टिशांतिकरेभ्योअनेकरोगशोकाधिव्याधिडाकिनीभूत-प्रेतव्यतरादिदुष्टग्रहदुर्भिक्षादिमर्वविघ्नविनाशकेभ्य सुमिक्ष ऋद्धि विभवाने कवितश्णेभ्य सर्वमुनीश्वरेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जे या पूज करै करावै सुर धरि गावै,
अति उछाह करि जिनमंदिर में मंडल मड़ावै ।
देखै अरु अनुमोद करै जो भव्य निरंतर,
तिनके घरतें सर्व बिघन भय नसैं दुरंतर ।।

इत्याशीर्वाद.

दोहा—

संवत् शत उनवीस दश, श्रावण सप्तमि श्वेत ।
सरूपचंद मुनि-भक्तिवश, रची स्वपर हित हेतं ।।

इति चौसठ ऋद्धि पूजा (वृहत् गुर्वावलिपूजाशांतिविधान) सम्पूर्ण ।

समाप्त

सलूना पर्व पूजा

श्री अकम्पनाचर्यादि सप्त-शत-मुनि-पूजा

(चाल जोगीरासा)

पूज्य अकम्पन साधु-शिरोमणि सात-शतक मुनि ज्ञानी ।
आ हस्तिनापुर के कानन में हुए अचल दृढ़ ध्यानी ।।
दुखद सहा उपसर्ग भयानक सुन मानव घबराये ।
आत्म-साधन के साधक वे, तनिक नहीं अकुलाये ।।
योगिराज श्री विष्णु त्यागतप, वत्सलता-वश आये ।
किया दूर उपसर्ग, जगत-जन मुग्ध हुए हर्षाये ।।
सावन शुक्ला पन्द्रस पावन शुभ दिन था सुख दाता ।
पर्व सलूनैं हुआ पुन्य-प्रद यह गौरवमय गाथा ।।
शान्ति दया ममताका जिनसे नव आदर्श मिला है ।
जिनका नाम लिये से होती जागृत पुण्य-कला है ।।
करू वन्दना उन गुरुपद की वे गुण मैं भी पाऊं ।
आह्वानन सस्थापन सान्निधिकरण करूं हर्षाऊँ ।।

ॐ ह्री श्री अकम्पानाचार्यादि-सप्तशतमुनिसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ प्रतिष्ठापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

गीता छन्द

मैं उर-सरोवर से विमल जल भाव का लेकर अहो ।
नत पाद-पद्मों मे चढ़ाऊँ मृत्यु जनम जरा न हो ।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें ।
पूजा करूं पातक मिटे, वे सुखद समता भक्ति दें ।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तोष मलयागिरिय चन्दन निराकुलता सरस ले ।
नत पादपद्मों में चढ़ाऊ विश्वताप नहीं जिले श्री गुरू०।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो ससारतापविनाशनाय चदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

तदुल अखडित शुद्ध आशा के नवीन सुहावने ।
नत पाद पद्मोमे चढाऊँ दीनता क्षयता हने ।।

ॐ ह्रीं श्रीकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

ले विविध विमल विचार सुन्दर सरस सुमन मनोहरे ।
नत पाद-पद्मोमे चढाऊँ काम की बाधा हरे ।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो कामबाण विध्वसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भक्ति घृतमे विनय के पकवान पावन मे बना । नत
पद-पद्मोंमे चढा मेट क्षुधाकी यातना श्री गुरू०।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम कपूर विवेक का ले आत्म-दीपक मे जला ।
कर आरती गुरु की हटाऊँ मोह-तमकी यह बला श्री गुरू०।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि सप्तशत-मुनिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

ले त्याग-तपकी यह सुगन्धित धूप मै खेऊ अहो ।
गुरुचरण-करुणा से करमका कष्ट यह मुझको न हो श्री गुरू०।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दें ।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें ।।

ॐ ह्री श्री अकम्पनाचार्यदि-सप्तशत मुनिभ्योअष्टकर्मविध्वसनाय धूप निर्वपामीत स्वाहा।

शुचि-साधना के मधुरतम प्रिय सरस फल लेकर यहाँ ।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊं मुक्ति मैं पाऊं यहां श्री गुरू०।।

ॐ ह्री श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशत मुनिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा।

यह आठ द्रव्य अनूप श्रद्धा स्नेह से पुलकित हृदय ।
नत पाद-पद्मोंमें चढ़ाऊं भव-पार मैं होऊं अभय श्री गुरू०।।

ॐ ह्री श्री अकम्पनाचार्य-सप्तशत मुनिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

पूज्य अकम्पन आदि सात शतक साधक सुधी ।
यह उनकी जयमाला वे मुझको निज भक्ति दें ।।

पद्डी छन्द

वे जीव दया पले महान, वे पूर्ण अहिसक ज्ञानवान ।
उनके न रोष उनके न राग, वे करे साधना मोह त्याग ।।

अप्रिय असत्य बोले न वैन, मन वचन कायमे भेद है न ।
व महासत्य धारक ललाम, है उनके चरणों मे प्रणाम ।।

वे ल न कभी तृणजल, अदत्त, उनके न धनादिक मे ममत्त ।
व व्रत अचार्य दृढ धरे सार, है उनको सादर नमस्कार ।।

वे करे विषय की नहीं चाह, उनके न हृदय में काम दाह ।
वे शील सदा पाले महान, सब मग्न रहें निज आत्मध्यान ।।

सब छोड़ वसन भूषण निवास, माया ममता स्नेह आस ।
वे धरें दिगम्बर वेष शान्त, होते न कभी विचलित न भ्रांत ।।

नित रहें साधना सुलीन, वे सहैं परीषह नित नवीन ।
वे करें तत्व पर नित विचार, है उनको सादर नमस्कार ।।

पंचेंद्रिय दमन करे महान, वे सतत बढावे आत्म ज्ञान ।
ससार देह सब भोग त्याग, वे शिव-पथ साधे सतत जाग ।।

"कुमरेश" साधु वे हैं महान, उनसे पाये जग नित्य त्राण ।
मैं करूं वदना बार बार, वे करें भवार्णव मुझे पार ।।

मुनिवर गुण-धारक पर-उपकार, भव दुखकारक सुख-कारी ।
वे करम नशायें सुगुण दिलाये, मुक्ति मिलायें भय-हारी ।।

ॐ ह्री श्रीअकम्पनाचार्यदि-सप्तशत मुनिभ्यो महार्घ निर्व०।

सोरठा

श्रद्धा भक्ति समेत जो जन यह पूजा करे ।
वह पाये निज ज्ञान, उसे न व्यापे जगत दुख ।।

इत्याशीर्वाद

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

(लावनी छन्द)

श्री योगी विष्णुकुमार बाल वैरागी ।
पाई वह पावन ऋद्धि विक्रिया जागी ।।
सुन मुनियों पर उपसर्ग स्वय अकुलाये ।
हस्तिनापुर वे वात्सल्य-भरे हिय आये ।।
कर दिया दूर सब कष्ट साधना-बल से ।
पा गये शान्ति सब साधु अग्निके झुलसे ।।
जन जन ने जय-जयकार किया मन भाया ।

मुनियों को दे आहार स्वयं भी पाया ।।
हैं वे मेरे आदर्श सर्वदा स्वामी ।
मैं उनकी पूजा करूं बनूं अनुगामी ।।
वे दें मुझमें यह शक्ति भक्ति प्रभु पाऊं ।
मैं कर आतम कल्याण मुक्त हो जाऊं ।।

ओ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुने अत्र अवतर अवतर सवोषट् इत्याह्वननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ प्रतिष्ठापनम्।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल जोगीरासा)

श्रद्धा की वापी में निर्मल, भावभक्ति जल लाऊं ।
जनम मरण मिट जायें मेरे इससे विनत चढ़ाऊं ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूं यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ।।

ॐ ह्री श्री विष्णुकुमारमुनये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

मलयागिरि धीरज से सुरभित समता चन्दन लाऊं ।
भव-भवकी आताप न हो यह इससे विनत चढाऊं ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये ससारतापविनाशनाय चन्दन नि०।।२।।

चन्द्रकिरण सम आशाओं के अक्षत सरस नवीने ।
अक्षय पद मिल जाये मुझको गुरु सन्मुख धर दीने ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये अक्षयपदप्राप्तये अक्षत निर्व०।।३।।

उर उपवनसे चाह सुमन चुन विविध मनोहर लाऊँ ।
व्यथित करे नहिं काम वासना इससे विनत चढ़ाऊं ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये कामबाणविनाशनाय पुष्प नि०।।४।।

नवव्रत के मधुर रसीले मैं पकवान बनाऊं ।

क्षुधा न बाधा यह दे पाये इससे विनत चढ़ाऊं ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये क्षुधारोगवनाशनाय नैवेद्य नि०।।५।।

मैं मन का मणिमय दीपक ले ज्ञान-वातिका जारूँ ।
मोह-तिमिर मिट जाये मेरा गुरु सन्मुख उजियारूं ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये मोहतिमिरविनाशनाय दीप नि०।।६।।

ले विराग की धूप सुगन्धित त्याग धूपायन खेऊँ ।
कर्म आठ का ठाठ जलाऊं गुरु के पद नित सेऊं ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये अष्टकर्मदहनाय धूप निर्व०।।७।।

पूजा सेवा दान और स्वाध्याय विमल फल लाऊं ।
मोक्ष विमल फल मिले इसी से विनतगुरूपद ध्याऊं ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये मोक्षफलप्राप्तये फल निर्व।।८।।

यह उत्तम वसु द्रव्य संजाये हर्षित भक्ति बढ़ाऊं ।
मैं अनर्घपद को पाऊं गुरुपद पर बलि बलि जाऊं ।। वि० कु० ।।

विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दू यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे अभिनव ज्योति जगाये ।। वि० कु० ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्व०।।९।।

जयमाला

दोहा

श्रावण-शुक्ला पूर्णिमा यति रक्षा दिन जान ।
रक्षक विष्णु मुनीश की यह गुणमाल महान ।।

पद्धडी छन्द

जय योगिराज श्रीविष्णु धीर, आकर तुम हर दी साधु-पीर ।
हस्तिनापुर वे आये तुरन्त, कर दिया विपतका शीघ्र अन्त ।।
वे ऋद्धि सिद्धि-साधक महान्, वे दयावान वे ज्ञानवान ।

धर लिया स्वयं वामन सरूप, चल दिये विप्र बनकर अनूप ।।

पहुंचे बलि नृप के राजद्वार, वे तेज-पुञ्ज धर्मावतार ।
आशीष दिया आन्नदरूप, हो गया मुदित सुन शब्द भूप ।।

बोला वर मांगो विप्रराज, दूंगा मनवांछित द्रव्य आज ।
पग तीन भूमि याची दयाल, बस इतना ही तुम दो नृपाल ।।

नृप हँसा समझ उनको अजान, बोला यह क्या, लो और दान ।
इससे कुछ इच्छा नहीं शेष, बोले वे ये ही दो नरेश ।।

संकल्प किया दे भूमि दान, ली वह मन में अति मोद मान ।
प्रगटाई अपनी ऋद्धि सिद्धि, हो गई देह की विपुल वृद्धि ।।

दो पग में नापा जग समस्त, हो गया भूप बलि अस्त-व्यस्त ।
इक पग को दो अब भूमिदान, बोले बलि से करुणा-निधान ।।

नत मस्तक बलि ने कहा अन्य, भूमि न मुझ पर हे अनन्य ।
रख लें पग मुझ पर एक नाथ, मेरी हो जाये पूर्ण बात ।।

कहकर तथास्तु पग दिया आप, सह सका न बलि वह भार-ताप ।
बोला तुरन्त ही कर विलाप, करदें अब मुझको क्षमा आप ।।

मैं हूँ दोषी मैं हूँ अंजान, मैंने अपराध किया महान् ।
ये दुखित किये सब साधु-सन्त, अब करो क्षमा हे दयावन्त ।।

तब की मुनिवर ने दया-दृष्टि, हो उठी गगन से महावृष्टि ।
पा गये दग्ध वे साधु-त्राण, जन-जन के पुलकित हुए प्राण ।।

घर घर में छाया मोद-हास, उत्सव ने पाया नव प्रकाश ।
पीड़ित मुनियों का पूर्णमान, रख मधुर दिया आहार दान ।।

युग युग तक इसको रहे याद, कर सूत्र बंधाया साह्लाद ।
बन गया पर्व पावन महान, रक्षाबन्धन सुन्दर निधान ।।

वे बिष्णु मुनीश्वर परम सन्त, उनकी गुण-गरिमाका न अन्त ।
वे करें शक्ति मुझको प्रदान, 'कुमरेश' प्राप्त हो आत्मज्ञान ।।

घत्ता

श्री मुनि विज्ञानी आतम-ध्यानी, मुक्ति-निशानी सुख-दानी ।
भव-ताप विनाशे सुगुण प्रकाशे, उनकी करुणा कल्यानी ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये महार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

विष्णुकुमार, मुनीशको, जो पूजे धर प्रीत ।
वह पावे 'कुमरेश' शिव, और जगत में जीत ।।

इत्याशीर्वाद

सोलहकारण पूजा

[कविकर द्यानतराय जी]

सोलह कारण भाय तीर्थंकर जे भये ।
हरषे इन्द्र अपार मेरुपै ले गये ।।
पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसौं ।
हमहू षोडश कारन भावै भावसों ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र अवतर अवतर सवोषट्।
ॐ ह्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्।

कचन-झारी निरमल नीर पूजों जिनवर गुन-गंभीर ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह, तीर्थंकर-पद-दाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुद्धि १ विनयसम्पन्नता २ शीलव्रतेष्वनतीचार ३. अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४ सवेग ५ शक्तितस्त्याग ६ शक्तितस्तप ७. साधुसमाधि ८ वैयावृत्यकरण ९ अर्हद्भक्ति १० आचार्यभक्ति ११

बहुश्रुतभक्ति १२. प्रवचनभक्ति १३ आवश्यकापरिहाणि १४ मार्गप्रभावना १५. प्रवचनवात्सल्य १६ इतिषोडशकारणेभ्यो नम जलं।।१।।

चंदन घसौं कपूर मिलाय पूजौं श्रीजिनवरके पाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।दरश० ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुदध्यादिषोडशकारणेभ्य ससारताप विनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल सुगंध अनूज पूजौं जिनवर तिहुं जग-भूप ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर-पद-दाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योअक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

फूलसुगन्ध मधुप-गुंजार पूजौं जिनवर जग-आधार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।। दरश० ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुिद्धयादिषोडशकारणेभ्य कामबाणविध्वमनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

सदनेवज बहुविधि पकवान पूजौं श्रीजिनवर गुणखान ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।। दरश० ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुिद्धयादिषोडशकारणेभ्य क्षुधारोगविनानाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

दीपक-ज्योति तिमिर छ्यकार पूजूं श्रीजिन केवलधार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।। दरश० ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुिद्धयादिषोडशकारणेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

अगर कपूर गंध शुभ खेय श्रीजिनवर आगे महकेय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।। दरश० ।।

ॐ ह्री दर्शनविशिुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अष्टकर्मदनाय धूप।।७।।

श्रीफल आदि बहुत फलसार पूजों जिन वांछित-दातार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।। दरश० ।।

ॐ ह्री दर्शनविशिुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल।।८।।

जल फल आठों दरव चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मन लाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।। दरश० ।।

ॐ ह्री दर्शनविशिुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं।।९।।

सोलह अंगों के सोलह अर्घ।

सवैया तेईसा

दर्शन शुद्ध न होवत जो लग, तो लग जीव मिथ्याती कहावे ।
काल अनंत फिरो भवमें, महादुःखनको कहुं पार न पावे ।।
दोष पचीस रहित गुण-अम्बुधि, सम्यकदरशन शुद्ध ठरावै ।
'ज्ञान' कहे नर सोहि बड़ो, मिथ्यात्व तजे जिन-मारग ध्यावै ।।

ॐ ह्री दर्शन विशुद्धि भावनायै नम अर्घ नि० ।। १ ।।

देव तथा गुरुराय तथा, तप संयम शील व्रतादिक-धारी ।
पापके हारक कामके छारक, शल्य-निवारक कर्म-निवारी ।।
धर्म के धीर कषायके भेदक, पंच प्रकार संसार के तारी ।
'ज्ञान कहे विनयो सुखकारक, भाव धरो मन राखो विचारी ।।

ॐ ह्री विनयमम्पन्नता भावनायै नम अर्घ नि० ।। २ ।।

'ज्ञान' कहे जिन मार्ग-प्रभावन, भाग्य-विशेषसु जानहि जाणो ।।

ॐ ह्री मार्ग प्रभावनायै नम अर्घ नि० ।। १५ ।।

गौरव भाव धरो मनसे मुनि-पुंगवको नित वत्सल कीजे ।
शीलके धारक भव्यके तारक, तासु निरंतर स्नेह धरीजे ।।
धेनु यथा निजबालकके, अपने जिय छोड़ि न और पतीजे ।
'ज्ञान' कहे भवि लोक सुनो, जिन वत्सल भाव धरे अज छीजे ।।

ॐ ह्री प्रवचन-वात्सल्य भावनायै नम अर्घ ।। १६ ।।

जाप—ॐ ह्री दर्शनविशुद्ध्यै नम , ॐ ह्री विनयसम्पन्नतायै नम , ॐ ह्री शीलव्रताय नम , ॐ ह्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नम , ओ ह्री सवेगाय नम , ॐ ह्री शक्तितस्त्यागाय नम , ॐ ह्री शक्तितस्तपसे नम , ॐ ह्री साधुसमाध्यै नम , ॐ ह्री वैयावृत्यकरणाय नम , ॐ ह्री अर्हभ्दक्त्यै नम , ॐ ह्री आचार्यभक्त्यै नम , ॐ ह्री बहुश्रुतभक्त्यै नम , ॐ ह्री प्रवचनभक्त्यै नम , ॐ ह्री आवश्यकापरिहाण्यै नम , ॐ ह्री मार्गप्रभावनायै नम , ॐ ह्री प्रवचनवत्सलत्वाय नम ।।१६।।

जयमाला

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-वास ।
पाप पुण्य सब नाशके, ज्ञान-भान परकाश ।।

चौपाई १६ मात्रा

दरशविशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महाधारै जो प्राणी, शिव-वनिताकी सखी बखानी ।।

शील सदा दिढ जो नर पालै, सो औरनकी आपद टालै ।
ज्ञानाभ्यास करै मनमाहीं, ताके मोह-महातम नाहीं ।।

जो संवेग-भाव विस्तारै, सुरग-मुकति-पद आप निहारै ।
दान देय मन हरष विशेखै, इह भव जस, परभव सुख देखै

जो तप तपै खपे अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा ।
साधु-समाधि सदा मन लावै, तिहुं जगभोग भोगि शिव जावै ।।

निश-दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव-नीर तिरैया ।
जो अरहत-भगति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ।।

जो आचरज-भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है ।
बहुश्रुतवंत-भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई ।।

प्रवचन-भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानंद-दाता ।

षट् आवश्य काल जो साधै, सो ही रत्न-त्रय आराधै ।।
धरम-प्रभाव करैं जे ज्ञानी, तिन-शिव-मारग रीति पिछानी ।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ।।

दोहा

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव-इन्द्र-नर-वंद्य-पद, 'द्यानत' शिव-पद होय ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुद्धियादि षोडशकारणेभ्य पूर्णार्घं निर्व०

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सुधारक धारै,
कर्म अनेक हने अति दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै ।।
दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भव-सागरको पर पार उतारै,
'ज्ञान' कहे यही षोडशकारण कर्म निवारण सिद्ध सुधारै ।।

इत्याशीर्वाद

पंचमेरु पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

[गीता छन्द]

तीर्थंकरोंके न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंच मेरुनकी सदा।
दो जलधि ढाई द्वीपमें सब गनंत-मूल विराजहीं,
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख दुख भाजहीं।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा-समूह! अवतर अवतर सवौषट्।

ॐ ह्रीं पचमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

चौपाई आंचलीबद्ध

शीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पाँचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ॐ ह्री सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालि-पचमेरुसम्बन्धि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जल केशर कपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पाँचो मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख हो, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो चन्दनं नि०।।२।।

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों० ।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अक्षतम्।।३।।

बरन अनेक रहे महकाय, फूलसौं पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों० ।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो पुष्प नि०।।४।।

मन वांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजों श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों० ।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्य नि०।।५।।

तम-हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसों पूजौं श्रीजिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों० ।।

ॐ ह्रीं पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो दीप।।६।।

खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों० ।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो धूप नि०।।७।।

सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों० ।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो फल नि०।।८।।

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।। पाँचों० ।।

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्य नि०।।९।।

जयमाला

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मदर कहा ।
विद्युन्माली नाम, पंच मेरु जग मे प्रगट ।।

केसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वनभूपर छाजै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।
ऊपर पंच-शतकपर सौहै, नंदन-वन देखत मन मोहै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।
ऊँचा जोजन सहस-छतीसं, पाण्डुक-वन सौहै गिरि-सीसं ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।
चारों मेरु समान बखाने, भूपर भद्रसाल चहुं जाने ।

चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।

ऊँचे पाँच शतक पर भाखे, चारों नंदनवन अभिलाखे ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।

साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सोमनस चार बहुरंगा ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।

उच्च अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।

सुर नर चारन बंदन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन बंदना हमारी ।।

दोहा

पंचमेरु आरती, पढ़े सुनै जो कोय ।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महासुख होय ।।

ॐ ह्री पचमेरुमम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घं नि०

नन्दीश्वरद्वीप-पूजा

[कविवर द्यानतरायजी]

सरब परब में बड़ो अठाई परब है।
नंदीश्वर सुर जांहि लेय वसु दरब है।।
हमैं सकति सो नाहिं इहां करि थापना।
पूजैं जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिन प्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर मवोषट्।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिन प्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिन प्रतिमासमूह!

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कंचन-मणि मय-भृंगार, तीरथ-नीर भरा।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा।।
नंदीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव-धरों।।

नंदीश्वर द्वीप महान चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मन्दिर जान सुर नर मन मोहे।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिणदिक्ष द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।।१।।

भव-तप-हर शीतल वास, सो चदन नाहीं ।
प्रभु यह गुन कीजै साच, आयो तुम ठाहीं ।। नन्दी० ।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो भवतापविनाशनाय चन्दन।।२।।

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहै ।
सब जीते अक्ष-समाज, तुमसम, अरु को है ।। नन्दी० ।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलनसौं ।
लहुं शील-लक्ष्मी एव, छूटों सूलनसो ।। नन्दी० ।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो कामबाणविध्वमनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

नेवज इंद्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा ।
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा ।। नन्दी० ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीतिस्वाहा।।५।।

दीपककी ज्योति-प्रकाश, तुम तन मांहिं लसै ।
टूटे करमनकी राश, ज्ञान-कणी दरसै ।। नन्दी० ।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

कृष्णागुरु-धूप सुवास, दश-दिशि नारि वरैं ।
अति हरष-भाव परकाश, मानों नृत्य करें ।। नन्दी० ।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

बहुविधि फल ले तिहुँ काल, आनँद राचत हैं ।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत है ।। नन्दी० ।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत भूमि समरपतु हों ।। नन्दी० ।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीतिस्वाहा।।९।।

जयमाला

दोहा।

कार्तिक फागुन साढके अंत आठ दिन मांहि ।
नंदीश्वर सुर जात है, हम पूजैं इह ठाहि ।। १ ।।

एकसौ त्रेसठ कोडि जोजन महा ।
लाख चौरासिया एक दिशमें लहा ।।
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ।। २ ।।

चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं ।
सहस चौरासिया एक दिश छाजहीं ।।
ढोल सम गोल ऊपर तले सुन्दर ।। भौन० ।। ३ ।।

एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी ।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी ।।
चहु दिशा चार वन लाख जोजन वर ।। भौन० ।। ४ ।।

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं ।
सहस दश महाजोजन लखत ही सुखं ।।
बावरी कौन दो माहि दो रतिकरं ।। भौन० ।। ५ ।।

शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे ।
चार सोलै मिले सर्व बावन लहे ।।
एक इक सीस पर एक जिनमंदिरं ।। भौन० ।। ६ ।।

बिंब अठ एक सौ रतनमयि सोहहीं ।
देव देवी सरव नयन मन मोहहीं ।।
पंचसै धनुष तन पद्म-आसन परं ।। भौन० ।। ७ ।।

लाल नखमुख नयन स्याम अरु स्वेत हैं ।
स्याम-रग भौंह सिर केश छबि देत हैं ।।
बचन बोलत मनों हंसत कालुष हर ।। भौन० ।। ८ ।।

कोटि-शशि-भानु-दुति-तेज छिप जात है ।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है ।।
बयन नहिं कहै लखि होत सम्यकधरं ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकर ।। भौन० ।। ९ ।।

सोरठा

नंदीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै ।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै ।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्विपञ्चाश-

ज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
[इत्याशीर्वाद । पुष्पाजलि क्षिपामि]

दशलक्षणधर्म-पूजा

[कविवर द्यानतरायजी]

अडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुँगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

हेमाचलकी धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि ।
भव-आताप निवार, दस–लच्छन पूजौं सदा ।। १ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-सत्य-शौचसयम-तपस्यागाकिच न्यब्रह्याचर्येति दशलक्षणधर्माय जल निर्वपामीति स्वाहा

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा ।
भव आताप निवार, दस लच्छन पूजौ सदा ।। २ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय चन्दन निर्व० स्वाहा।

अमल अखंडित सार, तंदुल चन्द्र समान शुभ ।
भव आताप निवार, दस लच्छन पूजौ सदा ।। ३ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अक्षत निर्व० स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों ।
भव आताप निवार, दस लच्छन पूजौ सदा ।। ४ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय पुष्प निर्व० स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट-रस-संजुगत ।
भव आताप निवार, दस लच्छन पूजौ सदा ।। ५ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपक–जोति सुहावनी ।
भव-आताप निवार, दस–लच्छन पूजौं सदा ।। ६ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगंधता ।
भव-आताप निवार, दस–लच्छन पूजौं सदा ।। ७ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्राण-नयन-मन-मोहने ।
भव-आताप निवार, दस–लच्छन पूजौं सदा ।। ८ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय फल निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब सवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भव-आताप निवार, दस–लच्छन पूजौं सदा ।। ९ ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

अंगपूजा

सोरठा

पीडैं दुष्ट अनके, बाँध मार बहुविधि करैं ।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ।।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस, पर भव सुखदाई ।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ।।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बाँध मार बहुविधि करैं ।
घरतैं निकारैं तन विदारैं, बैर जो न तहाँ धरैं ।।

तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा।।

ॐ ह्री उत्तम-क्षमा-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

मान महाविषरूप, करहि नीच गति-जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।

उत्तम मार्दव-गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
वस्यो निगोद माहितैं आया, दमरी रूकन भाग बिकाया।।

रूकन बिकाया भाग-वशतैं, देव इकइंद्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।

जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जनकी, ज्ञान का पावैं उदा।।

ॐ ह्री उत्तममार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

कपट न कीजै कोय, चोरनके पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा।।

उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मनमें हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करिये।।

करिये सरल तिहुँ जोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अंगारसी।।

नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, कर्म-बंध-विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता।।

ॐ ह्री उत्तमार्जव धर्मांगराय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

कठिन बचन मत बोल, पर निंदा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी।।

उत्तम सत्य-वरत पालीजे, पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
सांचे झूठ मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।।

पेखो तिहायत पुरुष सांचे को दरब सब दीजिए ।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा साँच गुण लख लीजिये ।।
ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया ।
बच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया ।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसों ।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में ।।

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना ।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावैं संतोषी प्रानी ।।
प्रानी सदा शुचि शील जप, तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं ।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं ।।
ऊपर अमलमल भर्योभीतर, कौनविधि घट शुचि कहै ।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै ।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो ।
संयम-रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं ।।

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भवके भाजैं अघ तेरे ।
सुरग-नरक-पशुगतिमें नाहीं, आलस-हरन-करन सुख ठाहीं ।।
ठाहीं पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो ।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो ।।
जिस बिनानहिं जिनराजसीझे, तू रुल्यो जग कीच में ।
इक घरी मत विसरोकरो नित, आवजम-मुख बीच में ।।

ॐ ह्रीं उत्तम सयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

तप चाहे सुरराय, करम-सिखरकों वज्र है ।
द्वादशविधिसुखदाय, क्योंन करैं निज सकति सम ।।

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैलको वज्र समाना ।
बस्यो अनादि-निगोद-मँझारा, भू-विकलत्रय-पशु-तन धारा ।।

धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता ।
श्रीजैनवानी तत्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता ।।

अति महा दुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरैं ।
नर-भव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरैं ।।

ॐ ह्री उत्तम तपो धर्मांगाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए ।
धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए ।।

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा ।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै ।।

दोनों संभारे कूप-जलसम, दरब घर में परिनया ।
निज हाथ दीजे साथ लीजे खाय खोयाबह गया ।।

धनि साध शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग विरोध को ।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहै नाहीं बोध को ।।

ॐ ह्री उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

परिग्रह चौबिस भेद त्याग करैं मुनिराज जी ।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए ।।

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिंता दुख ही मानो ।
फाँस तनकसी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै ।।

भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरै ।
धनि नगन पर तन-नगन ठाढ़े, सुर-असुर पायनि परैं ।।

घरमाहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं ।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगारसौं ।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्मा-भाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा।।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहै बान–बरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे।।

कूरे तियाके अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचें भरैं।।

संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दस पैंडि चढ़िकै, शिव महल में पग धरा।।

ॐ ह्री उत्तम ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

समुच्चय-जयमाला

दोहा

दस लच्छन बंदों सदा, मन वांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय।।

वेसरी छन्द

उत्तम छिमा जहाँ मन होइ, अंतर-बाहिर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै।।

उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सौ प्रानी संसार न डोले।।

उत्तम शौच लोभ-परिहारी, संतोषी गुण-रत्न भंडारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता।।

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करम-शत्रु को टालै।
उत्तम त्याग करे जो कोई भोगभूमि-सुर शिवसुख होई।।

उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विस्तारे।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर-सुर सहित मुकति-फल पावै।।

दोहा

करै करमकी निरजरा, भव पींजरा विनाश ।
अजर अमर पद को लहै, 'द्यानत' सुखकी राश ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, सयम, तप, त्याग आकिचन्य, ब्रह्मचर्य दश-लक्षण-धर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय-पूजा

चहुंगति-फनि-विष-हरन-मणि दुख-पावक-जल-धार ।
शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक-त्रयी निहार ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म! अत्र अवतर अवतर सवोषट्।
ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक (सोरठा छन्द)

क्षीरोदधिउनहार,उज्ज्वलजलअतिसोहनो ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। १ ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जल निर्व०।

चंदन-केसर गारि, परिमल-महा-सुरंग-मय ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। २ ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय भवतापविनाशनाय चन्दन निर्व०।

तंदुल अमल चितार, वासमती-सुखदासके ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। ३ ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।

महकैं फूल अपार, अलि गुंजैं ज्यों थुति करैं ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। ४ ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वसनाय पुष्प निर्व०।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। ५ ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनासनाय नैवेद्य निर्व०।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। ६ ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनायदीप निर्व०।

धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूर की ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। ७ ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्व०।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ।।८।।

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूँ ।। ९ ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्व०।

सम्यक्दरशन ज्ञान,व्रतशिव-मग-तीनोंमयी ।
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजों व्रतसहित ।। १० ।।

ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन-पूजा

दोहा

सिद्ध अष्ट-गुनमय प्रगट, मुक्त-जीव-सोपान ।
ज्ञान चरित जिह बिन अफल, सम्यक्दर्शन प्रधान ।।

ॐ ह्री अष्टागसम्यग्दर्शन! अत्र अवतर अवतर सवोषट्।
ॐ ह्री अष्टागसम्यग्दर्शन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।

ॐ ह्री अष्टागसम्यग्दर्शन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करे।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।१।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।२।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शनयाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।। ३ ।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दशन अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।। ४ ।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।। ५ ।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-ज्योति तमहार, घट पट परकाशै महा ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।। ६ ।।

ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शनयाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।७।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनयाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफलआदिविथार,निहचैसुर-शिव-फलकरैं ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ।। ८ ।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारू, दीप धूप फल फूल चरू।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा।।९।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शनाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आप आप निहचै लखै, तत्त्व-प्रीति व्योहार ।
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार ।।१।।

सम्यक् दरशन-रत्न गहीजै, जिन-वचमें संदेह न कीजै ।
इह भवविभव-चाह दुखदानी, पर-भव भोग चहै मत प्रानी।।

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरू प्रभु परखिये ।
पर-दोष ढकिये, धरम डिगते को सुथिरे कर, हरखिये।।

चहुं संघको वात्सल्य कीजै, धरमकी परभावना ।
गुन आठसों गुन आठ लहिकै, इहां फेर न आवना।।

ॐ ह्री अष्टागसहित पचविशति दोषरहित सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्य।

सम्यग्ज्ञान पूजा

दोहा

पंच भेद जाके प्रकट, ज्ञेय-प्रकाशन-भान ।
मोह-तपन-हर चद्रमा, सोई सम्यकज्ञान।।१।।

ॐ ह्री अर्ष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।

ॐ ह्री अर्ष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।

ॐ ह्री अर्ष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छल करै।

सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।१।।

ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ-भेद पूजौं सदा।।२।।

ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय चदन निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।३।।

ॐ ह्री अस्टविध सम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।४।।

ॐ ह्री अर्ष्टविध सम्यग्ज्ञानाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।५।।

ॐ ह्री अर्ष्टविध सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-जोति तम-हार, घट-घट परकाशै महा।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।६।।

ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय दीप निर्वपामीति स्वाहा

धूप घ्रान-सुखकार रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।७।।

ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार निहचै सुर-शिव फल करै।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा।।८।।

ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।

सम्यग्ज्ञान विचा, आठ भेद पूजौं सदा।।९।।

ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आप आप जानै नियत, गन्थ पठन व्यौहार ।
सशय विभ्रम मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार।।

सम्यक् ज्ञान-रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया ।
अच्छर शुद्ध अर्थ ' चानो, अच्छर अरथ उभय सँग जानो।।

जानो सुकाल-पठन जिनागम, नाम गुरू न छिपाइये ।
तप रीति गहि बहु मौन देकै, विनय गुण चित लाइये।।

ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पण देखना ।
इस ज्ञान ही सो भग्त सीझा, और सब पटपेखना।।

ॐ ह्री अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्य निवपामीति स्वाहा।

सम्यक-चारित्र पूजा

दोहा

विषय-रोग औषध महा, दव-कषाय-जल-धार ।
तीर्थकर जाको धरै सम्यकचारित सार।।

ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सोरठा

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।१।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय जल निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा।।२।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।३।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्व०।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।४।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय पुष्प निर्व०।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौ सदा।।५।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-जोति तम-हार, घट पट परकाशै महा।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।६।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जडता हरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।७।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिव फल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।८।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा।।९।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आप आप थिर नियत नय, तप संजम व्यौहार ।
स्व-पर-दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार।।

चौपाई मिश्रित गीताछन्द

सम्यकचारित रतन सँभालौ, पाँच पाप तजिके व्रत पालौ ।
पचसमिति त्रय गुपति गहीजै, नरभव सफलकरहु तनछीजै।।
छीजै सदा तनको जतन यह, एक संजम पालिये ।
बहु रूल्यो नरक-निगोद माहीं, विष-कषायनि टालिये।।
शुभ करम जोग सुघाट आयो, पार हो दिन जात है ।
'द्यानत' धरमकी नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है।।२।।

ॐ ह्री त्रयोदशविध सम्यक्चारित्राय महार्घ्य निर्व० स्वाहा।

समुच्चय-जयमाला

दोहा

सम्यकदरशन-ज्ञान-व्रत, इन बिन मुकति न होय।
अन्ध पगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव-लोय।।१।।

चौपाई १६ मात्रा

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करम-बंदा कट जावै ।
तासों शिव-तिय प्रीति बढावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै।।
ताको चहु गति के दुख नाहीं, सो न परै भव-सागर माहीं ।
जनम-जरा-मृत दोष मिटावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै।।
सोई दश लच्छनको साधै, सो सोलह कारण आराधै ।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै।।
सोई शक्र-चक्रिपद लेई, तीन लोकके सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव वहावै, जो सम्यक् रत्न-त्रय ध्यावै।।

सोई लोकालोक निहारै, परमानंद दशा विसतारै ।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक रत्न-त्रय ध्यावै।।

दोहा–एक स्वरूप-प्रकारा निज, वचन कह्रो नहिं जाय ।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय।।७।।

ॐ ह्री सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्राय महार्घ्यंनिर्व०।

क्षमावाणी पूजा

छप्पयछंद–अंग क्षमा जिन धर्म तनों दृढ़ मूल बखानो ।
सम्यक रतन संभाल हृदय में निश्चय जानो।।
तज मिथ्या विष मूल और चित निर्मल ठानो ।
जिनधर्मी सो प्रीति करो सब पातक भानो।।

रत्नत्रय गह भविक जन, जिन आज्ञा सम चालिए ।
निश्चय कर आराधना, कर्म राशि को जालिए।।

ॐ ह्री सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रयाय नम अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टकम्

क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय।।टेक।।
नीर सुगन्ध सुहावनो, पद्म द्रह को लाय।
जन्म रोग निरवारिये, सम्यक् रत्न लहाय।।क्षमा०।।१।।

प्रत्येक अग के पीछे नम बोलना है।

ॐ ह्री १ निशंकितागाय नम २ निकांक्षितांगाय नम ३ निर्विचिकित्सागाय नम ४ निर्मूढतायै नम ५ उपगूहनागाय नम ६ स्थितिकरणागाय नम ७ वात्सल्यागाय नम ८ प्रभावनागाय नम ९ ॐ ह्री व्यजन व्यंजिताय १० अर्थ समग्राय ११ तदुभय समग्राय १२ कालाध्ययनाय १३ उपध्यानोपन्हिताय १४ विनयलब्धिस हिताय १५ गुरूवादापन्हवाय १६ बहु मानोन्मानाय १७ ॐ ह्री अहिंसा व्रताय १८ सत्य व्रताय १९ अचौर्यव्रताय २० ब्रह्मचर्यव्रताय २१

अपरिग्रहव्रताय २२ मनोगुप्तये २३ वचन गुप्तये २४ कायगुप्तये २५ ईर्यासमितये २६ भाषा समितये २७ एषणा समितये २८ आदान निक्षेपण समितये २९ प्रतिष्ठापना समितये नम जल।

केसर चन्दन लीजिये, संग कपूर घसाय।
अलि पंकति आवत घनी, बास सुगन्ध सुहाय।।क्षमा० २।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रे-भ्यो नम चन्दन निर्वपामि०।।२।।

शालि अखंडित लीजिए, कंचन थाल भराय।
जिनपद पूजों भावसों, अक्षयपद को पाय।।क्षमा०।।३।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्र-भ्यो अक्षतान् निर्वपामि०।।३।।

पारिजात अरू केतकी, पहुप सुगन्ध गुलाब।
श्रीजिन चरण सरोजकूं, पूज हरष चित चाव।।क्षमा० ४।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो नम पुष्प निर्वपामि०।।४।।

शक्कर घृत सुरभी तनों, व्यंजन षट्रस स्वाद।
जिनके निकट चढ़ाय कर, हिरदे धरि आहलाद।।क्षमा० ५।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान त्रयोदशविध सम्यकचारित्रेभ्यो नम नैवेद्य निर्वपामि० ।।५।।

हाटकमय दीपक रचो, बाति कपूर सुधार।
शोधक घृतकर पूजिये, मोह तिमिर निरवार ।।क्षमा० ६।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टॉग सम्यग्ज्ञान त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रे-भ्यो नम दीप निर्वपामि० ।।६।।

कृष्णागर करपूर हो, अथवा दश विध जान।
जिन चरणां ढिग खेइये, अष्ट करम की हान।।क्षमा० ७।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्

चारित्रेभ्यो नम धूप निर्वपामि० ।।७।।

केला अम्ब अनार हो, नारिकैल ले दाख।
अग्रधरों जिन पद तने, मोक्ष होय जिन भाख।क्षमा० ८।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यक्चारित्रे-भ्यो नम फल निर्वपामि० ।।८।।

जल फल आदि मिलाइके, अरघ करो हरषाय।
दुख जलांजलि दीजिए, श्रीजिन होय सहाय ।।क्षमा० ९।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान त्रयोदशविध चारित्रेभ्यो नम अर्घ्यं निर्वपामि० ।।९।।

जयमाला

दोहा—उनतिस अग की आरती, सुनो भविक चित लाय।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भव पाय।।१।।

चौपाई

जैनधर्म में शक न आनै, सो निःशंकित गुण चित ठानै।
जप तप कर फल वाछे नाही, नि:कांक्षित गुण हो जिस माहीं।।२।।

परको देखि गिलान न आने, सो तीजा सम्यक् गुण ठाने।
आन देवको रच न माने, सो निर्मूढता गुण पहिचाने।।३।।

परको औगुण देख जु ढाके, सो उपगूहन श्रीजिन भाखे।
जैन धर्म ते डिगता देखे, थापे बहुरि थिति कर लेखे।।४।।

जिनधर्मी सो प्रीति निवहिये, गऊ बच्छावत् बच्छल कहिये।
ज्यो त्यों जैन उद्योत बढ़ावे, सो प्रभावना अंग कहावे।।५।।

अष्ट अंग यह पाले जोई, सम्यग्दृष्टि कहिये सोई।
अब गुण आठ ज्ञान के कहिये, भाखे श्रीजिन मन में गहिये।।६।।

व्यंजन अक्षर सहित पढ़ीजे, व्यंजन व्यजित अंग कहीजे।
अर्थ सहित शुध शब्द उचारे, दजा अर्थ समग्रह धारे।।७।।

तदुभय तीजा अंग लखीजे, अक्षर अर्थ सहित जु पढ़ीजे।
चौथा कालाध्ययन विचारै काल समय लखि सुमरण धारे।।८।।

पंचम अंग उपधान बतावै, पाठ सहित तब बहु फल पावै।
षष्टम विनय सुलब्धि सुनीजै, वानी विनय युक्त पढ़लीजे।।९।।

जापै पढ़ै न लौपै जाई, सप्तमअंग गुरूवाद कहाई।
गुरूकी बहुत विनयजु करीजे, सो अष्टम अंग धर सुख लीजे।।१०।।

यह आठों अंग ज्ञान बढ़ावें, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावैं।
अब आगे चारित्र सुनीजे, तेरह विध धर शिव सुख लीजे।।११।।

छहों कायकी रक्षा कर है, सोई अहिंसाव्रत चित धर है।
हितमितसत्य वचन मुख कहिये, सो सतवादी केवल लहिये।।१२।।

मन वच काय न चोरी करिये, सोई अचौर्यव्रत चित धरिये।
मन्मथ भय मन रंच न आने, सो मुनि ब्रह्मचर्य व्रत ठाने।।१३।।

परिग्रह देख न मूर्छित होई, पंच महाव्रत धारक सोई।
ये पाँचो महाव्रत सुखरे हैं, सब तीर्थंकर इनको करे हैं।।१४।।

मनमे विकलप रंच न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिये सोई।
वचन अलीक रंच नहिं भाखे, वचनगुप्तिसो मुनिवर राखें।।१५।।

कायोत्सर्ग परीषह सहि हैं, ता मुनि कायगुप्ति जिन कहि हैं।
पंच समिति अब सुनिए भाई, अर्थ सहित भाषे जिनराई।।१६।।

हाथ चार जब भूमि निहारे, तब मुनि ईर्य्या मग पद धारे।
मिष्ट वचन मुख बोले सोई, भाषा समिति तास मुनि होई।।१७।।

भोजन छयालिस दूषण टारे, सो मुनि एषण शुद्धि विचारे।
देखके पोथी ले अरू धरि हैं, सो आदान निक्षेपन वरि हैं।।१८।।

मल मूत्र एकान्त जु डारें, परतिष्ठापन समिति संभारे।
यह सब अंग उनतीस कहे हैं, श्रीजिन भाखे गणेश गहे हैं।।१९।।

आठ आठ तेरह विध जानों, दर्शन ज्ञान चारित्र सुठानो।

तातें शिवपुर पहुँचो जाई, रत्नत्रय की यह विधि भाई।।२०।।
रत्नत्रय पूरण जब होई, क्षमा क्षमा करियो सब कोई।
चैत माघ भादों त्रय वारा, क्षमा क्षमा हम उरमें धारा।।२१।।

दोहा—यह क्षमावणी आरती, पढ़ें सुने जो कोय।
कहे 'मल्ल' सरधा करो, मुक्ति श्रीफल होय।।२२।।

ॐ ह्री अष्टाग सम्यग्दर्शन, अष्टाग सम्यग्ज्ञान, त्रयोदशविध सम्यकचारित्रेभ्यो महार्घ्य निर्वपा०।।१०।।

सोरठा—दोष न गहिये कोय, गुण गण गहिये भावसों।
भूल चूक जो होय, अर्थ विचारि जु शोधिये।।

इत्याशीर्वाद ।

श्री वीर निर्वाणोत्सव

दीपावली-पूजन

जिस समय अधर्म बढ रहा था, धर्म के नाम पर असख्य पशुओ को **यज्ञ की** बलि-वेदी पर होमा जाता था, ससार मे अज्ञान छा रहा था और जब ससार के लोग आत्मा के उद्धार करने वाले सत्य मार्ग को भूल रहे थे, ऐसे भयकर **समय** मे जगत के प्राणियो को सत्यमार्ग दर्शाने, दुख पीडित विश्व को सहानुभूति का **अन्तिम** दान देने और सार्व-भौमिक परमधर्म अहिसा का सन्देश सुनाने के लिए इस पुनीत भारत वसुन्धरा पर अबसे ढाई हजारवर्ष पहिले कुण्डलपुर मे भगवान महावीर ने जन्म धारण किया था। तेईसवे तीर्थकर श्री पार्श्वनाथ जी के २५६ वर्ष ३।। माह बाद महावीर का जन्म हुआ था।

अपने दिव्य जीवन मे उन्होने अहिसा, विश्वमैत्री और आत्मोद्धार का उत्कृष्ट आदर्श उपस्थित किया था और अन्त मे अपने पवित्र लक्ष्य को स्वय **प्राप्त** कर लिया था। भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य के आदर्श को उपस्थित **करने के** लिये आजन्म ब्रह्मचारी रहते हुए दुर्धर तप धारण कर ४२ **वर्ष की उम्र मे** ही आत्मा के प्रबल शत्रु **चार घातिया कर्मो** का नाश कर **लोकालोक प्रकाशक** केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया और भव्य जीवो को दिव्य ध्वनि द्वारा

आत्मा के उद्धार का मार्ग बताया। ७२ वर्ष की उम्र के अन्त मे श्री **शुभ मिती कार्तिक कृष्ण चर्तुदशी के अन्त समय (अमावस्या के अत्यन्त प्रात: काल) स्वातिनक्षत्र मे मोक्ष-लक्ष्मी को प्राप्त किया।**

उसी समय भगवान के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी को केवल ज्ञान रूपी लक्ष्मी प्राप्त हुई और देवो ने रत्नमयी दीपको द्वारा प्रकाश कर उत्सव मनाया तथा हर्ष-सूचक मोदक (नैवेद्य) आदि से पूजा की। तब से इन दोनोमहान् आत्माओ की स्मृति स्वरूप यह निर्वाणोत्सव समस्त भारतवर्ष मे मनाया जाता है।

सच्ची लक्ष्मी तो आत्मा के गुणो का पूर्ण विकास, केवल-ज्ञान हो जाना तथा मोक्ष-प्राप्ति ही है। अत हमे उस दिन महावीर स्वामी, गौतम-गणधर और केवल ज्ञान रूपी लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। इन गुणो की पूजा करने पर रुपया-पैसा आदि सासारिक लक्ष्मी प्राप्त होना तो साधारण-सी बात है।

दीपमालिका के दिन प्रात काल उठकर सामायिक, स्तुति पाठ कर शौच स्नानादि से निवृत्त हो श्री जिन मदिर मे पूजन करनी चाहिए और निर्वाण पूजा, निर्वाणकाड, महावीराष्टक बोल कर निर्वाण लाडू चढाना चाहिये।

नई बही मुहूर्त की सामग्री ।

अष्ट द्रव्य धुले हुए, धूपदान, दीपक, लाल कपडा, सरसो थाली, श्रीफल, लोटा जल का, नाला (धागा), शास्त्र, धूप, अगरबत्ती, पाटे, चौकी २, कुकुम, केशरघिसी हुई कोरे पान, दवात, कलम, सिदूर घी मे मिलाकर (श्री महावीराय नम और लाभ शुभ दुकानकी दीवाल पर लिखने को) फूलमालाये नई बहिया आदि।

नई बहियों के मुहूर्त की विधि

सायकाल को उत्तम गोधूलिक लग्न मे अपनी दुकान के पवित्र स्थान मे नई बहियो का नवीन सवत् मे शुभमुहूर्त करे। उसके लिये ऊँची चौकी पर थाली मे केशर से ॐ श्री महावीराय नम लिखकर दूसरी चौकी पर शास्त्र जी विराजमान करे, और एक थाली मे साथिया माडकर सामग्री चढाने के लिये रखे। अष्टद्रव्य-जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल, अर्घ्य बनावे। बहिया, दवात, कलम आदि पास मे रखले, दाहिनी ओर घी का दीपकउ

बाई ओर धूपदान रहना चाहिये। दीपक में घृत इस प्रमाण से डाला जाय कि रात्रि भर वह दीपक जलता रहें इस प्रकार पूजा आरम्भ करे। पूजा करने के लिये कुटुम्बियो को पूर्व या उत्तर मे बैठना चाहिए। पूजा करने के लिये कुटुम्बियो को पूर्व या उत्तर मे बैठना चाहिए। पूजा गृहस्थाचार्य द्वारा या स्वय करनी चाहिए। सबसे प्रथम पूजन मे बैठे हुए सर्व सज्जनो को तिलक लगाना चाहिये उस समय यह श्लोक पढे —

मंगलं भगवान वीरो, मगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

पश्चात् पूजा प्रारम्भ करे।

अर्हंतो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः ।
आचार्या जिन शासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।।
श्रीसिद्धांत-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः ।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिन कुर्वन्तु नः मंगलम्।।२।।

नितय नित्यम पूजा पेज नं 23
श्री देव शास्त्र गुरु पूजा पेज नं 29 या अर्घ्यं 546
श्री बीस तीर्थंकर पूजा पेज नं 42 या अर्घ्यं 546
अकृत्रिम चैत्यालोके अर्घ्यं पेज नं 45
श्री सिद्ध परमेश्ठी पूजा पेज नं 53 या अर्घ्यं 547

या इन तीनो पूजाव चैत्यालोके अर्घ्यं कि जग इकाठी तीनो पूजा करे

समुच्चय चौबीसी पूजा पेज नं 57 या अर्घ्यं 548
श्री महावीर जीन पूजा पेज नं 188..
श्री सरस्वती पूजा पेज नं 201..
गौतम स्वामी का अर्घ्यं पेज नं ....

इस प्रकार पूजा व अर्घ्यं चढाकर लाभ आदि मे विघ्न करने वाले अन्तराय कर्मो को दूर करने के लिये नीचे लिखा हुआ अर्घं चढावे -

अन्तराय-नाशार्थ अर्घ्य।

लाभ की अंतराय के वश जीव सुख ना लहै ।
जो करे कष्ट उत्पात सगरे कर्मवश विरथा रहे।।
नहिं जोर वाको चले इक छिन दीनसो जगमें फिरे ।
अरहत सिद्धसु अधर धरिके लाभ यों कर्म को हरे।।

ॐ ह्री लाभातराय-कर्म-रहिताभ्या अर्हत-सिद्ध-परमेष्ठिभ्या अर्घ्यम् नि०

अतंराय है कर्म प्रबल जो दान लाभ का घातक है ।
वीर्य भोग उपभोग सभी में, विघ्न अनेक प्रदायक है।।
इसी कर्म के नाश हेतु श्री, वीर जिनेन्द्र और गणनाथ ।
सदा सहायक हों हम सब के, विनती करें जोड़कर हाथ।।

(यहा पर पुष्प क्षेपणकर हाथ जोडे)

इसके बाद हर एक बही मे केशरसे साथिया माडकर एक एक कोरा पान रखे और निम्न प्रकार लिखे —

लाभ 卐 शुभ

श्री ऋषभदेवाय नम· श्री महावीराय नमः
श्री गौतम-गणधराय नम· श्री केवलज्ञान-लक्ष्म्यै नमः

श्री जिन सरस्वत्यै नमः ।

श्री शुभ मिती कार्तिक कृष्णा अमावस्या वीर नि० सवत २५
विक्रम स० दिनाक मास सन् ई० . .....**वार**
को श्री की . .. ...
दुकान की वही का शुभ मुहूर्त किया।

इसके बाद नीचे लिखा हुआ पद्य व मन्त्र पढकर शुभकामना करे

पद्य ।

आरोग्य बुद्धि धन धान्य समृद्धि पावें ।
भय रोग शोक परिताप सुदूर जावें।।
सद्धर्म शास्त्र गुरू भक्ति सुशांति होवे ।
व्यापार लाभ कुल वृद्धि सुकीर्ति होव।।१।।
श्री वर्द्धमान भगवान सुबुद्धि देवें ।
सन्मान सत्यगुण संयम शील देवें।।
नव वर्ष हो यह सदा सुख शांतिदाई ।
कल्याण हो शुभ तथा अति लाभ होवे ।।२।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत-सिद्धाचार्योपाध्याय-साधव शाति पुष्टि च कुरुत कुरुत स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ-स्तोत्र

भुजग–प्रयात छन्द।

नरेन्द्रं फणीन्द्र सुरेन्द्र अधीशं ।
शतेन्द्र सु पूजैं भजैं नाय शीशं।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्र नमों जोड़ि हाथं ।
नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथ ।।१।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्र गहयो तू छुड़ावै ।
महा आगतैं नागतैं तू बचावै।।
महावीरतैं युद्ध में तू जितावै।
महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै ।।२।।

दुखी दुखहर्ता सुखी सुक्खकर्ता ।
सदा सेवकों को महानन्द भर्ता।।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं ।
विष डांकिनी विघ्न के भय अवाचं ।।३।।

दरिद्रीन को द्रव्यके दान दीने ।
अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।।
महासंकटो से निकारै विधाता।
सबै संपदा सर्व को देहि दाता ।।४।।

महाचोर को वज्रको भय निवारे ।
महापौनके पुंजतै तू उबारै।।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा ।
महालोभ-शैलेश को वज्र भारा ।।५।।

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं ।
महा-कर्म कांतार को दौ प्रधानं।।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी ।
हरचो मान तू दैत्यको हो अकामी ।।६।।

तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनं ।
तुही दिव्य चिंतामणी नाग एनं।।
पशू नर्क के दुखतैं तू छुड़ावै ।
महास्वर्गतै मुक्ति मैं तू बसावै ।।७।।

करैं लोह को हेम पाषाण नामी ।
रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा ।
सुन वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ।।८।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै ।
धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै।।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे ।
तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे ।।९।।

दोहा—गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान।।१०।।

महावीराष्टक-स्तोत्रम्

(कविवर भागचन्द)

शिखरिणी छन्द

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भान्ति ध्रौव्यव्यय-जनि-लसन्तोअन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन परो भानुरिव यो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।१।।

अताम्रं यच्चक्षु कमल-युगलं स्पन्द-रहितं
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।२।।

नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा जाल जटिल
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जल वा स्मृतमति
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।३।।

यदर्च्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्ध सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ता शिव-सुख-समाजं किमुतदा
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।४।।

कनत्स्वर्णाभासोअप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोद्भुत-गतिर्
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु में।।५।।

यदीया वाग्गगां विविध-नय-कल्लोल-विमला

बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।६।।

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः
कुमारावस्थयामपि निज-बलाद्येन विजितः
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।७।।

महामोहातंक-प्रशमन-पराकस्मिक-भिषक्
निरापेक्षो बन्धु विदित-महिमा मंगलकरः।
शरण्यः साधूना भव-भयभृतामुत्तमगुणो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे।।८।।

महावीराष्टक स्तोत्र भक्त्या 'भागेन्दु' ना कृतम।
यः पठेच्छ्रणुयाच्चापि स याति परमां गतिम्।।९।।

महावीरराष्टक स्तोत्र (भाषा)

चेतन अचेतन तत्त्व जेते, हैं अनन्त जहान में,
उत्पाद व्यय ध्रुवमय मुकुरवत्, लसत जाके ज्ञान में।।
जो जगतदरशी जगत में सन्मार्ग दर्शक रवि मानो,
ते महावीर स्वामीजी हमारे, नयनपथ गामी बनो।।१।।

टिमिकार बिन युग कमल लोचन, लालिमा तैं रहित हैं,
ब्रह्मा अन्तर की क्षमा को, भविजनों से कहत हैं।।
अति परम पावन शांतिमुद्रा, जासु तन उज्वल घनो,
ते महावीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।२।।

जिहिं स्वर्गवासी विपुल सुरपति नम्र तन ह्वै नमत हैं,
तिन मुकुटमणि के प्रभा मंडल पद्म पद में लसत हैं।।
जिन मात्र सुमरन रूप जलसे हैन भव आतप घनो,
ते महावीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।३।

मन मुदित ह्वैमंडूक ने प्रभु पूजवे मनसा करी,
ततुछन लही सुर सम्पदा बहुऋद्धि गुणनिधि सों भरी।।
जिहिं भक्ति सों सद्‌भक्त जन लहैं, मुक्तिपुर को सुख घनो,
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।४।।

कंचन तपतवत ज्ञाननिधि हैं, तदपि ज्ञान वर्जित रहें,
जो हैं अनेक तथापि इक, सिद्धार्थ सुत भव रहित हैं।।
जो वीतरागी गति रहित हैं तदपि अद्‌भुत गति पनो,
ते महावीर स्वामीजी हमारे, नयन पथगामी बनो।।५।।

जिनकी वचन मय अमल सुरसरि, विविध नय लहरै धरै,
जो पूर्ण ज्ञान स्वरूप जल से न्हवन भविजन को करें।।
तामें अजों लगि घने पंडित हंस ही सोहत मनो,
ते महावीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।६।।

जाने जगत की जंतु जनता, करी स्ववश तमाम है,
है वेग जाको अमिट ऐसो,विकट अतिभट काम है।।
ताको स्वबल से प्रौढवय में शांति शासन हित हनो,
ते महावीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।७।।

भयभीत भव में साधुजन को शरण उत्तम गुण भरे,
निस्वार्थ के ही जगत बांधव, विदित यश मंगल करे।।
जो मोह रूपी रोग हनिवे वैद्यवर अद्‌भुत मनो,
ते वीर स्वामीजी हमारे नयन पथगामी बनो।।८।।

दोहा—महावीर अष्टक रच्यो, भागचन्द रुचि ठान।
पढै सुनै जो भाव सों, ते पावें निरवान।।

स्वयंभू स्तोत्र भाषा

चौपाई

राज विषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयबोध स्वयभू भगवान, बदौं आदिनाथ गुणखान।।१।।
इन्द्र क्षीरसागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।

मदनविनाशक सुखकरतार, **बदौंअजित अजित-पदकार।।२।।**
शुक्लध्यानकरि कम्मविनाशि, घाति अघाति **सकलदुखराशि।**
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, बदौ सभव भव दुख टार।।३।।
माता पश्चिम रयनमझार, सपने देखे सोलह सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बदौं **अभिनदन मनलाय।।४।।**
सब कुवाद वादी सरदार, जीते **स्यादवाद धुनि** धार।
जैनधरम परकाशक स्वाम, सुमतिदेवपद करहुँ प्रणाम।।५।।
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभ अधिकाय।
वरसे रतन पचदश मास, नमो पदमप्रभु सुख की राश।।६।।
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र त्रिकाल, वानी सुनि सुनि होहि खुशाल।
द्वादश सभा ज्ञानदातार नमो सुपारसनाथ निहार।।७।।
सुगन छियालीस है तुम माहि दोष अठारह कोऊ नाहि।
मोहमहातम नाशक दीप, **नमो** चद्रप्रभ राख समीप।।८।।
द्वादस विधि तप करम विनाश, तेरह विधि चारित्र प्रकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छाकदान, **बदौ** पुष्पदन्त मन आन।।९।।
भविसुखदाय सुरगतै **आय**, दशविधि धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह, **बदौ** शीतल धर्मसनेह।।१०।।
समता सुधा कोपविष नाश, द्वादशाग वानी परकाश।
चारसघ-आनद-दातार, नमो श्रेयास जिनेश्वर सार।।११।।
रतनत्रय चिरमुकुट विशाल, शोभे कठ सुगुन मनिलाय।
मुक्तिनार भरता भगवान, वासुपूज्य **बदौं** धर ध्यान।।१२।।
परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसत बदौ विमलनाथ भगवत।।१३।।
अन्तर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगबरव्रत को **धारि।**
सर्वजीवहित-राह दिखाय, नमो अनत वचन-**मनलाय।।१४।।**
सात तत्व पचासितकाय, नव पदार्थ छह द्रव्य बताय।

लोक अलोक सकलपरकाश, बदौं धर्मनाथ अविनाश।।१५।।

पचम चक्रवर्ति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शाँतिकरण सोलम जिनराय, शांतिनाथ बदौं हरषाय।।१६।।

बहुथुति करे हरष नहि होय, निंदे दोष गहैं नहि कोय।
शीलवान परब्रह्मास्वरूप, बदौ कुथुनाथ शिवभूप।।१७।।

द्वादशगण पज सुखदाय, थुति बदना करे अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहु न होय बदौं अरहजिनवर-पद दोय।।१८।।

परभव रत्नत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह समय वैराग।
बाल ब्रह्मा-पूरन ब्रत धार, बदो मल्लिनाथ जिनसार।।१९।।

बिन उपदेश स्वय वैराग, थुति लोकात करै पगलाग।
नम सिद्ध कहि सब व्रत लेहि, बदौं मुनिसुव्रत व्रत देहि।।२०।।

श्रावक विद्यावत निहार, भगति भावसो दियो अहार।
बरसी रतनराशि तत्काल बदो नमिप्रभु दीनदयाल।।२१।।

सब जीवन की बदो छार, रागद्वेष द्वै बधन तोर।
रजमल तज शिवतियसो मिले, नेमिनाथ बदौ सुखनिले।।२२।।

दैत्य कियो उपसर्ग अपार ध्यान देखि आयो फनधार।
गयो कमठ शठ मुखकरश्याम नमो मेरुसम पारसस्वाम।।२३।।

भवसागरतै जीव अपार, धरम पोत मे धरे निहार।
डूबत काढे दया विचार, वर्द्धमान बदौं बहुबार।।२४।।

दोहा

चौबीसों पदकमलजुग, बदौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुने सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय।।

तत्त्वार्थसूत्र

(आचार्य उमास्वामि विरचित)

त्रैकाल्य द्रव्य-षट्क नव-पद-सहितं जीव-षट् काय-लेश्या ।

पचान्ये चास्तिकाया व्रत-समिति-गति-ज्ञानचारित्र-भेदा ।।
इत्येतन्मोक्षमूल त्रिभुवन-महितै प्रोक्तमर्हद्‌भिरीशे ।
प्रत्येति श्रद्धधाति स्पृशति च मतिमान् य स वै शुद्धिदृष्टि ।।१।।

सिद्धे जयप्पसिद्धे चउविहाराहणाफल पत्ते।
वदित्ता अरहते वोच्छ आराहणा कमसो।।२।।

उज्जोवणमुज्जवण णिव्वाहण साहण च णिच्छरण।
दंसण-णाण-चरित्त तवाणमाराहणा भणिया।।३।।

मोक्षमार्गस्य नेतार भेत्तार कर्मभूभृताम्।
ज्ञातार विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्‌गुणलब्धये।।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्ष-मार्ग ।।१।। तत्त्वार्थ श्रद्धानसम्यग्दर्शनम्।।२।। तन्निसर्गादधिगमाद्वा।।३।। जीवाजीवास्रव-बन्ध-सवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम्।।४।। नाम-स्थापना-द्रव्य- भावतस्तन्न्यास ।।५।। प्रमाण-नयैरधिगम ।।६।। निर्देश- स्वामित्व-साधनाधिकरण स्थिति विधानत ।।७।। सत्सख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च।।८।। मति-श्रुतावधि-मन पर्यय-केवलानि ज्ञानम्।।९।। तत्प्रमाणे।।१०।। आद्ये परोक्षम्।।११।। प्रत्यक्षमन्यत्।।१२।। मति स्मृति सज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।।१३।। तिदिन्द्रियानिन्द्रिय निमित्तम्।।१४।। अवग्रहेहावाय-धारणा ।।१५।। बहु-बहुविध-क्षिप्रानि. सृतानुक्त-ध्रुवाणा सेतराणाम्।।१६।। अर्थस्य।।१७।। व्यञ्जनास्यावग्रह ।।१८।। न चक्षु रनिन्द्रियाभ्याम्।।१९।। श्रुत मति-पूर्व द्वयनेक-द्वादश-भेदम्।।२०।। भवप्रत्ययो-अवधिर्देव नारकाणाम्।।२१।। क्षयोपशमनिमित्त षड्विकल्प शेषाणाम्।।२२।। ऋजु-विपुलमती मन पर्यय.।।२३।। विशुद्धयप्रतिपाताभ्या तद्विशेष ।।२४।। विशुद्ध-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योअवधि-मन पर्यययो ।।२५।। मति-श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु।।२६।।

रूपिष्ववधे.।।२७।। तदनन्त-भागे मन पर्ययस्य।।२८।। सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य।।२९।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचातुर्भ्यः।।३०।। मति-श्रुतावधायो विपर्ययश्च।।३१।। सदसतोरविशेषाद्य दृच्छोपलब्धेरुन्मत्त वत्।।३२।। नैगमसंग्रह-व्यवहारर्जु-सूत्र-शब्द-समभिरूढैवंभूता नया।।३३।।

इति तत्वार्थाधिगम-मोक्षशास्त्रे प्रथमोध्याय।।१।।

औपशमिक क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्वमौदयिक-पारिणामिकौ च।।१।। द्वि-नवाष्टादशैक विंशति-त्रिभेदा यथाक्रमम्।।२।। सम्यक्त्व-चारित्रे।।३।। ज्ञानदर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च।।४।। ज्ञानाज्ञान दर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रि-पुञ्ज-भेदा सम्यक्त्व-चारित्र-संयमा संयमाश्च।।५।। गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयता सिद्ध-लेश्याश्चातुरश्चातुस्त्र्येकैकैकैक-षाड्भेदा ।।६। जीव-भव्याभव्यत्वानि च।।७।। उपयोगो लक्षणम्।।८।। स द्विविधोअष्टचतुर्भेद.।।९।। संसारिणो मुक्ताश्च।।१०।। समनस्कामनस्का:।।११।। ससारिणस्त्रस-स्थवरा ।।१२।। पृथिव्यप्तेजो-वायु वनस्पतय स्थावरा:।।१३।। द्वीन्द्रियादय स्रसा.।।१४।। पञ्जेन्द्रियणि।।१५।। द्विविधानि।।१६।। निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम।।१७।। लब्धयुपयोगौ भावेन्द्रियम् ।१८।। स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षु-श्रोत्राणि।।१९।। स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्था:।।२०।। श्रुतमानिन्द्रियस्य।।२१।। वनस्पतयन्ताना-मेकम्।।२२।। कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैक-वृद्धानि।।२३।। संज्ञिन: समनस्का:।।२४।। विग्रहगतौ कर्म योग.।।२५।। अनुश्रेणि गति:।।२६।। अविग्रहा जीवस्य।।२७।। विग्रहवती च संसारिण: प्राक् चतुर्भ्य:।।२८।। एकसमयाअविग्रहा।।२९।। ए

द्वौ त्रीन्वानाहारक ।।३०।। समूर्छन-गर्भोपपादा जन्म।।३१।। सचित्त-शीत-सवृता सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनय ।।३२।। जरायुजाण्डज-पोताना गर्भ ।।३३।। देव-नारकाणामुपपाद ।।३४।। शेषाणा सम्मूर्च्छनम्।।३५।। औदारिक- वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि।।३६।। पर पर सूक्ष्मम्।।३७।। प्रदेशतो असख्येयगण प्राक् तैजसात्।।३८।। अनन्त-गणे परे।।३९।। अप्रतीघाते।।४०।। अनादिसम्बन्दो च।।४१।। सर्वस्य ।।४२।। तदादीन भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्य ।।४३।। निरुपभोग मन्त्यम्।।४४।। गर्भ-समूर्च्छनजमाद्यम्।।४५।। औपपादिक वैक्रियिकम्।।४६।। लब्धिप्रत्यय च।।४७।। तैजसमपि।।४८।। शुभ विशुद्ध-मव्याघाति-चाहारक प्रमत्तसयतस्यैव।।४९।। नारक-संमूर्च्छिनो नंपुसकानि।।५०।। न देवा ।।५१।। शेषास्त्रिवेदा ।।५२।। औपपादिक - चरमोत्तमदेहाअसख्येय - वर्षायुषो अनपवर्त्यायुष ।।५३।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोअध्याय ।।२।।

रत्न - शर्करा- बालुका- पक- धूम- तमो- महातम - प्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाश- प्रतिष्ठा सप्ताअधोअध ।।१।। तासुत्रिंशत्पंचविंशति- पचदश- दश- त्रि- पचोनैक- नरक शतसहस्राणि पचचैव यथाक्रमम् ।।२।। नारका नित्याशुभतर-लेश्या- परिणाम- देह- वेदना- विक्रिया ।।३।। परस्परोदी रितदु खा ।।४।। सक्लिष्टधअसुरोदीरितधु खाश्च प्राक्चतुर्थ्या ।।५।। तेष्वेक- त्रिसप्त- दश- सप्तदश- द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वाना परा स्थिति ।।६।। जंबूद्वीपलवणोदादय शुभ- नामानो द्वीपसमुद्रा ।।७।। द्विर्द्विर्विष्कम्भा पूर्व- पूर्व- परिक्षेपिणो वलयाकृतय ।।८।। तन्मध्ये मेरु- नाभि- वृत्तो योजन- शतसहस्र- विष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।९।। भरतहैमवत- हरि- विदेह- रम्यक- हैरण्यवतैरावतवर्षा क्षेत्राणि

।।१०।। तद्विभाजिन्न पूर्वापरायता हिमवन्ममहाहिमवन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधरपर्वता ।।११।। हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममया ।।१२।। मणि-विचित्र-पार्श्वा उपरिमूले च तुल्य-विस्ताराः ।।१३।। पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केशरि-महापुण्डरीक-पुंडरीका हृदास्तेषमुपरि ।।१४।। प्रथमोयोजन-सहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रद.।।१५।। दश-योज-नावगाह ।।१६।। तन्मध्ये योजनं पुष्यकरम् ।।१७।। तद्द्विगुण-द्विगुणा ह्रदा पुष्कराणि च।।१८।। तन्निवसिन्यो देव्य श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्य पल्यौपमस्थितय ससामानिक-परिषत्का ।।१९।। गग-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नर-कान्ता-सुवर्ण-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा सरितस्तन्मध्यगा ।।२०।। द्वयोर्द्वयो पूर्वा पूर्वगा ।।२१।। शेषास्त्वपरगा ।।२२।। चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता-गंगा-सिन्ध्वादयो नद्य ।।२३।। भरत षड्विंशति-पंच-योजन-शत-विस्तार षट् चैकोनविशतिभागा योजनस्य।।२४।। तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्ष-धर-वर्षा विदेहान्ता.।।२५।। उत्तरा दक्षिण-तुल्या ।।२६।। भरतैरावतयोर्वृद्धि-ह्रासौ षट् समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ।।२७।। ताभ्यामपरा भूमयोअवस्थित ।।२८।। एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैवकुर-वका ।।२९।। तथोत्तरा. ।।३०।। विदेहेषु-संख्येय-काला ।।३१।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भाग.।।३२।। द्विर्धातकीखण्डे ।।३३।। पुष्करार्द्धे च ।।३४।। प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्या ।।३५।। आर्या म्लेच्छाश्च ।।३६।। भरतैरावत-विदेहा कर्मभूमयोअन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्य ।।३७।। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।।३८।। तिर्यग्योनिजानां च ।।३९।।

इति तत्त्वार्थाधिग मे मोक्षशास्त्रे तृतीयोअध्याय ।।३।।

देवाश्चतुर्तिणकायाः।।१।। आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या ।।२।।

दशाष्ट- पुज्य- द्वादश- विकल्पा कल्पोपपन्न पर्यन्ता ।।३।। इन्द्र-सामानिक- त्रायस्त्रिंश- पारिषदात्मरक्ष- लोकपालानीक- प्रकीर्णकाभियोग्य- किल्विषिकाश्चैकश ।।४।। त्रायस्त्रिंश- लोकपाल- वर्ज्या व्यन्तर- ज्योतिष्का ।।५।। पूर्व- योर्द्वीन्द्राः ।।६।। काय-प्रवीचारा आ ऐशानात् ।।७।। शेषा स्पर्श- रूप- शब्द- मनः प्रवीचारा ।।८।। परेअप्रवीचारा ।।९।। भवनवासिनोअसुरनाग- विद्युत्सुपर्णाग्नि- वातस्तनितोदधि- द्वीप- दिक्कुमारा ।।१०।। व्यन्तरा किन्नर- किपुरुष- महोरग- गन्धर्व- यक्ष- राक्षस- भूत- पिशाचा ।।११।। ज्योतिष्का सूर्या- चन्द्रमसौ ग्रह- नक्षत्र- प्रकीर्णक- तारकाश्च ।।१२।। मेरु- प्रद- क्षिण नित्यगतयो नृलोके ।।१३।। तत्कृत काल- विभाग ।।१४।। बहिरवस्थिता ।।१५।। वैमानिका ।।१६।। कल्पोपपन्ना कल्पातीताश्च ।।१७।। उपर्युपरि ।।१८।। सौधर्मे- शान- सानत्कुमार- माहेन्द्र- ब्रह्मा- ब्रह्मोत्तर- लान्तव- कापिष्ट- शुक्र- महाशुक्र- शतार- सहस्त्रारेष्वानत- प्राणतयोरारणाच्युत- योर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय- वैजयन्त जयन्तापराजितेषु सर्वार्थ- सिद्धौ च ।।१९।। स्थिति- प्रभाव- सुख- द्युति- लेश्या- विशुद्धी- न्द्रियावधि- विषयतोअधिका ।।२०।। गतिशरीर- परिग्र हाभिमानतो हीना ।।२१।। पीत- पद्म- शुक्ल- लेश्या द्वि- त्रि- शेषेषु ।।२२।। प्राग्ग्रैवेयकेश्य कल्पा ।।२३।। ब्रह्मा- लोकालया लौकान्तिका ।।२४।। सारस्वतादित्य वह्न्यरुण- गर्दतोय- तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ।।२५।। विजयादिषु द्वि- चरमा ।।२६।। औपपादिक- मनुष्येभ्य शेषास्तिर्यग्योनय ।।२७।। स्थितिरसुर- नाग- सुपर्ण- द्वीपशेषाणा सागरोपम- त्रिपल्योप- मार्द्ध- हीन- मिता ।।२८।। सौधर्मैशानयो सागरोपमेअधिके ।।२९।। सानत्कुमार- माहेन्द्रयो सप्त ।।३०।। त्रि- सप्त- नवैकादश- त्रयोदश- पच्चदशभिरधिकानि तु ।।३१।। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ

च ।।३२।। अपरा पल्योपममधिकम् ।।३३।। परत परत पूर्वा पूर्वाअनन्तरा ।।३४।। नारकाणा च द्वितीयादिषु ।।३५।। दश-वर्ष- सहस्राणि प्रथमायाम् ।।३६।। भवनेषु च ।।३७।। व्यन्तराणा च ।।३८।। परा पल्योपममधिकम् ।।३९।। ज्योतिष्काणा च ।।४०।। तदष्ट- भागोअपरा ।।४१।। लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।४२।।

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्र चतुर्थअध्याय ।।४।।

अजीव- काया धर्माधकर्माकाश- पुद्गलाः ।।१।। द्रव्याणि ।।२।। जीवाश्च ।।३।। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।।४।। रूपिण पुद्गला ।।५।। आ आकाशादेकद्रव्याणि ।।६।। निष्क्रियाणि च ।।७।। असंख्येया प्रदेशा धर्माधर्मैक- जीवानाम् ।।८।। आकाशस्यानन्ता ।।९।। सख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।।१०।। नाणे ।।११।। लोकाकाशेअवगाह ।।१२।। धर्माधर्मयो कृत्स्ने ।।१३।। एकप्रदेशादिषु भाज्य पुद्गलानाम् ।।१४।। असख्येय- भागादिषु जीवानाम् ।।१५।। प्रदेश- संहर-विसर्पाभ्या प्रदीपवत् ।।१६।। गति- स्थित्युप- ग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकार ।।१७।। आकाशस्यावगाह ।।१८।। शरीर- वाड- मन - प्राणापाना पुद्गलानाम् ।।१९।। सुख- दुख-जीवितमरणोपग्रहाश्च ।।२०।। परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।२१।। वर्तना- परिणाम- क्रिया- परत्वापरत्वे च कालस्य ।।२२।। स्पर्श- रस- गन्ध- वर्णवन्त पुद्गला ।।२३।। शब्द-बन्ध- सौक्ष्म्य- स्थौल्य- सस्थान- भेद- तमश्छाया- तपोद्योतवन्तश्च ।।२४।। अणव स्कन्धाश्च ।।२५।। भेद- सघातेभ्य उत्पद्यन्ते ।।२६।। भेदादण ।।२७।। भेद- संघाताभ्यां चाक्षुश ।।२८।। सद्द्रव्य- लक्षणम् ।।२९।। उत्पाद- व्यय- ध्रौव्य- युक्त सत् ।।३०।। तद्भावाव्यय नित्यम् ।।३१।। अर्पितानर्पितसिद्धे ।।३२।। स्निग्ध- रूक्षत्वाद्बन्ध ।।३।। न जघन्य- गुणानाम्

।।३४।। गुणसाम्ये सदृशानाम् ।।३५।। द्व्यधिकादि- गुणाना तु ।।३६।। बन्धेऽधिको पारिणामिको च ।।३७।। गुण- पर्ययवद् द्रव्यम् ।।३८।। कालश्च ।।३९।। सोऽनन्तसमय ।।४०।। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुण ।।४१।। तद्भाव परिणाम ।।४२।।

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्र पञ्चमोऽध्याय ।।५।।

काय- वाङ्- मन कर्म- योग ।।१।। स आस्रव ।।२।। शुभ पुण्यस्याशुभ पापस्य ।।३।। सकषायाकषाययो साम्परायिकेर्यापथयो ।।४।। इन्द्रिय-कषायाव्रत- क्रिया पञ्च-चतु पञ्च पञ्चविंशति- सख्या पूर्वस्य भेदा ।।५।। तीव्र- मन्द- ज्ञाताज्ञात- भावाधिकरण- वीर्य- विशेषेभ्यस्तद्विशेष ।।६।। अधिकरण जीवाजीवा ।।७।। आद्य सरम्भ- समारम्भारम्भयोग कृत- कारितानुमत- कषाय- विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकश ।।८।। निर्वतना- निक्षेप- सयोग- निसर्गा द्वि- चतुर्द्वि- त्रिभेदा परम् ।।९।। तत्प्रदोष- निह्नव- मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञान- दर्शना- वरणयो ।।१०।। दु ख- शोक- तापाक्रन्दन- वध- परिदेवना- न्यात्म- परोभय- स्थानान्यसद्वेद्यस्य ।।११।। भूत व्रत्यन- कम्पादान- सरागसयमादि- योग क्षान्ति शौचमिति सद्वेद्यस्य ।।१२।। केवलि- श्रुत- सघ- धर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।।१३।। कषायादयात्तीव्र- परिणामश्चारित्रमोहस्य ।।१४।। बह्वारम्भ परिग्रहत्व नारकस्यायुष ।।१५।। माया तैर्यग्यो- नस्य ।।१६।। अल्पारम्भ- परिग्रहत्व मानुषस्य ।।१७।। स्वभाव- मार्दव च ।।१८।। नि शील- व्रतित्व च सर्वेषाम् ।।१९।। सरागसयम- सयमासयमाकामनिर्जरा- बालतपासि दैवस्य ।।२०।। सम्यक्त्व च ।।२१।। योगवक्रता विसवादन चाशुभस्य नाम्न: ।।२।। तद्विपरीत शुभस्य ।।२३।। दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता- शील- व्रतेष्वनतोचारोऽभीक्ष्ण- ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्याग- तपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्य- कर- णमर्हदाचार्य-

बहुश्रुत- प्रवचन- भक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गभावना प्रवचन-वत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ।।२४।। परात्म- निन्दा- प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचै र्गोत्रस्य ।।२५।। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।२६।। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।।२७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्र षष्ठोअध्याय ।।६।।

हिंसाअनृत- स्तेयाब्रह्मा- परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।।१।। देश सर्वतोण्- महती ।।२।। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च।।३।। वाङ् मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपण- समित्यालोकितपान- भोजनानानि पञ्च ।।४।। क्रोध- लोभ- भीरुत्व- हास्य- प्रत्याख्या-नान्यनुवीचि- भाषण च पञ्च ।।५।। शून्यागार- विमोचिता-वास- परोपरोधाकरण- भैक्ष्यशुद्धि- सद्धर्माविसंवादा. पञ्च ।।६।। स्त्री राग कथा श्रवण तन्मनोहरांग निरीक्षण पूर्व-रतानु स्मरण- वृष्येष्ट- रस- स्वशरीर- संस्कार- त्यागा पञ्च ।।७।। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय- विषय- राग- द्वेष वर्जनानि पञ्च ।।८।। हिसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ।।९।। दुःखमेव वा ।।१०।। मैत्री- प्रमोद- कारुण्य- माध्यस्थानि च सत्त्व- गुणाधिक- क्लि-श्यमानाविनयेषु ।।११।। जगत्काय- स्वभावौ वा संवेग- वैराग्यार्थम् ।।१२।। प्रमत्तयोगात्प्राण- व्यपरोपणं हिसा ।।१३।। असदभिधानमनृतम् ।।१४।। अदत्तादान स्तेयम् ।।१५।। मैथुनब्रह्मा ।।१६।। मूर्छा परिग्रहः ।।१७।। नि.शल्यो व्रती ।।१८।। अगार्यनगारश्च ।।१९।। अणुव्रतोअगारी ।।२०।। दिग्देशानर्थदण्ड- विरति- सामायिक- प्रोषधेपवासोपभोग - परिभोग- परिमाणातिथि- संविभाग- व्रत- सम्पन्नश्च ।।२१।। मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।२२।। शंका- कांक्षा- विचिकित्सान्यदृष्टि- प्रशंसा- संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचारा ।।२३।। व्रत- शीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ।।२४।। बन्धवध-

च्छेदातिभारारोपणान्नपान- निरोधा ।।२५।। मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान- कूटलेखक्रिया- न्यासापहार- साकारमन्त्र- भेदा ।।२६।। स्तेनप्रयोग- तदाहृतादान- विरुद्धराज्यातिक्रम-हीनाधिकमानोन्मान- प्रतिरूपक व्यवहारा ।।२७।। परविवाहकरणेत्वरिका- परिगृहीतापरिगृहीता- गमनानगंक्रीडा-कामतीव्राभिनिवेशा ।।२८।। क्षेत्रवास्तु- हिरण्यसवर्ण- धन-धान्य- दासीदास- कुप्यप्रमाणातिक्रमा ।।२९।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम- क्षेत्रवृद्धि- स्मृत्यतराधानानि ।।३०।। आनयन-प्रेष्यप्रयोग- शब्द- रूपानुपात- पुद्गलक्षेपा ।।३१।। कन्दर्प-कौत्कुच्य- मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।।३२।। योग-दुप्रणिधानानादर- स्मृत्यनपस्थानानि ।।३३।। अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादान सस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्य नप-स्थानानि ।।३४।। सचित्त- सबध- सम्मिश्राभिषव- दुपक्वाहारा ।।३५।। सचित्त- निक्षेपापिधान- परव्यपदेश-मात्सर्य्यकालातिक्रमा ।।३६।। जीवित-मरणाशमा- मित्रानराग-सुखानुबन्ध- निदानानि ।।३७।। अनुग्रहार्थ स्वस्यातिसर्गो दानम् ।।३८।। विधि- द्रव्य- दातृ- पात्र- विशेषात्तद्विशेष ।।३९।।

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्याय ।।७।।

मिथ्यादर्शनाविरति- प्रमाद- कषाय- योगा बन्धहेतव ।।१।। सकषायत्वाज्जीव कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्ध ।।२।। प्रकृति- स्थित्यनुभाग- प्रदेशास्तद्विधय ।।३।। आद्या ज्ञान-दर्शनावरण- वेदनीय- मोहनीयायुर्नाम- गोत्रान्तराया ।।४।। पञ्च- नव- द्वयष्टाविंशति- चतुर्द्विचत्वारिंशद् द्वि- पञ्च भेदा यथाक्रमम् ।।५।। मति- श्रुतावधि- मन पर्यय- केवलानाम्- ।।६।। चक्षुरचक्षुरवधिकेवलाना निद्रा- निद्रानिद्रा- प्रचला-प्रचलाप्रचला- स्त्यानगृद्धयश्च ।।७।। सदसद्वेद्ये ।।८।। दर्शन-चारित्र- मोहनीयाकषाय- कषायवेदनीयाख्यास्त्रि द्वि- नव- षोड-

१भेदा· सम्यक्त्व- मिथ्यात्व- तदुभयान्यकषाय- कषायो हास्यरत्यरति- शोक- भय- जुगुप्सा- स्त्री- पुन्नपुंसक- वेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान- संज्वलन- विकल्पाश्चैकश क्रोध- मान- माया- लोभा ।।९।। नारकतैर्यग्योन- मानुष- दैवानि ।।१०।। गति- जाति- शरीराङ्गपाङ्ग- निर्माण- बन्धन- संघात- सस्थान- संहनन- स्पर्श- रस- गन्ध- वर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघात- परघातातपोद्योतोच्छ्वास- विहायोगतय प्रत्येकशरीर- त्रस- सुभग- सुस्वर- शुभ- सूक्ष्म- पर्याप्ति- स्थिरादेय यश. कीर्ति- सेत- राणि तीर्थकरत्वं च ।।११।। उच्चैर्नीचैश्व ।।१२।। दान- लाभ- भोगोपभोग- वीर्याणाम् ।।१३।। आदितस्तिसृणा- मतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम- कोटीकोट्य परा स्थिति ।।१४।। सप्ततिर्मोहनीयस्य ।।१५।। विंशतिर्नाम- गोत्रयो ।।१६।। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष ।।१७।। अपरा द्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य ।।१८।। नाम- गोत्रयोरष्टौ ।।१९।। शेषाणाम- न्तर्मुहूर्ता ।।२०।। विपाकोअनुभव ।।२१।। स यथानाम ।।२२।। ततश्च निर्जरा ।।२३।। नाम- प्रत्यया सर्वतो योग- विशेषात्- सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह- स्थिता सर्वात्म- प्देशेष्व- नन्तानन्त- पद्रेशा ।।२४।। सद्वेद्य - शुभायुर्नाम- गोत्राणि पुण्यम् ।।२५।। अतो- अनयत्पाम् ।।२६।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोअध्याय ।।८।।

आस्त्रव- निरोध सवर ।।१।। स गुप्ति- समिति- धर्मान- प्रेक्षा- परीषहजय- चारित्रै ।।२।। तपसा निर्जरा च ।।३।। सम्यग्योग- निग्रहो गुप्ति ।।४।। ईर्याभाषैणादाननिक्षेपोत्सर्गा समितय ।।५।। उत्तमक्षमा- मार्दवार्जव- सत्य- शौच- सयम तपस्त्यागाकिञ्चन्य- ब्रह्मचर्याणि धर्म ।।६।। अनित्याशरण- संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्त्रव- संवर- निर्जरा- लोक- बोधिदर्लभ धर्म- स्वाख्यातत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ।।७।। मार्गाच्यवन- निर्ज-

रार्थ परिषोढव्या· परीषाहा ।।८।। क्षुत्पिपासा- शीतोष्णदंश-
मशक- नाग्न्यारति- स्त्री- चर्या- निषद्या- शय्याक्रोश- वध-
याच- नालाभ- रोग- तृणस्पर्श- मल- सत्कारपुरस्कार-
प्रज्ञाज्ञानादर्शनानि।।९।। सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश-
।।१०।। एकादश जिने ।।११।। बादरसाम्पराये सर्वे ।।१२।।
ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।।१३।। दर्शनमोहान्तराययोरदर्शना- लाभौ
।।१४।। चारित्रमोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्या- क्रोश- याचना-
सत्कारपुरस्कारा ।।१५।। वेदनीये शेषा ।।१६।। एकादयो
भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविशाति ।।१७।। सामायिकच्छेदोप-
स्थापना-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यातमिति चारित्रम्
।।१८।। अनशनावमोदर्य- वृत्तिपरि- संख्यान- रस- परित्याग-
विविक्तशय्यासन- कायक्लेशा बाह्यां तप. ।।१९।। प्रायश्चित-
विनय वैयावृत्य- स्वाध्याय- व्युत्सर्ग- ध्यानान्युत्तरम् ।।२०।।
नवचतुर्दश- पञ्च द्विभेदा यथाक्रम प्राग्ध्यानात् ।।२१।।
आलोचना- प्रतिक्रमण- तदुभय- विवेक- व्युत्सर्ग- तपश्छेद
परिहारोपस्थानापना· ।।२।। ज्ञान-दर्शन- चारिवोपचारा
।।२३।। आचार्योपाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्यग्लान-गण-कुल-सघ-
साधु- मनोज्ञानाम् ।।२४।। वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नाय –
धर्मोपदेशा ।।२५।। बाह्याभ्यन्तरोपध्यो ।।२६।। उत्तम-
सहननस्यैकाग्र- चिन्ता- निरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ।।२७।।
आर्त्त- रौद्र- धर्म्य- शुक्लानि ।।२८।। परे मोक्ष- हेतु ।।२९।।
आर्तममनोज्ञस्य सप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति- समन्वाहार·
।।३०।। विपरीत मनोज्ञम्य ।।३१।। वेदनायाश्च ।।३२।।
निदानं च ।।३३।। तदविरत- देश- विरत- प्रमत्तसंयतानाम्
।।३४।। हिसानृत- स्तेय- विषयसंर- क्षणेभ्यो रौद्रमविरत-
देशविरतयो ।।३५।। आज्ञापायविपाक- संस्थान- विचयाय
धर्म्यम् ।।३६।। शुक्ले चाद्ये पूर्वविद. ।।३७।। परे केवलिन.
।।३८।। पृथक्त्वैकत्वतिर्क- सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति- व्युपरतक्रिया-

निवर्तीनि ।।३९।। त्र्येकयोग- काययोगा योगानाम् ।।४०।। एकाश्रये सवितर्क- वीचारे पूर्वे ।।४१।। अवीचारं द्वितीयम् ।।४२।। वितर्कः श्रुतम् ।।४३।। वीचारोअर्थ-व्यञ्जन-योग-संक्रान्तिः ।।४४।। सम्यग्दृष्टि- श्रावक- विरतानन्त- वियोजक- दर्शनमोह- क्षपकोपशमकोपशान्त- मोहक्षपक- क्षीणमोह- जिनाः क्रमशोअसंख्येय- गुण- निर्जरा ।।४५।। पुलाक- वकुश- कुशील- निर्ग्रन्थ- स्नातका निर्ग्रन्थाः ।।४६।। संयम- श्रुति- प्रतिसेवना- तीर्थ- लिंग- लेश्यो- पपाद- स्थान- विकल्पतः साध्याः ।।४७।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोअध्याय ।।९।।

मोहक्षयाज्ज्ञान- दर्शनावरणान्तराय- क्षयाच्च केवलम् ।।१।। बन्धहेत्वभाव- निर्जराभ्यां कृत्स्न- कर्म- विप्रमोक्षो मोक्षः ।।२।। औपशमिकादि- भव्यत्वानां च ।।३।। अन्यत्र केवलसम्यक्त्व- ज्ञान- दर्शन- सिद्धत्वेभ्य. ।।४।। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।।५।। पूर्वप्रयोगादसगंत्वाद् बन्धच्छे- दात्तथागतिपरिणामाच्च ।।६।। आविद्धकुलालचक्रवद्- व्यपगतले- पालांबुवदेरण्डबीज- वदग्निशिखावच्च ।।७।। धर्मास्तिकायाभावात् ।।८।। क्षेत्र- काल- गति- लिंग- तीर्थ- चारित्र प्रत्येकबुद्धबोधित- ज्ञाना- वगाहनान्तर- संख्याल्पबहुत्वतः साध्या. ।।९।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोअध्याय ।।१०।।

अक्षर-मात्र पद-स्वर-हीनं, व्यजन-संदि-विवर्जित-रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं,को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे।।१।।

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्वार्थे पठिते सति।
फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुंगवैः ।।२।।

तत्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्धपिच्छोपलक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्र- संजातमुमास्वामि- मुनीश्वरम्।।३।।

पढम चउक्के पढमं पंचमें जाणि पुग्गलं तच्च।

छह सत्तमे हि आस्सव अट्ठमे बंधणायव्या।।४।।
णवमे सवर णिज्जर दहमें मोक्खं वियाणे हि।
इह सत्त तच्च भणिय दह सुक्षेण मुणिं देहिं।।५।।
जं सक्कई त कीरइ ज पण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहमाणो जीवो, पावइ अजरामरं ठाणं ।।६।।
तवयरणंवयधरणं,संजमसरणचजीव-दया-करणम्।
अन्ते समाहिमरणं, चउविह दुक्खं णिवारंई ।।७।।
अरहंत भासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथिय सव्वं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा।।८।।
गुरवो पांतु वो नित्य ज्ञान-दर्शन-नायका।
चारित्रार्णाव-गंभीरा मोक्ष मार्गोपदेशक ।।९।।
कोटिशतंद्वादशचैवकोट्योलक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानिचैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्त्रसंख्यामेतद् श्रुतं पंचपदं नमामि।।१०।।

इति तत्वार्थसूत्रापरनाम- तत्वार्थाधिगम- मोक्षशास्त्र समाप्तम्

कल्याण- मंदिर स्त्रोत्र (भाषा)

कलयाण मन्दिर ससकृत स्त्रोत्र के रचयिता श्री कुमुदचन्द्राचार्य हैं। इसमे भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति होने मे इसका नाम पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है परन्तु स्तोत्र 'कल्याण मन्दिर' शब्दो से प्रारम्भ होने के कारण इसका यही नाम पड गया है। कहा जाता है कि उज्जयिनी मे वादविवाद मे इसके प्रभाव से एक अन्य देव की मूर्ति मे श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रकट हो गयी थी। इस स्तोत्र की अपूर्व महिमा मानी गयी है। इसके पाठ और जाप से समसत विघ्न बाधाये दूर होती हैं तथा सुख शान्ति मिलती है।

दोहा—परम-ज्योति परमात्मा, परम-ज्ञान, परवीन।
वदू परमानद मय घट-घट-अन्तर लीन।।१।।

निर्भय करन परम-परधान। भव-समुद्र-जल-तारन-यान,
शिव मन्दिर अघ-हरन अनिंद। वंदहु पास-चरन अरविन्द।।
कमठ-मान-भंजन वर-वीर। गरिमा-सागर गुन-गभीर।।
सुर-गुरु पार लहैं नहिं जास। मैं अजान जंपू जस तास।।२।।

प्रभु-स्वरूप अति अगम अथाह। क्यों हम-सेती होय निवाह,
ज्यों दिन अंध उलूको पोत, कहि न सकै रवि-किरण-उदोत।।३।।

मोह-हीन जाने मनमाहिं। तोहु न तुम गुन वरने जाहिं।
प्रलय-पयोधि करै जल बौन, प्रगटहिं रतन गिनै तिहि कौन।।४।।

तुम असंख्य निर्मल गुणखान। मैं मतिहीन कहूँ निज बान।
ज्यों बालक निज बांह पसार। सागर परमित कहै विचार।।५।।

जे जोगीन्द्र करहि तप-खेद। तऊ न जानहिं तुम गुनभेद।
भक्तिभाव मुझ मन अभिलाख। ज्यों पंछी बोलै निज भाख।।६।।

तुम जस-महिमा अगम अपार। नाम एक त्रिभुवन-आधार।
आवै पावन पदमसर होय। ग्रीषम-तपन निवारै सोय।।७।।

तुम आवत भवि-जन घटमाहिं। कर्मनि-बन्ध शिथिल ह्वै जाहिं।
ज्यों चन्दन-तरु बोलहिं मोर। डरहिं भुजंग लगे चहु ओर।।८।।

तुम निरखत जन दीनदयाल। संकटतैं छूटैं तत्काल।
ज्यों पशु घेर लेहिं निशि चोर। जे तज भागहिं देखत भोर।।९।।

तू भविजन-तारक किमि होहि। ते चितधार तिरहि ले तोहि।
यह ऐसै कर जान स्वभाव तिरहि मसक ज्यों गर्भित बाव।।१०।।

जिहं सब देव किये वश बाम। तैं छिन में जीत्यो सो काम।
ज्यों जल करै अगनि-कुल हान। बडवानल पीवै सो पान।।११।।

तुम अनन्त गरवा गुन लिय। क्योंकर भक्ति धरों निज हिये।
ह्वै लघुरूप तिरहि ससार। यह प्रभु महिमा अगम अपार।।१२।।

क्रोध निवार कियो मन शांत। कर्म- सुभट जीते किहि भांत।

यह पटतर देखहु ससार। नील विरछ ज्यो दहै तुषार।।१३।।

मुनिजन हिये कमल निज टोहि। सिद्धरूप सम ध्यावहि तोहि।
कमल-कर्णिका बिन-नहिं और। कमलबीज उपजन की ठौर।।१४।।

जब तुम ध्यान धरै मुनि कोय। तब विदेह-परमातम होय।
जैसे धातु शिला-तनु त्याग। कनक स्वरूप धवै जब आग।।१५।।

जाके मन तुम करहु निवास। विनशि जाय क्यों विग्रह तास।
ज्यो महंत विच आवे कोय। विग्रहमूल निवारै सोय।।१६।।

करहिं विबुध जे आतमध्यान। तुम प्रभावतै होय निधान।
जैसे नीर सुधा अनुमान। पीवत विष-विकारकी हान।।१७।।

तुम भगवन्त विमल गुणलीन। समल रूप मानहि मतिहीन।
ज्यों नीलिया रोग दृग गहै। वर्ण विवर्ण शंखसों कहै।।१८।।

दोहा—निकट रहत उपदेश सुन तरुवर भयो अशोक।
ज्यो रवि ऊगत जीव, सब प्रगट होत भुविलोक।।१९।।

सुमनवृष्टि ज्यो सुर करहिं, हेठ बीठमुख सोहि।
त्यों तुम सेवत सुमनजन बंध अधोमुख होहिं।।२०।।

उपजी तुम हिय उदधितैं, वाणी सुधा समान।
जिहँ पीवत भविजन लहहिं, अजर अमर-पदथान।।२१।।

कहहिं सार तिहुँ लोककी, ये सुर-चामर दोय।
भावसहित जो जिन नमैं, तिहँ गति ऊरध होय।।२२।।

सिंहासन गिरिमेरु सम, प्रभु धुनि गरजत घोर।
श्याम सुतनु घनरूप लखि, नाचत भविजन मोर।।२३।।

छबि-हत होत अशोक दल, तुम भामंडल देख।
वीतराग के निकट रह रहत न राग विशेष।।२४।।

सीख कहै तिहुँ लोक कों ये सुर दुंदुभि-नाद।
शिवपथ-सारथि-वाह जिन, भजहु तजहु परमाद।।२५।।

तीन छत्र त्रिभुवन उदित, मुक्तागण छबि देत।
त्रिविध रूप धर मनहु शशि सेवत नखत समेत।।२६।।

पद्धरि छन्द

प्रभु तुम शरीर दुति रतन जेम। परताप पुंज जिम शुद्ध हेम।
अति धवल सुजस रूपा समान। तिनके गढ़ तीन विराजमान।।२७।।

सेवहिं सुरेन्द्रकर नमत भाल। तिन सीस मुकुट तज देहिं माल।
तुमचरणलगतलहलहैप्रीति। नहिंरमहिंऔरजनसुमनरीति।।२८।।

प्रभु भोग-विमुखतनगरमदाह। जनपारकरत भवजलनिवाह।
ज्यों माटी-कलश सुपक्वहोय। लेभार अधोमुखतिरहिंतोय।।२९।।

तुममहाराजनिरधननिराश। तजविभवविभवसबजगप्रकाश।
अक्षर स्वभाव सुलिखै न कोय। महिमा भगवंत अनंत सोय।।३०।।

कर कोप कमठ निज बैर देख। तिन करी धूलि वरषा विशेष।
प्रभु तुम छाया नहिं भई हीन। सो भयो पापि लंपट मलीन।।३१।।

गरजंत घोर घन अंधकार। चमकंत विज्जु जल मुसल-धार।
बरषंत कमठ धर ध्यान रुद्र। दुस्तर करन्त निज भव-समुद्र।।३२।।

वास्तु छन्द

मेघमाली मेघमाली आप बल फोरि। भेजे तुरत पिशाचागण,
नाथ पास उपसर्ग कारण। अग्नि जाल झलकंत मुख,
धुनिकरत जिमि मत्तवारण। कालरूप विकराल तन,
मुंडमाल हित कंठ ह्वै निशंक वह रंक निज, करै कर्म दृढगंठ।।३३।।

चौपाई

जे तुम चरण-कमल तिहुँकाल, सेवहिं तज माया जंजाल।
भाव भगति मन हरष अपार, धन्य-धन्य जग तिन अवतार।।३४।।

भवसागर में फिरत अजान, मैं तुअ सुजस सुन्यो नहिं कान।
जो प्रभु-नाम-मंत्र मन धरै, तासों विपत्ति भुजंगम डरै।।३५।।

मन-वांछित फल जिनपद मांहिं, मैं पूरब भव पूजे नाहिं।
माया-मगन फिर्‌यो अज्ञान, करहिं रंक- जन मुझ अपमान।। ३६।।

मोहतिमिर छायो दृग मोहि, जन्मान्तर देख्यो नहिं तोहि।
तो दुर्जन मुझ संगति गहैं, मरम छेदके कुवचन कहैं।। ३७।।

सुन्यो कान जस पूजे पाय, नैनन देख्यो रूप अघाय।
भक्ति हेतु न भयो चित चाव, दुखदायक किरिया बिन भाव।। ३८।।

महाराज शरणागत पाल, पतित-उधारण दीनदयाल।
सुमरन करहुं नाय निज शीश, मुझ दुख दूर करहु जगदीश।। ३९।।

कर्म-निकंदन-महिमा सार, अशरण-शरण सुजस विस्तार।
नहिं सेये प्रभु तुमरे पाय, तो मुझ जन्म अकारथ जाय।।४०।।

सुरगन-वंदित दया-निधान, जग-तारण जगपति अनजान।
दुख-सागरतै मोहि निकासि, निर्भय थान देहु सुखरासि।।४१।।

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहु-विधि भक्ति करी मनलाय।
जनम-जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवाफल दीजै मोहि।।४२।।

दोधकात बेमरी छद- षट्पद।

इहविधि श्री भगवत, सुजस जे भविजन भाषहिं।
ते जिन पुण्यभडार, संचि चिर-पाप प्रणासहिं।
रोम-रोम हुलसंति, अग प्रभु-गुण मन ध्यावहिं।
स्वर्ग संपदा भुज वेग पंचमगति पावहिं ।।४३।।
यह कल्याणमंदिर कियो, कुमुदचंद्रकी बुद्धि।
भाषा कहत 'बनारसी' कारण समकित-शुद्धि ।।४४।।

इस प्रकार कल्याणमन्दिर का कविवर बनारसीदास जी कृत भाषानुवाद समाप्त हुआ।

आचार्य वादिराज

आपकी गणना महान् आचार्यो मे की जाती है। आप महान् वादी विजेता और कवि थे। आपकी पार्श्वनाथ चरित्र, यशोधर चरित्र, एकीभव स्तोत्र, नयाय विनिश्चय विवरण, प्रमाण निर्णय ये पाच कृतियाँ प्रसिद्ध है। आपका समय विक्रम की ११वी शताब्दी माना जाता है। आपका चौलुक्य नरेश जयसिह (प्रथम) की सभा मे बडा सम्मान था। 'वादिराज' यह नाम नही वरन् पदवी है। प्रख्यात वादियो मे उनकी गणना होने से वे वादिराज के नाम से प्रसिद्ध हुए।

निस्पही आचार्य श्री वादिराज ध्यान मे लीन थे। कुछ द्वेषी व्यक्तियो ने उन्हे कुष्ट-ग्रस्त देखकर राजसभा मे जैनमुनियो का उपहास किया जिसे जैनधर्म प्रेमी राजश्रेष्ठी सहन न कर सके और भावावेश मे कह उठे कि हमारे मुनिराज की काया तो स्वर्ण जैसी सुन्दर होती है। राजा ने अगले दिन महाराज के दर्शन करने का विचार रखा। सेठ ने महाराज से सारा विवरण स्पष्ट कह कर धर्मरक्षा की प्रार्थना की। महाराज ने धर्म रक्षा और प्रभावना हेतु एकीभाव स्त्रोत्र की रचना की जिससे उनका शरीर वास्तव मे स्वर्ण सदृश हो गया। राजा ने मुनिराज के दर्शन करके और उनके रूप को देखकर चुगल-खोरो को दण्ड दिया। परन्तु उत्तम क्षमाधारक मुनिराज ने राजा को सब बात समझा कर तथा सबका भ्रम दूर कर सबको क्षमा करा दिया। इस स्त्रोत का श्रद्धा एव पूर्ण मनोयोग पूर्वक पाठ करने से समस्त व्याधिया दूर होती हैं तथा सारी मनोकामनाए पूर्ण होती है।

एकीभावस्तोत्र भाषा

कविकर भूधरदास जी कृत भाषानुवाद

दोहा—वादिराज मुनिराजके, चरणकमल चित लाय।
भाषा एकीभावकी, करूँ स्वपर सुखदाय।।१।।

रोला छन्द अथवा "अहो जगत गुरुदेव०" विनती की चालमे।

जो अति एकीभाव भयो मानो अनिवारी,

सो मुझ कर्मप्रबंध करत भव भव दुख भारी।
ताहि तिहारी भक्ति जगतरवि जो निरवारै,
तो अब और कलेश कौन सो नाहिं विदारै।।१।।

तुम जिन जोतिस्वरूप दुरित अँधियारि निवारी,
सो गणेश गुरू कहैं तत्त्व-विद्याधन-धारी।।
मेरे चित घर माहिं बसौ तेजोमय यावत,
पापतिमिर अवकाश तहां सो क्योंकरि पावत।।२।।

आनंद-आंसू-वदन धोय तुमसों चित आने,
गदगद सुरसों सुयश मन्त्र पढ़ि पूजा ठानैं।।
ताके बहुविधि व्याधि व्याल चिरकाल निवासी,
भाजैं थानक छोड़ देह बांबइके वासी।।३।।

दिवितैं आवन हार भये भविभाग उदयबल,
पहलेही सुर आय कनकमय कीय महीतल।।
मनगृह-ध्यान-दुवार आय निवसो जगनामी,
जो सुवरन तन करो कौन यह अचरज स्वामी।।४।।

प्रभु सब जगके विना हेतुबांधव उपकारी,
निरावरन सर्वज्ञ शक्ति जिनराज तिहारी।।
भक्ति रचित मम चित्त सेज नित बास करोगे,
मेरे दुखसंताप देख किम धीर धरोगे।।५।।

भववनमें चिरकाल भ्रम्यो कुछ कहिय न जाई,
तुम थुति-कथा-पियूष-वापिका भागन पाई।।
शशि तुषार घनसार हार शीतल नहिं जा सम,
करत न्हौन ता माहिं क्यों न भवताप बुझै मम।।६।।

श्रीविहार परिवाह हात शुचिरूप सकल जग,
कमलकनक आभाव सुरभि श्रीवास धरत पग।।
मेरो मन सर्वंग परस प्रभुको सुख पावै,

अब सो कौन कल्यान जो न दिन दिन ढिग आवै।।७।।

भवतज सुखपद बसे काम मद सुभट संहारे,
जो तुमको निरखंत सदा प्रियदास तिहारे।।
तुम-वचनामृत-पान भक्ति अंजुलिसों पीवै,
तिन्हें भयानक क्रूर रोगरिपु कैसे छीवै।।८।।

मानथंभ पाषान आन पाषान पटंतर,
ऐसे और अनेक रतन दीखैं जग अंतर।।
देखत दृष्टिप्रमान मानमद तुरत मिटावै,
जो तुम निकट न होय शक्ति यह क्योंकर पावै।।९।।

प्रभुतन पर्वत परस पवन उरमें निबहै है,
तासों ततछिन सकल रोगरज वाहिर ह्वै है।।
जाके ध्यानाहूत बसो उर अंबुज माहीं,
कौन जगत उपकार-करन समरथ सो नाहीं।।१०।।

जनम जनमके दुःख सहे सब तें तुम जानो,
याद किये मुझ हिये लगैं आयुधसे मानों।।
तुम दयाल जगपाल स्वामि मैं शरन गही है,
जो कुछ करनो होय करो परमान वही है।।११।।

मरन-समय तुम नाम मंत्र जीवकतैं पायो,
पापाचारी श्वान प्रान तज अमर कहायो।।
जो मणिमाला तेय जपै तुम नाम निरंतर,
इन्द्र-सम्पदा लहै कौन संशय इस अंतर ।।१२।।

जो नर निर्मल ज्ञान मान शुचि चारित साधै,
अनवधि सुखकी सार भक्ति कूंची नहिं लाधै।।
सो शिववांछक पुरुष मोक्षपट केम उघारै,
मोह मुहर दिढ़ करी मोक्ष मंदिरके द्वारै।।१३।।

शिवपुर केरो पंथ पाप-तमसों अतिछायो,

दुखसरूप बहु कूपखाडसों बिकट बतायो।।
स्वामी सुखसों तहां कौन जन मारग लागैं,
प्रभु–प्रवचन मणिदीप जोनके आगैं आगैं।।१४।।

कर्म पटल भूमाहिं दबी आतम निधि भारी,
देखत अतिसुख होय विमुखजन नाहिं उघारी।।
तुम सेवक ततकाल ताहि निहचै कर धारै,
थुति कुदालसों खोद बंद भू कठिन विदारै।।१५।।

स्यादवाद-गिरि उपज मोक्ष सागर लों धाई,
तुम चरणांबुज परस भक्तिगंगा सुखदाई।।
मो चित निर्मल थयो न्होन रुचि पूरव तामैं,
अब वह हो न मलीन कौन जिन संशय यामैं।।१६।।

तुम शिवसुखमय प्रगट करत प्रभु चिंतन तेरो,
मैं भगवान समान भाव यों वरतै मेरो।।
यदपि झूठ है तदपि तृप्ति निश्चल उपजावै,
तुव प्रसाद सकलंक जीव वांछित फल पावै।।१७।।

वचन जलधि तुम देव सकल त्रिभुवनमें व्यापै,
भग-तरंगिनि विकथ-वाद-मल मलिन उथापै।।
मनसुमेरुसों मथै ताहि जे सम्यग्ज्ञानी,
परमामृत सो तृषत होहिं ते चिरलों प्रानी।।१८।।

जो कुदेव छविहीन वसन भूषन अभिलाखै,
वैरी सों भयभीत होय सो आयुध राखै।।
तुम सुंदर सर्वंग शत्रु समरथ नहिं कोइ,
भूषन वसन गदादि ग्रहन काहेको होई।।१९।।

सुरपति सेवा करे कहा प्रभु प्रभुता तेरी,
सो सलाधना लहै मिटे जगसों जगफेरी।।
तुम भवजलधि जिहाज तोहि शिवकंत उचरिये,

तुही जगत-जनपाल नाथथुतिकी थुति करिये।।२०।।

वचनजाल जड़रूप आप चिन्मूरति झांई,
तातैं थुति आलाप नाहिं पहुंचे तुम तांई।।
तो भी निर्फल नाहिं भक्तिरस भीने वायक,
संतन को सुरतरु समान वांछित वरदायक।।२१।।

कोप कभी नहिं करो प्रीति कबहूं नहिं धारो,
अति उदास बेचाह चित्त जिनराज तिहारो।।
तदपि आन जग बहै बैर तुम निकट न लहिये,
यह प्रभुता जगतिलक कहां तुम बिन सरदहिये।।२२।।

सुरतिय गावें सुजश सर्वगति ज्ञानस्वरूपी,
जो तुमको थिर होहिं नमैं भवि आनंदरूपी।।
ताहि छेमपुर चलनवाट बाकी नहिं हो हैं,
श्रुतके सुमरन माहिं सो न कबहूं नर मोहै।।२३।।

अतुल चतुष्टयरूप तुमैं जो चितमें धारै,
आदरसों तिहुंकाल माहि जगथुति विस्तारै।।
सो सुक्रत शिवपंथ भक्तिरचना कर पूरै,
पचकल्याणक ऋद्धि पाय निहचै दुःख चूरै।।२४।।

अहो जगतपति पूज्य अवधिज्ञानी मुनि हारे,
तुम गुनकीर्तन-माहिं कौन हम मंद विचारे।।
थुति छलसों तुमविषै देव आदर विस्तारे,
शिवसुख-पूरनहार कलपतरु यही हमारे।।२५।।

वादिराज मुनितैं अनु, वैयाकरणी सारे,
वादिराज मुनितैं अनु, तार्किक विद्यावारे।।
वादिराज मुनितैं अनु, हैं काव्यनके ज्ञाता,
वादिराज मुनितैं अनु, हैं भविजनके त्राता।।२६।।

दोहा—मूल अर्थ बहुविधि-कुसुम, भाषा सूत्र मंझार।
भक्तिमाल 'भूधर' करी, करो कंठ सुखकार।।

विषापहार स्त्रोत्र

(महाकवि धनजय)

आप सुप्रसिद्ध द्विसधान काव्य के कर्ता महाकवि थे। इस काव्य के प्रत्येक पद्य के दो अर्थ होते है। पहला रामायण मे सम्बद्ध और दूसरा महाभारत से। इसी कारण इस काव्य को राधव पाण्डवीय भी कहते हैं। काव्यमीमासा जैसे महानग्रन्थ के कर्ता राजशेखर ने धनजय की बडी प्रशसा की है।

आपकी एक रचना धनजय नाममाला है जो एक महत्वपूर्ण शब्दकोष है। इस विषापहार स्तोत्र मे भगवान् ऋषभदेव की स्तुति है। यह स्तुति गभीर, प्रौढ और अनूठी उक्तियो से भरपूर है। यह ग्रन्थ कवि की चतुराई से भरा हुआ है। हृदय समुद्र को मथकर निकाला हुआ अमृत है। इसमे शब्दो का माधुर्य एव अर्थों का गाभीर्य देखने को मिलता है। इस काव्य मे स्थान-स्थान पर अलकारो की छटा छिटकी हुई है। धनजय का समय विद्वानो ने आठवी शताब्दी निश्चित किय है।

कविराज धनजय पूजन मे लीन थे। उनके सपुत्र को सर्प ने डस लिया। घर से कई बार समाचार आने पर भी वह निस्पृह भाव से पूजन में पूर्णतया तन्मय रहे और पुत्र की कोई सुध नही ली। बच्चे को विष चढ रहा था, उनकी पत्नी ने कुपित होकर बच्चे को मन्दिर मे उनके सामने लाकर रख दिया। पूजन से निवृत होकर उन्होने तत्काल भगवान् के सम्मुख ही विषापहार स्तोत्र की रचना की, इधर स्तोत्र की रचना हो रही थी उधर पुत्र का विष उतर रहा था। स्तोत्र पूरा होते होते बालक निर्विष होकर उठ बैठा। इसमे धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई। इस स्तोत्र का पूर्ण लाभ लेने के लिए श्रद्धा और मनोयोग आवश्यक है। इसके पाठ से सुख शान्ति मिलती है। और सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं।

विषाहार भाषा

(कवि शान्तिदास कृत भाषानुवाद)

दोहा—नमों नाभिनदन बली, तत्त्व-प्रकाशनहार।
तुर्यकालकी आदिमें, भये प्रथम अवतार।।१।।

काव्य वा गेला छद

निज आतममें लीन ज्ञानकरि व्यापत सारे,
जानत सब व्यापार संग नहिं कछू तिहारे।।
बहुत कालके हो पुनि जरा न देह तिहारी,
ऐसे पुरुष पुरान करहु रक्षा जु हमारी।।१।।

पर करिकें जु अचिंत्य भार जगको अति भारो,
सो एकाकी भयो वृषभ कीनों निसतारो।।
करि न सके जोगिंद्र तवन मैं करिहौं ताको,
भानु प्रकाश न करै, दीप तमहरै गुफाको।।२।।

स्तवन करनको गर्व तज्यो सक्री बहु ज्ञानी,
मैं नहि तजौं कदापि स्वल्पज्ञानी शुभध्यानी।।
अधिक अर्थ को कहूं यथाविधि बैठि झरोकै,
जालांतरधरि अक्ष भूमिधरकों जु विलौकै।।३।।

सकल जगतकों देखत अर सबके तुम ज्ञायक,
तुमकौं देखत नाहिं नाहिं जानत सुखदायक।।
हौं किसाक तुम नाथ और कितनाक बखानै,
तातै थुति नहि बनै असक्ती भये सयानै।।४।।

बालकवत निजदोष थकी इहलोक दुखी अति,
रोगरहित तुम कियो कृपाकरि देव भुवनपति।।
हित अनहितकी समझ माहि हैं मंदमती हम,
सब प्राणिनके हेत नाथ तुम बालवैद सम।।५।।

दाता हरता नाहि भानु सबको बहकावत,
आजकल के छलिकरि नितप्रति दिवस गुमावत।।
हे अच्युत! जो भक्त नमैं तुम चरनकमलकों,
छिनक एकमें आप देत मनवांछित फलकों।।६।।

तुमसों सन्मुख रहै भक्तिसौं सो सुख पावे,

जो सुभावतै विमुख आपतैं दुखहि बढ़ावै।।
सदा नाथ अवदात एक द्युतिरूप गुसांई,
इन दोन्यों के हेत स्वच्छ दरपणवत झांई।।७।।

है अगाध जलनिधी समुदजल है जितनो ही,
मेरू तुंगसुभाव सिखरलों उच्च भन्यो ही।।
वसुधा अर सुरलोक एहु इसभांति सई है,
तेरी प्रभुता देवभुवनकूं लंघि गई है।।८।।

है अनवस्थाधर्म परम सो तत्त्व तुमारे,
कह्यो न आवागमन प्रभू मतमांहि तिहारे।।
इष्ट पदारथ छाडि आप इच्छति अदृष्टकौ,
विरुधवृत्ति तव नाथ समजस होय सृष्टकौं।।९।।

कामदेवको किया भस्म जगत्राता थे ही,
लीनी भस्म लपेटि नाम सभू निजदेही।।
सूतो होय अचेत विष्णु वनिताकरि हारयो,
तुमकौ काम न गहै आप घट सदा उजारयो।।१०।।

पापवान वा पुन्यवान सो देव बतावैं,
तिनके औगुन कहैं नाहि तू गुणी कहावै।।
निज सुभावतैं अंबुराशि निज महिमा पावै,
स्तोक सरोवर कहे कहा उपमा बढि जावै।।११।।

कर्मनकी थिति जंतु अनेक करै दुखकारी,
सो थिति बहु परकार करै जीवनकी ख्वारी।।
भवसमुद्रके मांहि देव दोन्यों के साखी,
नाविक नाव समान आप वाणी मैं भाखी।।१२।।

सुखकौं तो दुख कहै गुणनिकूँ दोष विचारै,
धर्मकरनके हेत पाप हिरदै विच धारै।।
तेलनिकासन काज धूलिकों पेलै घानी,

तेरे मतसों बाह्या इसे जे जीव अज्ञानी।।१३।।

विष मोचै ततकाल रोगकौं हरै ततच्छन,
मणि औषधी रसांण मंत्र जो होय सुलच्छन।।
ए सब तेरे नाम सुबुद्धी यों मन धरिहैं,
भ्रमत अपरजन वृथा नहीं तुम सुमिरन करिहैं।।१४।।

किंचित भी चितमांहि आप कछु करो न स्वामी,
जे राखै चितमाहिं आपको शुभ-परिणामी।।
हस्तामलवत लखैं जगत की परिणति जेती,
तेरे चितके बाह्मा तोउ जीवै सुखमेती।।१५।।

तीनलोक तिरकाल माहिं तुम जानत सारी,
स्वामी इनकी संख्या थी तितनीहि निहारी।।
जो लोकादिक हुते अनंते साहिब मेरा,
तेऽपि झलकते आनि ज्ञानका ओर न तेरा।।१६।।

है अगम्य तवरूप करै सुरपति प्रभु सेवा,
ना कछ तुम उपकार हेत देवनके देवा।।
भक्ति तिहारी नाथ इंद्रके तोषित मनको,
ज्यों रवि सन्मुख छत्र करै छाया निज तनको।।१७।।

वीतरागता कहां कहां उपदेश सुखाकर,
सो इच्छा प्रतिकूल वचन किम होय जिनेसर।।
प्रतिकूली भी वचन जगतकूं प्यारे अतिही,
हम कछु जानी नाहिं तिहारी सत्यासतिही।।१८।।

उच्चप्रकृति तुम नाथ संग किंचित न धरनतैं,
जो प्रापति तुम थकी नाहिं सो धनेसुरन तैं।।
उच्चप्रकृति जल विना भूमिधर धुनी प्रकासै,
जलधि नीरतैं भरयो नदी ना एक निकासै।।१९।।

तीनलोकके जीव करो जिनवरकी सेवा,

नियम थकी करदंड धरयो देवनके देवा।।
प्रातिहार्य तौ बनै इंद्र के बनै न तेरे,
अथवा तेरे बनें तिहारे निमित परेरे।।२०।।

तेरे सेवक नाहिं इसे जे पुरुषहीन धन,
धनवानोंकी ओर लखत वे नाहिं लखत पन।।
जैसें तमथिति किये लखत परकास-थिती कूं,
तैसें सूझत नाहिं तमथिती मंदमतीकूं।।२१।।

निज वृध स्वासोसास प्रगट लोचन टमकारा,
तिनकों वेदत नाहिं लोकजन मूढ विचारा।।
सकल ज्ञेय ज्ञायक जु अमूरति ज्ञान सुलच्छन,
सो किमि जान्यो जाय देव तव रूप विचच्छन।।२२।।

नाभिराय के पुत्र पिता प्रभु भरत तने हैं,
कुलप्रकाशिकैं नाथ तिहारो तवन भजै हैं।।
ते लघुधी असमान गुननकौं नाहिं भजै हैं,
सुवरन आयो हाथि जानि पाषान तजैं हैं।।२३।।

सुरासुरनको जीति मोहने ढोल बजाया,
तीनलोक में किये सकल वशि यो गरभाया।।
तुम अनंत बलवत नाहि ढिग आवन पाया,
करि विरोध तुमथकी मूलतै नाश कराया।।२४।।

एक मुक्तिका मार्ग देव तुमने परकास्या,
गहन चतुरगतिमार्ग अन्य देवनकूं भास्या।।
'हम सब देखनहार' इसी विधि भाव सुमिरिकैं,
भुज न विलोको नाथ कदाचित गर्भ जु धरिकैं।।२५।।

केतुविपक्षी अर्कतनो फुनि अग्नि तनो जल,
अंबुनिधीअरि प्रलयकालको पवन महाबल।।
जगतमाहिं जे भोग वियावेग विपक्षी हैं निति,
तेरो उदयो है विपक्षतैं रहित जगपति।।२६।।

जाने विन हूं नवत आपकों जो फल पावै,
नमत अन्यकों देव जानि सो हाथ न आवै।।
हरी मणीकूं काच, काचकूं मणी रटत है,
ताकी बुधिमें भूल, मूल्य मणिको न घटत है।।२७।।

जे विवहारी जीव वचनमें कुशल सयाने,
ते कषायकरि दग्ध नरनकों देव बखानैं।।
ज्यों दीपक बुझि जाय ताहि कह 'नंदि' भयो है,
भग्न घड़ेको कहैं कलस ए मँगलि गयो है।।२८।।

स्यादवाद संजुक्त अर्थको प्रगट बखानत,
हितकारी तुम वचन श्रवनकरि को नहिं जानत।।
दोशरहित ए देव शिरोमणि वक्ता जगगुरु,
जो ज्वरसेती मुक्त भयो सो कहत सरल सुर।।२९।।

बिन वाछां ए वचन आपके खिरैं कदाचित,
है नियोग ए कोपि जगतको करत सहजहित।।
करै न वांछा इसी चंद्रमा पूरो जलनिधि,
सीतरश्मिकूँ पाय उदधि जल बढै स्वयंसिधि।।३०।।

तेरे गुण गंभीर परम पावन जगमांई,
बहुप्रकार प्रभु हैं अनंत कछु पार न पाई।।
तिन गुणानको अंत एक याही विधि दीसै,
ते गुण तुझ ही मांहि और में नाहिं जगीसै।।३१।।

केवल थुति ही नाहिं भक्तिपूर्वक हम ध्यावतं,
सुमरन प्रणमन तथा भजनकर तुम गुण गावत।।
चितवन पूजन ध्यान नमनकरि नित आराधैं,
को उपाव करि देव-सिद्धि-फलको हम साधैं।।३२।।

त्रैलोकी नगराधिदेव नित ज्ञानप्रकाशी,
परमज्योति परमातम-शक्ति अनंती भासी।।

पुन्य पापतैं रहित पुन्य के कारण स्वामी,
नमों नमों जगवैद्य अवैद्यक नाथ अकामी।।३३।।

रस सुपरस अर गंध रूप नहिं शब्द तिहारे,
इनिके विषय विचित्र भेद सब जाननहारे।।
सब जीवन-प्रतिपाल अन्य करिहैं अगम्य गन,
सुमरन-गोचर नाहिं करौं जिन तेरो सुमिरन।।३४।।

तुम अगाध जिनदेव चित्त के गोचर नाहीं,
निःकिंचन भी प्रभू धनेश्वर जाचत साईं।।
भये विश्वकेपार दृष्टिसों पार न पावै,
जिनपति एम निहारि संतजन सरनै आवै।।३५।।

नमों नमों जिनदेव जगतगुरुशिक्षादायक,
निजगुणसेती भई उन्नती महिमा लायक।।
पाहन-खंड पहार पछैं ज्यों होत और गिर,
त्यों कुलपर्वत नाहिं सनातन दीर्घ भूमिधर।।३६।।

स्वयं प्रकाशी देव रनै दिनकूँ नहिं बाधित,
दिवस रात्रि भी छतैं आपकी प्रभा प्रकाशित।।
लाघव गौरव नाहिं एकसो रूप तिहारो,
काल-कलातैं रहित प्रभूसूँ नमन हमारो।।३७।।

इहविधि बहु परकार देव तव भक्ति करी हम,
जाचूँ कर न कदापि हीन ह्वै रागरहित तुम।।
छाया बैठत सहज वृक्षके नीचे ह्वै है,
फिर छायाकों जाचत यामैं प्रापत्ति क्वै है।।३८।।

जो कुछ इच्छा होय देनकी तौ उपगारी,
द्यो बुधि ऐसी करूं प्रीतिसौं भक्ति तिहारी।।
करो कृपा जिनदेव हमारे परि ह्वै तोषित,
सनमुख अपनो जानि कौन पंडित नहिं पोषित।।३९।।

यथा-कथंचित भक्ति रचै विनयी-जन केई,
तिनकूं श्रीजिनदेव मनोवांछित फल देही।।
पुनि विशेष जो नमत संतजन तुमको ध्यावै,
सो सुख जस 'धन-जय' प्रापति है शिवपद पावै।।४०।।

श्रावक माणिकचंद सुबुद्धी अर्थ बताया,
सो कवि 'शांतिदास' सुगम करि छंद बनाया।।
फिरि फिरिकै ऋषि रूपचंद ने करी प्रेरणा,
भाषा स्तोतर की विषापहार पढ़ो भविजना।।४१।।

भूपाल चतुर्विंशतिका

इसमें अलंकार की अनुपम छटा छिटक रही है। भूपाल ११, १२ वी शताब्दी के उच्चकोटि के कवि हैं। इनका अधिक परिचय प्राप्त नही है।

भूपालचतुर्विंशतिका भाषा।

कविवर भूधरदास कृत भाषानुवाद

सकल सुरासुर पूज्य नित, सकलसिद्धि दातार।
जिन-पद बंदूं जोर कर, अशरन-जन-आधार।।१।।

चौपाई

श्रीसुख-वास-महीकुलधाम, कीरति-हर्षण-थल अभिराम।
ससस्तिके रतिमहल महान, जय जुवतीको खेलन थान।।
अरुण वरण वांछित वरदाय, जगतपूज्य ऐसे जिन पाय।
दर्शन प्राप्त करै जो कोय, सब शिवथानक सो जन होय।।१।।

निर्विकार तुम सोमशरीर, श्रवणसुखद वाणी गम्भीर।
तुम आचरण जगतमें सार, सब जीवनको है हितकार।।
महानिंद भव मारू देश, तहां तुंग तरु तुम परमेशवर।
सघन-छांहि-मंडित छवि देत, तुम पंडित सेवैं सुखहेत।।२।।

गर्भकूपतैं निकस्यौ आज, अब लोचन उघरे जिनराज।
मेरो जन्म सफल भयो अबै, शिवकारण तुम देखे जबै।।
जग-जन-नैन-कमल-वनखंड, विकसावन शशि शोकविहंड।
आनंदकरन प्रभा तुम तणी, सोई अमी झरन चांदणी।।३।।

सब सुरेन्द्र शेखर शुभ रैन, तुम आसन तट माणक ऐन।
दोऊं दुति मिल झलकैं जोर, मानों दीपमाल दुहं ओर।।
यह संपति अरू यह अनचाह, कहां सर्वज्ञानी शिवनाह।
तातैं प्रभुता है जगमांहि, सही असम है संशय नाहिं।।४।।

सुरपति आन अखंडित बहै, तृण ज्यों राज तज्यो तुम वहै।
जिन छिनमैं जगमहिमा दली, जीत्यो मोहशत्रु महाबली।।
लोकालोक अनंत अशेख, कीनो अंत ज्ञानसों देख।
प्रभु प्रभाव यह अद्भुत सबै, अवर देवमैं भूल न फबै।।५।।

पात्रदान तिन विन विन दियो, तिन चिरकाल महातप कियो।
बहुविधि पूजाकारक वही, सर्व शील पाले उन सही।।
और अनेक अमल गुणरास, प्रापति आय भये सब तास।
जिन तुमशरधा सों कर टेक दृग-वल्लभ देखे छिन एक।।६।।

त्रिजग-तिलक, तुम गुणगण जेह, भवभुजंग-विष-हरणमितेह।
जो उरकानन मांहि सदीव। भूषण कर पहरै भवि जीव।।
सोई महामती संसार, सो श्रुतसागर पहुंचे पार।
सकल लोकमें शोभा लहै, महिमा जाग जगतमें वहै।।७।।

दोहा—सुरसमूह ढोलै चमर, चंदकिरण-द्युति जेम।
नवतन-बधू-कटाक्षतैं चपल चलैं अति एम।।
छिन छिन ढलकैं स्वामिपर, सोहत ऐसो भाव।
किधौं कहत सिधि लच्छिसों, जिनपतिके ढिगआव।।८।।

चौपाई छन्द १५ मात्रा

शीशछत्र सिंहासन तलैं, दिपैं देहदुति चामर ढलैं।
बाजे दुंदुभि बरसैं फूल, ढिग अशोक वाणी सुखमूल।।
इहिविधि अनुपम शोभा मान, सुरनर सभा पदमनी भान।
लोकनाथ बंदैं शिरनाय, सो हम शरण होहु जिनराय।।९।।

सुर-गजदंत कमल-वन-मांहि, सुरनारी-गण नाचत जांहि।
बहुविधि बाजे बाजैं थोक, सुन उछाह उपजै तिहुंलोक।।
हर्षत हरि जै जै उच्चरै, सुमनमाल अपछर कर धरै।
यों जन्मादि समय तुम होय, जयो देव देवागम सोय।।१०।।

तोष बढावन तुम मुखचंद, जन नयनामृत करन अमंद।
संवर वृतिकर अधिक उजास, तीन भुवन नहिं उपमा तास।।
ताहि निरखि सनयन हम भये, लोचन आज सुफल कर लये।
देखन योग जगतमें देख, उमग्यो उर आनंद विशेख।।११।।

कैयक यों मानैं मतिमंद। विजितकाम विधि ईश मुकंद।
ये तो हैं वनिता-वश दीन, काम-कटक-जीतन-बलहीन।।

प्रभु आगैं सुरकामिनि करैं, ते कटाक्ष सब खाली परैं।
यातैं मदन-विध्वंसन वीर, तुम भगवंत और नहिं धीर।।१२।।

दर्शनप्रीति हिये जब जगी, तबै आम्र-कोंपल बहु लगी।
तुम समीप उठ आवन ठयो, तबसों सघन प्रफुल्लित भयो।।
अबहूं निज नैनन ढिग आय, मुख मयंक देख्यो जगराय।
मेरो पुन्य विरख इहबार, सुफल फल्यो सबसुख दातार।।१३।।

दोहा—त्रिभुवन वनमें विस्तरी काम-दवावन जोर।
वाणी-वरषाभरण सो. शांति करहु चहुं ओर।।
इंद्र मोर नाचै निकट, भक्तिभाव धर मोह।
मेघ मघन चौबीस जिन, जैवंते जग होय।।१४।।

चौपाई

भविजन-कुमुदचंद सुखदैन, सुरनरनाथ-प्रमुख-जगजैन।
ते तुम देख रमैं इह भांति, पहुप गेह लह ज्यों अलि पांत।।
शिरधर अंजुलि भक्तिसेन, श्रीगृहपति परिदक्षण देन।
शिवसुख की सी प्रापति भई, चरणछांहसों भवतप गई।।१५।।

वह तुम-पद-नख-दर्पण देव, परम पूज्य सुंदर स्वयमेव।
तामें जो भवि भागविशाल, आनन अविलोके चिरकाल।।
कमला कीरति कांति अनूप, धीरज प्रमुख सकल सुखरूप।
वे जगमंगल कौन महान, जो न लहै वह पुरुष प्रधान।।१६।।

इंद्रादिक श्रीगंगा जहे उत्पति थान हिमाचल येह।
जिनमुद्रा-मंडित अतिलसै, हर्ष होय देखे दुख नसै।।
शिखर ध्वजागण सोहैं एम, धर्म सुत-रुवर पल्लव जेम।
यों अनेक उपमा आधार, ज्यो जिनेश जिनालय सार।।१७।।

शीश नवाय नमत सुरनार, केश-कांति-मिश्रित मनहार।
नख उद्योत वरतैं जिनराज, दशदिशि-पूरित किरण समाज।।
स्वर्ग-नाग-नरनायक संग. पूजत पाय-पद्म अतुलंग।
दुष्ट कर्मदल दलन सुजान, जैवंतो वरतो भगवान।।१८।।

सो कर जागै जो धीमान, पंडित सुधी सुमुख गुणवान।
आपन मंगलहेत प्रशस्त, अवलोकन चाहैं कछु बस्त।।
और बस्तु देखें किस काज, जो तुम मुख राजै जिनराज।
तीनलोकको मंगलथान, प्रेक्षणीय तिहुं जगकल्यान।।१९।।

धर्मोदय तापस-गृहकीर, काव्यबंध वन पिक तुम वीर।
मोक्ष-मल्लिका मधुप रसाल, पुन्यकथा कज्ञ सरसि मराल।।
तुम जिनदेव सुगुण मणिमाल। सर्वहितंकर दीनदयाल।
ताको कौन न उन्नतकाय, धरै किरीट मांहि हर्षाय।।२०।।

केई वांछैं शिवपुर बास, केई करैं स्वर्गसुख आस।
पचै पंचानल आदिक ठान, दुख बंधै जस बंधै अयान।।
हम श्रीमुखवानी अनुभवै, सरधा पूरव हिरदै ठवैं।
तिस प्रभाव आनन्दित रहैं, स्वर्गादिक सुख सहजे लहैं।।२१।।

न्होन महोच्छव इन्द्रन कियो, सुरतिय मिल मंगल पढ लियो।
सुयश शरद चंद्रोपम सेत, सो गंधर्व गान कर लेत।।
और भक्ति जो जो जिम जोग, शेष सुरन कीनी सुनियोग।
अब प्रभु करैं कौनसी सेव, हम चित भयो हिंडोला एव।।२२।।

जिनवर जन्मकल्यानक धोस, इंद्र आप नाचै कर होस।
पुलकित अग पिता-घर आय, नाचत विधिमें महिमा पाय।।
अमरी बीन बजावै सार, धरी कुचाग्र करत झंकार।
इहिविधि कौतुक देख्यो जबै, औसर कौन कह सकै अबै।।२३।।

श्रीपति-बिंब मनोहर एम, विकसत बदन कमलदल जेम।
ताहि हेर हरखे दृग दोय, कह न सकूं इतनो सुख हो।।
तब सुरसंग कल्यानक काल, प्रगटरूप जावै जगपाल।
इकटक दृष्टि एक चितलाय, वह आनंद कहा क्यों जाय।।२४।।

देख्यो देव रसायन धाम, देख्यो नव निधिको विसराम।
चिंतारयन सिद्धिरस अबै, जिनगृह देखत देख सबै।।

अथवा इन देखे कछु नाहिं, यम अनुगामी फल जगमांहि।
स्वामी सरयो अपूरव काज, मुक्तिसमीप भई मुझ आज।।२५।।

अब विनवै भूपाल नरेश, देखे जिनवर हरन कलेश।
नेत्रकमल विकसे जगचंद्र, चतुर चकोर करण आनंद।।
थुति जलसों यों पावन भयो पापताप मेरो मिट गयो।
मो चित है तुम चरणनमाहिं, फिर दर्शन हूज्यो अब जाहिं।।२६।।

छप्पय छंद।

इहिविधि बुद्धिविशाल राय भूपाल महाकवि।
कियो ललित थुतिपाठ हिये सब समझ सकै नावि।।
टीकाके अनुसार अर्थ कुछ मन मैं आयो।
कहीं शब्द कहिं भाव जोड भाषा जस गायो।।
आतम पवित्रकारण किमपि, बालख्याल सो जानियो।
लीज्यो सुधार 'भूधर' तणी, यह विनती बुध मानियो।।२७।।

इति समाप्त।

(ऋषि-मण्डल स्तोत्र ।।

आद्यंताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत्स्थितम्
अग्निज्वालासमं नाद बिन्दुरेखासमन्वितं।।१।।

अग्निज्वाला-समाक्रान्तंमनोमल-विशोधनं।
दैदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलं।।युग्म।।

ॐनमोअर्हद्भ्यईशेभ्य ॐसिद्धेभ्यो नमो नमः।
ॐ नम सर्वसूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नम।।३।।

ॐ नमः सर्वसाधुभ्य तत्त्वदृष्टिभ्य ॐ नमः।
ॐ नमः शुद्धबोधेभ्यश्चारित्रेभ्यो नमो नमः।।४।।युग्म।।

श्रेयसेअस्तु श्रियस्त्वेतदर्हदाद्यष्टक शुभं।
स्थानेष्वष्टसु सन्यस्तं पृथग्बीजसमन्वितम्।।५।।

आद्यं पदं शिरो रक्षेत् परं रक्षतु मस्तकं।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकां।।६।।

पंचमं तु मुख रक्षेत् षष्ठं रक्षतु घटिकां।
स्प्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं पादातं चाष्टमं पुनः।।७।।युग्मं।।

पूर्व प्रणवतः सांत. सरेफो द्वित्रिपंचषान्।
सप्ताष्टदशसूर्यांकान्श्रितोबिन्दुस्वरान्पृथक ।।८।।

पूज्यनामाक्षराद्यास्त् पंचदर्शनबोधकं ।
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रीं सांतसमलंकृतं ।।९।।

जंबूवृक्षधरो द्वीपः क्षारोवधि-समावृतः।
अर्हदाद्यष्टकरैष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः।।१।।

तन्मध्ये संगतो मेरूः कूटलक्षैरलंकृतः।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तारतारामंडलमंडितः।।२।।

तस्योपरि सकारांतं बीजमध्यास्य सर्वगं।
नमामि बिम्बमार्हंत्यं ललाटस्थं निरंजनं।।३।।विशेषकं।।

अक्षयं निर्मल शांतं बहुलं जाड्यतोज्झितं।
निरीहं निरहंकारं सारं सारतरं घनं।।४।।

अनुध्रुतं शुभं स्फीतं सात्त्विकं राजसं मतं।
तामसं विरसं बुद्धं तैजसं शर्वरीसमं।।५।।

साकारं च निराकारं सरसं विरसं परं।
परापरं परातीतं परं परपरापरं।।६।।

सकलं निष्कलं तुष्टं निर्भृतं भ्रान्तिवर्जितं।।
निरंजनं निराकांक्षं निर्लेप वीतसंशयं।।७।।

ब्रहमाणमीश्वरं बुद्धं शुद्धं सिद्धमभंगुरं।
ज्योतीरूपं महादेवं लोकालोकप्रकाशकं।।८।।कुलकं।।

अर्हदाख्यः सवर्णान्तः सरेफो बिंदुमंडितः।
तुर्यस्वरसमायुक्तो बहुध्यानादिमालितः।।९।।

एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं।
पंचवर्णं महावर्णं सपरं च परापरं।।१०।।युग्मं।।

अस्मिन्बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र संगताः।।११।।

नादश्चंद्रसमाकारो बिंदुर्नीलसमप्रभः।
कलारुणसमाक्रांतः स्वर्णाभः सर्वतोमुखः।।१२।।

शिरःसंलीन ईकारो विनीलो वर्णतः स्मृतः।
वर्णानुसारिसंलीनं तीर्थकृन्मंडलं नमः।।१३।।युग्मं।।

चंद्रप्रभपुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ।
बिंदुमध्यगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ।।१४।।

पद्मप्रभवासुपूज्यौ कलापदमधिश्रितौ।
शिर ईस्थितसंलीनौ पार्श्वपार्श्वौ जिनोत्तमौ।।१५।।

शेषास्तीर्थकराः सर्वे रहस्थाने नियोजिताः।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हताः।।१६।।

गतरागद्वेषमोहाः सर्वपापविवर्जिताः।
सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवंतु जिनोत्तमाः।।१७।।कलापकं।।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसन्तु पन्नगाः।।१८।।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसतु नागिनी।।१९।।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादितसर्वांगं मां मा हिंसन्तु गोनसाः।।२०।।

देवदेव० .... हिंसन्तु वृश्चिकाः।।२१।।
देवदेव० .... हिंसतु काकिनी।।२२।।
देवदेव० .... " डाकिनी।।२३।।
देवदेव० .... " शाकिनी।।२४।।
देवदेव० .... हिंसतु राकिनी।।२५।।
देवदेव० .... " लाकिनी।।२६।।
देवदेव० .... " साकिनी।।२७।।
देवदेव० .... " हाकिनी।।२८।।
देवदेव० .... हिंसतु राक्षसाः।।२९।।
देवदेव० .... " व्यंतराः।।३०।।
देवदेव० .... " भेकसाः।।३१।।
देवदेव० .... " ते ग्रहाः।।३२।।
देवदेव० .... " तस्कराः।।३३।।
देवदेव० .... " वह्नयः।।३४।।
देवदेव० .... " शृंगिणः।।३५।।
देवदेव० .... " दंष्ट्रिणः।।३६।।
देवदेव० .... " रेलपाः।।३७।।
देवदेव० .... " पक्षिणः।।३८।।
देवदेव० .... " मुद्गलाः।।३९।।
देवदेव० .... " जृंभकाः।।४०।।
देवदेव० .... " तोयदाः।।४१।।
देवदेव० .... " सिंहकाः।।४२।।
देवदेव० .... " शूकराः।।४३।।
देवदेव० .... " चित्रकाः।।४४।।
देवदेव० .... " हस्तिनः।।४५।।
देवदेव० .... " भूमिपाः।।४६।।
देवदेव० .... हिंसन्तु शत्रवः।।४७।।
देवदेव० .... " ग्रामिणः।।४८।।

देवदेव० ...." दुर्जनाः।।४९।।
देवदेव० ...." व्याधयः।।५०।।

श्रीगौतमस्य या मुद्रः तस्या या भुवि लब्धयः।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिरर्हः सर्वनिधीश्वरः।।५१।।

पातालवासिनो देवा देवा भूपीठवासिनः।
स्वः सवर्गवासिनो देवा सर्वे रक्षंतु मामित.।।५२।।

येअवधिलब्धयो ये तु परमावधिलब्धय।
ते सर्वे मुनयो दिव्या मां संरक्षतु सर्वत.।।५३।।

ॐ श्री ह्रींश्च धृतिर्लक्ष्मी गौरी चंडी सरस्वती।।
जयाम्बा विजया क्लिन्नाअजिता नित्या मदद्रवा।।५४।।

कामांगा कामबाणा च सानंदा नंदमालिनी।
माया मायाविनी रौद्री कला काली कलिप्रिया।।५५।।

एता सर्वा महादेव्यो वर्तन्ते या जगत्त्रये।
मम सर्वाः प्रयच्छंतु कान्ति लक्ष्मीं धृतिं मतिं।।५६।।

दुर्जना भूतवेतालाः पिशाचा मुद्गलास्तथा।
ते सर्वे उपशाम्यंतु देवदेवप्रभावतः।।५७।।

दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्य श्रीऋषिमंडलस्तव।
भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राणकृतोअनघ।।५८।।

रणे राजकुले वह्नौ जले दुर्गे गजे हरौ।
श्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानवं।।५९।।

राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं पदभ्रष्टा निजं पदं।
लक्ष्मीभ्रष्टाः निजां लक्ष्मीं प्राप्नुवन्ति न संशयः।।६०।।

भार्यार्थी लभते भार्यां पुत्रार्थी लभते सुतं।
धनार्थी लभते वित्तं नरः स्मरणमात्रतः।।६१।।

स्वर्णे रूप्येअथवा कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत्।
तस्यैवेष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती।।६२।।

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे।
धारितः सर्वदा दिव्यं सर्वभीतिविनाशनं।।६३।।

भूतै· प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्‌गलैस्तथा।
वातपित्तकफोद्रेकेर्मुच्यते नात्र संशयः।।६४।।

भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठवर्त्तिनः शाश्वता जिनाः।
तैः स्तुतैर्वंदितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः।।६५।।

एतद्‌गोप्यं महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित्।
मिथ्यात्ववासिनो देये बाल-हत्या पदे पदे।।६६।।

आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलिं।
अष्टसाहस्त्रिको जाप्यः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे।।६७।।

शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठंति दिने दिने।
तेषां न व्याध्यो देहे प्रभवंति न संशयः।।६८।।

अष्टमासावधिं यवत् प्रातः प्रातस्तुयः पठेत्।
स्त्रोत्रमेतन्महातेजस्त्वर्हद्‌बिम्बं स पश्यति।।६९।।

दृष्टे सत्यार्हते बिंबे भवे सप्तमके ध्रुवं।
पदं प्राप्नोति विश्रस्तं परमानंदसंपदां।।७०।।युग्म।।

इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तुतीनामुत्तमं परं।
पठनात्स्मरणाज्जाप्यात् सर्वदोषैर्विमुच्यते।।७१।।

जाप्यमंत्र ॐ ह्रां ह्रिं ह्रं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः
अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

इति ऋषि-मंडल-स्तोत्रं संपूर्णम्।

(पापभक्षिणी विद्यारूप मन्त्र)

ॐ अर्हन्मुख-कमलवासिनी पापत्म-क्षयंकरि, श्रुताज्ञान-ज्वाला-सहस्र प्रज्वलिते-सरस्वति मत्पापं हन हन, दह दह, क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरवर-धवले अमृत-संभवे वं वं हूं हूं स्वाहा।

इस मत्र के जप के प्रभाव से साधक का चित्त प्रसन्नता धारण करता है, पाप नष्ट हो जाते हैं और आत्मा मे पवित्र भावनाओ का सचार हो जाता है।

महा-मृत्युजय मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहन्ताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं, मम सर्व-ग्रहारिष्टान् निवारय निवारय अपमृत्युं घातय घातय सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—दीप जलाकर धूप देते हुए नैष्ठिक रहकर इस मत्र का स्वय जाप करे या अन्य द्वारा करावे। यदि अन्य व्यक्ति जाप करे तो 'मम' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड ले—अमुकस्य सर्व-ग्रहारिष्टान् निवारय आदि।

इस मत्र का सवा लाख जप करने से ग्रह-बाधा दूर हो जाती है कम से कम इस मत्र का ३१ हजार जाप करना चाहिये। जाप के अनन्तर दशाश आहुति देकर हवन भी करे।

श्रीजिनसहस्रनामस्त्रोत्रम्

(भगवज्जिनसेनाचार्य कृत)

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि।
स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये।।१।।

नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोऽस्तु ते।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर।।२।।

कर्मशात्रुहणं देवमामनन्ति मनीषिणः।
त्वामानमत्सुरेण्मौलि-भा-मालाभ्यर्चित-क्रमम्।।३।।

ध्यान-दुर्घण-निर्भिन्न-घन-घाति-महातरुः।
अनन्त-भव-सन्तान-जयादासीरनन्तजित्।।४।।

त्रैलोक्य-निर्जयावाप्त-दुर्दर्प्पमतिदुर्जयम्।
मृत्युराजं विजित्यासीज्जिन मृत्युंजयो भवान्।।५।।

विधूताशेष-संसार-बन्धनो भव्य-बान्धवः।
त्रिपुरारिस्त्वमीशोऽसि जन्म-मृत्युजरान्तकृत्।।६।।

त्रिकाल-विजयाशेष-तत्त्वभेदात् त्रिधोत्थितम्।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशिता।।७।।

त्वामन्धकान्तकं प्राहुर्मोहान्धासुर-मर्द्दनात्।
अर्द्ध ते नारयो यस्मादर्धनारीश्वरोऽस्यतः।।८।।

शिवः शिव-पदाध्यासाद् दुरितारि-हरो हरः।
शंकरः कृतशं लोके शम्भवस्त्वं भवन्सुखे।।९।।

वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठ. पुरः पुरु-गुणोदयैः।
नाभेयो नाभि-सम्भूतेरिक्ष्वाकु-कुल-नन्दनः।।१०।।

त्वमेकः पुरुषस्कधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने।
त्वं त्रिधा बुद्ध-सन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञान-धारकः।।११।।

चतुःशरण-मागंल्यमूर्तिस्त्वं चतुरस्रधीः।
पञ्च-ब्रह्ममयो देव पावनस्त्वं पुनीहि माम्।।१२।।

स्वर्गावतारिणये तुभ्यं सद्योजातात्मने नमः।
जन्माभिषेक-वामाय वामदेव नमोऽस्तु ते।।१३।।

सन्निष्क्रान्तावघोराय परं प्रशममीयुषे।
केवलज्ञान-संसिद्धावीशानाय नमोऽस्तु ते।।१४।।

परस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्त-पद-भाजिने।

नमस्तत्पुरुषावस्थां भाविनीं तेअद्य बिभ्रते।।१५।।

ज्ञानावरणनिर्ह्रासान्नमस्तेऽनन्तचक्षुषे।
दर्शनावरणोच्छेदान्नमसते विश्वदश्वने।।१६।।

नमो दर्शनामोहघ्ने क्षायिकामलदृष्टये।
नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौजसे।।१७।।

नमस्तेअनन्त-वीर्याय नमोअनन्त-सुखात्मने।
नमस्तेअनन्त-लोकाय लोकालोकावलोकिने।।१८।।

नमस्तेअनन्त-दानाय नमस्तेअनन्त-लब्धये।
नमस्तेअनन्त-भोगाय नमोअनन्तोपभोगिने।।१९।।

नम· परम-योगाय नमस्तुभ्यमयोनये।
नम. परम-पूताय नमस्ते परमर्षये।।२०।।

नमः परम-विद्याय नमः पर-मत-च्छिदे।
नमः परम-तत्त्वाय नमस्ते परमात्मने।।२१।।

नम· परमरूपाय नम. परम-तेजसे।
नमः परम-मार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने।।२२।।

परमर्द्धिजुषे धाम्ने परम-ज्योतिषे नम.।
नम· पारेतमःप्राप्तधाम्ने परतरात्मने।।२३।।

नमः क्षीण-कलकांय क्षीण-बन्ध नमोअस्तु ते।
नमस्ते क्षीण-मोहाय क्षीण-दोषाय ते नमः।।२४।।

नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे।
नमस्तेअतीन्द्रिय-ज्ञान-सुखायानिन्द्रियात्मने।।२५।।

काय-बन्धननिर्मोक्षादकायाय नमोअस्ते ते।
नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने।।२६।।

अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः।
नम परम-योगीन्द्र-वन्दितांघ्रि-द्वयाय ते।।२७।।

नमः परम-विज्ञान नमः परम-संयम।
नमः परमदृग्दृष्ट-परमार्थाय तायिने।।२८।।

नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशक-स्पृशे।
नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षिणे।।२९।।

संज्ञयसंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने।
नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये।।३०।।

अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे।
व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे।।३१।।

अजराय नमस्तुभ्यं नमस्ते स्तादजन्मिने।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने।।३२।।

अलमास्तां गुणस्तोत्रमनन्तास्तावका गुणाः।
त्वां नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसिषामहे।।३३।।

एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधीः।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्र पाप-शान्तये।।३४।।

इति प्रस्तावना

प्रसिद्धाष्ट-सहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरा पतिम्।
नाम्नामष्टसहस्रेण तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये।।१।।

श्रीमान्स्वयम्भूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः।।२।।

विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वत क्षुरक्षरः।
विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनश्वरः।।३।।

विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः।।४।।

विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः।
विश्वदृग् विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः।।५।।

जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः।
अनन्तजिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरबन्धनः।।६।।

युगादिपुरुषो ब्रह्मा पचंब्रह्मय शिवः॥
पर परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः।।७।।

स्वयंज्योतिरजोअजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः।
मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वज ।।८।।

प्रशान्तारिरनन्तात्मा योगी योगीश्वरार्चित ।
ब्रह्माविद्‌ ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्यविद्यतीश्वर ।।९।।

शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः।
सिद्ध सिद्धान्तविद्‌ ध्येयः सिद्धसाध्यो जगद्धित ।।१०।।

सहिष्णुरच्युतोअनन्तः प्रभविष्णुर्भवो भ्दवः।
प्रभूष्णुरजरोअजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोअव्ययः।।११।।

विभावसुरसम्भूष्णुः स्वयम्भूष्णुः पुरातन।
परमात्मा परंज्योतिस्रिजगत्परमेश्वरः।।१२।।

इति श्रीमदादिशतम्।।१।।

(प्रत्येक शतकके अन्तमे उदकचदनतदुल आदि श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।)

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः।
पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः।।१।।

श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः।
तीर्थकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोअमलः।।२।।

अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयम्बुद्धः प्रजापतिः।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः।।३।।

निरंजनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिरनामयः।
अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः।।४।।

अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत्।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत्।।५।।

वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः।
वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोभ्दवः।।६।।

हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद् भूतभावनः।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः।।७।।

हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोऽभवः।
स्वयंप्रभः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्पतिः।।८।।

सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्वविद्सर्वलोकजित्।।९।।

सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुत् सुवाक् सूरिर्बहुश्रुतः।
विश्रुतः विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः।।१०।।

सहस्रशीर्षा क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
भूतभव्यभवभ्दर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः।।११।।

इति दिव्यादिशतम्।।२।। अर्घ्यम्

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठःश्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठगीः।।१।।

विश्वमृद्विश्वसृड् विश्वेड् विश्वभुग्विश्वनायकः।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः।।२।।

विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन्।
विरागो विरतोऽसङ्गो विविक्तो वीतमत्सरः।।३।।

विनेयजनताबन्धुर्विलीनाशेषकल्मषः।
वियोगो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधः सुधीः।।४।।

क्षान्तिभाक्पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक् सलिलात्मकः।
वायुमूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधक्।।५।।

सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञांगममृतं हविः।।६।।

व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः।।७।।

मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनन्तगः।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वन्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत्।।८।।

कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः।
नित्यो मृत्युंजयोऽमृत्युरमृतात्माऽमृतोद्भव।।९।।

ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्मा ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भवः।
महाब्रह्मापतिर्ब्रह्मो महाब्रह्मापदेश्वरः।।१०।।

सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराणपुरुषोत्तमः।।११।।

इति स्थविष्ठादिशतम्।।३।। अघ्यर्यम्

महाशोकध्वजोअशोकः कः स्रष्टा पद्मविष्टरः।
पद्मेशः पद्मसम्भूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः।।१।।

पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः।।२।।

गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः।
गुणाकरो गुणाम्भोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः।।३।।

गुणादरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायक.।।४।।

अगण्यः पुण्यधीर्गुण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः।।५।।

पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः।
निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो निर्मोहो निरुपद्रवः।।६।।

निर्भिमेषो निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लवः।
निष्कलंको निरस्तैना निर्धूतागा निरास्रवः।।७।।

विशालो विपुलज्योतिरतुलोअचिन्त्यवैभवः।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभुत् सुनयतत्त्ववित्।।८।।

एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतान्तकः।।९।।

पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान्।।१०।।

कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः।
प्रतिष्ठाप्रसवो हेतुर्भुवनैकपितामहः।।११।।

इति महाशोकध्वजादिशतम् ।।४।। अर्घ्यम्।

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः।
निरक्षः पुण्डरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः।।१।।

सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः।
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्धमानो महर्द्धिकः।।२।।

वेदांगो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः।
वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवर.।।३।।

अनादिनिधनोअव्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः।
युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः।।४।।

अतीन्द्रोअतीन्द्रियो धीन्द्रो महेन्द्रोअतीन्द्रियार्थदृक्।
अनिन्द्रियोअहमिन्द्रार्च्यो महेन्द्रमहितो महान्।।५।।

उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः।
अग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः।।६।।

अनन्तर्द्धिरमेयर्द्धिरचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोअभ्यग्रः प्रत्यग्रोअग्र्योअग्रिमोअग्रजः।।७।।

महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः।
महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः।।८।।

महाधैर्यो महावीर्यो महासम्पन्महाबलः।
महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः।।९।।

महामतिर्महानीतिर्महाक्षान्तिर्महादयः।
महाप्राज्ञो महाभागो महानन्दो महाकविः।।१०।।

महामहा महाकीर्तिर्महाकान्तिर्ममहावपुः।
महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः।।११।।

महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपचंकः।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः।।१२।।

इति श्रीवृक्षादिशतम् ।।५।। अर्घ्यम्।

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः।।१।।

महाव्रतपतिर्मह्यो महाकान्तिधरोअधिपः।
महामैत्री महामेयो महोपायो महोमयः।।२।।

महाकारुणिको मन्ता महोमन्त्रो महायतिः।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः।।३।।

महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महिष्ठवाक्।
महात्मा महसांधम महर्षिर्महितोदयः।।४।।

महाक्लेशाकुंशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः।
महापराक्रमोअनन्तो महाक्रोधरिपुर्वशी।।५।।

महाभवाब्धिसन्तारिर्महामोहाद्रिसूदनः।
महागुणाकरः क्षान्तो महायोगीश्वरः शमी।।६।।

महाध्यानपतिर्ध्यातमहाधर्मा महाव्रतः।
महाकर्मारिहाअत्मज्ञो महादेवो महेशिता।।७।।

सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः।।८।।

सर्वयोगीश्वरोऽचिन्त्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः।
दान्तात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः।।९।।

प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः।
प्रक्षीणबन्धः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः।।१०।।

प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोध्वर्युरध्वरः।।११।।

आनन्दो नन्दनो नन्दो वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः।
कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिजंयः।।१२।।

इति महामुन्यादिशतम्।। ६।। अर्घ्यम्।

असंस्कृतसुसंस्कार प्राकृतो वैकृतान्तकृत्।
अन्तकृत्कान्तगुः कान्तश्चिन्तामणिरभीष्टदः।।१।।

अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितान्तकः।।२।।

जिनेन्द्रः परमानन्दो मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्वनः।
महेन्द्रवन्द्यो योगीन्द्रो यतीन्द्रो नाभिनन्दनः।।३।।

नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोऽधिगुरुः सुधीः।।४।।

सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः।।५।।

क्षेमी क्षेमकंरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपति क्षमी।
अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुतर.।।६।।

सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुख.।।७।।

सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः।
सत्याशीः सत्यसन्धानः सत्यः सत्यपरायणः।।८।।

स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान् दूरदर्शनः।
अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसाम्।।९।।

सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिव।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदय.।।१०।।

सुघोष. सुमुख. सौभ्य सुखद. सुहित सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः।।११।।

इति असस्कृतादिशतम् ।।७।। अर्घ्यम्।

बृहद्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः।
मनीषी धिषणो धीमाञ्छेमुषीशोगिरापति.।।१।।

नैकरूपो नयोत्तुगों नैकात्मा नैकधर्मकृत्।
अविज्ञेयोअप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञ कृतलक्षण ।।२।।

ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वर ।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शन.।।३।।

लक्ष्मीवांस्रिदशाध्यक्षो द्दढीयानिन ईशिता।
मनोहरो मनोज्ञागों धीरो गम्भीरशासन ।।४।।

धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वर ।
धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषण.।।५।।

अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोअमोघशासनः।
सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः।।६।।

सुस्थितःस्वास्थ्यभाक्स्वस्थोनीरजस्कोनिरुद्धवः।
अलेपो निष्कलकात्मा वीतरागो गृतस्पृहः।।७।।

वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः।
प्रशान्तोअनन्तधामर्षिर्मगलं मलहानघः।।८।।

अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः।
अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक्।।९।।

अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद्योगिवन्दितः।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकालविषयार्थदृक्।।१०।।

शंकरः शंवदो दान्तो दमी क्षान्तिपरायणः।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः।।११।।

त्रिजगद्वल्लभोअभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदयः।
त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः।।१२।।

इति बृहदादिशतम्।।८।। अर्घ्यम्।

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः।।१।।

पुराणः पुरुषः पूर्वः कृतपूर्वांगविस्तरः।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोअधिदेवता।।२।।

युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः।
कलयाणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः।।३।।

कल्याणप्रकृतिर्दीप्रकल्याणात्मा विकल्मषः।
विकलंकः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः।।४।।

देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगाद्विभुः।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः।।५।।

चराचरगुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः।
सद्योजातः प्रकाशत्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः।।६।।

आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटिसमप्रभः।।७।।

तपनीयनिभस्तुंगों बालार्काभोअनलप्रभः।
सन्ध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छविः।।८।।

निष्टप्तकनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भनिभप्रभः।।९।।

द्युम्नाभो जातरूपाभस्तप्तजाम्बू नदद्युतिः।
सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः।।१०।।

शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः।
शत्रुघ्नोअप्रतिघोअमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः।।११।।

शान्तिनिष्ठो मुनिज्ज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः
शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कान्तिमान्कामितप्रदः।।१२।।

श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः।।१३।।

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ।।९।। अर्घ्यम्

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः।
निष्किञ्चनोनिराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः।।१।।

तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शीलसागरः।
तेजोमयोअमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोपहः।।२।।

जगच्चूडामणिर्दीप्तः शंवान्विघ्नविनायकः।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः।।३।।

अनिद्रालुरतन्द्रालुर्जागरूकः प्रमामयः।
लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः।।४।।

मुमुक्षुर्बन्धमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः।
प्रशान्तरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः।।५।।

मूलकर्ताअखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणम्।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक्।।६।।

प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित्।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः।।७।।

श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः।।८।।

लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक्।।९।।

प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेन्द्रियः।
भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः।।१०।।

समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठशुशुक्षणिः।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः।।११।।

अनन्तशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः।
त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः।।१२।।

समन्तभद्रः शान्तारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानंगः कृपालुर्धर्मदेशकः।।१३।।

शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः।।१४।।

इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ।।१०।। अर्घ्यम्।

धाम्नां पते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः।
समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत्।।१।।

गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः।
स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं भजेत्।।२।।

त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः।।३।।

त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगः स्वोत्थानन्तचतुष्टयः।।४।।

त्वं पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्याणनायकः।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः।।५।।

विव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर।'६।।

युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया।
भवन्तं परिवस्यामः प्रसीदानुगृहाण नः।।७।।

इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः।
यः संपाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याणभाजनम्।।८।।

ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठित पुण्यधीः
पौरुहूतीं श्रियं पाप्तुं परमामभिलाषुकः।।९।।

स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरूम्।
ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमाम्।।१०।।

स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखम्।।११।।

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित्।
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित्।।
यो नेतृन् नयते नमस्कृतिमलं नन्तव्यपक्षेक्षणः।
स श्रीमान् जगतां त्रयस्क च गुरुर्देवः पुरुः पावनः।।१२।।

तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तर।
प्रोत्थानन्तचतुष्टयं जिनमिनं भव्याब्जिनीनामिनम्।।
मानस्तम्भविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिं।
प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे।।१३।।

(पुष्पाजलि क्षिपामि।)

भक्तामर स्तोत्र

परिचय

यह सुप्रसिद्ध स्तोत्र है। क्रुद्ध नृपति द्वारा आचार्यमानतुग को बलपूर्वक पकड़वा कर ४८ तालो के अन्दर बन्द करवा दिया गया था। उस समय धर्म की

रक्षा और प्रभावना हेतु आचार्य श्री ने भगवान आदिनाथ की इस स्तुति की रचना की जिससे ४८ ताले स्वय टूट गये और राजा ने क्षमा मागकर उनके प्रति बडी भक्ति प्रदर्शित की। भक्तामर का प्रति दिन पाठ समस्त विघ्न बाधाओ का नाशक और सब प्रकार मगलकारक माना जाता है। इसका प्रत्येक श्लोक मत्र मानकर उसकी आराधना भी की जाती है।

भक्तामरस्तोत्रम्

(श्री मानतुगाचार्य)

भक्तामर-प्रणतः-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक्-प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम्।।१।।

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभि सुर-लोकनाथै'।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम।।२।।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोअहम्।
बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब-
मन्य. क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।३।।

वक्तुं गुणान्गुण-समुद्र शशाकं-कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोअपि बुद्धय।।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।४।।

सोअहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश
कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः।

प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज-शिशोःपरिपालनार्थम्।।५।।

अल्प-श्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम
त्वद् भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चारु-चाम्र-कलिका-निकरैक-हेतु।।६।।

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं
पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु
सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्।।७।।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सना नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फलद्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः।।८।।

आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं
त्वत्सकंथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि।।९।।

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण भूत-नाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः
तुल्या भविन्त भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।१०।।

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधेरसितुं क इच्छेत्।।११।।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत
तावन्त एव खलु तेअप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न ही रूपमस्ति।।१२।।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश कल्पम्।।१३।।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशाकं-कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लघंयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टम्।।१४।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।१५।।

निर्धूम-वर्तिरपवर्जित-तैल-पूर
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटो-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोअपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाश।।१६।।

नास्त कदाचिदुपयासि न राहु-गम्य.
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र लोके।।१७।।

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।

विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।१८।।

किं शर्वरीषु शशिनाहिनविवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमः सु नाथ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः।।१९।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हिर-हरादिषु नायकेषु।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथां महत्त्वं
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेअपि।।२०।।

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरित नाथ भवान्तरेअपि।।२१।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मि
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।।२२।।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्णममलं तमस. पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिव. शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः।।२३।।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनगंकेतुम्।
योगीश्वरं विदित- योगमनेकमेकं
ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।।२४।।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर शिव-मार्ग-विधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि।।२५।।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि-शोषणाय।।२६।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषैरुपात्तविविधाश्रय-जात-गर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।।२७।।

उच्चैरशोक-तरु संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।।२८।।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता-वितानं
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्र-रश्मेः।।२९।।

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक-शुचि-निर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्।।३०।।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।

मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्धशोभं
प्रख्यापयत्त्रिजगत· परमेश्वरत्वम्।।३१।।

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम· भूति-दक्ष·।
सद्धर्मराज-जय-घोषण-घोषक. सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।३२।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपरिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्प्रपाता
दिव्या दिव· पतति ते वचसा ततिर्वा।।३३।।

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ति।
प्रोद्यद्दिवाकर-निरन्तर-भूरि-संख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्।।३४।।

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्ट
सद्धर्म-तत्व-कथनैक-पटुस्त्रिलोक्या.।
दिव्य-ध्वनिर्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणै.-प्रयोज्य·।।३५।।

उन्निद्र-हेम-नव-पंकज-पुंज-कान्ती
पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधा. परिकल्पयन्ति।।३६।।

इत्थ यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशान-विधौ-न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृत. प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोअपि।।३७।।

श्च्योतन्मदाविल-विलोक-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।।३८।।

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ता-फल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रम-युगाचल संश्रितं ते।।३९।।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघित्सुमिव संमुखमापतन्तं
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।४०।।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं
क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रम-युगेण निरस्त शंक-
स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः।।४१।।

वल्गत्तुरंग-गज-गर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्
उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं-
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति।।४२।।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय पक्षा-
स्त्वत्पाद-पंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते।।४३।।

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ।

रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।४४।।

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः
शोच्या दशामुपगताश्च्युत-जीविताशा.
त्वत्पाद-पंकज-रजोमृत-दिग्ध-देहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपा ।।४५।।

आपाद-कण्ठमुरु-शृंखल-वेष्टितांगा
गाढ बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघा ।
त्वन्नाम-मन्त्रमनिश मनुजा स्मरन्त
सद्य स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति।।४६।।

मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
सङ्ग्राम वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावक स्तवमिम मतिमानधीते।।४७।।

स्तोत्रस्रज तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धा
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्र
तं 'मानतुग'मवशा समुपैति लक्ष्मी ।।४८।।

भक्तामर-महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रात, भक्ति मन लाई।
सब सकट जायें नशाई।।

जो ज्ञान-मान-मतवारे थे, मुनि मानतुग से हारे थे।
उन चतुराई से नृपति लिया, बहकाई ।।सब सकट० ।।१।।

मुनिजी को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुक्म सुनाया था।
मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई ।।सब संकट० ।।२।।

उपसर्ग घोर तब आया था, बलपूर्वक पकड मगाया था।

हथकड़ी बेड़ियों मे तन दिया बंधाई ।।सब संकट० ।।३।।

मुनि कारागृह भिजवाये थे, अड़तालिस ताले लगाये थे।
क्रोधित नृप बाहर पहरा दिया बिठाई ।।सब संकट० ।।४।।

मुनि शान्तभाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था।
हो ध्यान-मग्न भक्तामर दिया बनाई ।।सब संकट० ।।५।।

सब बन्धन टूट गये मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके।
कारागृह से आ बाहर दिये दिखाई ।।सब संकट० ।।६।।

राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था।
मुनि के चरणों में अनुपम भक्ति दिखाई ।।सब संकट० ।।७।।

जो पाठ भक्ति से करता है, नित ऋषभ-चरण चित धरता है।
जो ऋद्धि-मन्त्र का विधिवत जाप कराई ।।सब संकट० ।।८।।

भय विघ्न उपद्रव टलते हैं विपदा के दिवस बदलते हैं।
सब मन वाञ्छित हों पूर्ण, शान्ति छा जाई ।।सब संकट० ।।९।।

जो वीतराग आराधन है, आतम उन्नति का साधन है।
उमसे प्राणी का भवबन्धन कट जाई ।।सब सकट० ।।१०।।

"कौशल" सुभक्ति को पहिचानो, संसार-दृष्टि बन्धन जानो।
लो भक्तामर से आत्म-ज्योति प्रकटाई ।।सब संकट० ।।११।।

भक्तामर स्तोत्र (भाषा)

(अनुवादक श्री प० हेमराज जी)

आदिपुरुष आदीश जिन, आदि सुविधि करतार।
धरम-धुरंधर परमगुरु, नमों आदि अवतार।।
सुर-नत-मुकुट रतन-छवि करैं, अंतर पाप-तिमिर सब हरैं।
जिनपद बंदों मन वच काय, भव-जल-पतित उधरन-सहाय।।१।।

श्रुत-पारग इंद्रादिक देव, जाकी थुति कीनी कर सेव।

'शब्द मनोहर अरथ विशाल, तिस प्रभु की वरनों गुन-माल।।२।।

विबुध-वंद्य-पद मैं मति-हीन, हो निलज्ज थुति-मनसा कीन।
जल-प्रतिबिंब बुद्ध को गहै, शशि-मडल बालक ही चहै।।३।।

गुन-समुद्र तुम गुन अविकार, कहत न सुरु-गुरु पावै पार।
प्रलय-पवन-उद्धत जल-जन्तु, जलधि तिरै को भुज बलवन्त।।४।।

सो मैं शक्ति-हीन थुति करू, भक्ति-भाव-वश कछु नहिं डरूं।
ज्यों मृगि निज-सुत पालन हेतु, मृगपति सन्मुख जाय अचेत।।५।।

मैं शठ सुधी हँसन को धाम, मुझ तव भक्ति बुलावै राम।
ज्यों पिक अंब-कली परभाव, मधु-ऋतु मधुर करै आराव।।६।।

तुम जस जपत जन छिनमाहि, जनम जनम के पाप नशाहि।
ज्यों रवि उगै फटै तत्काल, अलिवत नील निशा-तम-जाल।।७।।

तव प्रभावतै कहूँ विचार, होसी यह थुति जन-मन-हार।
ज्यो जल-कमल पत्रपै परै, मुक्ताफल की द्युति विस्तरै ।।८।।

तुम गुन-महिमा हत-दुख-दोष, सो तो दूर रहो सुख-पोष।
पाप-विनाशक है तुम नाम, कमल-विकाशी ज्यो रवि-धाम।।९।।

नहि अचभ जो होहि तुरन्त, तुमसे तुम गुण वरणत सन्त।
जो अधीन को आप समान, करै न सो निंदित धनवान।।१०।।

इकटक जन तुमको अविलोय, अवर-विषैं रति करै न सोय।
को करि क्षीर-जलधि जल पान, क्षार नीर पीवै मतिमान।।११।।

प्रभु तुम वीतराग गुण-लीन, जिन परमाणु देह तुम कीन।
है तितने ही ते परमाणु, यातै तुम सम रूप न आनु।।१२।।

कहँ तुम मुख अनुपम अविकार, सुर-नर-नाग-नयन-मनहार।
कहाँ चन्द्र-मडक-सकलक, दिन मे ढाक-पत्र सम रंक।।१३।।

पूरन चन्द्र-ज्योति छबिवत, तुम गुन तीन जगत लघत।
एक नाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करै निवार।।१४।।

जो सुर-तिय विभ्रम आरम्भ, मन न डिग्यो तुम तौ न अचंभ।
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरु-शिखर डगमगै न धीर।।१५।।

धूमरहित बाती गत नेह, परकाशै त्रिभुवन-घर एह।
बात-गम्य नाहीं परचण्ड, अपर दीप तुम बलो अखंड।।१६।।

छिपहु न लुपहु राहुकी छांहि, जग परकाशक हो छिनमांहि।
घन अनवर्त दाह विनिवार, रवितैं अधिक धरो गुणसार।।१७।।

सदा उदित विदलित मनमोह, विघटित मेघ राहु अविरोह।
तुम मुख-कमल अपूरव चन्द, जगत-विकाशी जोति अमंद।।१८।।

निश-दिन शशि रवि को नहिं काम, तुम मुख-चन्द हरै तम-धाम।
जो स्वभावतैं उपजै नाज, सजल मेघ तैं कौनहु काज।।१९।।

जो सुबोध सोहै तुम माहि, हरि हर आदिक में सो नाहिं।
जो द्युति महा-रतन में होय, काच-खंड पावै नहि सोय।।२०।।

नाराच छन्द

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया।
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया।।
कछू न तोहि देखके जहां तुही विशेखिया।
मनोग चित्त-चोर और भूल हू न पेखिया।।२१।।

अनेक पुत्रवंतिनी नितंबिनी सपूत हैं।
न सो समान पुत्र और माततैं प्रसूत हैं।।
दिशा धरन्त तारिका अनेक कोटि को गिनै।
दिनेश तेजवन्त एक पूर्व ही दिशा जनै।।२२।।

पुरान हो पुमान हो पुनीत पुण्यवान हो।
कहें मुनीश अंधकार-नाश को सुभान हो।।
महंत तोहि जानके न होय वश्य कालके।
न और मोहि मोखपथ देय तोहि टालके।।२३।।

अनन्त नित्य चित्तकी अगम्य रम्य आदि हो।
असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्मा हो अनादि हो।।
महेश कामकेतु योग ईश योग ज्ञान हो।
अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध सतमान हो।।२४।।

तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धिके प्रमानतै।
तुही जिनेश शकरो जगत्त्रये विधानतै।।
तुही विधात है सही सुमोखपथ धारतै।
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थ के विचारतै।।२५।।

नमो करूँ जिनेश तोहि आपदा निवार हो।
नमो करूँ सुभूरि-भूमि-लोकके सिगार हो।।
नमो करूँ भवाब्धि-नीर-राशि-शोष-हेतु हो।
नमो करूँ महेश तोहि मोखपथ देत हो।।२६।।

चौपई। १५ मात्रा।

तुम जिन पूरन-गुन-गन भरे, दोष गर्वकरि तुम परिहरे।
और देव-गण आश्रय पाय, स्वप्न न देखे तुम फिर आय।।२७।।

तरु अशोक-तर किरन उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ निकट ज्यो तेज फुरन्त, दिनकर दिपै तिमिर निहनन्त।।२८।।

सिहासन मणि-किरण-विचित्र, तापर कचन-बरन पवित्र।
तुम तन शोभित किरन विथार, ज्यो उदयाचल रवि तम-हार।।२९।।

कुद-पुहुप-सित-चमर ढुरत, कनक-बरन तुम तन शोभत।
ज्यो सुमेरु-तट निर्मल काति, झरना झरै नीर उमगाति।।३०।।

ऊँचे रहै सूर दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपै अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहै, मोती-झालरसो छवि लहै।।३१।।

दुदुभि-शब्द गहर गभीर, चहुँ दिशि होय तुम्हारे धीर।
त्रिभुवन-जन शिव-संगम करै, मानूँ जय जय रव उच्चरै।।३२।।

मद पवन गधोदक इष्ट, विविध कल्पतरु पुहुप-सुवृष्ट।

देव करैं विकसित दल सार, मानो द्विज-पंकति अवतार।।३३।।

तुम तन-भामंडल जिनचन्द, सब दुतिवंत करत है मन्द।
कोटि शंख रवि तेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करे अछाय।।३४।।

स्वर्ग-मोख-मारग संकेत, परम-धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरें अगाध, सब भाषा-गर्भित हित साध।।३५।।

दोहा

विकसित-सुवरन-कमल-दुति, नख-दुति मिलि चमकाहिं।
तुम पद पदवी जह धरो, तहं सुर कमल रचाहिं।।३६।।

ऐसी महिमा तुम विषै, और धरै नहि कोय।
सूरज मे जो जोत है, नहि तारा-गण होय।।३७।।

षट्पद

मद-अवलिप्त-कपोल-मूल अलि-कुल झंकारे।
तिन सुन शब्द प्रचड क्रोध उद्धत अति धारैं।।
काल-वरन विकराल, कालवत सनमुख आवै।
ऐरावत सो प्रबल सकल जन भय उपजावै।।
देखि गयद न भय करै तुम पद-महिमा लीन।
विपति-रहित सपति-सहित बरतैं भक्त अदीन।।३८।।

अति मद-मत्त गयद कुभ-थल नखन विदारै।
मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै।।
बाकी दाढ विशाल वदन मे रसना लोलै।
भीम भयानक रूप देख जन थरहर डोलै।।
ऐसे मृग-पति पग-तलैं जो नर आयो होय।
शरण गये तुम चरण की बाधा करै न सोय।।३९।।

प्रलय-पवनकर उठी आग जो तास पटंतर।
वमैं फुलिग शिखा उतंग परजलैं निरतर।।
जगत समस्त निगल्ल भस्म करहैगी मानों।

तडतडाट दव-अनल जोर चहुँ-दिशा उठानो।।
सो इक छिन में उपशमैं नाम-नीर तुम लेत।
होय सरोवर परिनमैं विकसित कमल समेत।।४०।।

कोकिल-कंठ-समान श्याम-तन क्रोध जलन्ता।
रक्त-नयन फुंकार मार विष-कण उगलता।।
फण को ऊंचा करे वेग ही सन्मुख धाया।
तब जन होय निशक देख फणपतिको आया।।
जो चांपै निज पगतलैं व्यापै विष न लगार।
नाग-दमनि तुम नामकी है जिनके आधार।।४१।।

जिस रन-माहिं भयानक रव कर रहे तुरगम।
धनसे गज गरजाहिं मत्त मानो गिरि जगम।।
अति कोलाहल माहि बात जहँ नाहि सुनीजै।
राजनको परचड, देख बल धीरज छीजै।।
नाथ तिहारे नामतैं सो छिनमाहि पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं अन्धकार विनशाय।।४२।।

मारै जहां गयंद कुभ हथियार विदारै।
उमगै रुधिर प्रवाह वेग जलसम विस्तारै।।
होय तिरन असमर्थ महाजोधा बलपूरे।
तिस रनमें जिन तोर भक्त जे हैं नर सूरे।।
दुर्जय अरिकुल जीतके जय पावैं निकलंक।
तुम पद पंकज मन बसैं ते नर सदा निशंक।।४३।।

नक्र चक्र मगरादि मच्छकरि भय उपजावै।
जामैं बड़वा अग्नि दाहतैं नीर जलावै।।
पार न पावै जास थाह नहिं लहिये जाकी।
गरजै अतिगंभीर, लहरकी गिनति न ताकी।।
सुखसों तिरैं समुद्रको, जे तुम गुन सुमराहिं।
लोल कलोलनके शिखर, पार यान ले जाहिं।।४४।।

महा जलोदर रोग, भार पीड़ित नर जे हैं।
वात पित्त कफ कुष्ट, आदि जो रोग गहै हैं।।
सोचत रहें उदास, नाहिं जीवनकी आशा।
अति घिनावनी देह, धरैं दुर्गंध निवासा।।
तुम पद-पंकज-धूल को, जो लावैं निज अंग।
ते नीरोग शरीर लहि, छिनमें होय अनंग।।४५।।

पाव कंठतें जकर बांध, सांकल अति भारी।
गाढ़ी बेडी पैर मांहि, जिन जांघ बिदारी।।
भूख प्यास चिंता शरीर दुख जे विललाने।
सरन नाहिं जिन कोय भूपके बंदीखाने।।
तुम सुमरत स्वयमेव ही बंधन सब खुल जाहिं।
छिनमें ते सपति लहैं, चिंता भय विनसाहिं।।४६।।

महामत्त गजराज और मृगराज दवानल।
फणपति रण परचंड नीरनिधि रोग महाबल।।
बंधन ये भय आठ डरपकर मानों नाशै।
तुम सुमरत छिनमाहिं अभय थानक परकाशै।।
इस अपार संसार में शरन नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तुम पदभक्तको भक्ति सहाई होय।।४७।।

यह गुनमाल विशाल नाथ तुम गुनन सँवारी।
विविधवर्णमय पुहुप गूंथ मैं भक्ति विथारी।।
जे नर पहिरें कंठ भावना मनमें भावैं।
मानतुंग ते निजाधीन। शिवलक्ष्मी पावैं।।
भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत।
जे नर पढ़ैं सुभावसों, ते पावैं शिवखेत।।४८।।

भाषा स्तुति

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविक मन आनन्दनो।
श्रीनाभिनन्दन जगतवंदन, आदिनाथ निरंजनो।।१।।

तुम आदिनाथ अनादि सेउँ, सेय पदपूजा करूँ।
कैलाश गिरिपर ऋषभ जिनवर, पदकमल हिरदै धरूँ।।२।।

तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली।
यह विरद सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यो नाथजी।।३।।

तुम चंद्रवदन सु चद्रलच्छन चद्रपुरि परमेश्वरो।
महासेननंदन, जगतवंदन चंद्रनाथ जिनेश्वरो।।४।।

तुम शांति पांचकल्याण पूजों, शुद्धमनवचकाय जू।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू।।५।।

तुम बालब्रह्मा विवेकसागर, भव्यकमल विकशनो।
श्री नेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो।।६।।

जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश करी।
चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी।।७।।

कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननंदन जगतवंदन सकलसघ मगल कियो।।८।।

जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठ-मान विदारकैं।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमों शिरधारकैं।।९।।

तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थनंदन जगतवदन, महावीर जिनेश्वरो।।१०।।

छत्र तीन सोहैं सुरनर मोहैं, वीनती अब धारिये।
करजोडि सेवक वीनवै प्रभु आवागमन निवारिये।।११।।

अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहों।
करजोड यो वरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहों।।१२।।

जो एक माहीं एक राजै, एक मांहि अनेकनो।
इक अनेककी नहीं संख्या, नमूं सिद्ध निरजनो।।१३।।

चौपाई

मैं तुम चरणकमलगुणगाय, बहुविधि भक्ति करौं मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजै मोहि।।१४।।

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोह।
बारबार मैं बिनती करूं, तुम से या भवसागर तरूं।।१५।।

नाम लेत सब दुख मिटजाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवनके देव, मैं तो करूं चरण की सेव।।१६।।

जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय।
जिन पूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावैं निर्वाण।।१७।।

मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।१८।।

दोहा

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की बीनती, सुन लीज्यो भगवान।।१९।।

दर्शन करते देव के, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निवान।।२०।।

जैसी महिमा तुमविषैं, और धरै नहिं कोय।
जो सूरज मे जोति है, नहिं तारागण सोय।।२१।।

नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यो दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय।।२२।।

बहुत प्रंशसा क्या करूं, मैं प्रभु बहुत अजान
पूजाविधि जानूं नहीं, सरन राख भगवान।२३।।

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

दोहा—वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहूं काण्ड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय।।

चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बंदौं भाव-भगति उर धार।।२।।

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेसुर बीस, भावसहित बंदौं निश-दीस।।३।।

वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, बंदौं भावसहित कर जोड़ि।।४।।

श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात
संबु-प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूं तसु पाय।।५।।

रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर
पांच कोडि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि वंदौं निरधार।।६।।

पांडव तीन द्रविड-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान
श्रीशत्रुंजय-गिरि के सीस, भावसहित वंदौं निश-दीस।।७।।

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहुं काल।।८।।

राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान।।९।।

नंग अनंग कुमार सुजान, पांच कोड़ि अरु धर्म प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस।।१०।।

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास।।११।।

रेवानदी सिद्धवर, कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोड़ि बंदौं भव पार।।१२।।

बड़वानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सायर तर्ण।।१३।।

सुवरण-भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर-शिखर मंझार।
चेलना-नदी-तीरके पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास।।१४।।

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहां, मुक्ति गये वंदौं नित तहां।।१५।।

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्ति मंझार, ते वंदौं नित सुरत संभार।।१६।।

अचलापुर की दिश ईसान, जहां मेंढगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय।।१७।।

वंसस्थल वनके ढिग होय, पच्छिम दिशा कुंथुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।१८।।

जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांचसौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूं जोड़ जुग पान।।१९।।

समवसरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज।।२०।।

तीन लोकके तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहां।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय।।२१।।

संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल।।२२।।

श्री रत्नाकर सूरि विरचित

रत्नाकर-पञ्चविंशतिका

(हिन्दी पद्यानुवाद-कविकर श्री रामचरित उपाध्याय)

शुभ-केलि के आनन्दके घनके मनोहर धाम हो,
नरनाथसे सुरनाथसे पूजित चरण, गतकाम हो।
सर्वज्ञ हो सर्वोच्च हो, सबसे सदा संसार में,

प्रज्ञा कलाके सिन्धु हो, आदर्श हो आचार में।।१।।

संसार-दुखके वैद्य हो त्रैलोक्यके आधार हो,
जय श्रीश! रत्नाकरप्रभो! अनुपम कृपा-अतार हो।
गतराग! है विज्ञप्ति मेरी मुग्धकी सुन लीजिए,
क्योंकि प्रभो! तुम विज्ञ हो, मुझको अभय वर दीजिए।।२।।

माता पिता के सामने बोली सुनाकर तोतली,
करता नहीं क्या अज्ञ बालक बाल्य-वश लीलावली?
अपने हृदयके हालको त्यों ही यथोचित रीतिसे,
मैं कह रहा हू, आपके आगे विनय से प्रीति से।।३।।

मैंने नहीं जगमें कभी कुछ दान दीनों को दिया,
में सच्चरित भी हूँ नहीं मैंने नहीं तप भी किया।
शुभ भावनाए भी हुई, अब तक न इस ससार में,
मैं घूमता हूं, व्यर्थ ही भ्रमसे भवोदधि-धारमें।।४।।

क्रोधाग्निसे मैं रात दिन हा! जल रहा हूँ हे प्रभो!
में लोभ नामक सांपसे काटा गया हूँ हे विभो!
अभिमानके खल ग्राहसे अज्ञानवश मैं ग्रस्त हूँ,
किस भाँति हों स्मृत आप, माया-जालसे मैं व्यस्त हूँ।।५।।

लोकेश! पर-हित भी किया मैंने न दोनों लोकमें,
सुख-लेश भी फिर क्यों मुझे हो, झींकता हूँ शोकमें।
जगमें हमारे से नरोंका जन्म ही बस व्यर्थ है,
मानों जिनेश्वर! वह भवोंकी पूर्णतया के अर्थ है।।६।।

प्रभु! आपने निज मुख सुधाका दान यद्यपि दे दिया,
यह ठीक है, पर चित्तने उसका न कुछ भी फल लिया।
आनन्द-रसमें डूबकर सद्वृत्त वह होता नहीं,
है वज्र सा मेरा हृदय, कारण बड़ा बस है यही।।७।।

रत्नत्रयी दुष्प्राप्य! है प्रभुसे उसे मैंने लिया,

बहु काल तक बहु बार जब जगका भ्रमण मैंने किया।
हा खो गया वह भी विवश मैं नींद आलसके रहा,
बतलाइये उसके लिए रोऊँ प्रभो! किसके यहाँ?।।८।।

संसार ठगनेके लिए वैराग्यको धारण किया,
जगको रिझानेके लिए उपदेश धर्मों का दिया।
झगड़ा मचानेके लिए मम जीभ पर विद्या बसी,
निर्लज्ज हो कितनी उड़ाऊँ हे प्रभो! अपनी हँसी।।९।।

परदोषको कह कर सदा मेरा वदन दूषित हुआ,
लख कर पराई नारियोंको हा नयन दूषित हुआ।
मन भी मलिन है सोचकर परकी बुराई हे प्रभो,
किस भाँति होगी लोकमें मेरी भलाई हे प्रभो।।१०।।

मैने बडाई निज विवशता हो अवस्थाके वशी,
भक्षक रतीश्वरसे हुई उत्पन्न जो दुख-राक्षसी।
हा! आपके सम्मुख उसे अति लाजसे प्रकटित किया,
सर्वज्ञ! हो सब जानते स्वयमेव संसृतिकी क्रिया।।११।।

अन्यान्य मन्त्रोसे परम परमेष्ठि-मंत्र हटा दिया,
सच्छास्त्र-वाक्योंको कुशास्त्रों से दबा मैंने दिया।
विधि-उदयको करने वृथा, मैंने कुदेवाश्रय लिया,
हे नाथ, यों भ्रमवश अहित मैंने नहीं क्या क्या किया।।१२।।

हा, तज दिया मैंने प्रभो! प्रत्यक्ष पाकर आपको,
अज्ञान वश मैंने किया फिर देखिये किस पापको।
वामाक्षियों के रागमें रत हो सदा मरता रहा,,
उनके विलासोंके हृदयमें ध्यान को धरता रहा।।१३।।

लख कर चपल-दृग-युवतियों के मुख मनोहर रसमई,
जो मन-पटलपर राग भावों की मलिनता बस गई।
वह शास्त्र-निधिके शुद्ध जलसे भी न क्यों धोई गई?
बतलाइए यह आप ही मम बुद्धि तो खोई गई।।१४।।

मुझमें न अपने अंगके सौन्दर्यका आभास है,
मुझमें न गुणगण है विमल, न कला-कलाप-विलास है।
प्रभुता न मुझमें स्वप्नको भी चमकती है, देखिये,
तो भी भरा हूँ गर्वसे मैं मूढ़ हो किसके लिए।।१५।।

हा नित्य घटती आयु है पर पाप-मति घटती नहीं,
आई बुढ़ौती पर विषयसे कामना हटती नहीं।
मैं यत्न करता हूं, दवा मैं धर्म मैं करता नहीं,
दुर्मोह-महिमासे ग्रसित हूं नाथ! बच सकता नहीं।।१६।।

अघ-पुण्यको, भव-आत्मको मैंने कभी माना नहीं,
हा आप आगे हैं खड़े दिननाथसे यद्यपि यहीं।
तो भी खलोंके वाक्यको मैंने सुना कानों वृथा,
धिक्कार मुझको है, गया मम जन्म ही मानों वृथा।।१७।।

सत्पात्र-पूजन देव-पूजन कुछ नहीं मैंने किया,
मुनिधर्म श्रावकधर्मका भी नहिं सविधि पालन किया।
नर-जन्म पाकर भी वृथा ही मैं उसे खोता रहा,
मानो अकेला घोर वनमें व्यर्थ ही रोता रहा।।१८।।

प्रत्यक्ष सुखकर जिन-धरम में प्रीति मेरी थी नहीं,
जिननाथ! मेरी देखिये है मूढता भारी यही।
हा! कामधुक कल्पद्रुमादिक के यहां रहते हुए,
हमने गँवाया जन्मको धिक्कार दुख सहते हुए।।१९।।

मैंने न रोका रोग-दुख संभोग-सुख देखा किया,
मनमें न माना मृत्यु-भय-धन-लाभ ही लेखा किया।
हा! मैं अधम युवती-जनोंका ध्यान नित करता रहा,
पर नरक-कारागार से मनमें न मैं डरता रहा।।२०।।

सद्वृत्ति से मनमें न मैंने साधुता हा साधिता,
उपकार करके कीर्ति भी मैंने नहीं कुछ अर्जिता।

शुभ तीर्थके उद्धार आदिक कार्य कर पाये नहीं,
नर-जन्म पारस-तुल्य निज मैंने गँवाया व्यर्थ ही।।२१।।

शास्त्रोक्त विधि वैराग्य भी करना मुझे आता नहीं,
खल-वाक भी गतक्रोध हो सहना मुझे आता नहीं।
अध्यात्म-विद्या है न मुझमें है न कोई सत्कला,
फिर देव! कैसे यह भवोदधि पार होवेगा भला?।।२२।।

सत्कर्म पहले जन्ममें मैंने किया कोई नहीं,
आशा नहीं जन्मान्यमें उसको करूंगा मैं कहीं।
इस भांतिका यदि हूँ जिनेश्वर! क्यों न मुझको कष्ट हों?
संसारमें फिर जन्म तीनों क्यों न मेरे नष्ट हों?।।२३।।

हे पूज्य! अपने चरितको बहुभाँति गाऊं क्या वृथा
कुछ भी नहीं तुमसे छिपी है पापमय मेरी कथा।
क्योंकि त्रिजगके रूप हो तुम, ईश हो, सर्वज्ञ हो,
प्रथके प्रदर्शक हो, तुम्हीं मम चित्तके मर्मज्ञ हो।।२४।।

दीनोद्धारक धीर आप सा अन्य नहीं है,
कृपा-पात्र भी नाथ! न मुझसा अपर कहीं है।
तो भी माँगू नहीं धान्य धन कभी भूल कर
अर्हन्! केवल बोधिरत्न होवे मंगलकर।।
श्रीरत्नाकर गुणगान यह दुरित दुःख सबके हरे।
बस एक यही है प्रार्थना मंगलमय जगको करे।।२५।।

सामायिक पाठ भाषा

१ प्रतिक्रमण कर्म

काल अनंत भ्रम्यो जग में सहिये दुख भारी।
जन्म मरण नित किये पाप को व्हे अधिकारी।।
कोटि भवांतर मांहि मिलन दुर्लभ सामायिक।
धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुख दायक।।१।।

हे सर्वज्ञ जिनेशा! किये जे पाप जु मैं अब।
ते सब मन-वच-काय-योग की गुप्ति बिना लभ।।
आप समीप हजूर माहिं मैं खड़ो खड़ो सब।
दोष कहूँ सो सुनो करो नठ दुःख देहिं जब।।२।।

क्रोधमानमदलोभ मोह मायावशि प्रानी।
दुःख सहित जे किये दया तिनकी नहिं आनी।।
बिना प्रयोजन एकेंद्रिय बि ति चउ पंचेंद्रिय।
आप प्रसादहि मिटै दोष जो लग्यो मोहि जिय।।३।।

आपस में इकठौर थापकरि जे दुख दीने।
पेलि दिये पगतलैं दाबिकरि प्रान हरीने।।
आप जगत के जीव जिते तिन सब के नायक।
अरज करूँ मैं सुनो दोष मेटो दुखदायक।।४।।

अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय।
तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय।।
मेरे जे अब दोष भये ते क्षमहु दयानिधि।
यह पड़िकोणो कियो आदि षट्कर्म मांहि विधि।।५।।

२ द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म

इसके आदि व अन्त मे आलोचना पाठ बोलकर फिर तीसरे सामायिक कर्म का पाठ करना चाहिए।

जो प्रमादवशि होय विराधे जीव घनेरे।
तिन को जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे।।
सो सब झूठो होउ जगतपति के परसादै।
जा प्रासदतैं मिलै सर्व सुख दुःख न लाधै।।६।।

मैं पापी निर्लज्ज दया करि हीन महाशठ।
किये पाप अघ ढेर पाप मति होय चित्त दुठ।।
निंदूँ हूँ मैं बार बार निज जिय को गरहूँ।
सबविधि धर्म उपाय पाय फिर पापहि करहूँ।।७।।

दुर्लभ है नर जन्म तथा श्रावक कुल भारी।
सत संगति संजोग धर्म जिन श्रद्धाधारी।।
जिन वचनामृत धार समावर्ते जिनवानी।
तोहू जीव संघारे धिक धिक धिक हम जानी।।८।।

इन्द्रिय लंपट होय खोय निज ज्ञान जमा सब।
अज्ञानी जिमि करै तिसि विधि हिंसक व्है अब।।
गमनागमन करंतो जीव विरोधे भोले।
ते सब दोष किये निंदूँ अब मन वच तोले।।९।।

आलोचन विधि थकी दोष लागे जु घनेरे।
ते सब दोष विनाश होउ तुम तैं जिन मेरे।।
बार बार इस भाँति मोह मद दोष कुटिलता।
ईर्षादिक तें भये निंदि ये जे भयभीता।।१०।।

३ तृतीय सामायिक भाव कर्म

सब जीवन में मेरे समता भाव जग्यो है।
सब जिय मो सम समता राखो भाव लग्यो है।।
आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान छाँड़ि करिहूँ सामायिक।
संजम मो कब शुद्ध होय भाव बधायक।।११।।

पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति।
पंचहि थावर माहिं तथा त्रस जीव बसैं जित।।
बेइंद्रिय तिय चउ पंचेंद्रियमाँहि जीव सब।
तिन में क्षमा कराऊँ मुझ पर क्षमा करो अब।।१२।।

इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु तृण।
महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहि समगण।।
जामन मरण समान जानि हम समता कीनी।
सामायिकका काल जितै यह भाव नवीनी।।१३।।

मेरो है इक आतम तामें ममत जु कीनो।
और सबै सम भिन्न जानि समता रसभीनो।।

मात पिता सुत बंधु मित्र तिय आदि सबै यह।
मोतैं न्यारे जानि जथारथ रूप करयो गह।।१४।।

मैं अनादि जग जाल माँहि फँसि रूप न जाण्यो।
एकेंद्रिय दे आदि जंतु को प्राण हराण्यो।।
ते सब जीव समूह सुनो मेरी यह अरजी।
भव-भव को अपराध छिमा कीज्यो कर मरजी।।१५।।

४ चतुर्थ स्तवन कर्म

नमौं ऋषभ जिनदेव अजित जिन जीत कर्म को।
सम्भव भव दुख हरण करण अभिनन्द शर्म को।।
सुमति, सुमति दातार तार भव सिंधु पार कर।
पद्म प्रभ पद्माभ भानि भवभीति प्रीति धर।।१६।।

श्रीसुपार्श्व कृत पाश नाश भव जास शुद्ध कर।
श्री चन्द्रप्रभ चन्द्रकान्तिसम देह कांतिधर।।
पुष्पदन्त दमि दोष कोष भविपोष रोषहर।
शीतल शीतल करण हरण भवताप दोष कर।।१७।।

श्रेयरूप जिनश्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन।
वासुपूज्य शतपूज्य वासवादिक भवभयहन।।
विमल विमलमति देन अन्तगत है अनन्त जिन।
धर्मशर्मशिवकरण शान्तिजिन शान्ति विधायिन।।१८।।

कुंथु कुंथुमुख जीवपाल अरहनाथ जाल हर।
मल्लिमल्लंसम मोहमल्लमारन प्रचार धर।।
मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुरसंघहिं नमिजिन।
नेमिनाथ जिन नेमि धर्मरथ माँहि ज्ञानधन।।१९।।

पार्श्व नाथ जिनपार्श्व उपलसम मोक्ष रमापति।
वर्द्धमान जिन नमूं नमूं भवदुःख कर्मकृत।।
या विधि मैं जिन संघरूप चउवीस संख्यधर।
स्तवूं नमूं हूँ बारबार बन्दूं शिव सुखकर।।२०।।

५ पञ्चम बंदना कर्म

बन्दूं मैं जिनवीर धीर महावीर सु सनमति।
वर्द्धमान अतिवीर बन्दि हूँ मनवचतनकृत।।
त्रिशलातनुज महेश धीश विद्यापति बन्दूं।
बंदौं नित प्रति कनक रूप तनु पापनिकंदूं।।२१।।

सिद्धारथ नृपनंद द्वंद दुख दोष मिटावन।
दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन।।
कुण्डल पुर करि जन्म जगत जिय आनंद कारन।
वर्ष बहत्तर आयु पाय सबही दुख टारन।।२२।।

सप्तहस्त तनु तुंगभंगकृत जन्ममरण भय।
बालब्रह्म मय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय।
दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीवघन।
आप बसे शिवमांहि ताहि बंदौं मन वच तन।।२३।।

जाके वंदनथकी दोष दुःख दूरहि जावै।
जाके वंदनथकी मुक्तितिय सन्मुख आवै।।
जाके वंदनथकी वंद्य होवें सुरगन के।
ऐसे वीर जिनेश बन्दि हूँ क्रम युग तिनके।।२४।।

सामायिक षट्कर्ममांहि वंदन यह पंचम।
वंदों वीर जिनेंद्र इंद्रशतवंद्य वंद्य मम।।
जन्ममरण भय हरो करो अब शान्ति शान्तिमय।
मैं अघ कोष सुपोष दोष को दोष विनाशय।।२५।।

६ छठा कायोत्सर्ग कर्म

कायोत्सर्ग विधान करूँ अंतिम सुखदाई।
कायत्यजनमय हो काय सबको दुखदाई।।
पूरब दक्षिण नमूँ दिशा पश्चिम उत्तर मैं।
जिनगृह वंदन करूँ हरूँ भवपापतिमिर मैं।।२६।।

शिरोनति मैं करूँ नमू मस्तक कर धरिकैं।
आवर्तादिक क्रिया करूँ मन वच मद हरिकैं।।
तीनलोक जिन भवनमाहि जिन है जुअकृत्रिम।
कृत्रिम है द्वय अर्द्धद्वीप माहीं बदों जिम।।२७।।

आठ कोडि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणू।
च्यारि शतक-पर असी एक जिनमंदिरजाणू।।
व्यंतर ज्योतिष माहि सख्यरहिते जिन मंदिर।
ते सब वंदन करूँ हरहु मम पाप संघकर।।२८।।

सामायिकसम नाहिं और कोउ वैर मिटायक।
सामायिकसम नाहि और कोउ मैत्री दायक।।
श्रावक अणुव्रत आदि अन्त सप्तम गुणथानक।
यह आवश्यक किये होय निश्चय दुखहानक।।२९।।

जे भवि आतम-काज-करण उद्यम के धारी।
ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी।।
राग रोष मदमोह क्रोध लोभादिक जे सब।
बुध महाचन्द्र विलाय जाय तातैं कीज्यो अब।।३०।।

श्रीअमितगति सूरि विरचित

सामायिक पाठ

परमात्म द्वात्रिंशतिका

(हिन्दी पद्यानुवाद—श्री रामचरित उपाध्याय)

नित देव! मेरी आत्मा धारण करे इस नेम को,
मैत्री करे सब प्राणियो से, गुणी जनों से प्रेम को।
उन पर दया करती रहे, जो दु ख-ग्राह-ग्रहीत हैं,
उनसे उदासी सी रहे जो धर्म से विपरीत हैं।।१।।

करके कृपा कुछ शक्ति ऐसी दीजिए मुझ में प्रभो!
तलवार को ज्यों म्यान से करते विलग हैं हे विभो!!
गतदोष आत्मा शक्तिशाली है मिली मम अंग से,
उसको विलग उस भाँति करनेके लिये ऋजु ढंगसे।।२।।

हे नाथ! मेरे चित्त में समता सदा भरपूर हो,
सम्पूर्ण ममता की कुमति मेरे हृदय से दूर हो।
वनमें, भवनमें, दुःख में, सुख में नहीं कुछ भेद हो,
अरि-मित्रमें, मिलने-बिछुड़ने में न हर्ष न खेद हो।।३।।

अतिशय घनी तम-राशिकोदीपक हटाते हैं यथा,
दोनों कमल-पद आपके अज्ञान-तम हरते तथा।
प्रतिबिम्ब सम स्थिर रूप वे मेरे हृदय में लीन हों,
मुनिनाथ! कीलित-तुल्य वे उरपर सदा आसीन हों।।४।।

यदि एक-इन्द्रिय आदि देही घूमते फिरते मही,
जिनदेव! मेरी भूल से पीड़ित हुए होवें कहीं।
टुकड़े हुए हों, मल गये हों, चोट खाये हों कभी,
तो नाथ! वे दुष्टाचरण मेरे बनें झूठे सभी।।५।।

सन्मुक्ति के सन्मार्ग से प्रतिकूल पथ मैंने लिया,
पंञ्चेन्द्रियों चारों कषायों में स्वमन मैंने किया।
इस हेतु शुद्ध चरित्र का जो लोप मुझसे हो गया,
दुष्कर्म वह मिथ्यात्वको हो प्राप्त प्रभु! करिए दया।।६।।

चारों कषायों से, वचन, मन, कायसे जो पाप है,
मुझसे हुआ, हे नाथ! वह कारण हुआ भव-ताप है।
अब मारता हूँ मैं उसे आलोचना-निन्दादि से,
ज्यों सकल विषको वैद्यवर है मारता मन्त्रादि से।।७।।

जिनदेव! शुद्ध चारित्र का मुझसे अतिक्रम जो हुआ,
अज्ञान और प्रमाद से व्रत का व्यतिक्रम जो हुआ।

अतिचार और अनाचरण जो जो हुए मुझसे प्रभो!।
सबकी मलिनता मेटने को प्रतिक्रम करता विभो!।।८।।

मन की विमलता नष्ट होने को अतिक्रम है कहा,
औ शीलचर्या के विलंघन को व्यतिक्रम है कहा।
हे नाथ! विषयों में लपटने को कहा अतिचार है,
आसक्त अतिशय विषय में रहना महाअनाचार है।।९।।

यदि अर्थ, मात्रा वाक्यमें पदमें पड़ी त्रुटि हो कहीं
तो भूलसे ही वह हुई, मैंने उसे जाना नहीं।
जिनदेव वाणी! तो क्षमा उसको तुरत कर दीजिए,
मेरे हृदय में देवि! केवलज्ञान को भर दीजिए।।१०।।

हे देवि! तेरी वन्दना मैं कर रहा हूँ इसलिये
चिन्तामणि-प्रभ है सभी वरदान देने के लिये।
परिणाम-शुद्धि समाधि मुझमें बोधिका संचार हो
हो प्राप्ति स्वात्माकी तथा शिवसौख्यकी, भवपार हो।।११।।

मुनिनायकों के वृन्द जिसको स्मरण करते हैं सदा,
जिसका सभी नर अमरपति भी स्तवन करते हैं सदा।
सच्छास्त्र वेद-पुराण जिसको सर्वदा हैं गा रहे,
वह देव का भी देव बस मेरे हृदय में आ रहे।।१२।।

जो अन्तरहित सुबोध-दर्शन और सौख्यस्वरूप है,
जो सब विकारों से रहित, जिससे अलग भवकूप है।
मिलता बिना न समाधि जो, परमात्म जिसका नाम है,
देवेश वह उर आ बसे मेरा खुला हृद्धाम है।।१३।।

जो काट देता है जगत के दुःख निर्मित जाल को,
जो देख लेता है जगत की भीतरी भी चाल को।
योगी जिसे हैं, देख सकते, अन्तरात्मा जो स्वयम्,
देवेश! वह मेरे हृदय-पुर का निवासी हो स्वयम्।।१४।।

कैवल्य के सन्मार्ग को दिखला रहा है जो हमें,
जो जन्म के या मरण के पड़ता न दुख-सन्दोह में।
अशरीर हो त्रैलोक्यदर्शी दूर है कुकलंक से,
देवेश व आकर लगे मेरे हृदय के अंक से।।१५।।

अपना लिया है निखिल तनुधारी-निबहने ही जिसे,
रागादि दोष-व्यूह भी छू तक नहीं सकता जिसे।
जो ज्ञानमय है, नित्य है, सर्वेन्द्रियों से हीन है,
जिनदेव देवेश्वर वही मेरे हृदय में लीन है।।१६।।

संसार की सब वस्तुओं में ज्ञान जिसका व्याप्त है,
जो कर्म-बन्धन हीन, बुद्ध, विशुद्ध सिद्धी प्राप्त है।
जो ध्यान करने से मिटा देता सकल कुविकार की,
देवेश वह शोभित करे मेरे हृदय-आगार को।।१७।।

तम-संघ जैसे सूर्य-किरणों को न छू सकता कहीं,
उस भाँति कर्म-कलंक दोषाकर जिसे छूता नहीं।
जो है निरंजन वस्त्वपेक्षा, नित्य भी है, एक है,
उस आप्त प्रभु की शरणमें हूँ प्राप्त जो कि अनेक है।।१८।।

यह दिवसनायक लोक का जिसमें कभी रहता नहीं,
त्रैलोक्य-भाषक-ज्ञान-रवि पर है वहां रहता सही।
जो देव स्वात्मा में सदा स्थिर-रूपता को प्राप्त है,
मैं हूं उसी की शरण में, जो देववर है, आप्त है।।१९।।

अवलोकने पर ज्ञानमें जिसके सकल संसार ही,
है स्पष्ट दिखता, एक से है दूसरा मिल कर नहीं।
जो शुद्ध, शिव है, शांत भी है, नित्यता को प्राप्त है,
उसकी शरण को प्राप्त हूँ, जो देववर है आप्त है।।२०।।

वृक्षावली जैसे अनल की लपट से रहती नहीं,
त्यों शोक, मन्मथ, मानको रहने दिया जिसने नहीं।
भय, मोह, नींद, विषाद, चिन्ता भी न जिसको व्याप्त है,

उसकी शरण में हूं गिरा, जो देववर हे आप्त है।।२१।।

विधिवत शुभासन घासका या भूमिका बनता नहीं,
चौकी, शिला को ही सुभासन मानती बुधता नहीं।
जिससे कषायें-इन्द्रियाँ खटपट मचाती हैं नहीं,
आसन सुधी जन के लिये है आतमा निर्मल वही।।२२।।

हे भद्र! आसन, लोक पूजा, संघकी संगति तथा,
ये सब समाधी के न साधान, वास्तविक में है प्रथा।
सम्पूर्ण बाहर-वासना को इसलिये तू छोड़ दे,
अध्यात्म में तू हर घड़ी होकर निरत रति जोड़दे।।२३।।

जो बाहरी हैं वस्तुएं, वे हैं नहीं मेरी कहीं,
उस भांति हो सकता कहीं उनका कभी मैं भी नहीं।
यों समझ बाह्याडम्बरों को छोड निश्चित रूप से,
हे भद्र! हो जा स्वस्थ तू बच जाएगा भवकूप से।।२४।।

निज को निजात्मा-मध्य में ही सम्यगवलोकन करे,
तू दर्शन-प्रज्ञानमय है, शुद्ध से भी परे।
एकाग्र जिसका चित्त है, तू सत्य इसको मानना,
चाहे कहीं भी हो, समाधी-प्राप्त उसको जानना।।२५।।

मेरी अकेली आत्मा परिवर्तनों से हीन है,
अतिशय विनिर्मल है सदा सद्ज्ञान में ही लीन हे।
जो अन्य सब हैं वस्तुएं वे ऊपरी ही हैं सभी,
निज कर्म से उत्पन्न हैं अविनाशिता क्यों हो कभी।।२६।।

है एकता जब देह के भी साथ में जिसकी नहीं,
पुत्रादिकों के साथ उसका ऐक्य फिर क्यों हो कहीं।
जब अंग-भर से मनुज के चमड़ा अलग हो जाएगा,
तो रोंगटों का छिद्रगण कैसे नहीं खो जायगा।।२७।।

संसाररूपी गहन में है जीव बहु दुख भोगता,

वह बाहरी सब वस्तुओं के साथ कर सयोगता।
यदि मुक्तिकी है चाह तो फिर जीवगण! सुन लीजिये,
मनसे, वचनसे-कायसे उसको अलग कर दीजिए।।२८।।

देही! विकल्पित जाल को तू दूर कर दे शीघ्र ही,
संसार-वन में डालने का मुख्य कारण है यही।
तू सर्वदा सबसे अलग निज आत्मा को देखना,
परमात्मा के तत्त्व में तू लीन निज को लेखना।।२९।।

पहले समय में आत्मा ने कर्म हैं जैसे किए,
वैसे शुभाशुभ फल यहां पर इस समय उसने लिए।
यदि दूसरे के कर्म का फल जीव को हो जाय तो,
हे जीवगण! फिर सफलता निजकर्मकी खो जाय तो।।३०।।

अपने उपार्जित कर्म-फल को जीव पाते हैं सभी,
उसके सिवा कोई किसी को कुछ नहीं देता कभी।
ऐसा समझना चाहिये एकाग्र मन होकर सदा,
'दाता अपर है भोगका' इस बुद्धि को खोलकर सदा।।३१।।

सबसे अलग परमातमा है, अमितगति से वन्द्य है,
हे जीवगण! वह सर्वदा सब भाँति ही अनवद्य है।
मनसे उसी परमातमा को ध्यान में जो लाएगा,
वह श्रेष्ठ लक्ष्मी के निकेतन मुक्ति पद को पाएगा।।३२।।

पढ़कर इन द्वात्रिंश पद्य को, लखता जो परमात्मवन्द्य को।
वह अनन्यमन हो जाता है, मोक्ष-निकेतन को पाता है।।३३।।

आलोचना पाठ

दोहा

बंदों पाँचों परम-गुरु, चौबीसों जिनराज।
करूँ शुद्ध आलोचना, शुद्धि-करन के काज।।१।।

सखीछन्द

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृति काजा, तुम सरन लही जिनराजा।।२।।

इक वे ते चउ इन्द्री वा, मनरहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहि करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी।।३।।

समरभ समारभ आरभ, मन वच तन कीने प्रारभ।
कृत कारित मोदन करिकैं, क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं।।४।।

शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परिछेदन तैं।
तिनकी कहुँ कोलो कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी।।५।।

विपरीत एकात विनयके, सशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतैं नहि जाय कहीने।।६।।

कुगुरुनकी सेवा कीनी, केवल अदया करि भीनी।
या विधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो।।७।।

हिसा पुनि झूठ ज चोरी, पर वनितासों दृग जोरी।
आरभ परिग्रह भीनो, पन पाप जु या विधि कीनो।।८।।

सपरस रसना घ्रानन को, चख कान विषय सेठनको।
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय अन्याय न जाने।।९।।

फल पच उदबर खाये, मधु मास मद्य चित चाये।
नहि अष्ट मूलगुण धारे, सेये कुविसन दुखकारे।।१०।।

दुइबीस अभख जिन गाये, सो भी निश-दिन भुजाये।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो।।११।।

अनतानु जु बधी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
सज्वलन चौकडी गुनिये, सब भेव जु षोडश मुनिये।।१२।।

परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद सयोग।
पनबीस जु भेव भये इम, इनके वश पाप किये हम।।१३।।

निद्रावश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई।
फिर जागि विषय वन धायो, नाना विध विष-फल खायो।।१४।।

आहार विहार नीहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाई।।१५।।

तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकल्प उपजायो।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गई है।।१६।।

मरजादा तुम ढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन्न भिन्न अब कैसें कहिये, तुम ज्ञान विषैं सब पइये।।१७।।

हा हा! मैं दुठ अपराधी, त्रस-जीवन-राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहिं लीनी।।१८।।

पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जागाँ चिनाई।
पुनि बिन गाल्यो जल ढोल्यो, पंखातैं पवन बिलोल्यो।।१९।।

हा हा! मैं अत्याचारी, बहु हरितकाय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि अनंदा।।२०।।

हा हा! परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई।
तामध्य जीव जे आये, ते हू परलोक सिधाये।।२१।।

बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि जलायो।
झाडू ले जागां बुहारी, चींटी आदिक जीव बिदारी।।२२।।

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनीं।
नहिं जल-थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई।।२३।।

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि-कुल बहु घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये।।२४।।

अन्नादिक शोध कराई, तातें जु जीव निसराई।
तिनका नहिं जतन कराया, गरियालैं धूप डराया।।२५।।

पुनि द्रव्य कमावन काजै, बहु आरंभ हिंसा साजै।
किये तिसनावश अघ भारी, करुणा नहिं रंच विचारी।।२६।।

इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता।
संतति चिरकाल उपाई, वाणी तैं कहिय न जाई।।२७।।

ताको जु उदय अब आयो, नाना विध मोहि सतायो।
फल भुँजत जिय दुख पावै, वचतैं कैसें करि गावै।।२८।।

तुम जानत केवलज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारन विरद सही है।।२९।।

इक गाँवपती जो होवे, सो भी दुखिया दुख खोवै।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटहु अतरजामी।।३०।।

द्रोपदि को चीर बढ़ायो, सीता-प्रति कमल रचायो।
अंजनसे किये अकामी, दुख मेटोअतरजामी।।३१।।

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपना विरद सम्हारो।
सब दोष-रहित-करि स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी।।३२।।

इंद्रादिक पदवी नहि चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पद दीजे।।३३।।

दोहा

दोष-रहित जिनदेवजी, निज-पद दीज्यो मोय।
सब जीवन के सुख बढ़ैं, आनद मगल होय।।
अनुभव माणिक पारखी, जौहरि आप जिनन्द।
येही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द।।

समाधि मरण (भाषा)

गौतम स्वामी बन्दों नामी मरण समाधि भला है ।
मैं कब पाऊँ निश दिन ध्याऊं गाऊं वचन कला है ।।
देव धर्म गुरु प्रीति महा दृढ सप्त व्यसन नहिं जाने ।
त्याग बाइस अभक्ष संयमी बारह व्रत नित ठाने ।। १ ।।

चक्की उखरी चूलि बुहारी पानी त्रस न विराधै ।
बनिज करै पर द्रव्य हरै नहिं छहों कर्म इमि साधै ।।
पूजा शास्त्र गुरुनकी सेवा संयम तप चहुं दानी ।
पर उपकारी अल्प अहारी सामायिक विधि ज्ञानी ।। २ ।।

जाप जपै तिहुं योग धरै दृढ़ तनकी ममता टारै ।
अन्त समय वैराग्य सम्हारै ध्यान समाधि विचारै ।।
आग लगै अरु नाव डुबै जब धर्म विघन तब आवै ।
चार प्रकार आहार त्यागिके मन्त्र-सु-मन में ध्यावे ।। ३ ।।

रोग असाध्य जरा बहु देखे कारण और निहारै ।
बात बड़ी है जो बनि आवे भार भवन को टारै ।।
जो न बने तो घर में रहकरि सबसों होय निराला ।
मात पिता सुत तियको सौंपै निज परिग्रह इहि काला ।। ४ ।।

कुछ चैत्यालय कुछ श्रावकजन कुछ दुखिया धन देई ।
क्षमा क्षमा सब ही सों कहिके मनकी शल्य हनेई ।।
शत्रुनसों मिल निज कर जोरै मैं बहु कीनी बुराई ।
तुमसे प्रीतम को दुख दीने क्षमा करो सो भाई ।। ५ ।।

धन धरती जो मुखसो मांगे सो सब दे संतोषै ।
छहों कायके प्राणी ऊपर करुणा भाव विशेषै ।।
ऊंच नीच घर बैठ जगह इक कुछ भोजन कुछ पै लै ।
दूधाधारी क्रम २ तजिके छाछ अहार पहेलै ।। ६ ।।

छाछ त्यागिके पानी राखै पानी तजि संथारा ।
भूमि माँहि थिर आसन माँडै साधर्मी ढिग प्यारा ।।
जब तुम जानो यह न जपै है तब जिनवाणी पढ़िये ।
यों कहि मौन लियो संन्यासी पंच परम पद गहिये ।। ७ ।।

चार अराधन मनमें ध्यावै बारह भावन भावै ।
दशलक्षण मुनि-धर्म विचारै रत्नत्रय मन ल्यावै ।।
पैंतीस सोलह षट पन चारों दुइ इक वरन विचारै ।

काया तेरी दुख की ढेरी ज्ञानमयी तू सारै ।। ८ ।।

अजर अमर निज गुणसों पूरै परमानन्द सुभावै ।
आनन्दकन्द चिदानंद साहब तीन जगतपति ध्यावै ।।
क्षुधा तृषादिक होय परीषह सहै भाव सम राखै ।
अतीचार पांचों सब त्यागै ज्ञान सुधारस चाखै ।। ९ ।।

हाड़ मांस सब सूख जाय जब धर्मलीन तन त्यागै ।
अद्भुत पुण्य उपाय स्वर्ग-में-सेज उठै ज्यों जागै ।।
तहां तैं आवै शिवपद पावै विलसै सुक्ख अनन्तो ।
'द्यानत' यह गति होय हमारी जैन धर्म जयवन्तो ।। १० ।।

अथ अठाई रासा

प्राणी वरत अठाई जे करें ते पावें भवपार ।। टेक ।।

जम्बू द्वीप सुहावणो लख योजन विस्तार ।
भरतक्षेत्र दक्षिण दिशा पोदनपुर तहँ सार ।। प्राणी ।। १ ।।

विद्यापति विद्याधरी सोमा राणी राय ।
समकित पालैं मन बचै धर्म सुनैं अधिकाय ।। प्राणी ।। २ ।।

चारणमुनि तहाँ पारणे आये राजा गेह ।
सोमाराणी आहार दे, पुण्य बढ़ो अति नेह ।। प्राणी ।। ३ ।।

ताहि समय नभ देवता चाले जात विमान ।
जय जय शब्द भयो घनो मुनिवर पूछ्यो ज्ञान ।। प्राणी ।। ४ ।।

मुनिवर बोले रानि सुन नन्दीश्वर की जात ।
जे नर करहिं स्वभावसों ते पावें शिवकांत ।। प्राणी ।। ५ ।।

ऐसो बच राणी सुनो मन में भयो आनन्द ।
नन्दी‴र पूजा करें ध्यावें आदि जिनन्द ।। प्राणी ।। ६ ।।

कातिक फागुण साढ़ में पालें मन वच काय ।
आठ दिवस पूजा करें तीन भवांतार थाय ।। प्राणी ।। ७ ।।

विद्यापति सुन चालियो रच्यो विमान अनूप ।
रानी बरजै राय कों तुम हो मानुष भूप ।। प्राणी ।। ८ ।।
मानुषोत्र लंघव नहीं मानुष जेती जात ।
जिनवाणी निश्चय कही तीर्न भुवन विख्यात ।। प्राणी ।। ९ ।।
सो विद्यापति ना रहो चलो नन्दीश्वर द्वीप ।
मानुषोत्रगिरसों मिलो जाय विमान महीप ।। प्राणी ।। १० ।।
मानुषोत्र की भेंट तें परो धरनि खिर भार ।
विद्यापति भव चूरियो देव भयो सुरसार ।। प्राणी ।। ११ ।।
द्वीप नन्दीश्वर छिनक में पूजा वसु विध ठान ।
करी सु मन-वच-काय से माल लई कर मान ।। प्राणी ।। १२ ।।
आनन्द सों घर आइयो नन्दीश्वर कर जात ।
विद्यापति को रूप धर राणी सों कहै बात ।। प्राणी ।। १३ ।।
राणी बोली सुन राजा यह तो कबहुं न होय ।
जिनवाणी मिथ्या नहीं निश्चय मन में सोय ।। प्राणी ।। १४ ।।
नन्दीश्वर की माल ले राय दिखाई आय ।
अब तू साँचों जान मोहि पूजन कर बहु भाय ।। प्राणी ।। १५ ।।
रानी फिर तासों कहै नर भव परसे नाहिं ।
पश्चिम सूरज उदय हुए जिनवाणी शुचि ताहि ।। प्राणी ।। १६ ।।
रानीसों नृप फिर कही बावन भवन जिनाल ।
तेरह-तेरह मैं बन्दे पूजन करि तत्काल ।। प्राणी ।। १७ ।।
जयमाला तहँ मो मिली आयो हूं तुझ पास ।
अब तू मिथ्या मान मत कर मेरा विश्वास ।। प्राणी ।। १८ ।।
पूरब दक्षिण में बन्दे पश्चिम उत्तर जान ।
मैं मिथ्या नहिं भाष हूँ श्री जिनवरकी आन ।। प्राणी ।। १९ ।।
हे रानी तैं सच कही जिन वानी शुभ सार ।

ढाई द्वीप न लघई मानुष भव विस्तार ।। प्राणी ।। २० ।।

विद्यापति तें सुर भयो रूप धरो शुभ सोय ।
रानी की स्तुति करी निश्चय समकित तोय ।। प्राणी ।। २१ ।।

देव कहै अब रानि सुन, मानुषोत्र मिलो जाय ।
तहँतें चाय मैं सुर भयो, पूजे नदीश्वर पाय ।। प्राणी ।। २२ ।।

एक भवातर यो रह्यो, जिन शासन परमान ।
मिथ्याती माने नहीं, श्रावक निश्चय आन ।। प्राणी ।। २३ ।।

सुर चय नर हथनापुरी, राज कियो भरपूर ।
परिग्रह तजि सयम लियो, कर्म महागिर चूर ।। प्राणी ।। २४ ।।

केवल ज्ञान उपाय कर मोक्ष गये मुनि-राय ।
शाश्वत सुख विलसे जहाँ जामनमरन मिटाय ।। प्राणी ।। २५ ।।

अब रानी की सुन कथा, सयम लीनो सार ।
तपकर चयकर सुर भयो, विलसे सुख विस्तार ।। प्राणी ।। २६ ।।

गजपुर नगरी अवतरो, राज, करै बहुभाय ।
सोलहकारण भइयो, धर्म सुनो अधिकाय ।। प्राणी ।। २७ ।।

मुनि सघाटक आइयो, माली सार जनाय ।
राजा बन्दो भाव सो, पुण्य बढो अधिकाय ।। प्राणी ।। २८ ।।

राजा मन वैरागियो, सयम लीनो सार ।
आठ सहस नृप साथ ले, यह ससार असार ।। प्राणी ।। २९ ।।

केवलज्ञान उपाय के, दोय सहस निर्वान ।
दोय सहस सुख स्वर्ग के, भोगे भोग सुथान ।। प्राणी ।। ३० ।।

चार सहस भूलोक मे, हडे बहु ससार ।
काल पाय शिवपुर गये, उत्तम धर्म विचार ।। प्राणी ।। ३१ ।।

वरत अठाई जे करे, तीन जन्म परमान ।
लोकालोक सु जान ही सिद्धारथ कुल कान ।। प्राणी ।। ३२ ।।

भव समुद्र के तरण को, बावन नौका जान ।
जे जिय करें सुभाव सों, जिनवर सांच बखान ।। प्राणी ।। ३३ ।।

मन वच काया तें पढ़ें, ते भावें भव पार ।
'विनय कीर्ति' सुखसों भजे, जन्म सुफल संसार ।। प्राणी ।। ३४ ।।

आष्टान्हिका पर्व

वर्ष में तीन बार आता है :–
१. कार्तिक सुदी ८ से पूर्णमासी तक ८ दिन
२. फाल्गुण सुदी ८ से पूर्णमासी तक ८ दिन
३. आषाढ़ सुदी ८ से पूर्णमासी तक ८ दिन
इन दिनों में पूजन पाठ तथा सिद्धचक्र विधान करने का महान् फल है।

पखवाड़ा भाषाटीका

(तिथि षोडशी)

कविवर द्यानत राय कृत

दोहा

बानी एक नमों सदा। एक दरब आकाश ।
एक धर्म अधर्म दरब। पडिवा शुद्धिप्रकाश ।।

चौपाई

दोज दुभेद सिद्ध संसार, संसारी त्रस थावर धार ।
स्व-पर दया दोनों मन धरो, राग दोष तजि समता करो ।। २ ।।

तीज त्रिपात्र दान नित भजो,तीन काल सामायिक सजो ।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य पद साध, मन वच तन थिर होय समाध ।। ३ ।।

चौथ चार विधि दान विचार, चारयो आराधना संभार ।
मैत्री आदि भावना चार, चार बंधसों भिन्न निहार ।। ४ ।।

पाचें पच लब्धि लहि जीव, भज परमेष्ठी पच सदीव ।
पाच भेद स्वाध्याय बखान, पाचों पैताले पहचान ।। ५ ।।

छठ छ लेश्याके परिनाम, पूजा आदि करो षट् काम ।
पुद्गलके जानो षट् भेद, छहो काल लखिकै सुख वेद ।। ६ ।।

सातैं सात नरकतैं डरो, सातों खेत धन जन सो भरो ।
सातो नय समझो गुणवत, सात सत्त्व सरधा करि सत ।। ७ ।।

आठैं आठ दरसके अग, ज्ञान आठ विधि गहो अभग ।
आठ भेद पूजा जिनराय, आठ योग कीजै मन लाय ।। ८ ।।

नौमी शील बाडि नौ पाल, प्रायश्चित नौ भेद सभाल ।
नौ क्षायिक गुण मनमे राख, नौ कषाय की तज अभिलाख ।। ९ ।।

दशमी दश पुद्गल परजाय, दशो बध हर चेतन राय ।
जनमत दश अतिशयजिनराज, दशविधि परिग्रहसोक्या काज ।। १० ।।

ग्यारस ग्यारह भाव समाज, सब अहमिदर ग्यारह राज ।
ग्यारह लोक सुर लोक मझार, ग्यारह अग पढैं मुनि सार ।। ११ ।।

बारसबारह विधि उपयोग, बारह प्रकृति दोषका रोग ।
बारह चक्रवर्ति लख लेहु, बारह अविरतको तजि देहु ।। १२ ।।

तेरस तेरह श्रावक थान, तेरह भेद मनुष पहचान ।
तेरह राग प्रकृति सब निद, तेरह भाव अयोग जिनन्द ।। १३ ।।

चौदश चौदह पूरव जान, चौदश बाहिज अग बखान ।।
चौदह अन्तर परिग्रह डार, चौदह जीवसमास विचार ।। १४ ।।

भावस सम पन्द्रह परमाद, करम भूमि पदरह अनाद ।
पच शरीर पदरह रूप, पदरह प्रकृति हरै मुनि भूप ।। १५ ।।

पूरनमासी सोलह ध्यान, सोलह स्वर्ग कहे भगवान ।
सोलह कषाय राहु घटाय, सोलह कला सम भावना भाय ।। १६ ।।

सब चर्चाकी चर्चा एक, आतम आतम पर पर टेक ।
लाख कोटि ग्रन्थनको सार, भेदज्ञान अरु दया विचार ।। १७ ।।

गुण विलास सब तिथि कही, है परमारथ रूप ।
पढ़ै सुनै जो मन धरै, उपजै ज्ञान अनूप ।।

शास्त्र स्वाध्याय का प्रारम्भिक मङ्गलाचरण

ॐ नम. सिद्धेभ्य', ॐ जय जय जय, नमोस्तु! नमोस्तु!! नमोस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।
ओंकार बिन्दुसंयुक्त, नित्यं ध्यायन्ति योगिन ।
कामद मोक्षदं चैव, ओंकाराय नमो नम ।।१।।

अविरल-शब्द-घनौघ-प्रक्षालित-सकल-भूतल-मल-कलंका।
मुनिभिरुपासित-तीर्था सरस्वती हरतु नो दुरितान्।।
अज्ञान-तिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जन-शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नम ।।२।।

।। श्री परमगुरवे नम., परम्पराचार्यगुरवे नम ।।

सकल-कलुष-विध्वसक, श्रेयसा परिवर्धकं, धर्म-सम्बन्धक, भव्य- जीव- मन प्रतिबोध- कारकमिद शास्त्रं श्री (ग्रन्थ का नाम), नामधेय, अस्य मूलग्रन्थकर्तार· श्रीसर्वज्ञदेवास्तदुत्तर-ग्रन्थ- कर्तार श्रीगणधर- देवा. प्रतिगणधरदेवास्तेषा वचोनुसारमासाद्य श्री (आचार्य का नाम) आचार्येण विरचित, श्रोतार सावधानतया श्रृण्वन्तु।
मगल भगवान वीरो, मगल गौतमो गणी।
मगल कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोअस्तु मगलम्।।

अर्थ-- बिन्दुसंयुक्त (बिन्दु सहित) ओंकार (ओंकारको) योगिन (योगी) नित्य (सर्वदा) ध्यायन्ति (ध्याते हैं) कामद (मनोवांछित वस्तु को देने वाले) चैव (और) मोक्षदं (मोक्ष को देने वाले) ओंकाराय (ओंकार को) नमो नम (बार बार नमस्कार हो) अविरलशब्दघनौघप्रक्षालितसकल-

भूतलमलकलका (घने शब्द [दिव्यध्वनि] रूपी मेघ- समूह से जिसने ससार सम्बन्धी समस्त पापरूपी मैल को धो दिया है) मुनिभिरुपासित-तीर्था (मुनिगण जिसकी तीर्थ के रूप मे उपासना करते है ऐसी) सरस्वती (जिनवाणी) न (हमारे) दुरितान् (पापो को) हरतु (नष्ट करो)।

येन– (जिसने) अज्ञान- तिमिराधाना (अज्ञानरूपी अन्धेरे से अन्धे हुये जीवो के) चक्षु (नेत्र) ज्ञानाञ्जनशलाकया (ज्ञान रूपी अजन की सलाई से) उन्मीलित (खोल दिये है) तस्मै (उस) श्रीगुरवे (श्री गुरु को) नम (नमस्कार हो।) परमगुरवे (परमगुरु को) नम (नमस्कार हो) परम्पराचार्य गुरवे (परम्परागत आचार्य गुरु को) नम (नमस्कार हो)।

सकलकलुषविध्वसक (समस्त पापो का नाश करने वाला) श्रेयसा (कल्याणो का) परिवर्धक (बढ़ाने वाला) धर्मसम्बन्धक (धर्म से सम्बन्ध रखने वाला) भव्यजीवमन प्रतिबोधकारक (भव्यजीवो के मन को प्रतिबुद्ध–सचेत करने वाला) इद (यह) शास्त्र (शास्त्र) श्री (यहा पर उस शास्त्र का नाम लेना चाहिये जिसकी वचनिका करनी है। यथा (आदिपुराण) नामधेय (नामका है)।

अस्य (उसके) मूलग्रथकर्तार (मूल ग्रन्थ रचयिता) श्री सर्वज्ञदेवा (श्री सर्वज्ञदेव है) तदुत्तरग्रन्थकर्तार (उनके बाद ग्रन्थो को गथन वाले) श्री गणधरदेवा (गणधरदेव है) प्रतिगणधरदेवा (उनके पश्चात् मुख्य आचार्य हैं) तेषा (उनके) वचोनुसार (वचनो के अनुसार) आसाद्य (लेकर) श्री आचार्येण (श्री आचार्य ने) [यहा जिस ग्रन्थ के जो कर्ता हो उन आचार्य का नाम लेना चाहिये] विरचित (रचा है)।

भगवान् वीर (महावीर स्वामी) मगल (मगल के कर्ता हो) गौतमोगणी (गौतम गणधर) मगल (मगल कर्ता हो) कुन्दकुन्दाद्या (कुन्दकुन्दस्वामी आदि आचार्य) मगल (मगलकारी हो) जैनधर्म (तथा जैनधर्म) मगल (मगलदायी) अस्तु (होवे)। श्रोतार (हे श्रोताओ।) सावधानतया (सावधानी से–ध्यान लगाकर) श्रृण्वतु (सुनिये)।

स्वाध्याय के लिये उपयोगी कुछ ग्रंथ

कथाग्रथ–पद्मपुराण, हरिवशपुराण, आदिपुराण, उत्तरपुराण,

पाडवपुराण, पार्श्वपुराण, जीवन्धर चरित्र, पद्युम्न चरित्र आदि।

अन्य ग्रन्थ—रत्नकरण्डश्रावकाचार, पुरुषार्थसिद्धयुपाय, परमात्म प्रकाश, प्रवचनसार, पचास्तिकाय, समयसार, पचाध्यायी आदि।

नोट—स्वाध्याय के बाद निम्नलिखित स्तुति पढ़नी चाहिए—

जिनवाणी की स्तुति

वीर हिमाचल तैं निकसी गुरु गौतम के मुख कुण्ड ढरी है।
मोह-महाचल भेद चली, जग की जड़ता-तप दूर करी है।।

ज्ञान पयोनिधि मांहि रली बहु भंग तरंगनि सों उछरी है।
ता शुचि शारद-गंगनदी-प्रति मैं अंजुरी करि शीश धरी है।।

या जग-मन्दिर में अनिवार अज्ञान-अन्धेर छयो अति भारी।
श्रीजिनकी ध्वनि दीपशिख सम जो नहिं होतप्रकाशन हारी।।

तो किस भांति पदारथ-पांति कहां लहते, रहते अविचारी।
या विधि संत कहैं धनि हैं धनि हैं जिन बनै बड़े उपकारी।।

जा वाणी के ज्ञान ते, सूझे लोक अलोक।
सो वाणी मस्तक चढ़ो, सदा देत हूं धोक।।

बृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय- द्रावय नमोअर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रों मम पापं खण्डय खण्डय जहि-जहि दह- दह पच- पच पाचय २ ॐ नमो अर्हन् झ झ्वीं क्ष्वीं ह स झ व ह्व. प. ह: क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौ क्ष क्ष क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौ ह्रं ह्र: द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोअर्हते भगवते श्रीमते ठः ठ. अस्माकं

श्रीरस्तु वृद्धि रस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं अस्माक कार्यसिद्धयर्थ सर्वविघ्न-निवारणार्थ श्रीमभ्दगवदर्हत्सर्वज्ञपरमेष्ठिपरमपवत्राय नमोनम। अस्माकं श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्मप्रसादात् सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै-श्वर्याभिवृद्धिरस्तु सद्धर्मस्वशिष्यपरशिष्यवर्ग प्रसीदन्तु न।

ॐ वृषभादय श्रीवर्द्धमानूपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्त सर्वज्ञा परममंगलनामधेया. अस्माक इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु कार्येषु च इहामुत्र च सिद्धिं प्रयछन्तु न।

ॐ नमोअर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थकराय श्रीमद्रत्न-त्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगण-सहिताय अनन्तचतुष्टयसहिताय समवशरणकेवलज्ञान- लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण- संयुक्ताय परमेष्ठिवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनत- ससार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञानदर्शन-वीर्यसुखास्पदाय त्रैलोक्यवशकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्राह्मणे, उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयकराय, अजराय, अभवाय, अस्माक– (अमुक राशिनामधेयाना) व्याधि घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकाना सर्वदोषरोगशोक भयपीड़ा-विनाशन भवतु।

ॐ नमोअर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व रोगाप मृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वा-रिष्टशान्ति कराय। ॐ ह्रा ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह अ सि आ उसा नम मम सर्व विघ्नशान्ति कुरु कुरु तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा। मम काम छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। रतिकामं छिन्धि छिन्धि भनिध भिन्धि। बलिकामं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। क्रोधं पापं बैरं च छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि।

अग्निवायुभयं छिन्धि २। भिन्धि २। सर्वशत्रुविघ्नं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वोपसर्गं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वशविघ्नं घ्नं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वराज्यभयं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वचौर-दुष्टभयं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वसर्प वृश्चिकसिंहादिभयं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वग्रहभयं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वदोषं व्याधिं डामरं च छिन्धि २ भिन्धि २। पर्वपरमंत्रं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वात्मघातं परघातं च छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वसूल-रोगं कुक्षिरोग अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वनरमारिं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वगजाश्वगो-महिष अजमारिं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वसस्यधान्य वृक्षलतागुल्म-पत्रपुष्पफल मारि छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वराष्ट्रमारिं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वक्रूरवेतालशाकिनी डाकिनी भयानि छिन्धि २ भिन्धि २। सर्ववेदनीयं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वमोहनीयं छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वापस्मारि छिन्धि २ भिन्धि २। अस्माक अशुभकर्मजनितदुःखानि छिन्धि २ भिन्धि २। दुष्टजन-कृतान् मन्नतन्त्रदृष्टिमुष्टिछल छिद्रदोषान् छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वदुष्ट देवदानववीरनर नाहरसिंहयोगनीकृतदोषान् छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वअष्ट- कुलीनागजनितविषभयानि छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वस्था वरजंगमवृश्चिकसर्पादिकृतदोषान् छिन्धि २ भिन्धि २। सर्वसिंहाष्टापदा दिकृतदोषान् छिन्धि २ भिन्धि २। परशत्रुकृतमारणोच्चाटन विद्वेषणमोहनवशीकरणादिदोषान् छिन्धि २ भिन्धि २। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्रविक्रम सत्वतेजोबल-शौर्यशान्ती पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानंदनं गोकुलानंदनं च कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु। सर्वग्रामनगर खेडाकर्वडमंडवद्रोणमुखसवाहनानंदनं कुरु कुरु। सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जितं। अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते।। श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोस्तु।

नित्य मारोग्यमस्तु। अस्माकं पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याण-मस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु। सद्धर्म—श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं असि आ उसा अनाहतविद्यायै णमो-अरहंताणं ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्ली बिलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वा श्वनल्पं धीरं वीरं शरीरं निरुपमुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिं।।
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणि· स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्ति शान्तिं समाधिं वितरतु भवतामुत्तमा शान्तिधारा।।

इति बृहत् शान्तिधारा।

मन्दिर मे हसी मजाक, खोटी कथा, स्त्री कथा, भोजन कथा, चोर आदि की कथा, श्रृगार, कलह, निद्रा, खान-पान तथा थूकना आदि नही चाहिए। मुख स्वच्छ होना चाहिए। पान इलायची वगैरह खाया हो तो कुल्ला करके ही मन्दिर मे जाना चाहिए।

मन्दिर आत्म-साधन का पवित्र स्थान है। वहाँ आरम्भ परिग्रह (घरेलू काम-काज तथा धन-सम्पत्ति) के विचारो का त्याग कर अत्यन्त शान्ति पूर्वक धार्मिक भावनाये ही मन मे लानी चाहिए। व्यवहारिक कार्य और घरेलू चर्चा मन्दिर मे नही करनी चाहिए। यह पापबन्ध का कारण है। धार्मिक मर्यादाओ के पालन मे पुण्य-बन्ध होने के साथ साथ जीवन भी सफल होता है।

मेरी भावना

रचियता—आचार्य जुगलकिशोर श्री मुख्तार

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया ,
सब जीवोंको मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया ।।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ,
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो ।। १ ।।

विषयों की आशा नहिं जिनके साम्य-भाव धन रखते हैं,
निज-परके हित-साधन में जो निश-दिन तत्पर रहते हैं।।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुख-समूह को हरते हैं।। २ ।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उनही जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे।।
नहीं सताऊँ किसी जीव को झूठ कभी नहिं कहा करूं,
परधन-* वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषमृत पिया करूँ।। ३ ।।

अहंकार का भाव न रखूं नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूँ।
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूँ।। ४ ।।

मैत्रीभाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्रोत बहे।।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग-रतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे।। ५ ।।

गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड आवे,
बने जहां तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे।।
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित दृष्टि न दोषों पर जावे।। ६ ।।

कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवे या जावे,
अनेक वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे।।
अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे,
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे।। ७ ।।

होकर सुख में मग्न न फूले दुख में कभी न घबरावे,
पर्वत-नदी-श्मशान भयानक अटवी से नहीं भय खावे।।

* स्त्रियां वनिता के स्थान पर 'परनर' पढ़ें

रहे अडोल-अकंप निरंतर यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट-वियोग-अनिष्ट-योग मे सहन-शीलता दिखलावे ।। ८ ।।

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे,
बैर-पाप अभिमान छोड जग नित्य नये मगल गावे ।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावें,
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना मनुज-जन्म-फल सब पावे ।। ९ ।।

ईति भीति व्यापे नहि जग मे वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे ।।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शाति से जिया करे,
परम अहिसा-धर्म जगत मे फैल सर्व हित किया करे ।। १० ।।

फैले प्रेम परस्पर जगत मे मोह दूर ही रहा करे,
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहि कोई मुख से कहा करे ।।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से देशोन्नति-रत रहा करे,
वस्तु-स्वरूप विचार खुशी से सब दुख सकट सहा करे ।। ११ ।।

वज्रनाभि चक्रवर्ती की

वैराग्य भावना

दोहा—बीज राख फल भोगवै, ज्यो किसान जगमाहिं ।
त्यो चक्री नृप सुख करे, धर्म विसारै नाहिं ।।

जोगीरासा वा नरेन्द्र छंद।

इहविधि राज करै नरनायक, भोगै पुण्य विशालो ।
सुखसागरमैं रमत निरंतर, जात न जान्यो कालो ।।
एक दिवस शुभ कर्म-सजोगे क्षेमंकर मुनि बंदे ।
देखि शिरीगुरुके पदपंकज, लोचन अलि आनन्दे ।। २ ।।

तीन प्रदक्षिण दे शिर नायो, कर पूजा थुति कीनी ।
साधु-समीप विनय कर बैठ्यो, चरननमें दृष्टि दीनी ।।
गुरु उपदेश्यो धर्म-शिरोमणि, सुन राजा वैरागे ।
राजरमा वनितादिक जे रस, ते रस बेरस लागे ।। ३ ।।

मुनि-सूरज-कथनी-किरणावलि लगत भरम बुद्धि भागी ।
भव-तन-भोग-स्वरूप विचारयो, परम धरम अनुरागी ।।
इह ससार महावन भीतर, भरमत ओर न आवै ।
जामन मरन जरा दव दाहै जीव महादुख पावै ।। ४ ।।

कबहूँ जाय नरक थिति भुंजै, छेदन भेदन भारी ।
कबहूँ पशु परजाय धरै तहँ, बध बधन भयकारी ।।
सुरगतिमे परसपति देखे राग उदय दुख होई ।
मानुषयोनि अनेक विपतिमय, सर्वसुखी नहि कोई ।। ५ ।।

कोई इष्ट वियोगी विलखे, कोई अनिष्ठ सयोगी ।
कोई दीन-दरिद्र विलखे, कोई तन के रोगी ।।
किसही घर कलिहारी नारी, कै बैरी सम भाई ।
किसही के दुख बाहिर दीखै, किसही उर दुचिताई ।। ६ ।।

कोई पुत्र बिना नित झूरै, होय मरै तब रोवै ।
खोटी सततिसो दुख उपजै, क्यो प्रानी सुख सोवै ।।
पुण्य उदय जिनके तिनके भी नाहि सदा सुख साता ।
यह जगवास जथारथ देखे, सब दीखे दुखदाता ।। ७ ।।

जो ससार विषै सुख होता, तीर्थंकर क्यो त्यागै ।
काहेको शिवसाधन करते, सजमसो अनुरागै ।।
देह अपावन अथिर घिनावन, यामे सार न कोई ।
सागर के जलसो शुचि कीजै, तो भी शुद्ध न होई ।। ८ ।।

सात कुधातुभरी मलमूरत, चर्म लपेटी सोहै ।
अंतर देखत या सम जग में, अवर अपावन को है ।।

नव-मल-द्वार स्रवैं निशि-वासर, नाम लिये घिन आवै ।
व्याधि-उपाधि अनेक जहाँ तहँ, कौन सुधी सुख पावैं ।। ९ ।।

पोषत तो दुख दोष करै अति, सोषत सुख उपजावै ।
दुर्जन-देह-स्वभाव बराबर, मूरख प्रीति बढ़ावै ।।
राचन-जोग स्वरूप न याको विचरन-जोग सही है ।
यह तन पाय महातप कीजे यामें सार यही है ।। १० ।।

भोग बुरे भवरोग बढावै, बैरी है जग जीके ।
बेरस होय विपाक समय अति, सेवत लागै नीके ।।
वज्र-अगिनि विषसे विषधरसे, ये अधिके दुखदाई ।
धर्म-रतन के चोर चपल अति, दुर्गति-पथ सहाई ।। ११ ।।

मोह-उदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जानै ।
ज्यों कोई जन खाय धतूरा, सो सब कचन मानै ।।
ज्यों ज्यों भोग सजोग मनोहर, मन-वांछित जन पावै ।
तृष्णा नागिन त्यों-त्यों डके, लहर जहरकी आवे ।। १२ ।।

मैं चक्रीपद पाय निरतर, भोगे भोग घनेरे ।
तौ भी तनक भये न्हि पूरन, भोग मनोरथ मेरे ।।
राजसमाज महा अघ-कारण, बैर बढावन-हारा ।
वेश्या-सम लछमी अतिचंचल याका कौन पत्यारा ।। १३ ।।

मोह -महा-रिपु बैर विचार्यो, जग-जिय संकट डारे ।
घर-कारागृह वनिता बेडी, परिजन जन रखवारे ।।
सम्यकदर्शन ज्ञान चरण तप, ये जियके हितकारी ।
येही सार असार और सब, यह चक्री चितधारी ।। १४ ।।

छोड़े चौदह रत्न नवों निधि, अरु छोडे सग साथी ।
कोटि अठारह घोडे छोडे चौरासी लख हाथी ।।
इत्यादिक संपति बहुतेरी जीरण-तृण-सम त्यागी ।
नीति विचार नियोगी सतकों, राज दियो बडभागी ।। १५ ।।

होय निशल्य अनेक नृपति संग, भूषण वसन उतारे ।
श्रीगुरु चरण धरी जिन मुद्रा, पंच महाव्रत धारे ।।
धनि यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम, धनि यह धीरज-धारी ।
ऐसी संपति छोड़ बसे वन, तिन पद धोक हमारी ।। १६ ।।

दोहा

परिग्रहपोठ उतार सब, लीनों चारित, पंथ ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभिनिरग्रंथ ।।
इति श्री वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना।

बारहभावना (श्री मंगतराय जी कृत)

दोहा छंद

वंदूं श्री अरहंतपद, वीतराग विज्ञान ।
वरणूं बारह भावना, जगजीवन-हित ज्ञान ।। १ ।।

विष्णुपद छंद

कहां गये चक्री जिन जीता, भरतखंड सारा ।
कहाँ गये वह राम-रु-लक्ष्मण, जिन रावण मारा ।।
कहां कृष्ण रुक्मिणि सतभामा, अरु संपति सगरी ।
कहा गये वह रंगमहल अरु, सुवरनकी नगरी ।। २ ।।

नहीं रहे वह लोभी कौरव जूझ मरे रनमें ।
गये राज तज पांडव वनको, अगिन लगी तनमें ।।
मोह-नींदसे उठ रे चेतन, तुझे जगावन को ।
हो दयाल उपदेश करैं गुरु, बारह भावन को ।। ३ ।।

१ अथिर भावना

सूरज चाँद छिपै निकलै ऋतु, फिर फिर कर आवै ।
प्यारी आयू ऐसी बीतै, पता नहीं पावै ।।

—

पर्वत-पतित-नदी-सरिता-जल बहकर नहिं हटता ।
स्वास चलत यों घटै काठ ज्यो, आरे सों कटता ।। ४ ।।

ओस-बूद ज्यों गलै धूपमें, वा अजुलि पानी ।
छिन छिन यौवन छीन होत है क्या समझै प्रानी ।।
इद्रजाल आकाश नगर सम जग-सपति सारी ।
अथिर रूप ससार विचारो सब नर अरु नारी ।। ५ ।।

२ अशरण भावना

काल-सिहने मृग-चेतनको घेरा भव वनमें ।
नहीं बचावन-हारा कोई यो समझो मनमें ।।
मत्र यत्र सेना धन सपति, राज पाट छूटै ।
वश नहि चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटै ।। ६ ।।

चक्ररत्न हलधर सा भाई, काम नहीं आया ।
एक तीरके लगत कृष्णकी विनश गई काया ।।
देव धर्म गुरु शरण जगतमें, और नहीं कोई ।
भ्रमसे फिरै भटकता चेतन, यूही उमर खोई ।। ७ ।।

३ ससार भावना

जनम-मरन अरु जरा-रोगसे, सदा दुखी रहता ।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव-परिवर्तन सहता ।।
छेदन भेदन नरक पशूगति, बध बधन सहना ।
राग-उदयसे दुख सुरगतिमे, कहा सुखी रहना ।। ८ ।।

भोगि पुण्यफल हो इकइद्री, क्या इसमे लाली ।
कुतवाली दिनचार वही फिर, खुरपा अरु जाली ।।
मानुष-जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा ।
पचमगति सुख मिलै शुभाशुभको मेटो लेखा ।। ९ ।।

४ एकत्व भावना

जन्मै मरै अकेला चेतन, सुख-दुखका भोगी ।

और किसीकी क्या इक दिन यह, देह जुदी होगी ।।
कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा ।
अपने अपने सुखकों रोवैं, पिता पुत्र दारा ।। १० ।।

ज्यों मेले में पंथीजन मिल नेह फिरैं धरते ।
ज्यों तरवर पै रैन बसेरा पंछी आ करते ।।
कोस कोई दो कोस कोई उड़ फिर थक थक हारै ।
जाय अकेला हंस संगमें, कोई न पर मारै ।। ११ ।।

५ भिन्न भावना

मोह-रूप मृग-तृष्णा जगमें मिथ्या जल चमकै ।
मृग चेतन नित भ्रममें उठ उठ, दौड़ैं थक थककै ।।
जल नहिं पावै प्राण गमावै, भटक भटक मरता ।
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करता ।। १२ ।।

तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी ।
मिले-अनादि यतनतैं बिछुडै, ज्यों पय अरु पानी ।।
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना ।
जौलों पौरुष थकै न तौलों उद्यमसों चरना ।। १३ ।।

६ अशुचि भावना

तू नित पोखै यह सूखे ज्यों, धोवै त्यो मैली ।
निश दिन करै उपाय देहका, रोग-दशा फैली ।।
मात-पिता-रज-वीरज मिलकर, बनी देह तेरी ।
मास हाड़ नश लहू राधकी, प्रगट व्याधि घरी ।। १४ ।।

काना पौंडा पड़ा हाथ यह चूसै तो रोवै ।
फलै अनत जु धर्म ध्यानकी भूमि-विषै बोवै ।।
केसर चंदन पुष्प सुगंधित, वस्तु देख सारी ।
देह परसते होय अपावन, निशदिन मल जारी ।। १५ ।।

१० लोक भावना

लोक अलोक आकाश माहिं थिर, निराधार जानो ।
पुरुषरूप कर-कटी भये षट, द्रव्यनसों मानों ।।
इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी है ।
जीवरु पुद्‌गल नाचै यामैं, कर्म उपाधी है ।। २२ ।।

पापपुण्यसों जीव जगत में, नित सुख दुख भरता ।
अपनी करनी आप भरै शिर, औरनके धारता ।।
मोहकर्मको नाश, मेटकर सब जग की आसा ।
निज पदमें थिर होय लोकके, शीश करो बासा ।। २३ ।।

११ बोधि-दुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोदसे थावर, अरु त्रस गति पानी ।
नरकायाको सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्रानी ।।
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावककुल पाना ।
दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम, पंचम गुणठाना ।। २४ ।।

दुर्लभ रतनत्रय आराधना दीक्षाका धरना ।
दुर्लभ मुनिवरके व्रत पालन, शुद्धभाव करना ।।
दुर्लभसे दुर्लभ है चेतन, बोधिज्ञान पावै ।
पाकर केवलज्ञान, नहीं फिर इस भवमें आवै ।। २५ ।।

१२ धर्म भावना

धर्म ''अहिंसा परमो धर्मः' ही सच्चा जानो ।
जो पर को दुख दे, सुख माने, उसे पतित मानो ।।
राग द्वेष मद मोह घटा आतम रुचि प्रकटावे ।
धर्म-पोत पर चढ़ प्राणी भव-सिन्धु पार जावे ।। २६ ।।

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्रीजिनकी वानी ।
सप्त तत्व का वर्णन जामें, सबको सुखदानी ।।

७ आस्रव भावना

ज्यो मर-जल आवत मोरी त्यो, आस्रव कर्मनको ।
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब पुद्गल भरमन को ।।
भावित आस्रवभाव शुभाशुभ, निशदिन चेतनको ।
पाप पुण्य के दोनों करता, कारण बंधनको ।। १६ ।।

पन-मिथ्यात योग-पंद्रह द्वादश-अविरत जानो ।
पंचरु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो ।।
मोह-भाव की ममता टारे, पर परणत खोते ।
करै मोखका यतन निरास्रव, ज्ञानी जन होते ।। १७ ।।

८ संवर भावना

ज्यों मोरीमें डाट लगावै, तब जल रुक जाता ।
त्यों आस्रवको रोकै संवर, क्यों नहिं मन लाता ।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर वचन काय मनको ।
दशविधि-धर्म परीषह-बाइस, बारह भावनको ।। १८ ।।

यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रवको खातें ।
सुपन दशासे जागो चेतन, कहां पड़े सोते ।।
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध-भावन-संवर भावै ।
डाँट लगत यह नाव पडी मझधार पार जावै ।। १९ ।।

९ निर्जरा भावना

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पडै भारी ।
संवर रोकै कर्म, निर्जरा ह्वै सोखनहारी ।।
उदय-भोग सविपाक-समय, पक जाय आम डाली ।
दूजी है अविपाक पकावै, पालविषै माली ।। २० ।।

पहली सबके होय, नहीं कुछ सरै काम तेरा ।
दूजी करै जु उद्यम करकै, मिटै जगत फेरा ।।
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुकत रानी ।
इस दुलहिन की यही सहेली, जानै सब ज्ञानी ।। २१ ।।

इनका चितवन बार बार कर, श्रद्धा उर धरना ।
'मंगत' इसी जतनतै इकदिन, भव-सागर-तरना ।। २७ ।।

।। इति सुलतानपुर निवासी मगतरायजी कृत बारह भावना ।।

बारह-भावना

(कविवर भूधरदास जी कृत)

दोहा

राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ।। १ ।।

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार ।
मरती बिरियां जीवको, कोई न राखनहार ।। २ ।।

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूं न सुख संसारमें, सब जग देख्यो छान ।। ३ ।।

आप अकेला अवतरै, मरै अकेलो होय ।
यूं कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय ।। ४ ।।

जहां देह अपनी नहीं, वहां न अपना कोय ।
घर संपत्ति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय ।। ५ ।।

दिपै चाम-चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह ।
भीतर या सम जगतमें, अवर नहीं घिन-गेह ।। ६ ।।

सोरठा

मोह-नींदके जोर, जगवासी घूमैं सदा ।
कर्म-चोर चहुं ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं ।। ७ ।।

सतगुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमै ।
तब कछु बनैं उपाय, कर्म-चोर आवत रुकैं ।। ८ ।।

दोहा

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विधि बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर ।। ९ ।।

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय धार निर्जरा सार ।। १० ।।

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान ।
तामें जीव अनादितैं, भरमत हैं बिन ज्ञान ।। ११ ।।

धन कन कंचन राजसुख सबहि सुलभकर जान ।
दुर्लभ है संसारमें, एक जथारथ ज्ञान ।। १२ ।।

जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिंतन चिंतारैन ।
बिन जाचै बिन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन ।। १३ ।।

संकट मोचन विनती

हे दीनबंधु श्रीपति करुणानिधानजी ।
यही मेरी विथा क्यों न हरो बार क्या लगी ।।टेक ।।

मालिक हो दो जहान के जिनराज आपही ।
एबो हुनर हमारा कछ तुमसे छिपा नहीं ।।
बेजान में गुनाह मुझसे बन गया सही ।
ककरीके चोरको कटार मारिये नहीं ।। हे० ।। १ ।।

दुखदर्द दिलका आपसे जिसने कहा सही ।
मुश्किल कहर बहरसे लिया है भुजा गही ।।
जस वेद औ पुरान में प्रमान है यही ।
आनंदकंद श्रीजिनंद देव है तुही ।। हे० ।। २ ।।

हाथीपै चढ़ी जाती थी सुलोचना सती ।
गंगामें ग्राहने गही गजराजकी गती ।।

उस वक्त में पुकार किया था तुम्हें सती ।
भय टारके उबार लिया हे कृपापती ।। हे० ।। ३ ।।

पावक प्रचंड कुंडमें उमंड जब रहा ।
सीतासे शपथ लेनेको तब रामने कहा ।।
तुम ध्यानधार जानकी पग धारती तहां ।
तत्काल ही सर स्वच्छ हुआ कमल लहलहा ।। हे० ।। ४ ।।

जब चीर द्रोपदीका दु:शासन ने था गहा ।
सबही सभाके लोग थे कहते हहा हहा ।।
उस वक्त भीर पीरमें तुमने करी सहा ।
परदा ढका सीताका सुजस जगतमें रहा ।। हे० ।। ५ ।।

श्रीपालको सागर विषैं जब सेठ गिराया ।
उनकी रमासे रमनेको आया बेहया ।।
उस वक्त के संकटमें सती तुमको जो ध्याया ।
दुख-दंद-फंद मेटके आनंद बढ़ाया ।। हे० ।। ६ ।।

हरिषेणकी माताको जहां सौत सताया ।।
रथ जैनका तेरा चलै पीछै यों बताया ।।
उस वक्तके अनशनमें सती तुमको जो ध्याया ।
चक्रेश हो सुत उसके ने रथ जैन चलाया ।। हे० ।। ७ ।।

सम्यक्त्व शुद्ध शीलवती चंदना सती ।
जिसके नगीच लगती थी जाहिर रती रती ।।
बेड़ीमें पड़ी थी तुम्हें जब ध्यावती हती ।
तब वीर धीरने हरी दुखदंदकी गती ।। हे० ।। ८ ।।

जब अंजना सतीको हुआ गर्भ उजारा ।
तब सासने कलंक लगा घरसे निकारा ।।
वनवर्गके उपसर्गमें तब तुमको चितारा ।
प्रभुभक्त व्यक्त जानिके भय देव निवारा ।। हे० ।। ९ ।।

सोमासे कहा जो तु सती शील विशाला ।
तो कंभतैं निकाल भला नाग जु काला।।
उस वक्त तुम्हें ध्यायके सति हाथ जब डाला ।
तत्काल ही वह नाग हुआ फूलकी माला ।। हे० ।।१० ।।

जब कुष्ट रोग था हुआ श्रीपालराजको ।
मैना सती की, आपकी पूजा, इलाजको ।।
तत्काल ही सुंदर किया श्रीपाल राजको ।
वह राजरोग भाग गया मुक्तराजको ।। हो० ।। ११ ।।

जब सेठ सुदर्शनको मृषा दोष लगाया ।
रानीके कहे भूपने सूली पै चढ़ाया ।।
उस वक्त तुम्हें सेठने निज ध्यानमें ध्याया ।
सूली से उतारुस्को सिंहासनपे बिठाया ।। हो० ।। १२ ।।

जब सेठ सुधन्नाजी को वापीमें गिराया ।
ऊपरसे दुष्ट फिर उसे वह मारने आया ।।
उस वक्त तुम्हें सेठने दिल अपने में ध्याया ।
तत्कालही जंजालसे तब उसको बचाया ।। हो० ।। १३ ।।

इक सेठके घरमें किया दारिद्रने डेरा ।
भोजनका ठिकाना भि न था साँझ सबेरा ।।
उस वक्त तुम्हें सेठने जब ध्यान में घेरा ।
घर उसकेमें तब कर दिया लक्ष्मीका बसेरा ।। हे० ।। १४ ।।

बलि वाद में मुनिराज सों जब पार न पाया ।
तब रातको तलवार ले शठ मारने आया ।।
मुनिराजने निजध्यानमें मन लीन लगाया ।
उस वक्त हो प्रत्यक्ष तहां देव बचाया ।। हे० ।। १५ ।।

जब रामने हनुमंत को गढ़लंक पठाया ।
सीताकी खबर लेनेको यह सैन्य सिधाया ।।
मग बीच दो मुनिराजकी लख आगमें काया ।

झट वारि मूसलधारसे उपसर्ग मिटाया ।। हे० ।। १६ ।।

जिननाथही को माथ नवाता था उदारा ।
घेरेमें पडा था वह वज्र-कर्ण विचारा ।।
उसवक्त तुम्हे प्रेमसे सकट मे चितारा ।
रघुवीरने सब दु ख तहा तुरत निवारा ।। हे० ।। १७ ।।

रणपाल कुवरके पडीथी पाव मे बेरी ।
उस वक्त तुम्हें ध्यानमें ध्याया था सबेरी ।।
तत्काल ही सुकुमालकी सब झड पडी बेरी ।
तुम राजकुवरकी सभी दुखदद निवेरी ।। हे० ।। १८ ।।

जब सेठके नदनको डसा नाग जु कारा ।
उस वक्त तुम्हे पीरमें धर धीर पुकारा ।।
तत्काल ही उस बाल का विष भूरि उतारा ।
वह जाग उठा सोके मानो सेज सकारा ।। हे० ।। १९ ।।

मुनि मानतुगको दई जब भूपने पीरा ।
तालेमे किया बद भरी लोहजँजीरा ।।
मुनिईश ने आदीशकी थुति की है गभीरा ।
चक्रेश्वरी तब आनिके झट दूर की पीरा ।। हे० ।। २० ।।

शिवकोटिने हट था किया सामत भद्रसों ।।
शिव पिडकी बदन करो शको अभद्रसो ।।
उस वक्त स्वयभू रचा गुरु भावभद्रसो ।
जिनचद्रकी प्रतिमा तहा प्रगटी सुभद्रासों ।। हे० ।। २१ ।।

ताते ने तुम्हे आनिके फल आम चढ़ाया ।
मेंढक ले चला फूल भरा भक्तिका भाया ।।
तुम दोनों को अबिराम स्वर्गधाम बसाया ।
हम आपसे दातारको लख आज ही पाया ।। हे० ।। २२ ।।

कपि श्वान सिह नेवला अज बैल बिचारे ।
तिर्यंच जिन्हें रच न था बोध, चितारे ।।

इत्यादिको सुर धाम दे शिवधाममें धारे ।
हम आपसे दातारको प्रभु आज निहारे ।। हे० ।। २३ ।।

तुम ही अनंत जंतुका भय भीर निवारा ।
वेदोपुराण में गुरू गणधरने उचारा ।।
हम आपकी सरनागतीमें आके पुकारा ।
तुम हो प्रत्यक्ष कलपवृक्ष इछिच्ताकारा ।। हे० ।। २४ ।।

प्रभु भक्त व्यक्त भक्त जक्त मुक्तके दानी ।
आनंद कंद वृंदको हो मुक्त के दानी ।।

मोहि दीन जान दीनबंधु पातक भानी ।
संसार विषम खार तार अंतर जामी ।। हे० ।। २५ ।।
करुणानिधान बानको अब क्यों न निहारो ।
दानी अनंतदानके दाता हो सँभारो ।।
वृषचंद्रनंद 'वृंद' का उपसर्ग निवारो ।
संसार विषम खारसे प्रभु पार उतारो ।।
हो दीन-बंधु श्रीपति करुणानिधानजी ।
अब मेर विथा क्यों ना हरो बार क्या लगी ।। हे० ।। २६ ।।

दुःखहरण विनती

(शैर की लय मे तथा और और रागनियो मे भी बनती हे।)

श्रीपति जिनवर करुणायतनं, दुखहरन तुमारा बाना है ।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ।। टेक ।।

त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुम सों कछु बात न छाना है ।
मेरे उर आरत जो वरतैं, निहचै सब सो तुम जाना है ।।
अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा कहीं ठिकाना है ।
हो राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुमसों हित ठाना है ।। १ ।।

सब ग्रंथनि में निरग्रंथनिने, निरधार यही गणधार कही ।
जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक छायक ज्ञानमही ।।

यह बात हमारे कान परी, तब आन तुमारी सरन गही ।
क्यों मेरी बार बिलंब करो, जिन नाथ कहो यह बात सही ।। २ ।।

काहूको भोग मनोग करो, काहूको स्वर्ग-विमाना है ।
काहूको नाग नरेशपती, काहूको ऋद्धि निधाना है ।।
अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेर जमाना है ।
इन्साफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भरो भगवाना है ।। ३ ।।

खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है ।
तुम ही समरत्थ न न्याय करो, तब बंदेका क्या चारा है ।।
खल घालक पालक बालक का नृपनीति यही जगसारा है ।
तुम नीतिनिपुण त्रैलोकपती, तुमही लगि दौर हमारा है ।। ४ ।।

जबसे तुमसे पहिचान भई, तबसे तुमहीको माना है ।
तुमरे ही शासनका स्वामी, हमको शरना सरधाना है ।।
जिनको तुमरी शरनागत है, तिनसौं जमराज डराना है ।
यह सुजस तुम्हारे सांचेका, सब गवत वेद पुराना है ।। ५ ।।

जिसने तुमसे दिलदर्द कहा, तिसका तुमने दुख हाना है ।
अघ छोटा मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हें मनमाना है ।।
पावकसों शीतल नीर किया, औ चीर बढ़ा असमाना है ।
भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुबेर समाना है ।। ६ ।।

चिंतामणि पारस कल्पतरू, सुखदायक ये सरधाना है ।
तव दासनके सब दास यही, हमरे मनमें ठहराना है ।।
तुम भक्तनको सुरइंदपदी, फिर चक्रपतीपद पाना है ।
क्या बात कहों विस्तार बड़ी, वे पावैं मुक्ति ठिकाना है ।। ७ ।।

गति चार चुरासी लाखविषैं, चिन्मूरत मेरा भटका है ।
हो दीनबंधु करुणानिधान, अबलों न मिटा वह खटका है ।।
जब जोग मिला शिवसाधनका, तब विघन कर्मने हटका है ।
तुम विघन हमारे दूर करो सुख देहु निराकुल घटका है ।। ८ ।।

गज-ग्रह-ग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है ।
ज्यों सागर गोपदरूप किया, मैनाका संकट टारा है ।
ज्यों सूलीतें सिंहासन औ, बेडीको काट बिडारा है ।
त्यौं मेरा संकट दूर करो, प्रभु मोकूं आस तुम्हारा है ।। ९ ।।

ज्यों फाटक टेकत पांय खुला, औ सांप सुमन कर डारा है ।
ज्यों खड्ग कुसुमका माल किया, बालकका जहर उतारा है ।।
ज्यों सेठ विपत चकचूरि पूर, घर लक्ष्मीसुख विस्तारा है ।
त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु, मोकूं आस तुम्हारा है ।। १० ।।

यद्यपि तुमको रागादि नहीं, यह सत्य सर्वथा जाना है ।
चिनमूरति आप अनंतगुनी, नित शुद्धदशा शिवथाना है ।।
तद्यपि भक्तनकी भी हरो, सुख देत तिन्हें जु सुहाना है ।
यह शक्ति अचिंत तुम्हारी का, क्या पावै पार सयाना है ।। ११ ।।

दुखखंडन श्रीसुखमंडनका, तुमरा प्रन परम प्रमाना है ।
वरदान दया जस कीरतका, तिहुंलोकधुजा फहराना है ।।
कमलाधरजी कमलाकरजी करिये कमला अमलाना है ।
अव मेरि विथा अवलोकि रमापति, रंच न बार लगाना है ।। १२ ।।

हो दीनानाथ अनाथहितू, जन दीन अनाथ पुकारी है ।
उदयागत कर्मविपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है ।।
ज्यों आप और भवि जीवनकी, ततकाल विथा निरवारी है ।
त्यों 'वृंदावन' यह अर्ज करै, प्रभु आज हमारी बारी है ।। १३ ।।

पं० भूधरदासकृत गुरु स्तुति

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे श्री ऋषिराज ।। टेक ।।

मोह महारिपु जानकै, छांड्यो सब घरबार ।
होय दिगम्बर वन बसे, आतम शुद्ध विचार ।। २ ।।

रोग उरग बिल वपु गिण्यो, भोग भुजग समान ।
कदली तरु ससार है, त्यागो सब यह जान ।। ३ ।।

रतनत्रय निधि उर धरै, अरु निरग्रन्थ त्रिकाल ।
मारय्यो काम खबीसको, स्वमी परम दयाल ।। ४ ।।

पच महाव्रत आचरै, पाचो समिति समेत ।
तीन गुपति पालै सदा, अजर अमर पद हेत ।। ५ ।।

धर्म धरै दश लक्ष्णी, भावै भावना सार ।
सहै परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ।। ६ ।।

जेठ तपै रवि आकरो सूखै सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाभै नगन शरीर ।। ७ ।।

पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार ।
तरुतल निवसै साहसी चालै झझाधार ।। ८ ।।

शीत पडे कपि-मद गले, दाहै सब बनराय ।
ताल तरगनिके तटै ठाडे ध्यान लगाय ।। ९ ।।

इह विधि दुद्धर तप तपैं तीनो कालमझार ।
लागे सहज सरूपमे तनसो ममत निवार ।। १० ।।

पूरव भोग न चिन्तवै आगम बाछा नाहि ।
चहुगति के दुखसो डरै सुरति लगी शिवमाहि ।। ११ ।।

रग महलमे पोढ़ते कोमल सेज बिछाय ।
ते पश्चिम निशि भूमिमे सोवै, सवरि काय ।। १२ ।।

गज चढ़ि चलते गरव सो, सेना सजि चतुरग ।
निरखि निरखि पग ते धरैं, पालैं करुणा अग ।। १३ ।।

ये गुरु चरण जहा धरैं, जग मे तीरथ जेह ।
सो रज मम मस्तक चढ़ो, 'भूधर' मागै एह ।। १४ ।।

दर्शन पाठ (प० दौलतरामजी कृत)

दोहा—सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रस लीन ।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रजरहस विहीन ।।

जस वीराग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरन सूर ।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार, दृग सुख वीरज मण्डित अपार ।। २ ।।

जय परम शान्ति मुद्रा समेत, भवि जनको निज अनुभूति देत ।
भवि भागन वश जोगे वशाय, तुम ध्वनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय ।। ३ ।।

तुम गुण चिन्तन निज पर विवेक, प्रगटे विघटे आपद अनेक ।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ।। ४ ।।

अविरुद्ध शुद्ध चेतन सरूप, परमात्म परम पावन अनूप ।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परणतिमय अक्षीण ।। ५ ।।

अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वं चतुष्टय में राजत गम्भीर ।
मुनि गणधरादि सेवत महंत, नव केवल लब्धि रमा धरन्त ।। ६ ।।

तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जैहैं सदीव ।
भवसागर में दुख क्षार वारि, तारण को और न आप टारि ।। ७ ।।

यह लख निज दुख गद हरण काज, तुम ही निमित्त कारण इलाज ।
जाने ताते मैं शरण आय, उचरो निज दुख जो चिर लहाय ।। ८ ।।

मैं भ्रमो अपनयो बिसर आप, अपनाये विधि फल पुण्य पाप ।
निज को पर को कर्त्ता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान ।। ९ ।।

आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि ।
तन परणति में आपो चितार, कबहूं न अनुभवो स्वपद सार ।। १० ।।

तुमको जाने बिन जो कलेश, पायो सो तुम जानत जिनेश ।
पशुनारक गति सुर नर मंझार, भव धर धर मरो अनंत बार ।। ११ ।।

अब काल लब्धि बल ते दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल ।
मन शांति भयो मिट सकलद्वंद, चाखो स्वात्म रस दुख-निकंद ।। १२ ।।

तातैं ऐसी अब करो नाथ, बिछुड़े न कभी तुम चरण साथ।
तुम गुणगण को नहिं छेव देव, जगतारण को तुम विरद एव ।। १३ ।।

आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय।
मैं रहूँ आप में आप लीन, सो करो होउँ जो निजाधीन ।। १४ ।।

मेरे न चाह कुछ और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश।
मुक्क कारज के कारण सु आप, शिव करो हरो मम मोह ताप ।। १५ ।।

शशि शांति करण तप हरण हेत,
स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभव ते भव नशाय ।। १६ ।।

त्रिभुवन तिहुँ काल मझार कोय, नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय।
मो उर यह निश्चय भयो आज दुख जलधि उबारन तुम जहाज ।। १७ ।।

दोहा—तुम गुणगण मणि गणिपति, गणत न पावहिं पार।
"दौल" स्वल्पमति किम कहें, नमौं त्रियोग सम्हार ।।

पं० भूधरदासकृत स्तुति

अहो जगतगुरु, एक सुनियो अरज हमारी।
तुम हो दीनदयालु, मैं दुखिया संसारी ।। १ ।।

इस भव बनमें वादि, काल अनादि गमायो।
भ्रमत चहूंगति माहिं, सुख नहिं, दुख बहु पायो ।। २ ।।

कर्म महारिपु जोर, एक न काम करैं जी।
मन मान्य दुख देहिं काहूसों नाहिं डरैं जी ।। ३ ।।

कबहूं इतर निगोद, कबहूं नर्क दिखावें।
सुर-नर-पशुगति माहिं, बहुविधि नाच नचावें ।। ४ ।।

प्रभु इनके परसंग, भव भव माहिं बुरे जी।
जे दुख देखे देव तुमसौं नाहिं दुरे जी ।। ५ ।।

एक जनमकी बात, कहि न सकों सुनि स्वामी ।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरयामी ।। ६ ।।

मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे ।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे ।। ७ ।।

ज्ञान महानिधि लूटि, रंग निबल करि डारयो ।
इन ही तुम मुझ माहिं, हे जिन अन्तर पारयो ।। ८ ।।

पाप पुण्य मिल दोइ, पायनि बेड़ी डारी ।
तन कारागृह माहिं मोहि दिये दुख भारी ।। ९ ।।

इनको नेक विगार, मैं कछु नाहिं कियो जी ।
बिन कारन जगवंद्य बहुविधि बैर लियो जी ।। १० ।।

अब आयो तुम पास सुनि कर, सुजस तिहारो ।
नीति निपुन महाराज, कीजे न्याय हमारो ।। ११ ।।

दुष्टन देहु निकार, साधुनको रख लीजै ।
विनवै भूधरदास हे प्रभु ढील न कीजै ।। १२ ।।

आराधना पाठ

(स्नान करते समय बोलना चाहिए)

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमरन करौं ।
मैं सूर गुरुमुनि तीनपद ये, साधुप पद हिरदय धरौं ।।
मैं धर्म करुणामय जु चाहूं, जहां हिंसा रंच ना ।
मैं शास्त्र ज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंचना ।। १ ।।

चौबीस श्रीजिनदेव चाहूं, और देव न मन बसै ।
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूं, बंदिते पातक नसै ।।
गिरनार शिखर समेद चाहूं, चंपापुर पावापुरी ।
कैलाश श्रीजिनधाम चाहूं, भजत भाजै भ्रमजुरी ।। २ ।।

नवतत्त्वका सरधान चाहू, और तत्त्व न मन धरौं ।
षट्द्रव्यगुन परजय चाहू, ठीक जासों भय हरों ।।
पूजा परम जिनराज चाहू, और देव न चहू कदा ।
तिहुकालकी मैं जाप चाहू, पाप नहि लागै कदा ।। ३ ।।

सम्यक्त दर्शन ज्ञान चारित, सदा चाहू भावसो ।
दशलक्षणी मैं धर्म चाहू, महा हरख उछावसो ।।
सोलह जु कारन दुख निवारण, सदा चाहू प्रीतिसों ।।
मैं चित अठाई पर्व चाहू, महामगल रीतिसों ।। ४ ।।

अनुयोग चारो सदा चाहू, आदि अन्त निवाहसो ।
पाये धरमके चार ये, चाहू अधिक उत्साहसो ।।
मैं दान चारो सदा चाहू, भवन-बस लाहो लहू ।
आराधना मैं चारि चाहू, अन्तमें ये ही गहू ।। ५ ।।

भावना बारह जु भाऊ, भाव निरमल होत हैं ।
मैं व्रत जु बारह सदा चाहू, त्याग भाव उद्योत हैं ।।
प्रतिमा दिगबर सदा चाहूँ, ध्यान आसन सोहना ।
वसुकर्म तैं मैं छुटा चाहूँ, शिवलहू जह मोह ना ।। ६ ।।

मै साधुजनको सग चाहू, प्रीति तिन ही सो करो ।
मैं पर्वके उपवास चाहू, अवर आरभ परिहरो ।।
इस दुक्ख पचमकाल माहीं, सुकुल श्रावक मैं लह्यो ।
अरु महाव्रत धरि सको नाहीं, निबल तन मैंने गह्यो ।। ७ ।।

आराधना उत्तम सदा, चाहू सुनो जिनरायजी ।
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत', दया करना न्याय जी ।।
वसुकर्मनाश विकास, ज्ञानप्रकाश मोको दीजिये ।
करि सुगति गमन समाधिमरन, सुभक्ति चरनन दीजिये ।। ८ ।।

आत्म कीर्तन

(श्री १०५ क्षु० मनोहरलाल जी वर्णी 'सहजानन्द')

हूं स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता दृष्टा आतम-राम ।।टेक ।।

मैं वह हूं जो हैं भगवान, जो मैं हूं वह हैं भगवान ।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहँ राग वितान ।। १ ।।

मम स्वरूप है सिद्ध-समान, अमित शक्ति सुखज्ञान निधान ।
किन्तु आश-वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ।। २ ।।

सुख दुख दाता कोई न आन, मोह राग ही दुख की खान ।
निजको निज परको पर जान, फिर दुखका नहिं लेश निदान ।। ३ ।।

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्याग पहुचू निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम ।। ४ ।।

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम ।
दूर हटा पर-कृत परिणाम, ज्ञायक भाव लखूँ अभिराम ।। ५ ।।

इष्ट प्रार्थना

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो ।
सत्य संयम शील का, व्यवहार घर-घर बारहो ।।टेक ।।

धर्म का प्रचार हो अरु देश का उद्धार हो ।
और ये बिगड़ा हुआ, भारत चमन गुलजार हो ।। १ ।।

ज्ञान के अभ्यास से, जीवों का पूर्ण विकाश हो ।
धर्म के परचार से, हिंसा का जग से ह्रास हो ।। २ ।।

शान्ति अरु आनन्द का, हर एक घर में वास हो ।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वासहो ।। ३ ।।

रोग अरु भय शोक होवें, दूर सब परमात्मा ।
कर सकें कल्याण ज्योति, सब जगत की आत्मा ।। ४ ।।

सम्बोधन

सदा संतोष कर प्राणी, अगर सुख से रहना चाहे,
घटा दे मन की तृष्णा को, अगर अपना भला चाहे ।
आग में जिस कदर ईन्धन, पड़ेगा ज्योति ऊँची हो,
बढ़ा मत लोभ की तृष्णा, अगर दुख से बचाना चाहे ।। १ ।।

वही धनवान है जग में, लोभ जिसके नहीं मन में,
वह निर्धन रक होता है, जो परधन को हराना चाहेत ।। २ ।।

दुखी रहते हैं वह निशदिन, जो आरत-ध्यान करते हैं,
न कर लालच अगर आजाद, रहने का मजा चाहे ।। ३ ।।

बिना माँगे मिले मोती, 'न्यायमत' देख दुनियाँ में,
भीख मागे नहीं मिलती, अगर कोई गहा चाहे ।।.४ ।।

सिद्धचक्र की स्तुति

(श्री व्याख्यान वाचस्पति पं० मक्खनलाल जी देहली)

श्री सिद्धचक्र का पाठ करो, दिन आठ,
ठाठ से प्रानी, फल पायो मैना रानी ।।टेक ।।

मैनासुन्दरि इकनारी थी, कोढ़ीपति लख दुखियारी थी, ।
नहिं पड़े चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी ।। फल पायो० ।।

जो पति का कष्ट मिटाऊंगी, तो उभय लोक सुख पाऊंगी, ।
नहिं अजा-गल-स्तन-वत निष्फल जिन्दगानी ।। फल पायो० ।।

एकदिवस गईजिन मन्दिर में, दर्शन कर अति हर्षी उर में, ।
फिर लखे साधु निर्ग्रन्थ दिगम्बर ज्ञानी ।। फल पायो० ।।

बैठी कर मुनिको नमस्कार, निज निन्दा करती बार बार, ।
भर अश्रु नयन कहि मुनि सों दुखद कहानी ।। फल पायो० ।।

बोले मुनि पुत्री धैर्य करो, श्री सिद्धचक्र का पाठ करो, ।
नहिं रहे कुष्ट की तन में नाम निशानी ।। फल पायो० ।।

सुन साधु वचन हर्षी मैना, नहिं होंय झूठ मुनि के बैना ।
करके श्रद्धा श्री सिद्धचक्र की ठानी ।। फल पायो० ।।

जब पर्व अठाई आया है, उत्सव युत पाठ कराया है, ।
सब के तन छिड़का यंत्र न्हवन का पानी ।। फल पायो० ।।

गंधोदक छिड़कत वसु दिनमें,
नहिं रहा कुष्ठ किचिंत तनमें,
भई सात शतक की काया
स्वर्ण समानी ।। फल पायो० ।।

भव भोग भोगि योगीश भये,
श्रीपाल कर्म हनि मोक्ष गये,
दूजे भव मैना पावै
शिव रजधानी ।। फल पायो० ।।

जो पाठ करे मन वच तन से, वे छूट जायं भव बन्धन से,
'मक्खन' मत करो विकल्प कहे जिनवाणी ।। फल पायो० ।।

श्री भगवान् पार्श्वनाथ जी की स्तुति

तुम से लागी लगन, लेलो अपनी शरण, पारस प्यारा ।
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।

निश दिन तुमकों जपू पर से नेहा तजूं
जीवन सारा तेरे चरणों मेंबीते हमारा ।। मेटों मेटों०।।

विश्वसेन के राज दुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे ।
सब से नेहा तोड़ा, जग से मुहं को मोड़ा, संयम धारा ।।
मेटो मेटो० ।

इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये ।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थारा ।।
मेटो मेटो० ।

जगके दुखकी तो परवाह नहीं है, स्वर्ग-सुखकी भी चाह नहीं है ।
मेटो जामन मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ।।
मेटो मेटो० ।

लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन यह जिया लागे खारा ।।
मेटो मेटो० ।

पद्मप्रभु चालीसा

शीश नवा अर्हंत को सिद्धन करूं प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्य का ले सुखकारी नाम ।।
सर्व साधु और सरस्वती जिन मन्दिर सुखकार ।
पद्मपुरी के पद्म को मन मन्दिर में धार ।।

जय श्री पद्मप्रभु गुणधारी, भवि जन को तुम हो हितकारी ।
देवों के तुम देव कहाओ, छट्टे तीर्थंकर कहलाओ ।।
तीन काल तिहुं जग की जानो, सब बातें क्षण में पहचानो ।
वेष दिगम्बर धारण हारे, तुम से कर्म शत्रु भी हारे ।।
मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर, दृष्टि सुखद जमती नासा पर ।
क्रोध मान मद लोभ भगाया, राग द्वेष का लेश न पाया ।।
वीतराग तुम कहलाते हो, सब जग के मन को भाते हो ।
कौशाम्बी नगरी कहलाए, राजा धारणजी बतलाए ।।

सुन्दर नाम सुसीमा उनके, जिनके उर से स्वामी जन्मे ।
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरब बतलाई ।।

इक दिन हाथी बंधा निरख कर, झट आया वैराग उमड़कर ।
कार्तिक सुदी त्रयोदशि भारी, तुमने मुनिपद दीक्षा धारी ।।

सारे राज पाट को तज के, तभी मनोहर वन में पहुंचे ।
तप कर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पूनम कहलाया ।।

एक सौ दस गणधर बतलाए, मुख्य बज्र चामर कहलाए ।
लाखों मुनी अर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों ।।

असंख्यात तिर्यंच बताये, देवी देव गिनत नहीं पाये ।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, शिवरमणी को ली परणाकर ।।

पंचम काल महा दुखदाई, जब तमुने महिमा दिखलाई ।
जयपुर राज ग्राम बाडा है, स्टेशन शिवद्दासपुरा है ।।

मूला नाम जाट का लड़का, घर की नींव खोदने लागा ।
खोदत २ मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बतलाई ।।

चिन्ह कमल लख लोग लुगाई, पद्म प्रभु की मूर्ति बताई ।
मन में हर्षित होते हैं, अपने दिल का मल धोते हैं ।।

तुमने यह अतिशय दिखलाया, भूत प्रेत को दूर भगया ।।

जब गंधोदक छींटे मारे, भूत प्रेत तब आप बकारे ।।

जपने से जब नाम तुम्हारा, भूत प्रेत वो करे किनारा ।
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अन्धे भी आंखें पाते हैं ।।

प्रतिमा श्वेत-वर्ण कहलाए, देखत ही हिरदय को भाए ।
ध्यान तुम्हारा जो धरता है, इस भव से वह नर तरता है ।।

अन्धा देखे गूंगा गावे, लंगड़ा पर्वत पर चढ़ जावे ।
बहरा सुन-सुन कर खुश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे ।।

मैं हूँ स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया कर दो पारा ।
चालीसे को चन्द्र बनावे, पद्म प्रभु को शीश नवावे ।।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन ।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी में आय के ।।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो ।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले ।।

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

वीतराग सर्वज्ञ जिन, जिन वाणी को ध्याय ।
लिखने का साहस करूं, चालीसा सिर नाय ।।

देहरे के श्री चन्द्र को, पूजों मन वच काय ।
ॠद्धि सिद्धि मंगल करैं, विघ्न दूर हो जाय ।।

जय श्री चन्द्र दया के सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर ।।
शांति छवि मूरति अति प्यारी, भेष दिगम्बर धारा भारी ।।
नासा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनी मूरति कितनी प्यारी ।।
देवों के तुम देव कहावो, कष्ट भक्त के दूर हटावो ।।
समन्तभद्र मुनिवर ने ध्याया, पिंडी फटी दर्श तुम पाया ।।
तुम जग में सर्वज्ञ कहावो, अष्टम तीर्थंकर कहलावो ।।
महासेन के राजदुलारे, मात सुलक्षणा के हो प्यारे ।।
चन्द्रपुरी नगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्र-प्रभु स्वामी ।।
पौष वदी ग्यारस को जन्मे, नर नारी हरषे तब मन में ।।
काम क्रोध तृष्णा दुखकारी, त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी ।।
फाल्गुन वदी सप्तमी भाई, केवल ज्ञान हुआ सुखदाई ।।
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष गये प्रभु आप वहाँ से ।।
लोभ मोह और छोड़ी माया, तुमने मान कषाय नसाया ।।
रागी नहीं, नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी ।।

पंचम काल महा दुखदाई, धर्म कर्म भूले सब भाई ।।
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, होय जहां पर दर्शन प्यारा ।।
उत्तर दिशि में देहरा माहीं, वहां आकर प्रभुता प्रगटाई ।।
सावन सुदि दशमी शुभ नामी, आन पधारे त्रिभुवन स्वामी ।।
चिन्ह चन्द्र का लख नर नारी, चंद्रप्रभु की मूरती मानी ।।
मूर्ति आपकी अति उजियाली, लगता हीरा भी है जाली ।।
अतिशय चन्द्र प्रभू का भारी, सुनकर आते यात्री भारी ।।
फाल्गुन सुदी सप्तमी प्यारी जुड़ता है मेला यहां भारी ।।
कहलाने को तो शशि धर हो, तेज पुंज रवि से बढ़कर हो ।।
नाम तुम्हारा जग में सांचा, ध्यावत भागत भूत पिशाचा ।।
राक्षस भूत प्रेत सब भागें तुम सुमरत भय कभी न लागे ।।
कीर्ति तुम्हारी है अति भारी, गुण गाते नित नर और नारी ।।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, संकट झट कटता है भारी ।।
जो भीजैसी आश लगाता, पूरी उसे तुरत कर पाता ।।
दुखिया दर पर जो आते हैं, संकट सब खो कर जाते हैं ।।
खुला सभी को प्रभु द्वार है, चमत्कार को नमस्कार है ।।
अन्धा भी यदि ध्यान लगावे, उसके नेत्र शीघ्र खुल जावें ।।
बहरा भी सुनने लग जावे, पगले का पागलपन जावे ।।
अखंड ज्योति का घृत जो लगावे, संकट उसका सब कट जावे ।।
चरणों की रज अति सुखकारी, दुख दरिद्र सब नाशनहारी ।।
चालीसा जो मन से ध्यावे, पुत्र पौत्र सब सम्पति पावे ।।
पार करो दुखियों की नैया, स्वामी तुम बिन नहीं खिवैया ।।
प्रभु मैं तुम से कुछ नहिं चाहूं, दर्श तिहारा निश दिन पाऊँ ।।

करूं वन्दना आपकी, श्री चन्द्र प्रभु जिनराज ।
जंगल में मंगल कियो, राखो 'सुरेश' की लाज ।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

।। दोहा ।।

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूं प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्य का ले सुखकारी नाम ।।

सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार ।
अहिच्छत्र और पार्श्व को, मन मन्दिर में धार ।।

।। चौपाई ।।

पार्श्वनाथ जगत हितकारी, हो स्वामी तुम व्रत के धारी ।
सुर नर असुर करें तुम सेवा, तुम ही सब देवन के देवा ।
तुमसे करम शत्रु भी हारा, तुम कीना जग का निस्तारा ।
अश्वसैन के राजदुलारे. वामा की आँखों के तारे ।
काशी जी के स्वामि कहाये, सारी परजा मौज उड़ाये ।
इक दिन सब मित्रों को लेके, सैर करन को बन में पहुँचे ।
हाथी पर कसकर अम्बारी, इक जंगल में गई सवारी ।
एक तपस्वी देख वहां पर, उससे बोले वचन सुनाकर ।
तपसी! तुम क्यों पाप कमाते, इस लक्कड में जीव जलाते ।
तपसी तभी कुदाल उठाया, उस लक्कड को चीर गिराया ।
निकले नाग-नागनी कारे, मरने के थे निकट बेचारे ।
रहम प्रभू के दिल में आया, तभी मन्त्र नवकार सुनाया ।
मर कर वो पाताल सिधाये, पद्मावति धरणेन्द्र कहाये ।
तपसी मर कर देव कहाया, नाम कमठ ग्रन्थों में आया ।
एक समय श्री पारस स्वामी, राज छोड़कर वन की ठानी ।
तप करते थे ध्यान लगाये, इकदिन कमठ वहां पर आये ।
फौरन ही प्रभु को पहिचाना, बदला लेना दिल में ठाना ।
बहुत अधिक बारिश बरसाई, बादल गरजे बिजली गिराई ।
बहुत अधिक पत्थर बरसाये, स्वामी तन को नहीं हिलाये ।
पद्मावति धरणेन्द्र भी आये, प्रभु की सेवा में चित लाये ।
पद्मावति ने फन फैलाया, उस पर स्वामी को बैठाया ।
धरणेन्द्र ने फन फैलाया, प्रभु के सर पर छत्र बनाया ।
कर्मनाश प्रभु ज्ञान उपाया, समोशरण देवेन्द्र रचाया ।
यही जगह अहिच्छत्र कहाये, पात्र केशरी जहां पर आये ।
शिष्य पाँच सौ संग विद्वाना, जिनको जाने सकल जहाना ।

पार्श्वनाथ का दर्शन पाया, सबने जैन धरम अपनाया ।
अहिच्छत्र-श्री सुन्दर नगरी, जहाँ सुखी थी परजा सगरी ।
राजा श्री वसुपाल कहाये, वो इक जिन मन्दिर बनवाये ।
प्रतिमा पर पालिश करवाया, फौरन इक मिस्त्री बुलवाया ।
वह मिस्तरी मांस खाता था, इससे पालिश गिर जाता था ।
मुनि ने उसे उपाय बताया, पारश दर्शन व्रत दिलवाया ।
मिस्त्री ने व्रत पालन कीना, फौरन ही रंग चढ़ा नवीना ।
गदर सतावन का किस्सा है, इक माली को यो लिक्खा है ।
माली एक प्रतिमा को लेकर, झट छुप गया कुए के अन्दर ।
उस पानी का अतिशय भारी, दूर होय सारी बीमारी ।
जो अहिच्छत्र हृदय से ध्यावे, सो नर उत्तम पदवी पावे ।
पुत्र संपदा की बढ़ती हो, पापों की इक दम घटती हो ।
है तहसील आंवला भारी, स्टेशन पर मिले सवारी ।
रामनगर इक ग्राम बराबर, जिसको जाने सब नारी नर ।
चालीसे को 'चन्द्र' बनाये, हाथ जोड़कर शीश नवाये ।

।। सोरठर ।।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन ।
खेय सुगन्ध अपार, अहिच्छत्र में आय के ।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो ।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले ।।

।। श्री महावीर चालीसा ।।

(शमशाबाद नि० कवि० पूरनमल कृत)

।। दोहा ।।

सिद्ध समूह नमों सदा, अरु सुमरूं अरहन्त ।
निर आकुल निर्वांच्छ हो, गए लोक के अन्त ।।

मंगल मय मंगल करन, वर्धमान महावीर ।
तुम चिंतत चिंता मिटे, हरो सकल भव पीर ।।

।। चौपाई ।।

जय महावीर दया के सागर, जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर ।
शांत छवि मूरत अति प्यारी, वेष दिगम्बर के तुम धारी ।
कोटि भानु से अति छवि छाजे, देखत तिमिर पाप सब भाजे ।
महाबली और कर्म विदारे, जोधा मोह सुभट से मारे ।
काम क्रोध तजि छोड़ी माया, क्षण में मान कषाय भगाया ।
रागी नहीं नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी ।
प्रभु तुम नाम जगत में सांचा, सुमरत भागत भूत पिशाचा ।
राक्षस यक्ष डाकिनी भागे, तुम चिंतत भय कोई न लागे ।
महा शूल को जो तन धारे, होवे रोग असाध्य निवारे ।
व्याल कराल होय फणधारी, विष को उगल क्रोध कर भारी ।
महाकाल सम करै डसन्ता, निर्विष करो आप भगवन्ता ।
महामत्त गज मद को झारै, भगै तुरत जब तुझे पुकारै ।
फार डाढ़ सिंहादिक आवै, ताको हे प्रभु तुही भगावै ।
होकर प्रबल अग्नि जो जारै, तुम प्रताप शीतलता धारै ।
शस्त्र धार अरि युद्ध लड़न्ता, तुम प्रसाद हो विजय तुरन्ता ।
पवन प्रचण्ड चलै झकझोरा, प्रभु तुम हरौ होय भय चोरा ।
झार खण्ड गिरि अटवी मांहीं, तुम बिनशरण तहां कोउ नांहीं ।
वज्रपात करि घन गरजावै, मूसलधार होय तड़कावै ।
होय अपुत्र दरिद्र संताना, सुमिरत होत कुबेर समाना ।
बन्दीगृह में बँधी जंजीरा, कठ सुई अनि में सकल शरीरा ।
राजदण्ड करि शूल धरावै, ताहि सिंहासन तुही बिठावै ।
न्यायाधीश राजदरबारी, विजय करे होय कृपा तुम्हारी ।
जहर हलाहल दुष्ट पियन्ता, अमृत सम प्रभु करो तुरन्ता ।
चढ़े जहर, जीवादि डसन्ता, निर्विष क्षण में आप करन्ता ।
एक सहस वसु तुमरे नामा, जन्म लियो कुण्डलपुर धामा ।

सिद्धारथ नृप सुत कहलाये, त्रिशला मात उदर प्रगटाये ।
तुम जनमत भयो लोक अशोका, अनहद शब्दभयो तिहुंलोका ।
इन्द्र ने नेत्र सहस्र करि देखा, गिरी सुमेर कियो अभिषेखा ।
कामादिक तृष्णा संसारी, तज तम भए बाल ब्रह्मचारी ।
अथिर जान जग अनित बिसारी, बालपने प्रभु दीक्षा धारी।
शांत भाव धर कर्म विनाशे, तुरतहि केवल ज्ञान प्रकाशे ।
जड़-चेतन त्रय जग के सारे, हस्त रेखवत् सम तू निहारे ।
लोक-अलोक द्रव्य षट जाना, द्वादशांग का रहस्य बखाना ।
पशु यज्ञों का मिटा कलेशा, दया धर्म देकर उपदेशा ।
अनेकान्त अपरिग्रह द्वारा, सर्वप्राणि समभाव प्रचारा ।
पंचम काल विषै जिनराई, चांदनपुर प्रभुता प्रगटाई ।
क्षण में तोपनि बाढि-हटाई, भक्तन के तुम सदा सहाई ।
मूरख नर नहिं अक्षर ज्ञाता, सुमरत पंडित होय विख्याता ।

।। सोरठा ।।

करे पाठ चालीस दिन नित चालीसहिं बार ।
खेवै धूप सुगन्ध पढ़, श्री महावीर अगार ।।
जनम दरिद्री होय अरु जिसके नहिं सन्तान ।
नाम वंश जग में चले, होय कुबेर समान ।।

पूरनमन रचकर चालीसा ।
हे प्रभु तोहि नवावत शीशा ।।

आरती-पंच परमेष्ठी

इह-विधि मंगल आरति कीजै, पंच परमपद भज सुख लीजै ।। टेक ।।

पहली आरति श्रीजिनराजा। भव-दधि पार उतारा जिहाजा ।।
इह विधि० ।। १ ।।

दूसरी आरति सिद्धन तेरी। सुमरन करत मिटै भव फेरी ।।
इह विधि० ।। २ ।।

तीजी आरति सूर मुनिंदा। जनम-मरन दुख दूर करिंदा ।।
इह विधि० ।। ३ ।।

चौथी आरति श्रीउवझाया। दर्शन देखत पाप पलाया ।।
इह विधि० ।। ४ ।।

पांचमि आरति साधुतिहारी। कुमति-विनाशन शिवअधिकारी ।।
इह विधि० ।। ५ ।।

छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी। श्रावक वंदों आनंदकारी ।।
इह विधि० ।। ६ ।।

सातमि आरति श्रीजिनवानी द्यानत सुरग-मुकति सुखदानी ।।
इह विधि० ।। ७ ।।

आरती श्री जिनराज की

आरती श्री जिनराज तिहारी, करमदलन संतन हितकारी ।। टेक ।।

सुर-नर-असुर करत तुम सेवा, तुमही सब देवन के देवा ।।
आरती श्री० ।। १ ।।

पंच महाव्रत दुद्धर धारे। राग रोष परिणाम विदारे ।।
आरती श्री० ।। २ ।।

भव-भय-भीत शरन जे आये। ते परमारथ-पंथ लगाये ।।
आरती श्री० ।। ३ ।।

जो तुम नाम जपै मनमांही। जनम-मरन-भय ताको नाहीं ।।
आरती श्री० ।। ४ ।।

समवशरन-संपूरन शोभा। जीते क्रोध-मान-छल-लोभा ।।
आरती श्री० ।। ५ ।।

तुम गुण हम कैसे करि गावैं। गणधर कहत पार नाहिं पावैं ।।
आरती श्री० ।। ६ ।।

करुणासागर करुणा कीजे। 'द्यानत' सेवक को सुख दीजे ।।
आरती श्री० ।। ७ ।।

आरती श्रीवर्द्धमानजीकी

करों आरती वर्द्धमानकी। पावापुर निरवान थानकी ।।टेक ।।
राग-बिना सब जगजन तारे। द्वेष बिना सब कर्म विदारे ।।
शील-धुरंधर शिव-तिय भोगी। मन-वच-कायन कहिये योगी ।।
करौं० ।। २ ।।
रतनत्रय निधि परिग्रह-हारी। ज्ञानसुधा-भोजनव्रतधारी ।।
करौं० ।। ३ ।।
लोक अलोक व्यापै निजमांहीं। सुखमय इंद्रिय सुखदुखनाहीं ।।
करौं० ।। ४ ।।
पचंकल्याणकपूज्य विरागी। विमल दिगंबर अबर-त्यागी ।।
करौं० ।। ५ ।।
मुनमनि-भूषन भूषित स्वामी। जगत उदास जगंतर स्वामी ।।
करौं० ।। ६ ।।
कहें लौ तुम सबजानौ। 'द्यानत' की अभिलाष प्रमानौ ।।
करौं० ।। ७ ।।

आरती श्री महावीर स्वामी

जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा ।
वर्द्धमान महावीर वीर अति, जय संकट छेवा ।। टेक ।।
सिद्धारथ नृप नन्द दुलारे, त्रिशला के जाये ।
कुण्डलपुर अवतार लिया, प्रभु सुर नर हर्षाये ।। ॐ जय ।।

देव इन्द्र जन्माभिषेक कर, उर प्रमोद भरिया ।
रूप आपका लख नहिं पाये, सहस आंख धरिया ।। ॐ जय ।।

जल में भिन्न कमल ज्यों रहिये, घर में बाल यती ।
राजपाट ऐश्वर्य छोड सब, ममता मोह हती ।। ॐ जय ।।

बारह वर्ष छद्मावस्था में, आतम ध्यान किया ।
घाति-कर्म चकचूर, चूर प्रभु केवल ज्ञान लिया ।। ॐ जय ।।

पावापुर के बीच सरोवर, आकर योग कसे ।
हने अघातिया कर्म शत्रु सब, शिवपुर जाय बसे ।। ॐ जय ।।

भूमंडल के चांदनपुर में, मंदिर मध्य लसें ।
शान्त जिनेश्वर मूर्ति आपकी, दर्शन पाप नसें ।। ॐ जय ।।

करुणासागर करुणा कीजे, आकर शरण गही ।
दीनदयाला जगप्रतिपाला, आनन्द भरण तुही ।। ॐ जय ।।

आरती श्री चन्द्रप्रभु

म्हारा चन्द्र प्रभु जी की सुन्दर मूरत, म्हारे मन भाई जी ।। टेक ।।

सावनसुदि दशमी तिथि आई, प्रगटे त्रिभुवन राईजी ।।
अलवर प्रांत में नगर तिजारा, दरशे देहरे मांही जी ।। म्हारा० ।।
सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि में कमल रचायाजी ।।
मैना सती ने तुमको ध्याया, पति का कुष्ट हटाया जी ।। म्हारा० ।।
जिनमें भूत प्रेत नित आते, उनका साथ छुड़ाया जी ।।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनया जी ।। म्हारा० ।।
मानतुंग मुनि तुमको ध्याया, तालों को तोड़ भगाया जी ।।
जो भी दुखिया दर पर आया उसका कष्ट मिटाया जी ।। म्हारा० ।।
समवशरण में जो कोई आया, उसको पार लगाया जी ।।
सेठ सुदर्शन तुमको ध्याया, सूली से उसे बचाया जी ।। म्हारा० ।।

ठाडो सेवक अर्ज करै छै, जनम-मरण मिटाओ जी ।।
'नवयुग मण्डल' तुमको ध्यावै बेड़ा पार लगाओ जी ।। म्हारा

आरती श्री चाँदनपुर महावीर स्वामी

जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो ।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ।।
ॐ जय महावीर प्रभो ।।

सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी ।
बाल ब्रह्माचारी व्रत पाल्यौ तपधारी ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी ।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

जग में पाठ अहिंसा, आपहिं विस्तार्यो ।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

इह विधि चाँदनपुर में अतिशय दरशायौ ।
ग्वाल मनोरथ पूर्यो दूध गाय पायौ ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

प्राणदान मन्त्री को तुमने प्रभु दीना ।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी ।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै ।
होय मनोरथ पूरण, संकट मिट जावै ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

निशि दिन प्रभु मन्दिर में, जगमग ज्योति जरै ।
हरि प्रसाद चरणों में, आनन्द मोद भरै ।। ॐ जय म० प्रभो ।।

(चाल जय जगदीश हरे) आरती पार्श्वनाथ नं० १३

जय पारस देवा प्रभु जय पारस देवा।
सुर नर मुनि जन तव चरनन की करते नित सेवा ।। टेक ।।

पोष बदी ग्यारसि काशी में आनन्द अति भारी ।
अश्वसेन घर बामा के उर लीनो अवतारी ।। जय० ।। १ ।।

श्याम वर्ण नव हाथ काय पग उरग लखन सोहे ।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण सबका मन मोहे ।। जय० ।। २ ।।

जलते देखे नाग नागनी पढ़ नवकार दिया ।
हरा कमठ का मान ज्ञान का भान प्रकाश किया ।। जय० ।। ३ ।।

माता पिता तुम स्वामी मेरे आश करूं किसकी ।
तुम बिन दूजा और न कोई शरण गहूं जिसकी ।। जय० ।। ४ ।।

तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अन्तर्यामी ।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता त्रिभुवन के स्वामी ।। जय० ।। ५ ।।

दीनबन्धु दुखहरण जिनेश्वर तुम ही हो मेरे ।
वो शिवपुर का वास दास यह द्वार खड़ा तेरे ।। जय० ।। ६ ।।

विषय विकार मिटाओ मनका अर्ज सुनो दाता ।
हम सब कर जोड प्रभू के चरणों चित लाते ।। जय० ।। ७ ।।

जिनवाणी माता की आरती

जय अम्बे वाणी माता जय अम्बे वाणी,
तुमको निशिदिन ध्यावत, सुरनर मुनि ज्ञानी ।। टेक ।।
श्री जिन गिरितैं निकसी, गुरु गौतम वाणी।
जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशानी ।। जय० ।।

कुमत कुलाचल चूरण वज्र सु सरधानी।
नव नियोग निक्षेपण, देखन दरशाणी ।। जय० ।।

पातक पंक पखानल पुन्य परम वाणी।
मोह महार्णव डूबत, तारण नौकाणी ।। जय० ।।

भजन

तर्ज—नगरी नगरी द्वारे द्वारे

पार्श्व प्रभुजी पार लगादो, मेरी यह नावरिया ।
बीच भंवर में आन फंसी है काढोजी सांवरिया ।। टेक ।।

धर्मी तारे बहुत ही तुमने, एक अधर्मी तार दो ।
वीतराग है नाम तिहारो तीन जगत हितकार हो ।
अपना विरद निहारो स्वामी, काहे को विसरिया ।। १ ।। पार्श्व० ।।

चोर भील चांडाल हैं तारे, ढील क्यों मेरी बार है ।
नाग नागिनी जरत उबारे, मन्त्र दिया नवकार है ।
दास तिहारो संकट में है, लीजोजी खबरिया ।। २ ।। पार्श्व० ।।

लोहे को जो कंचन करदे, पारस नाम प्रमान दो ।
मैं हूं लोहा तुम प्रभु पारस, क्यों ना फिर कल्याण हो ।। ३ ।। पार्श्व० ।।

भजन

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर, एक दर्श भिखारी आया है ।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया है ।।

नहीं दुनियां में कोई मेरा है, आफत ने मुझको घेरा है ।
प्रभु एक सहारा तेरा है, जगने मुझको ठुकराया है ।।

धन दौलत की कुछ चाह नहीं, घरबार छुटे परवाह नहीं ।
मेरी इच्छा है तेरे दर्शन की, दुनियां से चित घबराया है ।।

मेरी बीच भँवर में नैया है, बस तू ही एक खिवेया है ।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने, भव सिन्धु से पार उतारा है ।।

आपस में प्रीत व प्रेम नहीं, तुम बिन अब हम को चैन नहीं ।
अब तो तुम आकर दर्शन दो, त्रिलोकीनाथ, अकुलाया है ।।

जिनधर्म फैलाने को भगवान, कर दिया है तन-मन-धन अर्पण ।
नवयुवक मण्डल अपनाओ, सेवा का भार उठाया है ।।

भजन

महावीर दया के सागर, तुमको लाखों प्रणाम ।।
श्री चांदनपुर वाले तुमको लाखों प्रणाम ।।

पार करो दुखियों की नैया, तुम बिन जग में कौन खिवैया ।
मात पिता न कोई भैया, भक्तों के रखवाले तुमको० ।। महा० ।। १ ।।

जब हीं तुम भारत में आये, सबको आ उपदेश सुनाये ।
जीवों के आ प्राण बचाये, बन्ध छुड़ाने वाले तुमको० ।। महा० ।। २ ।।

सब जीवों में प्रेम बढ़ाया, राग द्वेष सबका छुड़वाया ।
हृदय से अज्ञान हटाया, धर्मवीर मतवाले तुमको० ।। महा० ।। ३ ।।

समोसरण में जो कोई आया, उसका स्वामी परण निभाया ।
भवसागर से पार लगाया, भारत के उजियाले तुमको० ।। महा० ।। ४ ।।

हम सब को भारी आशा, सदा रहे दर्शन का प्यासा ।
हम सब भारत के वासी तुमको लाखो प्रणाम ।। महा० ।। ५ ।।

भजन

मेरे प्रभु तू मुझको बता तेरे सिवा मैं क्या करू ।
तेरी शरण को छोड़कर जग की शरण को क्या करूं ।।

कलियों में बस रहे हो तुम फूलों में घिर रहे हो तुम ।
मेरे ही मन में आ बसो, मन्दिर में जाके क्या करूं ।।

चन्द्रमा बन के आपही तारों में जगमगा रहे ।
तेरी चमक के सामने दीपक जलाकर क्या करूं ।।
सारी उमर खतम हुई, तेरी निगाहें ना फिरी ।
कर्मों के फल को भोगता कैसे बसर किया करूं ।।
बेकाल हूं नाथ रात दिन चैन नहीं है आप बिन ।
हरदम चलायमान् मन, इसका उपाय क्या करूं ।।
शिक्षा यह मुझको दीजिये, अपनी शरण में लीजिये ।
ऐसा प्रबनध कीजिए, सेवा में ही रहा करूं ।।

भजन

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे हैं,
झुका तेरे चरणों में सर जा रहे हैं।।
यहां से कभी दिल न जाने को करता,
करें कैसे जाये बिना भी न सरता।।
अगरचे हृदय नयन भर आ रहे हैं।।१।।

हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई,
न मन्दिर में बहुमूल्य वस्तु चढाई।।
यह खाली फकत जोर कर ज रहे हैं।।२।।

सुना तुमने तारे अधम चोर कामी,
न धर्मी सही फिर भी तेरे हैं हामी।।
हमें भी तो करना अमर जा रहे हैं।।३।।

बुलाना यहां फिर भी दर्शन को अपने,
'सुमत' तुम भरोसे लगे कर्म झरने।।
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं।।४।।

अर्घावली

अर्घ देवशास्त्र गुरु

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं ।
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूं ।।
इति भांति अर्घ चढ़ाये नित भवि करत शिवपंकति मचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धान्त गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।

दोहा—वसुविधि अर्घ संजोय के अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परम पद देवशास्त्र गुरु तीन ।।

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्योअनर्घपदप्राप्तये अर्घ।।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धारी है,
गणधर इन्द्रनहूतैं, थुति पूरी न करी है ।
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विद्रेह मंझार ।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ।।

ॐ ह्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्योअनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वं०।

अथवा

ॐ ह्री श्रीसीमधर- युगमधर-बाहु- सुबाहु- सजात- स्वयंप्रभ- ऋषभानन अनन्तवीर्य सूरप्रभ- विशालकीर्ति- वज्रधर- चद्रानन- चद्रबाहु- भुजगम- ईश्वर- नेमिप्रभ- वीरसेन- महाभद्र- देवयश- अजितवीर्यैति विंशतिविद्यमान तीर्थंकरेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घं

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वंदे भावन- व्यंतर- द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान् ।

सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ।। १ ।।

ॐ ह्री कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबंधि जिनबिम्बेभ्योअर्घ्यं निव०

सिद्ध परमेष्ठी (संस्कृत)

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम् ।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांच्छितम्।। .

ॐ ह्रीं सिद्ध-चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।। ९ ।।

सिद्ध परमेष्ठी (भाषा)

जल फल वसुवृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा ।
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम वंदा ।।

त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी, अंतरयामी अभिरामी ।
शिवपुर विश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी ।।

ॐ ह्री श्रीअनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाँच बालयति

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग ताहि नशावत हैं ।
श्री वासूपूज्य मलि नेमि पारस वीर अती,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पाँचों बालयती ।।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर स्वामी, श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपा० ।

समुच्चय चौबीसी

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।।
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंत सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ।। ९ ।।

ॐ ह्री श्रीवृषभादि-वीरात-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योअनर्घपदप्राप्तये अर्घं।

पंचमेरु जिनालय

आठ दरवमय अरघ बनाय 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पांचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ॐ ह्री सुदर्शन विजय-अचल-मन्दिर-विद्यु न्मालि-मचमेरु- सम्बन्धि-जिनचैत्यालयस्थ- जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वरद्वीप जिनालय

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपत् हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपुत हों ।।
नन्दीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों ।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम आनन्द भाव धरों ।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्म

आठों दरब संभार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोलहकारण

जल फल आठों दरब चढ़ाय द्यानत वरत करों मनलाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर-पद-दाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

ॐ ह्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योअनर्घपद प्राप्तये अर्घ।

सप्तर्षि

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लवाना ।
फल ललित आठौं द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।।
मन्वादि चारण ऋद्धि-धारक, मुनिकी पूजा करूं ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरू ।।

ॐ ह्री श्री श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा, पावापुरि कैलाशकों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों ।। १ ।।

ॐ ह्री श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिवार्णक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व०।

सरस्वती

जल चंदन अक्षत फूल चरू, अरु दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुखपावै ।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जिनेन्द्र

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमलपर, बलिबलि जाऊं मनबचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्री श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति०।

श्री चन्द्रपभ जिनेन्द्र

जल गन्ध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघही।
कन थाल अर्घ बनाय शिव सुख 'रामचंद' लहै सही।।
श्री चंद्रप्रभ द्युतिचंद को पद कमल नखससिलगि रह्यो।
आतंक दाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो।।

ॐ ह्री श्री चद्रप्रभस्वामिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति०।

श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र

जलफल दरव मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरो यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ०।

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ायो मंगल गाय।
बखत रतन' के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराय।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनोपद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजो रोग शोक दुख दारिद जाय।।

ॐ ह्री श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ०।

श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय

जलफल आदि साजशुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।
अष्ठम छितिके राज करनको, जजों अंग वसु नाय ।।
दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता०

ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ०।

श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये ।।
पार्श्वनाथ देव से आपकी करु सदा ।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर जिनेन्द्र

जल फल वसु सजि हिम थार,तन मन मोद धरों ।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों ।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो ।।

ॐ ह्री श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्व०।

श्री रत्नत्रय

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्न-त्रय भजूं ।। ।।

ॐ ह्री सम्यक् रत्नत्रामय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि०

श्री ऋषि-मण्डल

जल फलादिक द्रव्यं लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवार भगवान् वारि तुम पद में दिया ।।
जहां सुभग ऋषिमंडल विराजैं पूजि मन वच तन सदा ।

तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा ।।

ॐ ह्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय, रोग-शोक-सर्व-सकट हराय, सर्वशान्ति-पुष्टि-कराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अरहतादि पचपद, दर्शन-ज्ञान-चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि सयुक्त ऋषि, बीस चार सूर, तीन ह्रीं, अर्हंतबिम्ब, दशदिगपाल यन्त्र सम्बन्धित परमदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

तीर्थ क्षेत्रों की अर्घावली

कैलाश गिरि

जलआदिक आठोंद्रव्य लेय भरि स्वर्णथार अर्घंहि करेय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, भन्यादि पाद जजु जोरि पान ।।

ॐ ह्री श्री कैलाश पर्वत सिद्ध क्षेत्राय अर्घ नि०।

सम्मेद शिखर क्षेत्र

जल गंधाक्षत पुष्प सु नेवज लीजिये ।
दीप धूप फल लेकर अर्घ्र सु दीजिये ।।
पूजों शिखर सम्मेद सु-मन-वच-काय जी ।
नरकादिक दुख टरें आचल पद पायजी ।।

ॐ ह्री श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्राय अर्घं नि०।

गिरनार क्षेत्र

अष्ट द्रव्य का अर्घ संजोयो, घण्टा नाद बजाई ।
गीत नृत्य कर जजों 'जवाहर' आनन्द हर्ष बधाई ।।
जम्बू द्वीप भरत आरज में, सोरठ देश सुहाई ।
सेसावन के निकट अचल तहं, नेमिनाथ शिव पाई ।।

ॐ ह्री श्री गिरनार क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं।

श्री चम्पापुर क्षेत्र

जल फल वसु द्रव्य मिलाय, लै भर हिम थारी ।
वसु अंग धरा पर ल्याय, प्रमुदित चितधारी ।।
श्री वासुपूज्य जिनराय, निर्वृतिथान प्रिया ।
चंपापुर थल सुख दाय, पूजौं हर्ष किया ।।

ॐ ह्री श्री चपापुर सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं।

श्री पावापुर सिद्ध क्षेत्र

जल गंध आदि मिलाय वसुविधि थार स्वर्ण भरायकैं ।
मन प्रमुद भाव उपाय करले आय अर्घ बनायकै ।।
वर पद्मवन भर पद्मसरवर बहिर पावा ग्राम ही ।
शिव धाम सन्मति स्वामी पायो, जजों सो सुखदा मही ।।

ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं।

श्री सोनगिरि क्षेत्र

वसु द्रव्य ले भर थाल कंचन अर्घ दे सब अरि हनूं ।
'छोटे' चरण जिन राज लय हो शुद्ध निज आत्मी बनूं ।।
नंगादि नंग मुनीन्द्र जहं ते मुक्ति लक्ष्मी पति भये ।
सो परम गिरवर जजूं बस विधि होत मंगल नित नये ।।

ॐ ह्री श्री मोनागिर क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ।

श्री नयनागिरि (रेशन्दीगिरि) क्षेत्र

शुचि अमृत आदि समग्र, सजि वसु द्रव्य प्रिया ।
धारों त्रिजगत पति अग्र, धर वर भक्त हिया ।।

ॐ ह्री श्री नयनागिरि सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

श्री द्रोणागिरि क्षेत्र

जल सु चन्दन अक्षत लीजिये, पुष्प धर नैवेद्य गनीजिये ।
दीप धूप सुफल बहु साजहीं, जिन चढ़ाय सुपातक भाजहीं ।।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिर सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

सिद्धवर कूट क्षेत्र

जल चन्दन अक्षत लेय, सुमन महा प्याहरी ।
चरु दीप धूप फल सोय, अरघ करों भारी ।।
द्वय चक्री दस काम कुमार, भवतर मोक्ष गये ।
तातें पूजों पद सार, मन में हरष ठये ।।

ॐ ह्री श्री सिद्धवरकूट सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

श्री शत्रुञ्जय क्षेत्र

बसु द्रव्य मिलाई, थार भराई, सन्मुख आई नजर करो ।
तुम शिव सुखदाई धर्म बढ़ाई, हर दुखदाई, अर्घ करो ।।
पांडव शुभ तीनं सिद्ध लहीनं, आठ कोडि मुनि मुक्ति गये ।
श्री शत्रुञ्जय पूजों सन्मुख हूजो, शान्तिनाथ शुभ मूल नये ।।

ॐ ह्री श्री शत्रुञ्जय सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि०।

श्री तुंगीगिरि क्षेत्र

जल फलादि वसु दरव साजके, हेम पात्र भरलाऊँ ।
मन वच काय नमू तुम चरना, बार बार शिर नाऊँ ।।
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिर थिरथाई ।
कोड़ी निन्यानवे मुक्ति गये मुनि, पूजों मन वच काई ।।

ॐ ह्री श्री तुगीगिरि सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्य पँद प्राप्तये अर्घं।

श्री कुन्थल गिरि क्षेत्र

जल फलादि वसु दरब लेय थुति थान के ।
अर्घ जजों तुम पाप हरो हिय आनके ।।
पूजों सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषाय के ।
कर मन बच तन शुद्ध, करमवश टारके ।।

ॐ ह्री श्री कुन्थलगिरि सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं।

चूलगिरि (बावन गजा) क्षेत्र

सजि सौंज आठों होय ठाडा, हरष बाढ़ा कथन विन ।
हे नाथ भक्तिवश मिलजो, पुर न छूटे एक दिन ।।
दशग्रीव अंगज अनुज आदि, ऋषीश जहंते शिव लहो ।
सो शैल बड़वानी निकट गिरिचूल की पूजा ठहो ।।

ॐ ह्री श्री चूलगिरि सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

श्री गजपंथ क्षेत्र का अर्घ

जल फल आदि वसु दरब अति उत्तम, मणिमय थाल भराई।
नाच नाच गुण गाय गायके, श्री जिन चरण चढ़ाई ।।
बल भद्र सात वसु कोड़ि मुनीश्वर, यहां पर करम खपाई ।
केवल लहि शिव धाम पधारे, जजूं तिन्हें शिरनाई ।।

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

श्री मुक्तागिरि का अर्घ

जल गंध आदि द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने ।
लाय चरन चढ़ाय भविजन, मोक्षफल को पावने ।।
तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन शुभ कहो ।
कोटि साढ़े तीन मुनिवर, जहाँ ते शिवपुर लहो ।।

ॐ ह्री श्री मुक्तागिरि क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ नि०।

पावागढ़ क्षेत्र

वसु द्रव्य मिलाई भवजन भाई, धर्म सुहाई अर्घ करूँ ।
पूजा को गाऊँ हर्ष चढ़ाऊँ, खूब नचाऊं प्रेम भरूँ ।।
पावागिरि बन्दों मन आनन्दो, भव दुख खंदो चितधारी ।
मुनि पाँच जुकोड़ भवदुख छोड़ं, शिवमुख जोड़ं सुखभारी ।।

ॐ ह्री श्री पावागढ़ सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं।

बाहुबली स्वामी का अर्घ

आठ दरब करसे फैलायो, अर्घ बनाय तुम्हैहि चढ़ायो ।
मेरो आवागमन मिटाय, दाता मोक्ष के श्री बाहुबली जिन ।।
गज दाता मोक्ष के ।।

ॐ ह्री श्री बाहुबलि स्वामिने अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि०।

उदयगिरि क्षेत्र

जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर अर्घं करूँ ।
नाचूं गाऊं इह भांति, भवतर मोक्ष वरूं ।।
श्री उदय गिरी के शीश, गुफा अनेक कही ।
तिनमें जिन बिम्ब अनूप, पूजत सोख्य लही ।।

ॐ ह्री श्री उदयगिरी क्षेत्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये नि० अर्घं।

खण्डगिरि क्षेत्र

जल फल वसु दरब पुनीत, लेकर अर्घं करूं ।
नाचूँ गाऊँ इह भांति, भवतर मोक्ष वरूँ ।।
श्री खण्ड गिरि के शीश, दशरथ तनय कहै ।
मुनि पंच शतक शिवलीन, देश कलिंग दहै ।।

ॐ ह्री श्री खण्डगिरि सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि०।

तारंगागिरि क्षेत्र

शुचि आठों द्रव्य मिलाय तिनको अर्घ करों,
मन वच तन देहु चढ़ाय भवतर मोक्ष वरों।
श्री तारंगागिरि से जान वरदत्तादि मुनी,
सब ऊठ कोटि परमान ध्याऊं मोक्षधनी।।

ॐ हीं श्री तारंगागिरि सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

गुणावा क्षेत्र

जल फल आदिक द्रव्य एकठी लीजिये,

कंचन थारा धारि अर्घ शुभ कीजिये।
ग्राम गुणावा जाय सुमन हर्षाय के,
गौतम स्वामी चरण जजों मनलायके।।

ॐ ह्रीं श्री गुणावा ग्राम सरोवर मध्य मोक्ष प्राप्ताय श्री गोतम स्वामिने अर्घं नि० स्वाहा।

जम्बू स्वामी (मथुरा क्षेत्र)

जल फल आदिक द्रव्य आठहू लीजिये,
कर इकठी भरि थाल अर्घ शुभ कीजिये।
मथुरा जम्बू स्वामि मुक्ति थल जायके,
पूजिय भवि वारि ध्यान सुयोग लगायके।।

ॐ ह्रीं चौरासी मथुरास्थलात् मोक्षप्राप्ताय श्री जम्बूस्वामिने अर्घं नि०।

जाप्य-मंत्र

३५ अक्षरों का मन्त्र—

णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झयाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

१६ अक्षरों का मन्त्र—

अरहत सिद्ध आइरिया उवज्झाया साहू

६ अक्षरों के मन्त्र—

(१) अरहन्त सिद्ध (२) अरहन्त सि सा (३) ॐ नम· सिद्धेभ्य. (४) नमोअर्हत्सिद्धेभ्य·

५ अक्षरों का मन्त्र—
अ सि आ उ सा

४. अक्षरो का मन्त्र
(१) अरहन्त (२) अ सि साहू

२ अक्षरों के मन्त्र—

(१) सिद्ध (२) अ आ (३) ॐ ह्रीं

१ अक्षर के मन्त्र— ओम्

ओम् कैसे बनात है :—

अरहन्ता असरीरा आयरिया तह उवज्झया मुणिणो ।
पढमक्खर-णिप्पण्णो ओंकारो पंच-परमेट्ठी ।।

अर्थ—पांचों परमेष्ठियों के पहिले अक्षर मिलाने पर ओम् बनता है। यही नीचे बताते हैं—

अरहन्त का पहिला अक्षर		अ		
अशरीर (सिद्ध)	,,	अ	अ	अ+आ
आचार्य	,,	आ	आ	आ+आ
उपाध्याय	,,	उ	आ	उ+ओ
मुनि (साधु)	,,	म्	ओ	म्+ओम्

इसको ओ३म् इस प्रकार भी लिखते हैं।

रत्नत्रय जाप्य मन्त्र

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नम ।

दशलक्षण जाप्य मन्त्र

ओं ह्रीं अर्हन्मुखकमल-समुद्‌गताय उत्तमक्षमा-धर्मांगाय नम

अथवा

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा-धर्मांगाय नमः।

इसी प्रकार 'उत्तममार्दव' आदि धर्मों का मन्त्र जानना चाहिये।

षोडशकारण जाप्य मन्त्र

ओं ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोडशकारणेभ्यो नमः

नन्दीश्वर व्रत (अष्टान्हिक व्रत) जाप्य मन्त्र

(१) ओं ह्रीं नन्दीश्वरसंज्ञाय नमः (२) ओं ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः। (३) ओं ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः। (४) ओं ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः। (५) ओं ह्रीं पंच-महालक्षण-संज्ञाय नमः। (६) ओं ह्रीं स्वर्गसोपान-संज्ञाय नमः। (७) ओं ह्रीं श्री सिद्धचक्राय नमः। (८) ओं ह्रीं इन्द्रध्वज-संज्ञाय नमः।

पुष्पांजलि व्रत जाप्य मंत्र

ओ ही पचमेरुसम्बन्धि अशीति-जिनालयेभ्यो नम.।

रोहिणी व्रत जाप्य मन्त्र

ओ ह्री श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नम

ऋषि-मण्डल जाप्य मन्त्र

ओं ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्ददर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः

सिद्धचक्र-विधान के समय का जाप्य मन्त्र

ओं ह्रीं अर्हं अ सि-आ-उ सा नमः स्वाहा।

त्रैलोक्य मंडल विधान का जाप्य मंत्र

ओं ह्रीं श्रीं अर्ह अनाहत-विद्याधिपाय त्रैलोक्यनाथय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

लघु शान्ति मंत्र

ओं ह्रीं अर्हं असिआउम्सा सर्वशान्तिं कुरुत कुरुत स्वाहा।

वेदी प्रतिष्ठा कलशारोहण तथा बिम्ब स्थापन के समय का जाप्य मंत्र

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै अरि-हन्ताणं ह्रीं सर्वशान्ति कुरुत कुरुत स्वाहा।

रविव्रत जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं नमो भगवते चिन्तामणि-पार्श्वनाथ सप्तफणमंडिताय

श्री धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय मम ऋद्धिं सिद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

रविव्रत लघु जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथाय नमः

मनोरथ सिद्धि दायक मंत्र

ॐ ह्रीं श्री अर्हं नमः

रोग नाशक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिने नमः। आरोग्य-परमैश्वर्यं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के सामने शुद्ध भाव और क्रिया पूर्वक १०८ बार धूप के साथ, शुद्ध भाव पूर्वक जपे।

ऐश्वर्यदायक मन्त्र

ओं ह्रीं असिआउसा नमः स्वाहा।

सूर्योदय के समय पूर्व दिशा मे मुख करके प्रतिदिन १०८ बार शुभ भाव से जपे।

सर्वसिद्धिदायक मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ-तीर्थंकराय नमः

समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक १०८ बार जपना चाहिये।

सर्वग्रह शान्ति मन्त्र

प्रात काल जप करे।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व-शान्तिं-कुरु कुरु स्वाहा

रोग निवारक मन्त्र

ओं ह्रीं सकल-रोगहराय श्री सन्मति देवाय नमः

शान्ति कारक मन्त्र

ओं ह्रीं परमशान्ति विधायक श्री शान्तिनाथाय नमः

(पापभक्षिणी विद्यारूप मन्त्र)

ॐ अर्हन्मुख-कमलवासिनी पापात्म-क्षयंकरि, श्रुतज्ञान-ज्वाला-सहस्र प्रज्वलिते-सरस्वति मत्पापं हन हन, दह दह, क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: क्षीरवर-धवले अमृत-संभवे वं वं हूं हूं स्वाहा।

इस मत्र के जप के प्रभाव से साधक का चित्त प्रसन्नता धारण करता है, पाप नष्ट हो जाते हैं और आत्मा मे पवित्र भावनाओं का सचार हो जाता है।

महा-मृत्युञ्जय मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहन्ताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए-सव्वसाहूणं, मम सर्व-ग्रहारिष्टान् निवारय निवारय अपमृत्युं घातय घातय सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—दीप जलाकर धूप देते हुए नैष्ठिक रहकर इस मत्र का स्वय जाप करेया अन्य द्वारा करावे। यदि अन्य व्यक्ति जाप करे तो 'मम' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड लें—अमुकस्य सर्व-ग्रहारिष्टान् निवारय आदि।

इस मत्र का सवा लाख जाप करने से ग्रह-बाधा दूर हो जाती है। कम से कम इस मत्र का ३१ हजार जाप करना चाहिये। जाप के अनन्तर दशाश आहुति देकर हवन भी करे।

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

शांति पाठ

पढ़ने की विधि :— जहाँ एक है वहां णमो अरिहन्ताणं, जहां दो है वहां णमो सिद्धाणं, जहाँ तीन है वहां णमो आयरियाणं, जहाँ चार है वहां णमो उवज्झायाणं, जहां पाँच है वहां णमो लोए सव्व साहूणं पढ़ना चाहिए। शान्ति पाठ का जाप कम से कम २१ बार तो प्रतिदिन अवश्य कर लेना चाहिये। यह जाप परम मांगलिक और शान्ति का देने वाला है। इस जाप को करते समय स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

घंटाकर्ण मन्त्र—ॐ घंटाकर्णो महावीर, सर्वव्याधि-विनाशकः ।
विस्फोटकभयं प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबलः ।। १ ।।

यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोअक्षर-पंक्तिभः ।
रोगास्त्र प्रणश्यन्ति, वातपित्तकफोद्भवाः ।। २ ।।

तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णे जपात्क्षयम् ।
शाकिनी भूतवेताला, राक्षसाः प्रभवन्ति न ।। ३ ।।

नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते ।
अग्निचौरभयं नास्ति, ॐ ह्रीं श्रीं घंटाकर्ण ।
नमोस्तु ते ॐ नर वीर । ठः ठः ठः स्वाहा ।

सूचना—घटाकर्ण मन्त्र का २१ बार जप करने से राज-भय, चोर-भय, अग्नि और सर्प का भय दूर होते हैं। सब प्रकार की भूत-प्रेत-बाधा भी दूर होती है। सर्व विपत्ति-हर्त्ता मत्र है।

लक्ष्मी प्राप्ति एवं मनोकामना पूर्ण करने का मन्त्र

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

(प्रात. काल १ माला)

शान्ति कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमः।

(आचार्य ॐ उमास्वामि विरचित णमोकारमंत्र माहात्म्यसे उद्धृत)

नवग्रह शान्ति के लिए मंत्र जाप

सूर्य	+	**ॐ णमो सिद्धाणं**	(१० हजार)
चन्द्र	+	**ॐ णमो अरिहंताणं**	(१० हजार)
मंगल	+	**ॐ णमो सिद्धाणं**	(१० हजार)
बुध	+	**ॐ णमो उवज्झायाणं**	(१० हजार)
(गुरु) बृहस्पति	+	**ॐ णमो आइरियाणं**	(१० हजार)
शुक्र	+	**ॐ णमो अरिहंताणं**	(१० हजार)
शनि	+	**ॐ णमो लोए सव्व साहूणं**	(१० हजार)
केतु	+	**ॐ णमो सिद्धाणं**	(१० हजार)
केतु राहु	+	**ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं,** ॐ णमो लोए सव्व साहूणं	(१० हजार)

संक्षिप्त सूतकविधि

सूतकमें देव शास्त्र गुरुका, पूजन प्रक्षालादिक तथा मंदिर जी की जाजम वस्त्रादिको स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूतक का समय पूर्ण हुये बाद पूजनादि करके पात्रदानादि करना चाहिये।

१—जन्मका सूतक दश दिन तक माना जाता है।

२—यदि स्त्री का गर्भपात (पाचवे छठे महीने मे) हो तो जितने महीने का गर्भपात हो उतने दिनका सूतक माना जाता है।

३—प्रसूति स्त्रीको ४५ दिन का सूतक होता है, कही-कही चालीस दिन का भी माना जाता है। प्रसूतिस्थान एक मास तक अशुद्ध है।

४—रजस्वला स्त्री चौथे दिन पतिके भोजनादिकके लिये शुद्ध होती है परन्तु देव पूजन, पात्रदान के लिये पांचवे दिन शुद्ध होती है। व्यभिचारिणी स्त्री के सदा ही सूतक रहता है।

५—मृत्यु का सूतक तीन पीढ़ी तक १२ दिनका माना जाता है। चौथी पीढ़ी में छह दिन का, पांचवी छठी पीढी तक चार दिन का, सातवीं पीढ़ी मे तीन, आठवीं पीढ़ी में एक दिन रात, नवमी पीढ़ी में स्नान मात्र मे शुद्धता हो जाती है।

६—जन्म तथा मृत्यु का सूतक गोत्रके मनुष्यका पांच दिनका होता है। तीन दिनके बालककी मृत्यु का एक दिन का, आठ वर्ष के बालक की मृत्यु का तीन दिन तक का माना जाता है। इसके आगे बारह दिनका।

७—अपने कुलके किसी गृहत्यागी का सन्सासमरण या किसी कुटुम्बी का संग्राम मे मरण हो जाय तो एक दिन का सूतक माना जाता है।

८—यदि अपने कुलका कोई देशातरमे मरण करै और १२ दिन पहले खबर सुने तो शेष दिनों का ही सूतक मानना चाहिये। यदि १२ दिन पूर्ण होगये हों तो स्नान-मात्र सूतक जानो।

९—गौ, भैंस, घोडी आदि पशु अपने घर मे जनै तो एक दिनका सूतक और घरके बाहर जनै तो सूतक नहीं होता। घरमें दासी तथा पुत्री के प्रसूति होय तो एक दिन, मरण हो तो तीन दिनका सूतक होता है। यदि घरसे बाहर हो तो सूतक नही। जो कोई अपने को अग्नि आदिक में जलाकर या विष, शस्त्रादिसे आत्महत्या करै तो छह महीनेतकका सूतक होता है। इसी प्रकार और भी विचार है सो आदिपुराणसे जानना।

१०—बच्चा हुये बाद भैंसका दूध १५ दिन तक, गायका दूध १० दिन तक, बकरी का ८ दिन तक अभक्ष्य (अशुद्ध) होता है। देश भेदसे सूतक विधान में कुछ न्यूनाधिक भी होता है। परन्तु शास्त्रकी पद्धति मिलाकर ही सूतक मानना चाहिये।